# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

*प्रधान सम्पादक*

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी ]

सम्मान्य सदस्य
भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर, पूना; गुजरातसाहित्य-सभा, अहमदावाद,
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक–
( आनरेरि डायरेक्टर )—भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ४८

मुंहता नैणसी विरचित

# मुंहता नैणसीरी ख्यात

## भाग १

प्रकाशक
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर ( राजस्थान )

मुंहता नैणसी विरचित

# मुंहता नैणसीरी ख्यात

## भाग १

सम्पादक

**बदरीप्रसाद साकरिया**

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

**संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**

जोधपुर ( राजस्थान )

विक्रमाब्द २०१६ | प्रथमावृत्ति ७५०

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८१

ख्रिस्ताब्द १९६० | मूल्य ८.५० न पै

मुद्रक—पृ १ से ५६ राजस्थान टाइम्स प्रेस, अजमेर, पृ ५७ से १०४ जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर और शेष सामग्री साधना प्रेस, जोधपुर

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

## प्रकाशित ग्रन्थ

**संस्कृतभाषाग्रन्थ**—१ प्रमाणमंजरी—तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.००। २ यन्त्रराजरचना—महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५। ३ महर्षिकुलवैभवम्—स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १०.७५। ४ तर्कसंग्रह—पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.००। ५ कारकसम्बन्धोद्योत—पं० रभसनन्दि, मूल्य १.७५। ६. वृत्तिदीपिका—पं० मौनिकृष्ण मूल्य २.००। ७ शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.००। ८ कृष्णगीति—कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५ ९ शृङ्गारहारावली—हर्षकवि, मूल्य २.७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य—पं० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५०। ११ राजविनोद—कवि उदयराज, मूल्य २.२५। १२ नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५। १३ नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग—महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५। १४ उक्तिरत्नाकर—पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५। १५. दुर्गापुष्पाञ्जलि—पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५। १६ कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत—भोलानाथ, मूल्य १.५०। १७ ईश्वरविलास महाकाव्य—श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०। १८. पद्यमुक्तावली—कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४.००। १९. रसदीर्घिका—विद्याराम भट्ट, मूल्य २.००।

**राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ**—१ कान्हडदे प्रबन्ध—कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५। २. क्यामखारासा—कवि जान, मूल्य ४.७५। ३ लावारासा—गोपालदान, मूल्य ३.७५। ४ बांकीदासरी ख्यात—महाकवि बांकीदास, मूल्य ५.५०। ५ राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, मूल्य २.२५। ६ जुगल-विलास—कवि पीथल, मूल्य १.७५। ७ कवीन्द्रकल्पलता—कवीन्द्राचार्य मूल्य २.००। ८ भगतमाळ—चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५। ९ राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५०। १०. मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न पै।

## प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

**संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ**—१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव—लघुपंडित। २ शकुनप्रदीप—लावण्यशर्मा। ३ करुणामृतप्रपा—ठक्कुर सोमेश्वर। ४ बालशिक्षा व्याकरण—ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा—पं० कृष्णमिश्र। ६ काव्यप्रकाशसंकेत—भट्ट सोमेश्वर। ७ वसन्तविलास फागु। ८ नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १० वस्तुरत्नकोश। ११ चान्द्रव्याकरण। १२ स्वयंभूछंद—स्वयंभू कवि। १३. प्राकृतानंद—कवि रघुनाथ। १४ मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह। १५ कविकौस्तुभ—पं० रघुनाथ मनोहर। १६ दशकण्ठवधम्—पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। १७ भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य—पृथ्वीधराचार्य, भा पद्मनाभ। १८ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध।

**राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ**—१ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग २—मुहता नैणसी। २ गोराबादल पदमिणी चऊपई—कवि हेमरतन। ३. चन्द्रवंशावली—कवि मोतीराम। ४ सुजान संवत—कवि उदयराम। ५ राजस्थानी दूहा संग्रह। ६ वीरवाण—ढाढी बादर। ७ रघुवरजसप्रकाश—किसनाजी आढा। ८ राठोडांरी वंशावली। ९ राजस्थानी भाषासाहित्य ग्रंथ सूची। १० राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग २। १३ देवजी बगडावत और प्रतापसिंह वार्ता। १४ पुरोहित बगसीराम और अन्य वार्ताएँ। १५ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १।

इन ग्रंथोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

# सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थानी भाषामे लिखित गद्य-साहित्यके अन्तर्गत अनेक ख्यातें प्राप्त होती है, जिनमे बांकीदासरी ख्यात, मुहता नैणसीरी ख्यात, राठोडारी ख्यात, दयालदासरी ख्यात, सीसोदियारी ख्यात, कछवाहारी ख्यात, जोधपुररी ख्यात, महाराजा मानसिंघजीरी ख्यात और चहुवाण, सोनगरारी ख्यात विशेष प्रसिद्ध है। इन ख्यातोका साहित्यिक और ऐतिहासिक दोनो ही प्रकारसे विशेष महत्व है, किन्तु इनमेसे अधिकाश ख्याते अब तक अप्रकाशित है तथा साहित्य-क्षेत्रमे थोड़े ही व्यक्तियोको इनके विषयमे परिचय प्राप्त है।

प्रस्तुत ख्यात-साहित्यका निर्माण मुख्यत हमारे पूर्वजोमे जागृत हुए ऐतिहासिक गौरवाभिमानके कारण हुआ है और इस कार्यके लिये हमारे ख्यात-लेखकोको विभिन्न-विषयक सामग्री खोजने और उसको विधिवत् सङ्कलित करनेमे पर्याप्त परिश्रम करना पडा है। हमे भारतीय साहित्यिक और ऐतिहासिक इतिवृत्त लिखनेमे ऐसी ख्यातोसे विशेष सहायता मिल सकती है किन्तु अद्यावधि इनका उपयोग नाम मात्रके लिये ही हुआ है। इसका एक कारण इन ख्यातोका अप्रकाशित रहना भी है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके अन्तर्गत "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाका" प्रकाशन प्रारम्भ करनेके साथ ही हमने निश्चय किया था कि महत्वपूर्ण ख्याते शीघ्र ही सुसम्पादित रूपमे प्रकाशित करदी जावे। तदनुसार "बाकीदासरी ख्यात" और "मुहता नैणसीरी ख्यात" प्रेसमे दी गई। "बाकी-दासरी ख्यात" तो हम पहले ही साहित्य-जगत्‌मे प्रस्तुत कर चुके हैं और चिर प्रतिक्षित "नैणसीरी ख्यात" प्रथम भाग को अब प्रकाशित करनेका अवसर प्राप्त हो रहा है।

"मुहता नैणसीरी ख्यात"का हिन्दी अनुवाद कुछ वर्षो पहले काशीकी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हुआ है किन्तु यह अनुवाद अविकल हो ऐसा ज्ञात नही होता। इस अनुवादमे अनेक घटनाएँ विपर्यस्त रूपमे लिखी गई है जिससे ग्रन्थकी वास्तविकताका अपेक्षित परिचय नही मिल पाता। "नैणसीरी ख्यात"की राजस्थानी भाषा-शैली हमारे साहित्यमे विशेष महत्वपूर्ण है और गद्यकी यह एक परिमार्जित एव प्रौढ कृति है। किसी भी साहित्यिक कृतिका रसास्वाद मूल पाठके विना नही प्राप्त किया जा

सकता, इसलिये हम प्राचीन कृतियोके सम्पादन एव प्रकाशनमे मूल रचनाके पाठको प्रधानता देते है।

"मुहता नैणसीरी ख्यात"के प्रकाशनमे हमे कई कठिनाइयोंका सामना करना पडा है। कार्य-विस्तारका अनुमान करते हुए हमने पहले राजस्थान टाइम्स प्रेस, अजमेरमे इसका मुद्रण प्रारम्भ करवाया किन्तु उक्त प्रेसके वन्द हो जानेसे यह कार्य जयपुरमे जयपुरप्रिन्टर्सको और तत्पश्चात् प्रतिष्ठानके नव-निर्मित भवनमे जोधपुर स्थानान्तरित हो जाने पर साधना प्रेस, जोधपुरको दिया गया। हमने इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य श्री वदरीप्रसादजी साकरियाको तत्परतापूर्वक एव समय पर सम्पादित कर देनेके उनके आग्रह और श्री अगरचन्दजी नाहटाके अनुरोधसे सौपा था किन्तु कतिपय अन्तर-वाह्य कारणोसे अपेक्षित समयमे कार्य पूर्ण नही हो सका। ग्रन्थके पूर्ण होनेमे अव भी विलम्वका होना अनुभव करते हुए आज हम यह प्रथम भाग प्रकाशित कर रहे है। ख्यातका लगभग इतना ही अवशिष्ट अश, ख्यात-सवधी विशेष ज्ञातव्य और ख्यातगत विशेष नामोकी अनुक्रमणिका आदि दूसरे भागमे प्रकाशित किये जावेंगे।

हम इस ख्यातके शेष भागको भी शीघ्र ही प्रकाशित करनेके लिए प्रयत्नशील हैं।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,<br>जोधपुर।<br>माघ शुक्ला १४, स० २०१६ विक्रमीय

**मुनि जिनविजय**<br>सम्मान्य सञ्चालक

RAJASTHANA PURATANA GRANTHAMALA

General Editor - Acharya Jinavijaya Muni, Puratattvacharya
[ Honorary Director, Rajasthan Prachyavidya Pratisthana, Jodhpur ]

# MUNHATA NAINSI-RI KHYAT

[ Rajasthani ]

## First Part

*Published by*
The Rajasthana Prachyavidya Pratisthana
[ The Rajasthan Oriental Research Institute ]
Government of Rajasthan
JODHPUR

V.S. 2016 ]  [ 1960 A.D.

# विषय--सूची

॥ ॐ शिव ॥

# मुंहता नैणसीरी ख्यात

## ॥ अथ सीसोदीयांरी ख्यात[1] लिख्यते[2] ॥

॥ दं० ॥ श्रीगणेशायनम ॥ आदि सीसोदीया[3] गेहलोत[4] कहिजै । एक वात यूं सुणी । इणारी ठाकुराई पेहली दिखणनूं[5] नासिक त्रबक हुती । सु इणारै पूर्वजरै सूर्यरो उपासन हुतो । मॉताधेन[6] करता । तद सूर्य प्रतक्ष आय हाजर हुतो । तिणसूं[7] को[8] जुध जीप[9] सकतो नही । सु राजा घणी धरतीरो धणी हुवो । सु राजारै पुत्र नही । तरै[10] सूर्यजीसूं पुत्ररी वीनती की । तरै सूर्य कह्यो–"आवाड देवी[11] मेवाड ईडररै गडासध[12] छै । उठारी[13] जात[14] वोलो । इछना[15] करो । आधान[16] रहसी, तठा पछै[17] जात करज्यौ ।" पछै जात इछी । राणीरै आधान रह्यौ । पछै राजा राणी आवाडरी जातनूं[18] चालीया । सु राणी चालता राजारो मत्र आवाहन रह्यो । तरै ग्रासीया[19] काठळिया[20] दाव लाधौ[21], सूर्यरो उपासन मिटियो । तरै सिगळा[22] भेळा हुय राजा ऊपर आया । राजा वाज मूओ[23] । गढ वासलो[24] भोमिया लीयो । राणी आंवायरी जात कर नै गाव नागदहै[25] वाभणारै[26] आण

---

1 ख्यात–प्राचीन इतिहास-वार्ता, किसी किसी पोथीमें इसके वाद 'वार्ता लिख्यते' ऐसा वाक्य भी लिखा मिलता है । 2 लिखी जाती है । 3 सीसोदा गांवमें रहनेके कारण सीसोदिया कहलाये । उदैपुरके महाराणा सीसोदिया है । 4 सीसोदिया पहले गहलोत कहलाते थे, गुहिलके वंशज होनेसे गहलोत कहलाये । 5 दक्षिणकी ओर । 6 मान्यता और ध्यान । 7 उससे । 8 कोई । 9 जीत नहीं सकता था । 10 तव । 11 गुजरातकी एक प्रसिद्ध देवी । 12 समीप । 13 वहांकी । 14 पुत्र आदिकी प्राप्तिके निमित्त किसी देवी देवताकी यह मान्यता करना कि पुत्रकी प्राप्ति हो, हो जाने पर उसको साथमें लेकर दिन निर्धारित कर निश्चित परिमाणमें प्रसादी चढानेको, देवी देवताकी यात्राको जाना । 15 मनवांछितकी प्राप्तिके लिये दृढ विश्वाससे याचना करना । 16 गर्भ । 17 जिसके वाद । 18 को । 19, 20, 21 भाग लेनेवाले और प्रति समय सेवामें रहनेवाले सरदारोको अवसर मिला । 22 समस्त । 23 लडकर मर गया । 24 गढका नाम । 25 एकलिंगजीके समीप एक गांव । अव खडहर मात्र है । 26 । ब्राह्मण ।

डेरो कीयो[1]। वांसा[2] घरासू सुणावणी[3] आई। पाघ[4] आई । राणी बळणनु तयार हुई। चह[5] खिडक तयारी करी। तिण वेळा[6] नागदहा गावरै बाभणाँ राणीनु कह्यो – "पेट आधान थका[7] बलिया दोखण[8] घणो छै। थारे दिन पिण पूरा हुआ छै[9]।" दिन १५ तथा २० राणी छूटी[10]। बेटो जायो। तठा पछै राणी १५ तथा २० वळे[11] रहि नै माथो धोयो[12]। पछै चह तयार हुई। राणी बळणनू चाली छै। डावडो[13] राँणीरी गोद माहै थो। सु उण ठोड कोटेश्वर महादेव छै। तठै बाभण विजयदत पुत्र अर्थ सेवा करे छै। तिणनू[14] से[15] राणी तेड नै[16] पटोला[17] सू वीटनै[18] बेटो दीयो। वाभण विजैदत्त जाणीयो क्युइ[19] माल छै। सु विजैदत्त उरो लीनो[20]। तितरै[21] डावडो रोयो तरै बाभण कयो – "ओ रजपूतरो बेटो[22] हू किथो[23] करू ? सवारै[24] ओ[25] सिकार रमै। जिनावर मारै। मोटो हुवै। तरै वैर-वाद[26] करै दुनीसू[27]। हू अधर्म भेळो होऊ। म्हारो कर्म-धर्म जाय। मोसौ[28] ओ दान लीयो नही जाय।" तरै राणी विजैदत बाभणनू कह्यो – "थे वात कही सु सही, पिण[29] जो हू सतसू[30] बळू छू, तो इण डावडारी ओलादरा[31] राजा हुसी[32], तिके[33] दस पीढी थाहरै[34] कुळरै आचार हालसी[35]। थाँनू[36] घणो सुख देसी[37]।" तरै बाभणनू डावडो दीयो। सु बाभण विजैदत्त लीयो। कितरोइक[38] ऊपर गहणो, क्युइक[39] रोकड दीयो। तद बाभण डावडानू ले घर गयो। राणी बळी। तठा पछे विजैदतरै उण डावडारी ओलाद हुई सु पीढी १० बाभणारी क्रिया चालीया। नागदहा बाभण कहाणा।

---

1 आ कर डेरा डाला। 2 पीछेसे। 3 मृत्यु-समाचार। 4 पगड़ी। 5 चिता। 6 समय। 7 गर्भ होते हुए। 8 दूषण पाप। 9 गर्भके नौ मास पूरे होने आये है। 10 रानीको प्रसव हुआ। 11 और। 12 सूतिका स्नान किया। 13 पुत्र। 14 उसको। 15 उस। 16 बुलाकर। 17 वस्त्र। 18 लपेटकर। 19 कुछ माल। 20 लेलिया। 21 इतनेमें। 22 मै। 23 क्या। 24 कल, भविष्यमें। 25 यह। 26 शत्रुता और लडाई। 27 दुनियासे। 28 मेरेसे। 29 परन्तु। 30 पातिव्रतकी सत्यतासे। 31 सतानके। 32 होगे। 33 वे। 34 तेरे। 35 अनुकरण करेंगे। 36 तुमको। 37 देंगे। 38 कितनाक। 39 कुछ।

पीढीयांरी विगत –

| | |
|---|---|
| १. विजैदत | ७ भोगादित |
| २. सोमदत सूर्यवसी गैहलोत | ८ देवादित |
| ३ सिलादत | ९ आसादित |
| ४ ग्रहादित | १०. भोजादित |
| ५ केसवादित | ११ गुहादित |
| ६ नागादित | १२ रावळ वापो |

वात[1] – रावळ वापो गुहादितरो । तिण[2] हारीत-रिखरी[3] सेवा करी । पछै हारीत-रिखीश्वर प्रसन हुय, बापानू मेवाडरो राज दीयो, नैं[4] हारीत-रिख वीमान[5] वेंस[6] चालतो थो । मु वापानू तेडियो[7] थो, मु मोडेरो[8] आयो । मु पछै वापानू रथ बैंसता[9] वाह झाली[10] । वापारी देह हाथ दस वधी । पछै तवोळ[11] हारीत-रिख वापानू आपरो[12] देह अमर करणनू[13] देतो हुतो[14], मु मुहडा माहे पड न सकियो । वापारै पग ऊपरै पडियो । तरै हारीत कह्यो–"मुहडै माहि पडियो हूत[15] तो देह अमर हूत[16] । तोही[17] पग ऊपर पडियो छै । थाहरै पगसू[18] मेवाडरो राज नही जाय ।" नै वापानू ऋखीश्वर कह्यो–"फलाणी[19] ठोड छपन कोड[20] सोनइया[21] छै । तिके उठाथी[22] ले नैं सामान कर । नैं चीतोड मोरी[23] धणी छै, सु मार नैं गढ उरो लेजो[24] ।" मु वापै ओ माल उरो ले[25], सामान कर नै गढ लीयो ।

कवित रावळ वापा रो –

राव वुहारै वार, राव घर पाणी आणै,
राव करै माजणो, राव मोजडिया ताणै ।

---

1 वर्णन, कथा । 2 उसने । 3 हारीत ऋषिकी । 4 और । 5 विमान । 6 बैठकर । 7 बुलाया । 8 देरीसे । 9 बैठते हुए । 10 पकडी । 11 ताबूल, पान । 12 उसका । 13 करनेको । 14 था । 15 होता । 16 हो जाती । 17 तो भी । 18 तेरे वशजोसे । 19 अमुक । 20 करोड । 21 सुवर्ण मुद्राएं । 22 वहांसे । 23 मौर्यवशका । 24 ले लेना । 25 ले कर ।

कवित्तका अर्थ – रावल बापाके कई राजा तो द्वार पर झाडू लगाते हैं, कई पानी भर कर लाते है, कई बरतन रगडते है, कई जूतियां पहनाते है ।

राव पान ग्रह रहै, राव पोहरै निन जागै,
राव तेग* गहि पुळै, राव लुळ पावै लागै ।
गज चड रथ चड तुरिय चड, राव न को माडत रण,
चितवै च्यार चक्कह तणा, मह्र राव वापा सरण ।। १ ।।

रावळ खूमाण बापारो[1] – तिणरो[2] कवित –

त्रिने लख्ख पायक्क, लख्ख मत्ता तोखारह,
सहस एक छत्रपती, हुये गहमह दरबारह ।
खडे सेन खरहड, धूण लीधी धर धारह,
परमारा दळ पट्ट, दीध्र प्रसणा पाहारह ।
पचास लख्ख मालवपती, मेवाडे सोह गाजियो,
खूमाण राव वापै-तणै, सिद्धराव भड भाजियो ।। २ ।।

कवित रावळ अलु - मेहदरारो[3] –

तीन लख्ख तोखार, हसत सो तीन तयासी,
पच लख्ख पायक्क, करै ओळग मेवासी ।

---

1 वापाका पुत्र रावल खूमाण । 2 उसके सम्बन्धका । 3 अल्लट महेन्द्र ।

कई हाथमें पान लिये खडे रहते है, कई रातमें जग कर पहरा देते है, कई रावलका शस्त्र पकड कर उसके आगे - आगे चलते हैं, कई झुककर उसके चरणोका स्पर्श करते है । और हाथी, घोडे और रथो पर चढ़नेवाले कोई भी राजा रावल वापासे युद्ध रचनेका तो साहस ही नहीं करते । अपितु चारो दिशाओके समस्त राजा लोग रावल वापाकी शरणमें रहनेकी इच्छा करते है ।। १ ।।

कवित्तका अर्थ – रावल खूमाणकी सेनामें दो लाख पादातिक और एक लाख पुष्ट घोडे हैं । एक सहस्र राजा लोग जिसके दरबारकी शोभाको वढ़ाते है । उसने अपनी सेनाके साथ तीव्र गतिसे चढाई करके और तलवारसे युद्ध करके पृथ्वीको जीता । परमारोके दलका नाश कर शत्रुओ पर प्रहार किया । मालवपतिके पास पचास लाख सेना थी उस सबका नाश कर दिया । ऐसे रावल वापाके पुत्र खूमाणने वीर सिद्धरावको भी मार भगाया ।। २ ।।

रावल आलूकी सेनामें तीन लाख घोडे, तीन सौ तेंयासी हाथी और पाँच लाख पादातिक हैं और मेवासी लोग जिसकी सेवामें रह कर प्रशसा करते हैं ।

* यहाँ 'तेग' अशुद्ध प्रतीत होता है, क्योकि कोई भी राजा अपना शस्त्र किसीको नहीं सौंपता । इसके स्थान 'तुरग' शब्द उपयुक्त है और यही सगत भी है । 'तुरग'मे एक मात्रा बढती है अत 'तुरंग' किम्वा 'तुरग' होना चाहिये ।

आउग नयर नरेस, माल्ह माडव उग्रावे,
घर वैठा डग हून, भेट गुज्जग्ह पठावै ।
आठ ही पोहर आलू भए, तयण नीद कोय न करे,
गहलोत गजा दळ चालता, अवर राय ओद्रक मरै ॥ ३ ॥

रावळ आलूरी ठाकुराई गढ आहोर हुई । तिका[1] आहोर उदैपुरसू कोस १० झालावळी सादडी कनै[2] छै । पीढचारी विगत –

| | |
|---|---|
| रावळ आलू | रावळ करनादिन |
| ,, सीहो | ,, भादु |
| ,, सकतकुमार | ,, गात्रड |
| ,, सालीवाहन | ,, हस |
| ,, नरवाहन | ,, जोगराज |
| ,, अवापसाव[3] | ,, वैरड |
| ,, कीरतब्रह्म | ,, वैरसी |
| ,, नरदेव | ,, श्रीपुज |
| ,, उत्तम | ,, करण |

रावळ करण श्रीपुजरो, तिणरै[4] दोय बेटा हुवा – राहप, तिकणनू[5] राणाई[6] दी । चीतोड पाट[7] । माहपनू रावळाई[8] दी । वागड पाट । रावळ वैरडरो कवित – वैरड जोगराजरो –

गूजरवै नह नमै, नमै नह डाहल रायह,
डाहालू श्रव चिन, लीध संभर वेचायह ।

---

1 वह । 2 पास । 3 अवाप्रसाद । 4 उसके । 5 जिसको । 6, 7 चित्तोडकी गद्दी और 'राना'की उपाधि दी गई । 8 वागडकी गद्दी और रावलकी पदवी दी गई ।

आहोर नगरका नरेश रावल आलू मांडवपतिसे करके रूपमें द्रव्य प्राप्त करता है और गुर्जरपति तो डरके मारे घर वैठे ही भेंट भेज देता है । आलूके भयसे आठो पहर शत्रु नींद नहीं ले सकते । गहलोतके हाथियोके दलके चलनेसे अन्य राजा लोग भयसे घवरा कर ही मर जाते हैं ॥ ३ ॥

कवित्तका अर्थ – रावल वैरडनै न तो गुजरात और न डाहलके राजाको अपना सिर झुकाया । परन्तु उलटा डाहालुओसे सांभरका वंट लेकर उन सभीको वडी चिन्तामें डाल दिया ।

वार सत्त पचास, गुडै गैमर गळ गजै,
लख्ख एक तोखार, ठिल्ल अरीयण घड भजै ।
पानाल सेम पडिहाइयो, दुर देस राव डडवै,
वाकडो राव वैरड वमुह, मुणस हेक मेवाडवै ॥ ४ ॥

वात राणा राहपरी ।

(३२) राणो राहप
( ) ,, नरपति[1]
(३३) ,, दिनकर
(३४) ,, जसक
(३५) ,, नागपाळ

दूहो, राणा नागपाळरो –

नागपाळ रार्या-सु गुर, जिण भजै खुरसाण ।
चक्रवत सोह चेला किया, हेम सेत लग आण ॥ १ ॥

(३६) राणो पुनपाळ
(३७) ,, (पेथड) प्रथम[2]
(३८) ,, भुणगसी[3]
(३९) ,, जैतसी
(४०) ,, गिड[4]मडलीक लखमसी
(४१) ,, अरसी
(४२) ,, हमीर
(४३) ,, खेतो
(४४) ,, लाखो
(४५) राणो मोकल
(४६) ,, कूभो
(४७) ,, रायमल
(४८) ,, सागो
(४९) ,, उदयसिघ
(५०) ,, प्रताप
(५१) ,, अमरसिघ
(५२) ,, करन
(५३) ,, जगतसिघ

(५४) राणो राजसिघ

॥ इति ॥

---

1 नरपतिका नाम दूसरी ख्यातोमें नहीं है । मेवाडके इतिहासमें और हमारी इस प्रतिमें है ।

2 हमारी प्रतिमें 'राँणो प्रथम' लिखा है किन्तु कइयोमें 'पेथड' और पृथीप ।

3 भीमसिह अथवा भुवनसिह । 4 सिंहोके वीचमें 'सूअर'के समान निर्भय । लक्ष्मणसिह, रावल रत्नसिहकी सहायतामें अलाउद्दीन खिलजीसे लडा और रत्नसिहके काम आ जाने पर स्वय चित्तोडके राज्यके लिये अपने कई बेटो सहित वीरगतिको प्राप्त हुआ ।

वैरडने ५७ वार कई सजे हुए और पाखर किये हुए हाथिओ और एक लाख घोडोको शत्रुओ पर डालकर उनका नाश किया । इसकी सेनाके भारसे पातालमें शेष नाग घबराने लगा । वैरडने दूर-दूरके देशोके राजाओको दड दिया । मनुष्योमें मेवाडकी भूमि पर एक वैरड ही ऐसा रणवका राजा उत्पन्न हुआ ।

दूहेका अर्थ – राजाओमें गुरू रूप, नागपालने कई वादशाहोको हराया और समस्त चक्रवर्ती राजाओको अपना शिष्य बनाया एवं हिमालयसे सेतुवध तक अपनी आज्ञा मनाई ।

वार्ता दूसरी –

रावळ वापै हारीत-रिखरी सेवा करी[1]। मेवाडरो राज लीयो। तिणरी साखरा[2] कवित, रावळ वापारा –

आदि मूळ उतपनि, व्रह्म पिण खत्री जाणा,
आणदपुर सिणगार, नयर आहोर वखाणा।
दळ समूह राव राण, मिळै मडळीक महाभड,
मिळे सवै भूपती, गरू गहलोत नरेसर।
एकल्ल मल्ल धू ज्युँ अचळ, कहै राज वापै कीयौ,
एकलिंगदेव आहूठमा राजपाट इण पर दीयो ॥ १ ॥

छपन कोड सोव्रन्न, रिखी हारीत समप्पै,
सँदेही श्रग गयौ, राय-राया उथप्पै।
अतरीख ले अमृत, सिद्ध पिण आघो कीन्हो,
भयो हाथ दस देह, सस्त्र वज्र मई मु दीन्हौ।
आवध्ध अग लगै नही, आदि देव इम वर दीयौ,
गुहादित-नणै भैरव भणै, मेदपाट इण पर लीयौ ॥ २ ॥

हर हारीत पसाय, मात-वीसा वर तरणी,
मगळवार अनेक, चैत वद पचम परणी।

---

1 की। 2 साक्षी रूप।

कवित्तका अर्थ – वापा रावलके वशकी उत्पत्तिका मूल कारण ब्राह्मण है, जो अव क्षत्री जाने जाते है। वे आनदपुरके शृगार है। वह नगर आहोर नामसे प्रसिद्ध है। कई वडे २ राजा, राना, मडलीक और महाभट भूपति मिले, जिनमें गहलोत नरेश्वर रावल वापा सवका गुरू माना जाता है। हेकल-मल्ल रावल वापाको ध्रुवके समान अचल राज्य करने वाला कहा जाता है। एकलिंग महादेवने प्रसन्न होकर रावल वापाको इस प्रकार किसीके द्वारा नहीं जीता जाने वाला राज्यपाट दिया ॥ १ ॥

हारीत ऋषिने वापाको छप्पन करोड सुवर्ण-मुद्राएँ दीं। कई राजाओको उथल कर वह सदेह स्वर्गको गया। सिद्ध हारीत ऋषिने उसे अतरिक्षमें उठाकर अमृत द्वारा उसका सन्मान किया, जिससे उसकी देह दस हाथ हो गई और उसे वज्रके समान शस्त्र प्रदान किया। आदि देव महादेवके द्वारा अमृत दिये जानेके कारण वापाके शरीरमें कोई शस्त्र नहीं लग सकता था। कवि भैरव कहता है कि गुहादित्यके पुत्र वापाको इस प्रकार मेवाडका राज्य दिया ॥ २ ॥

महादेव और हारीत ऋषिकी कृपासे रावल वापाने चैत्र कृ० ५ मगलवारको एक साथ १४० युवतियोमे विवाह किया।

चित्रकोट कैलास, आप वस परगह कीधौ,
मोरी दळ मारेव, राज राया गुर लीधौ ।
वारह लख बोहतर सहस, हय गय दळ पैदल वण,
नित मूडो मीठो ऊपडै, भूजाई वापा तणै ॥ ३ ॥
खडग धार पाहार, नित भॅयसा दुय भजै,
करै आहार छ वार, ताम भोजन मन रजै ।
पट्टोळो पैंतीस हाथ, पेहरण पहरीजै,
पिछोडो सोळै हाथ, तेण तन नही ढकीजै ।
पय तोडर तोल पचास मण, खडग वतीसा मण तणौ,
सुण वापा सेन सम्म चलै, जिण भय कापै गज्जणौ ॥ ४ ॥
जालधर कसमीर, सिंध सोरठ खुरसाणी,
ओडीसा कनवज्ज, नगरथट्टा मुलताणी ।
कुकण नै केदार, दीप सिघळ मालेरी,
द्रावड सावड देस, आण तिलँगाणह फेरी ।
उतर दिखण पूरब पछिम, कोई पाण न दख्खवै,
सावत एक एकाणवै, बापा समो न चक्कवै ॥ ५ ॥

अथ सीसोदियारा भेद –

सीसोदो गाव उदैपुरसू तठै घणा दिन रह्या तिण वास्तै सीसोदिया गाव लारै कहावै छै । नागदहा कहावै छै सु घणा दिन नागदहै गाव वसीया तिण कारण ।

एक वात यू सुणी छै – आगै अै बाभण हुता । राजा परीखतरै वैर जनमेजै नाग होमाया, तिकै इणा[1] होमिया । नागदहो गाँव एकलिगसू कोस १ छै । सीसोदीयारो विरद 'आहूठमा-नरेस' कहावै छै । तिणरो भेद आढै महेस समत १७०६ मे कह्यो । एक तो आहूठ हाथ - सारा आदमी - तिण सारारो धणी । एक आहूठ कोड

---

1 इन्होने ।

राजाओंके गुरू रावल बापाने मौर्य वंशके समूहको मार उनका राज्य अपने अधीनमें किया और कैलाशके समान चित्रकूट (चित्तोड) पर्वत पर परिग्रह सहित अपना वास-स्थान बनाया । बापाने हाथी, घोडे और पैदल, सब मिलाकर बारह लाख बहत्तर हजारकी अपनी सेना बनाई । बापाकी रसोईमें नित्य एक मूडा परिमाण तो नमक ही उठ जाता था ॥ ३ ॥

प्रथी, तिण सारैरा धणी आहूठमा नरेस कहावै । कैलपुरा कहावै सु के दिन कैलवै वसीया । आहाडा कहावै सु के दिन आहाड वसीया । वात रॉणा चीतोडरा धणीयारी –

एक तो उपरलै[1] पानै ४९७ लिखी छै नै वात एक पोकरणै वाभण[2] कवीसर जसवतरो भाई जोसी मनोहरदास इण भात मडाई[3] छै –

इणरो विजैपान गोत्र । ब्रह्मारो वेटो विजेपान हुवो । तिणरो परवार –

अै[4] घणा दिन वाभण थका[5] वडा रिखीश्वर[6] हुवा । बडी तपसीया करी । इतरी पीढी ताई अै सर्मा[7] कहाणा । पीढीयारी विगत –

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ब्रह्मा | २ | विजैपान | ३ | देवसर्मा | ४. | अग्नसर्मा |
| ५ | विजैसर्मा | ६ | खेमसर्मा | ७. | रिखीसर्मा | ८. | जगसर्मा |
| ९ | नरसर्मा | १० | गजसर्मा | ११ | वायसर्मा | १२ | दतसर्मा |
| १३. | जयसर्मा | १४ | वसुसर्मा | १५ | केसवसर्मा | १६ | जायसर्मा |
| १७ | चीरसर्मा | १८ | विजैसर्मा | १९ | लेखसर्मा | २०. | राजसर्मा |
| २१ | विराजसर्मा | २२ | हरखसर्मा | २३ | पीचसर्मा | २४ | वेदसर्मा |
| २५. | हृदैसर्मा | २६ | कलससर्मा | २७. | जनसर्मा | २८ | लिलाटसर्मा |
| २९ | वासतसर्मा | ३० | नरसर्मा | ३१ | हरसर्मा | ३२ | धर्मसर्मा |
| ३३ | सुक्रतसर्मा | ३४ | सुभाख्यसर्मा | ३५ | सुबुद्धसर्मा | ३६ | विश्वसर्मा |
| ३७ | वरदेवसर्मा | ३८ | कामपतिसर्मा | ३९ | नरनाथसर्मा | ४० | पीतसर्मा |
| ४१ | हेमवर्णसर्मा | ४२ | जनकारसर्मा | ४३ | राजासर्मा | ४४ | गालवदेवसर्मा |
| ४५ | गालवसर्मा | ४६ | गालवसुरसर्मा | ४७ | पालदेवसर्मा | ४८ | हर्जनरसर्मा |
| ४९ | हर्जनकारसर्मा | ५० | दरमादिसर्मा | ५१. | गोविदसर्मा | ५२ | गोवरधनसर्मा |
| ५३. | गोदसीससर्मा | ५४ | वाक्यसर्मा | ५५ | विराटसर्मा | ५६ | वेगसर्मा |
| ५७ | नित्यानदसर्मा | ५८ | वनसर्मा । | | | | |

शुभ भवतु ॥

1 उपरोक्त । 2 ब्राह्मण । 3 लिखाई है । 4 ये । 5 रहते हुए । 6 ऋषीश्वर । 7 शर्मा ।

अठा आगे[1] इतरी पीढी राणारा पूरवज[2] 'दीत[3]- ब्राह्मण' कहाणां –

| | | |
|---|---|---|
| १ गोदसीदित्य | २ अजादित्य | ३ ग्रहादित्य |
| ४. माधवादित्य | ५ जलादित्य | ६ विजलादित्य |
| ७ कमलादित्य | ८ गोतमादित्य | ९. भोगादित्य |
| १० जालमालादित्य | ११ पदमादित्य | १२. देवादित्य |
| १३. कृस्नादित्य | १४. जगादित्य | १५ हेमादित्य |
| १६. कलादित्य | १७ मेघादित्य | १८ वेणादित्य |
| १९ रामादित्य | २०. कर्मादित्य | २१ हर्खमादित्य |
| २२. देवराजादित्य | २३ विक्रमादित्य | २४ जनकादित्य |
| २५.नेमकादित्य | २६ रामादित्य | २७ केसवादित्य |
| २८ करणादित्य | २९. यमादित्य | ३० महेद्रादित्य |
| ३१. गजमादित्य | ३२ गगाधरादित्य | ३३ गोविदादित्य |
| ३४. गगादित्य | ३५ गोवरधनादित्य | ३६ मेरादित्य |
| ३७. मेवादित्य | ३८ माधवादित्य | ३९ मर्दनादित्य |
| ४०. घनादित्य | ४१ रनादित्य | ४२ वेणादित्य |
| ४३. वीकादित्य | ४४ नाराइणादित्य | ४५ खेमादित्य |
| ४६. खेकादित्य | ४७ विजयादित्य | ४८ केसवादित्य |
| ४९ नागादित्य | ५० भोगादित्य | ५१ भागादित्य |
| ५२ ग्रहादित्य | ५३ देवादित्य | ५४ अवादित्य |
| | ५५ भोगादित्य। | |

इतरी पीढा इणारी[4] 'दीत[5]' हुवा। ब्राह्मण कहाणा।

राजा परीख्यतनु[6] साप खाधो[7]। तिणरै वैर जनमेजय परीख्यतरे बेटै नागासू धेख[8] कीयो तरै[9] सारा ब्राह्मणानै भेळा[10] किया, कह्यो–"म्हारै बापरै वैर नाग होमीया[11] चाहीजै" तरै आ वात किणही रिखीश्वर ब्राह्मण कबूल की नही, तरै राणारा पूर्वज आ

1 इससे आगे। 2 पूर्वज। 3 आदित्य - ब्राह्मण। 4 इनकी। 5 आदित्य। 6 परीक्षतको। 7 सर्प डसा था। 8 द्वेष। 9 तब। 10 सम्मिलित किये। 11 यज्ञमें होमना चाहिये।

बात कबूल की । पछै नागदहो गाव मेवाडमे छै। उदैपुरसू कोस[1] छै तठै नाग होमीया । सु कुड अजे[2] जिग्यरा[3] छै । तठै नाग होमीया तिणथी नागदहा कहाणा[4] । वात –

श्रीएकलिगजी कनै राठासण देवी छै । तठै हारीत रिख बारै वरस वडी तपस्या करी । तटै वापो रावळ टोघडा[5] चारतो, वाभणरो वेटो थको[6] । सो इण हारीत रिखरी वारै वरस घणी सेवा करी । पछै रिखीस्वररी तपस्या पूरी हुई । रिखीस्वर चालणरो विचार कीयो तरै क्यू ई वापानै देणरो विचार कीयो । तरै हारीत राठासण देवी ऊपर कोप कीयो । कह्यो –"बारै वरस थासू[7] निकट तपस्या करी, थे म्हारी कदेइ[8] खबर न लीनी ।" तरै प्रतख्य[9] हुय देवी कह्यो –"मोनू कासू[10] अग्या करो छो ।" तरै हारीत रिखीस्वर कह्यो– "म्हारी इण डावडै[11] बापै घणी सेवा करी, इणनु अठारो[12] राज दीयो चाहिजै ।" तरै देवी कह्यो–"श्रीमहादेवजी प्रसन[13] करो । राज महादेवजीरी सेवा विना पाईजै[14] न छै।" तरै हारीत रिख महादेवजीरो ध्यान कीयो । उग्र स्तुत करी । तिणथी पाहाड प्रथी फाड नै जोतल्यग[15] श्रीएकल्यगजी प्रगट हुवा । तरै हारीत रिख वळै[16] महादेवजीरी उग्र स्तुती करी । महादेवजी प्रसन हुवा । कह्यो –"हारीत ! कासू मॉगै छै ? सु कहि । म्हे वर दा[17] ।" तरै रावल बापारी[18] वीनती करी । वापो मेवाडरो राज पावै । तरै महादेवजी देव राठासण प्रसन हुआ । वर दीयो । राज दीयो । सु हमै राणानु आश्रीवाद[19] दीजै छै । तरै हर हारीत प्रसन कहीजे छै । महादेव प्रसन कर नै हारीत आयो । तितरै[20] बापो आय हाजर हुवो । बापानु रिखीस्वर आग्या[21] दी – तै म्हारी घणी सेवा करी । म्है तोनू[22] मेवाडरो राज महादेवजी देवीजी प्रसन कर दीरायो छै ।

---

1 १ कोस=दो मील । 2 अभी। 3 यज्ञ। 4 कहाये। 5 गायोके वछड़े। 6 होते हुए। 7 तुम्हारे पास । 8 कभी । 9 प्रत्यक्ष । 10 क्या । 11 लडके । 12 यहाका । 13 प्रसन्न । 14 प्राप्त नहीं होता है । 15 ज्योतिर्लिग श्रीएकलिगजी । 16 पुन । 17 दें । 18 बापाके लिये । 19 आशीर्वाद । 20 इतनेमें । 21 आज्ञा । 22 तेरेको ।

दे आपरै पाटवी कीयो । माहपनु अगली रावळाई[1] दे नै डूँगरपुर वासवाळो दियो। तिणरी ओलाद डूगरपुर वासवाळै छै । नै राणा राहपरा चीतोडरा धणी छै[2] ।

रतनसी अजैसीरो, भड लखमसीरो भाई । पदमणीरै[3] मामलै लखमसी नै रतनसी अलावदीसू लड काम आया । एक वार पातसाह चढ खडीया[4] हूता सु पछै उदैपुररा* डैरासू इणा पाछो तेडायो[5] । बारै[6] दिन एक एक वेटो लखमणसीरो गढसू उतर लडीयो । तेरमै[7] दिन जुहर[8] कर राणो लखमणसी रतनसी काम आया । भड लखमसी, रतनसी, करन तीनै भाई गढ – रोहै[9] काम आया । भड लखमसीरो वेटो अनतसी जाळोर परणीयो[10] हूतो, सु उठै कानड़दे साथै काम आयो, सु जाळोरमे डूँगरी वाजे छै[11] । अरसी साथै काम आयो । तिणरो वेटो राणो हमीर चीतोड वरस ६४ मास ७ दिन १ राज कीयो । १ अजैसी गढ - रोहै काढीयो[12] । तिणरा कुभावत १, ककड १, माकड काम आया। १ ओझड १ पेथडरा भाखरोत । तठा आगै[13] इतरी[14] पीढी चीतोड राणा हुवा –

---

1 माहपको परपरागत 'रावल'की पदवी देकर डूगरपुर और वांसवाडेका देश दिया। 2 राना राहपके वंशज चित्तोडके स्वामी है । 3 परम सुन्दरी महाराना रत्नसिंहकी रानी पद्मिनी, जिसको प्राप्त कर अपनी वेगम वना लेनेकी उत्कट अभिलाषासे अलाउद्दीन खिलजीने चित्तोड पर चढ़ाई की । भयकर युद्ध हुआ । लखमसी और रतनसी दोनो इस मामलेमें काम आये । 4 रवाना हुए थे । 5 वुलाया । 6 वारह, । 7 तेरहवें । 8 युद्धमें मारे जानेके पश्चात् शत्रुओ द्वारा उनकी स्त्रियोका अपमान न हो अत जौहर करनेकी (धधकती हुई अग्निमें कूद कर जल जानेकी ) आज्ञा दे कर राना लखमणसी और रतनसी काम आ गये । 9 शत्रुको गढमें प्रवेश न करने देनेके लिये गढके द्वार पर की जाने वाली भीषण मुठभेड । 10 विवाह किया था । 11 जालोरमें जिस पहाडी पर अनतसी काम आया वह पहाडी 'अनतसीरी डुगरी' कहलाती है । 12 युद्धमें घायल हो जाने पर अजैसीको वश - रक्षाके लिये गढ-रोहैसे वचा कर वाहर निकाल लिया । 13 जिसके आगे । 14 इतनी ।

* उदैपुर' पाठ अशुद्ध है । " ······ सु पछै उणनै पुररा डेरासू इणा पाछो तेडायो ।" पाठ अधिक सगत है । लिपिकारको इतिहासका ज्ञान नहीं होनेसे प्रतिमें स्पष्ट 'पुर' शब्दके पूर्व अस्पष्ट अक्षरोको 'उदै' समझ कर 'उदैपुर' कर दिया है । उदैपुर तो उस समय था ही नहीं ।

१- राहप राणो, करन रावळरो ।

२- देहु राणो, ३- नरू राणो, ४- हरसूर रॉणो, ५- जसकरन राणो, ६- नागपाल राणो, ७- पुणपाल राणो, ८- पेथड राणो, ९- भवसी राणो, १०- भीमसी राणो, ११- अजैसी राणो ।

१२- भड लखमसी राणो, वारै वेटासू काम आयो चीतोड ।

१३- अरसी राणो, १४- हमीर रॉणो, १५, खेतसी राणो ।

१६- राणो लाखो खेतारो । राव चूडारी[1] बेटी हसवाई परणी हुती[2], तेरै[3] पेटरो रॉणो मोकल ।

१७- राणो मोकल, राव रिणमलरो[4] भॉणेज ।

१८- ,, कूंभो, वावण - विसनरो अवतार कहॉणो[5] ।

१९- ,, रायमल, कूभारो ।

२०- ,, सॉगो, रायमलरो ।

२१- रॉणो उदयसिघ, २२- रॉणो प्रताप, २३- रॉणो अमरसिघ, २४- रॉणो करन, २५- रॉणो जगतसिघ, २६- रॉणो राजसिघ।

२७- हमीर, अरसीरो वेटो । देवी सोनगरीरे पेटरो । कोई दिन[6] खभणोर कनै[7] उनावो गाव छै तठे[8] रहचा । मा उठै[9] रहता तिण परसग[10] ।

राणा हमीरसुँ पाटवीयॉरा वेटारी विगत –

१ रॉणो खेतो १ लूणो १ खगार वैरसल, हमीररो ।

रॉणा खेतारा वेटा –

२ रॉणो लाखो २ रॉणो भाखर । भाखररै वसरा भाखरोत । चाचारा दिखणनु - भुहसाजळ - साहजी[11], सिवो[12] २ मेरो, खातणरै[13] पेटरा ।

---

1 राठोड राव वीरमका पुत्र चूडा, जो मारवाडके प्रचलित राठोड वशके राजाओके पूर्वजोमें मडोरका सर्व प्रथम स्वामी वना था । 2 व्याही थी । 3 जिसके । 4 राठोड राव चूडेके १४ पुत्रोमेंसे सवसे वडा । किन्तु अपने छोटे भाई कान्हा और राव सत्ताके वाद मडोरका स्वामी वना । 5 विष्णु भगवान्‌का वामन अवतार कहलाया । 6 किसी समय । 7 पास । 8 वहा । 9 वहा । 10 कारण । 11 चाचाका पुत्र शाहजी भोसला । 12 मरहटोका राज्य स्थापित करने वाला वीर छत्रपति शिवाजी । 13 खाती जातिकी स्त्री, खातिन ।

२ महियो २, भवणसी २, भूवररा भूवरोत, २ मलखारा मल-खणोत, २ सिखररा सिखरावत ।

२ राँणो लाखो —३ चडैरा चडावत, ३ राघवदे पितर[1] हुवो, ३ ऊदारा ऊदावत, ३ रुदारा रुदावत, ३ दुल्हरा दूलावत, ३ गजसिघरा गजसिघोत, ३ डूगररा भाँडावत ।

राँणो मोकल लाखावत - राव चूडारी बेटी हंसबाईरो । राव चूडारो दोहीतरो[2] । तिणनु[3] चाचे, मेरे - राँणा खेतेरै बैटाँ खातणरै पेटरा मारीयो । पछै चाचो मेरो पईरै डूगरे[4] चढीया, तिके[5] घेर नै राव रिणमल मारीया ।

४- राँणो कुभो मोकलरो । राँणे कूभे कुभलमेर वसायो । तठ वडी वसती[6] हुई । घणो लोक पारपखै[7] आय वसीयो । तिण समै कहै छै कुभलमेरमे देहुरा[8] सातसै ७०० हुता । तठे झालर ७०० वाजती[9] । नै घर ७०० श्रीमाली - बाँभणाँरा हुता । तिण (श्री[10]) कहै छै एकूके घर दीठ[11] थाळी ७०० थी । पछे राँणो उदैसिघ पिण केइक दिन कुभलमेर रह्यो । राँणो कूभो मोकलरो ।

४- खीवारा देवळियेरा धणी । ४- सूआरा सूआवत । ४ सतारा कीतावत । ४- अढूरा अढुओत । ४ गढूरा गढुओत । ४- वीरम ।

राँणो कुभो मोकलरो । मोकल मारीयाँ पछै राव रिणमल चाचा मेरानू मार नै चीतोड पाट वैसाँणीयो[12] । पछै कूभो मोटो[13] हुवो । (साहवी[14]) सारीरी[15] मुदार[16] राव रिणमल ऊपर । सु मेवाडरा रजपूताँ नै स्वावै[17] नही । पछै सीसोदीये चूडै लाखावत

---

1 प्रेतत्त्व मुक्त मृत - पूर्वज । 2 दौहित्र । 3 जिसको । 4 पई नामक पहाडी । 5 जिनको । 6 वहती । 7 अपार । 8 मदिर । 9 जहां ७०० घडियाल एक साथ वजती थीं । 10/11 जिससे कहा जाता है कि उन प्रत्येक सात सौ घरोमें ७०० थालियें लागें (नेगकी) ी जाती थीं । 12 राठोड रिणमलने चाचा मेराको मार फर कुंभाको चित्तोडकी गद्दी पर वैठाया । 13 वडा । 14 शासनाधिकार, मालिकपन । 15 सनको । 16 मूल आधार । 17 सुहाता नहीं ।

पवार महिपै राणा कूभानू भखायनै[1] राव रिणमलजीनू सूतानू[2] मारीयो। कवर जोधो वीजा राव रिणमलरा वेटा चीतोडरी तळहटी-डेरे[3] था सु नीसरीया[4]। कूभै फोज मेल मारवाड एक वार ली। पछै राव जोधेजी राणारो थाणो[5] मार नै मडोवर लीयो। पछै राणा कूंभारो चित टळ गयो[6]। तरै कूभारै वेटे उदै राणा कूभानू मारीयो। पछै रजपूता मेवाडरा ऊदानू कवूल न कीयो[7]। रायमल कूंभावतनू टीको दीयो।

५ राणो रायमल। ५ ऊदो, जिण राणा कूभानूं मारीयो। पछै ओ अठारो काढीयो[8] केई दिन सोभत रह्यो।

५ नगारा नगावत ५ गोयद अऊत गयो[9]। ५ गोपाळ अउत गयो।

५ राणो रायमल कूँभारो, चीतोड़ धणी हुवो। वेटो वड़ो वाल्हाड[10] हुवो।

६ उडणो-प्रणो प्रथीराज निपट झाळपूळा हुवो[11]। टोडो नै जाळोर एक दिनरै वीच मारीया[12] तरै आ वात पातसाह सुणी। तरै उडणो प्रथीराज कहाणो। असख प्रवाडै जैतवादी राणो रायमल जीवत ही मुओ[13]।

७ वणवीर।

६ जैमल्ल रायमलोत। प्रथीराज मुवॉ पछै[14] टीकायत[15] रायमल राणै कीयो। पछै वदनोर राव सुरताण सोळकी तारादेरै वाप

---

1 वहका कर। 2 सोते हुएको। 3, 4 "चित्तोडके गढ़की तलहटीके डेरोमें थे सो वहांसे निकले। 5 मंडोरकी रक्षाके लिये राना कुभाने वहां एक थाना लगा रखा था, जिसमें रहनेवाले मनुष्योंको मार कर राव जोधाने मडोर पर पुन अपना अधिकार कर लिया। 6 राना कुभाका चित्त विक्षिप्त हो गया। 7 स्वीकार नहीं किया। 8 यह यहांसे निकाला गया। 9 अपुत्र मरा। 10 वली। 11 एक स्थान पर विजय करके उसी दिन अन्य शत्रुके किसी दूरके स्थान पर तीव्र गतिसे भाग कर प्रतिज्ञाके साथ दूसरी विजय करने वाला प्रिथीराज अत्यन्त उग्र और तेजस्वी हुआ। 12 जैपुर डिवीजनके टोडा-रायसिंह और मारवाडके जालोर, इन दोनो पर्याप्त दूरस्थ स्थानोंको एक दिनमें विजय किया। 13 प्रिथीराज, उसके वाप राना रायमलके जीवन कालमें ही मर गया। 14, 15 प्रिथीराजके मरनेके वाद रायमलने जैमलको युवराज वनाया।

ऊपर गयो। वे वदनोर छाड नीसरीया[1] । राणै वासो कीयो[2] । अटाळी कनै आवता गाडानू पोहता[3] । तठै राव सुरताँणरो परधांन साखलो रतनो साळो पिण हुतो। तिण एकल असवार पाछा वाळीया[4] । रात पाछली घडी ४ रही थी । सारा उघावता था[5] । जैमल घुड बैहल[6] बैठो थो। रतनो आइ साथ भेळो[7] हुवो । आवतो २ राँणारी बैहल निजीक आयो। खुर[8] घोडो कर ने जैमलरै रतने साँखले बरछी छाती माँहै लगाई। मरमरी लागी । राँणो मुवो। पारवतीरे[9] रतनानू मारीयो । /

६ जैसो पिण सुणियो छै[10] । जैमल मुवाॅ पछै रायमल मुदायत कीयो[11] पछै राँणो रायमल असमाधियो[12] । तरै जैसो लायक नही । रजपूत राजी नही। तरै सागानु तेड नै[13] हाजर कीयो । राँणो रायमल धरती घालीयो[14] । पछै राॅणो रायमल मुवो । साँगानूं टीको[15] हुवो । गीत राँणा साँगारो–

आयो आगरै जक दनी जवनपुर, समहर सग सप्राणो ।
दिलडी तणी धरा धक धूणै, रोस चईनो राणो ।। १ ।।

पारभ माल पसरीयो परखड, अत साहस ऊलटीयो ।
ढिलडी जोय जथै धवळागिर, हिंदुवो राणो हठीयो ।। २ ।।

---

1 छोड़ कर निकल गये । 2 रानाने पीछा किया । 3 अटाली गावके पास आते ही उनके गाड़ोको पकड लिया । 4 पीछा लौटा दिया । 5 सब नींदमें थे । 6 घोड़ोका रथ । 7 शामिल हुआ । 8 घोडेके अगले पावोको (रथके ऊपर) उठा कर । 9 पासवालोने । 10 'जैसा' के लिये भी सुना गया है । 11 जैमलके मरनेके बाद रायमलने उसको अधिकारी बनाया । 12 मरणासन्न हुआ । 13 बुला कर । 14 राना रायमलको धरती पर लिटाया । 15 राज्यतिलक हुआ ।

गीतका भावार्थ–

युद्ध करनेमें महावली, राना सागा दिल्लीकी धराको नष्ट करता हुआ जिस दिन क्रोधावेशमें यवनोके नगर आगरेमें आया, उसको देख लोग चकित हो गये ।। १ ।।

पहले राना रायमलने पृथ्वीके दूसरे खडोमें अति साहससे अक्रमण किया था, किंतु अब दिल्ली प्रदेश और हिमालय तक जहा देखो वहाँ हिंदुपति राना सागा (विजय करनेके लिये) अपनी हठ पर चढ़ा हुआ है ।। २ ।।

नरवर गोपा चलै नीवते, समपै सिखर सवाही।
सुण सुरताण जु कीनी सागै, मुकद तणा घर मांही ॥ ३ ॥
माल-तणी सझीयो मोगरथट, लोह तणै रस लागो।
पूरब देस भगाण पडते, भौ तिण पँडवो भागो ॥ ४ ॥

६. रॉणो सागो रायमलरो वडो भाग वळी[1] हुवो। घणी धरती खाटी[2]। माँडवरो पातसाह साँगे दोय वार पकड नै छोडीयो। पीळीयाखाल[3] सूधी[4] एक वार हद कीवी[5]। पछै बाबर पातसाहसू वेढ[6] हुई, तटै रॉणो सागो भागो। सागानू कवर बाघा सूजावतरी बेटी धनाई परणाई थी, तिणरो बेटो रॉणो रतनसी।

६ किसनारा किसनावत।
६ धनो रायमलरो अउत[7]।
६ देवीदास अउत।
६ पतो रॉमो अउत।

समत् १५३९ रा वैसाख वद ९ सागारो जनम। समत् १५६६ जेठ सुद ५ रॉणो सागो पाट वैठो। समत् १५९४ रा काती सुद ५ सीकरी बाबर (हुमायूं) पातसाहसू वेढ हारी। राणो साँगो वडो प्रतापवळी[8] ठाकुर हुवो। घणी धरती खाटी। समत् १५३९ रा वैसाख वद ९ रो जनम। घणो तपीयो[9]। उडणो प्रथीराज मुवाँ पछै मुदै[10] हुवो। पेहली घणो विखै फिरीयो। पछै वडो ठाकुर हुवो। इसडो चीतोड़ रॉणो कोई न हुवो। दोय वार माँडवरो पातसाह पकड छोडीयो। पीळीयेखाल जाय बाबर पातसाहसूं लडीयो तिका

---

जिस राना सागाको, गोपा नरवर नगर और उसके समस्त शिखर आदि प्रदेश अर्पण करते हुए और सिर झुका कर चलता बना। हे सुलतान! सुन, बूंदेलेके राजा मुकुदके घरमें उस राना सागाने जो की (वह क्या साधारण बात थी?) ॥ ३ ॥

वीरोमें अग्रणी रायमलका पुत्र राना सागा खड्गके रसमें अनुरक्त होनेके कारण पूर्वके देशोंमें भगदड मचनेसे भयके कारण पँडुवा वहाँसे भाग गया था ॥ ४ ॥

1 भाग्यशाली। 2 जीत कर प्राप्त की। 3 गावका नाम। 4 तक। 5 सीमा बनाई। 6 लडाई। 7 अपुत्र, नि:संतान। 8 प्रतापी। 9 खूब शानके साथ बहुत समय तक राज्य किया। 10 राज्यधिकारी हुआ। 11 पहाड और जगलमें सकटके मारे छिप कर रहना।

वेढ हारी। वळै रॉणै सागै चदेरी[1] (मारी) थी। बधवैरै[2] वाघेले मुकदसू' वेढ हुई। मुकद भागो। हाथी घणा पडाउ-आया[3]। खिडीये खीवराज[4] वात कही।

रॉणो रतनसी कवर वाघारो दोहीतो, धनाईरै पेटरो। तिको हाडा सूरजमल नारणदासोतसू लड कॉम आयो। मामलो भैंसरोडर गॉव किवाजणै[5] हुवो। गॉव चीतोडथी[6] कोस २२। बूदीसू कोस १०।

७. रॉणो विक्रमादित करमेती[7] हाडीरा पेटरो। उदैसिघरो वडो भाई। रतनसी मारॉणै टीके बैठो[8]। पछै विक्रमादित चीतोड थकॉ[9] समत १५९९ जेठ सुद १२ पातसाह बहादर चीतोड ऊपर आयो। गढ लीयो[10]। हाडी करमेती जुहर कीयो। रजपूत कॉम आया। पछै वळे हमाउ पातसाह विक्रमादितरी मदत[11] करी। हमाउ चीतोड आयो। बहादरनू घेच काढीयो। विक्रमादितनू पाछो चीतोड बैसॉणीयो[12]। पछै पूतळ[14] छोकरीरै बेटे विक्रमादित रमतानु मारीयो[14]। वणवीर चीतोड लीवी।

७ रॉणो उदयसिघ सॉगारो। बडो प्रतापबळी ठाकुर हुवो। विक्रमादित मारीयो तद कोई दिन कुभलमेर रह्यो[15]। पछै वणवीर आय कुभलमेर घेरीयो[16] सु रॉणो उदयसिघ सोनगरा अखैराज रिणधीरोतरी बेटी परणीयो हुतो[17]। पछै अखैराजनू उदैसिंघ कहाडीयो-[18] म्हानू मुसकल आय वणी छै[19]। माहरी[20] मदत करज्यो, पछै अखैराज घणो साथ[21] ले नै आयो। कूपो मेहराजोत[22], रॉणो

---

1 गांवका नाम। 2 वाघवगढ। 3 घायल पडे हुए हाथ आये। 4 खिड़िया जातिका चारण खीवराज। 5 गावका नाम। 6 से। 7 राना सागाकी स्त्री। 8 रतनसीके मारे जाने पर, विक्रमादित्यको राज्यतिलक हुआ। 9 चित्तोडमें विक्रमादित्यके शासनकालमें। 10 चित्तोडगढको वहादुरशाहने जीत लिया। 11 मदद। 12 विक्रमादित्यको पुनः चित्तोड़के सिंहासन पर वैठा दिया। 13, 14 दासीपुत्र बनवीरने खेलते हुये विक्रमादित्यको मार डाला। 15 विक्रमादित्यके मारे जानेके बाद चित्तोड़ पर बनवीरका अधिकार हो गया इसलिये उदैसिंहको बहुत समय तक कुभलमेरमें रहना पडा। 16 बनवीरने कुभलमेर पर घेरा डाल दिया। 17 बेटीसे विवाह किया था। 18 कहलाया। 19 मेरेमें आपत्ति आ पडी है। 20 मेरी। 21 सेनाको ले कर आया। 22 राठोड राव रिणमलका पौत्र मेहराजका पुत्र कूपा।

अखैराजोत[1], भदो, कल्ल पंचायणोत[2], जैसो भैरवदासोत[3]। मारवाडरो सारो[4] साथ[5] ले नै[6] उदयसिघरी मदत अखैराज आयो। वणवीरसुँ गांव माहोली वडी वेढ[7] हुई। कोई कहै छै वणवीर मारीयो[8]। कोई कहै छै वणवीर भागो नै उदैसिघ चीतोड धणी हुवो[9]। महा उग्र तेज हुवो[10]। तठा पछै[11] अकबर पातसाह चीतोड ऊपर आयो[12]। समत् १६२४ राणो भाखरे गयो[13]। जैमल सीसोदीयो, पसो[14] जगावत और घणो साथ काम आयो[15]। पछै सवत १६२४ राणै उदैसिघ चीतोड़ छोड उदैपुर वसायो। आगे आ ठोड देवडारा गाँव ५० गरवो कहीजतो[16]। उदैसागर तळाव वधायो। सवत १५७९ रा भादवा सुद ११ रो जन्म। सवत १६२९ रा फागुण सुद १५ राणो उदैसिघ काल प्राप्त हुवो[17]।

७ भोजराज सागावत[18]। इणनु, कहे छै मीरांवाई राठोड़ परणाई हुती[19]।

७ करन रतनसीरो भाई।

राणा उदैसिघरा वेटारी विगत—

९ राणो प्रताप, सोनगरा अखैराजरो दोहीतो।

९ कल्ल, करमचन्द पवाररो दोहीतो।

९ फरसराम।

९ भोजराज।

९ दुरजनसिघ।

९ रुद्रसिघ।

---

1 राव रिणमलके पुत्र अखैराजका पुत्र राणा। 2 भद्दो और काल्ला, अखैराजके पुत्र पंचायणके पुत्र हैं। 3 भैरवदासका पुत्र जैसा। 4 समस्त। 5 सरदारो सहित सेना। 6 ले कर। 7 लडाई। 8 मारा गया। 9 उदैसिंह चित्तोड़का स्वामी वना। 10 अत्यन्त तेजस्वी हुआ। 11, 12 जिसके वाद अकवर वादशाह चित्तोड पर चढ कर आया। 13 राना उदैसिंह भाग कर पहाडोमें चला गया। 14 जगाका पुत्र पता ("पसो" अशुद्ध है)। 15 वहुत सरदार और सेना काम आ गई। 16 पहले इस स्थान पर देवडे चौहान राजपूतोके ५० गाव थे जो 'गरवा' नामसे प्रसिद्ध थे। 17 स्वर्ग वासी हुआ। 18 सागाका पुत्र। 19 कहा जाता है कि भक्त-शिरोमणि 'मीरावाई मेडतणी' इसको व्याही गई थी।

१. नगो, तिणरा नगावत ।

१. सॉम ।

१ साहब खॉन ।

१ माधोसिघ । रॉणा जगतसिघ कना[1] छाड नै[2] पातसाहरै वास वसीयो । झाला हरदासनै ताजणेरै मॉमलै मारीयो[3] ।

१ जैतसिंघ ।

१ सुरतॉण । कल्यॉणमल जैतमलोतरै[4] वास थो[5] ।

१. वीरमदे ।

१. लूंणो ।

१. सादूळ ।

१ सुजॉणसिघ ।

१. महेस ।

१ जगमाल । रॉणा उदैसिघरो । रावळ लूणकरनरी[6] वेटी धीरबाईरै पेटरा[7] । भाई ५–८ जगमाल, ८ सगर, ८ अगर, ८ साह, ८ पचाइण । तिण मॉहे[8] जगमाल वडो कॉमरो मॉणस थो[9] । सीरोहीरा राव मॉनसिघरी बेटी परणी थी । सो मानसिहरै वेटो कोई न हुवो । टीको[10] राव सुरताण भाणरानू[11] हुवो । सु महाराज रायसिघजीनू[12] गिरनार सोरठरी हुई[13] । सोवो हुवो थो[14], सु जावता छा[15] । सु तद[16] राव सुरताणदे वीजै हरराजोत आदो दीयो[17] । तैसू[18] राव सुरताण महाराज रायसिघजीसू मिळीयो । आपरी[19] हकीकत कही । राजा सुरताण ऊपर कीयो[20] । आधी सीरोही

---

1 पास । 2 छोड़ कर । 1, 2, 3 राना जगतसिंहके पास रहना छोड़ कर बादशाहकी सेवामें रहा । चाबुकके मामलेमें माधोसिहने झाला हरदासको मार दिया था । 4 जैतमलका पुत्र । 4, 5 सुरताण, जेतमलके पुत्र कल्याणमलकी सेवामें रहता था। 6, 7 जैसलमेरके रावल लूणकरणकी बेटी धीरबाईकी कोखसे उत्पन्न पांच (पुत्र) भाई । 8 जिनमें । 9 जगमाल वडे कामका मनुष्य था । 10 राज्य तिलक, 11 भाणके पुत्रको । 12, 13 बीकानेरके महाराज रायसिंहको सौराष्ट्र देशका गिरनार प्रदेश मिला । 14 संदेह हुआ था । 15 सो जाते थे । 16 तब । 17 अपनी । 18 सहायता की ।

पातसाहजीरै कीनी । आधी सिरोही राव न दीनी । तिको[1] आधरो वंट[2] पातसाह जगमालनू दीनो । जगमाल तालिको ले आयो[3] । राव आध परो दीयो[4] । जगमालनू विजो आय मिळीयो । विजै भखायो[5] । कह्यो – सुरतॉण कुण ? तू राणा सॉगारो पोतो, मॉनसिघरो जमाई । सारी सिरोही उरी काय न ले[6] ? पछै एक दो दाव घाव मोहलॉ[7] ऊपर कीया । पाघरै ऊपर वया[8] । तरै जगमाल खिसाणो पड़ वळे दरगाह गयो[9] । फरीयाद करी[10] । पछै पातसाह जगमालरी मदत राव चन्द्रसेनरा वेटानूं सोभत दे, रावाई[11] दे, रायसिघनू , सिघ कोळीनू[12] मदत मेलीया[13] । पछै अै[14] सीरोही आया । तरै सुरताण राव सहर छोड भाखरा पैठो[15] । पछै अै पिण उठी गया पछै सवत् १६४० रा दताणी डेरा ऊपर आया । वेढ हुई । जगमाल, रायसिघ, सिघ कोळी तीनो काम आया । समत १६११ रा असाढ वदि ५ रिववाररो जनम ।

रामसिघ जगमालरो ।

स्यॉंमसिंघ ।

(१० मनोहर) ।

रूपसिघ, देवीदास जैतावतरो[16] दोहोतो ।

रुद्रसिघ ।

रॉणो सगर उदैसिघरो, जगमालरो सगो[17] भाई । सु जगमालनू राव सुरताण मारीयो । तरै सगर जाणीयो म्हे तो दीवाणरै[18] अ्रैन छा[19], पिण दीवाण छोटा ही गोतीरो ऊपर करै छै[19], तो

---

1 उस । 2 भाग । 3 जगमाल जागीरीका प्रमाणपत्र (पट्टा) ले आया । 4 रावने आधा भाग दे दिया । 5 विजैने जगमालको भरमाया । 6 समस्त सिरोहीका राज्य क्यो नहीं ले लेता है ? 7, 8 पीछै एक दो वार अवसर देख महलोमें जा कर जगमालने सुरतॉणके ऊपर प्रहार किये, किन्तु वे पघडीके ऊपर लगे । 9 तव जगमाल लज्जित हो कर फिर वादशाहके दरवारमें पहुंचा । 10 पुकार की । 11 राव पदवी दे कर । 12 सिंघ नामके कोली राजपूतको । 13 भेजे । 14 ये । 15 पहाडोमे घुस गया । 16 जैताका पुत्र । 17 सहोदर भाई । 18 मेवाड़ राज्यके अधीश्वर इकलिंग महादेव माने जाते है और राना अपनेको उनके महामन्त्री-'दीवान' मानते है । 19 अति समीप कुटुम्वके और मुख्य हैं ।

जगमाल मारीयांरो दावो राणो अमरसिंघ राव कनै मागसी[1] सु दीवाण कदै रावनूं ओळभो[2] ही दिरायो नही, नै रावसूं सामो[3] घणो सुख[4] कीयो। रावनू बेटी परणाई। तरै सगरनूं इण वातरो घणो इमरस[5] आयो। तरै सगर दरगाह आयो। मेवाडरी सारी वात पातसाह जहागीरनु गुजराई[6]। वात सहल[7] कर दिखाई। तरै राणासूं विखो कीयो[8]। पातसाह जहागीर सगरनू राणाई दीवी[9]। चीतोड मेवाड सारो दियो। ऊपर[10] नागोर अजमेर वळे[11] घणा परगणा दीया। घणी मया करी[12]। सगर वरस उगणीस १९ चीतोड राज कीयो। निपट वडो ठाकुर हुवो।

पछै समत १६७१ पातसाह जहागीर आप आय अजमेर बैठो। साहजादो खुरम आय उदैपुर बैठो। तरै राणो अमरसिंघ खुरमसूं मिळीयो। असवार १००० सू चाकरी कबूल करी। तरै मेवाड पाछो राणा अमरसिंघनू दीयो[13]। सगरनू रावताई[14] दीवी। पूरवमे जागीरी दीवी। श्रीवाराहजीरो देहुरो पोकर माथै सगर सवरायो[15] समत १६१६ भादवा वद ३ रो सगररो जनम छै। सगररा बेटारी विगत–

९ इंद्रसिंघ सेखावतारो भाणजो। सगर जीवता मूवो[16]।

९ मानसिंघरो जनम सगर वासै[17] रावताई पाई तैसू, समत १६३९ रो।

१० हरीसिंघ।

१० मोहकमसिंघ।

---

1 जगमालको मारनेसे उत्पन्न हुई शत्रुताके बदलेका दावा राना अमरसिंह राव सुरताणसे मागेगा अर्थात् वैरका बदला लेगा। 2 उपालम्भ। 3 उल्टा। 4 प्रेम। 5 अमर्ष। 6 निवेदन की। 7 बातको सुगम कर दिखाया। 8 रानाको सकटमें डाला। 9 राना बना दिया। 10 इनके अतिरिक्त। 11 और। 12 कृपा की 13 तब मेवाड़ पुनः राना अमरसिंहको दे दिया। 14 और सगरको रानासे रावत बना कर पूर्वमें कुछ जागीरी दे दी। 15 तीर्थ गुरु पुष्करके श्री वाराह मन्दिरका सगरने जीर्णोद्धार करवाया। 16 सगरके जीवन कालमें मर गया। 17 मानसिंहका जन्म १६२६, पाटवी इन्द्रसिंहके मरजानेके कारण रावताई इसे मिली।

१० आसकरन ।

१० मोहणसिघ । सगर जीवता मूंवो ।

१० वैरीसाल ।

१० रुघनाथदास

१० मदनसिघ । पेट मार मूंवौ[1] ।

१० हरीराम । राजा रायसिघजीरो चाकर रह्यो छौ[2] ।

१० फतैसिघ ।

१० जगतसिघ । गोड वीठलदासरै काम आयो ।

९ अगर । राणा उदैसिघरो । पातसाही चाकर थो ।

९ जसवत । जोधपुर वास वसीयो[3] । गाव १२ सूं सोझतरो सिणलो दीयो[4] । पछै सवत १६७३ छाडीयो[5] । ब्राह्नपुर मोहवतखांनरै रह्यो[6] । समत १६९० वळे रावळे वसीयो[7] । धोळहरो गाव १२ सूं दीयो हुतो[8] । पछै मोहवतखान कह्यो, मत राखो । तद सीख दीवी ।

९ सवलसिघ । जोधपुर समत १६७९ वास वसीयो । गाव ४ जालोररा कुरडासूं[9] । दीया । दीवी दस ।

१० सवलसिघ । ९ कल्याणदास ।

९ साह । रांणा उदयसिघरो ।

१० दुरजनसिघ । राजा जैसिघरो मामो ।

१० माधोसिघ । मुथरादास ।

१० पचाइण । राणा उदैसिघरो । ९ किसनसिघ ।

९ वलू । चूंडावता वैरमे मारीयो[10] ।

---

1 पेटमें कटारी मार कर मर गया । 2 बीकानेरके राजा रायसिघके यहां नौकर रहा था । 3 जोधपुरमें आकर रह गया । 4 जोधपुरके महाराजा सूरसिघने उसे बारह गांवोंके साथ सोजत परगनेमें सिणला गाव जागीरमें दिया । 5 मारवाड़ छोड़ दिया । 6 बुरहानपुर जा कर मोहवतखानके यहा नौकर रहा । 7/8 स० १६९० में पुन. जोधपुर आ कर बस गया, तब उसे, १२ गावोंके साथ धोलेरा गाव जागीरमें दिया था । 9 घासके निमित्त जो गांव थे उनमेंसे चार उसे दिये । 10 चुडावतोंने वैरका बदला लेनेके लिये उसे मारा ।

१० सूरसिंघ । ११ भीव ।

८ सकतो । राणा उदैसिंघरो । पातसाही चाकर हुवो । इणरा बेटा बडा निपट आछा रजपूत हुवा नै इणरो परवार घणो । सकतारा पोतरारी आज वडी साख हुई छै[1] । सकतावत कहावै ।

९ भाण सकतावत । मोटा राजारी[2] बेटी राजकवर परणी हुंती ।

१० सामसिंघ । महाराज श्रीजसवतसिंघजीरै सगो मामो[3] ।

११ करमसेन । जोधपुर वास । चडावळरो पटो ।

१२ सिवराम । १२ जगरूप । १० पूरो भाणोत । राजा ।

११ सबलसिंघ पूरावत ।

११ सत्रसल । १२ मोहकमसिंघ ।

१० मानसिंघ भाणोत[4] । राजा भीवरो चाकर । भीव काम आयो तद काम आयो ।

१० गोकलदास भाणोत । मोटा राजारो दोहीतो । राजा भीवरो चाकर । भीव काम आयो तद पूरे लोहे पडीयो[5] । तरै राजा गजसिंघजी उपाडीयो[6] । घाव बधाया । पछै राहिण रु. २९००० रो पटो दे वास राखीयो[7] । पछै समत १६९४ खुरम तखत बैठो तरै पातसाहरै वसीयो । बडो दातार । बडो झुझार मोत मूंओ[8] ।

११ सुदरदास । ११ जूझारसिंघ । ११ वीरमदे । ११ कल्याणसिंघ ।

१० केसोदास भाणरो । मोटा राजारो दोहीतो । राजबाई

---

1 सकतेके पौत्रोंकी बडी शाखा फैली । 2 जोधपुरके मोटा राजा उदैसिंघकी कन्या राजकंवर भाणको व्याही थी । 3 सगो मामो=माताका सहोदर भाई । 4 भाणका पुत्र । 5–6 शरीर पर शस्त्रोंके खूब प्रहार हो जाने पर गिर गया तो राजा गजसिंहने स्वय उसे उठा कर दूर किया । 7 मेडते परगनेका राहिण नामक, रु. २९०००) की आयका गांव दे कर अपने पास रखा । 8 बडे जूझारोंकी मौत मरा ।

भटीयाणी नानी हुवै । केसोदास को[1] दिन जोधपुर नांनी कनै रह्यो । गांव सरेचो मोटे राजा पटै दीयो हुतो ।

९ अचलो सकतावत[2] । वेगम पटै[3] । राव कहीजतो । आपरो गळो आपरै हाथ काट मूंवो ।[4]

१० रावत नरहरदास । ११ जसवत रावत । ११ विजो ।

११ पतो । ११ कान । ११ रावत केसरीसिघ ११ जगनाथ ।

११ रतनसी । ११ सादूळ । ११ भीम ।

१० रावत नाराणदास । राणा सगररै वास वसीयो । सगर रावताई दी थी ।

११ रावत किसन । ११ कल्याण । ११ स्याम । ११ भावसिघ ।

११ धरमांगद ।

९ वलू सकतावत । राणो उटाळै भूंवीयो तद काम आयो[5] ।

१० लाडखा । ११ साहिव । १० कमो । १० खगार । ११ सुजांण ।

१० रामचद । १० सावळदास । १० कचरदास ।

९ भगवान सकतावत । राणारी दी वूट पटै[6] ।

९ जोध सकतावत । वडो आखाड सिध[7] रजपूत हुवो । रांणारो चाकर जीहरण थाणै हुतो[8] । पछै रावत भानो देवलीयेरो धणी मनदसोररा फौजदारनूं ले नै आयो । असवार २००० पाळा ८२००० ले ऊपर आयो । जोध असवार ६० सू हुतो । सु मैदानरी लडाई करी । रावत भांनो, सैद माखन दोनानूं मार मुंओ[9] ।

१० भाखरसी । १० नाहरखान । अरजन । १० माडण सकतावत

९ दलपत । १० गिरधर । १० गजसिंघ । अजवसिघ ।

९ भोपत । १० नगो । ९ मोहण । ९ माल । १० हरराम ।

---

1 केशोदास कई दिन जोधपुरमें अपनी नानीके पास रहा । 2 3 अचला सकतेका पुत्र जिसको वेगम ठिकानेका पट्टा है, राव कहा जाता । 4 जो अपना गला अपने हाथसे काट कर मरा था । 5 राना ऊटाले गांवमें लडा वहां वलू काम आया । 6 रानाकी ओरसे दिया हुआ वूट गाव उसके अधीन है । 7 रणरूपी अखाडेका सिद्ध अर्थात् अकेला ही युद्धको जीतने वाला । 8 रानाका नौकर जीहरण नामक गांवके थानेमें रहता था । 9 रावत भाना और सैयद माखनखां दोनोंको मार कर मर गया ।

११ विजो । ९ चत्रभुज । १० भोज । ११ वलरांम ।
१२ महासिघ ।
९ वाघ । १० जगमाल । ११ मोहणसिघ । १२ कल्ह ।
९ राजसिव । १० कीतो ।
११ सूरसिघ ।
१२ राणो प्रताप, राणा उदयसिघरो। सोनगरा अखैराजरो दोहीतो। समत १५९६ जेठ सुद ३ रविवाररो प्रताप राणारो जनम ।

राणै प्रतापरा बेटा –

९ राणो अमरसिघ, समत १६१६ रा चैत सुद ७ रो जनम। पूरबीया पवारारो भाणेज । समत १६७१ रा फागुण मांहे वरस नवरा विखाथी खुरमनू मिलीयो[1] । समत १६७६ उदैपुरमे काल कीयो[2] ।
९ सेखो प्रतापरो ।
१० चतुरभुज, जोधपुर वसीयो थो। संमत १६६९ गांव ६ सूं । करमावस[3], सिवाणेरो पटो दीयो ।
९ कल्याणदास ।
९ कचरो ।
९ सहसो प्रतापरो। वडो ठाकुर। विखा माहे राणा अमरसिघरी घणी कीवी चाकरी ।
१० भोपत सहसावत । वडो दातार हजार छै आदमी लीया दरगाह चाकरी राणारो मेलीयो करतो[4] ।
१० केसरीसिघ ।
९ पूरणमल प्रतापरो । जोधपुर वास वसीयो । समत १६६४ मेडतारो गाव समत १६६६ ढाहो[5] गाव ५ सूं दीयो ।

---

1 पैदल नौ वर्ष तक गुप्त रूपसे जगल और पहाडोमें रहनेके सकट सह कर फिर खुर्रमसे मिला। 2 मरा । 3 समदडी से दक्षिण लूनी नदीके किनारे सिवाने परगनेका एक गाव । 4 छ हजार मनुष्योके साथ रानाकी ओरसे भेजा हुआ बादशाहके यहां नौकरी करता था । 5 गावका नाम ।

१ जसवत । १ हाथी । १ मानो । १ गोपालदास । १ चंदो ।
१ सांवल । १ करमसी । १ भगवांन ।

राणो अमरसिंघ नै[1] जहांगीर पातसाहरै वात हुई[2]। राणो अमरो साहिजादे खुरमसूं घोघूंदैमे[3] मिलीयो। तद राणानूं मेवाड़ ऊपर इतरी[4] ठोड जागीरमे दे नै[5] पंच हजारी असवाररो मुनसव कीयो[6]। असवार ह १००० चाकरी थापी[7]।

१ माडलगढ संमत १७११ तागीर कीयो थो। संमत १७१५ वळे दीयो[8]। २००००) एक।

१ वदनोर समत १७११ तागीर कीयो। संमत १७१५ वळे दीयो।

१ फूलीयो संमत १६९४ जागीर कीयो।

१ नीमच,[9] गाव २४५ छै चीतोड थी कोस १५ रु. २२५०००)।

१ जीहरण, गाव १२ देवलियारो गडासिघ[10]।

१ वसाड़, समत १३९४ रावत केसरीसिघनूं मार मै जाँनसाखान उरी लीवी[11] मनदसोररै निजीक[12]।

१ भैसरोड, गांव १२४ खखर भखररी ठोड[13]।

१ सुणेर, गाव १२ रांमपुरा कह्लै[14]। समत १६९४ तागीर।

१ डूँगरपुर, संमत १६९४ तागीर कीयो। समत १७१५ औरगजेब पूठो दीयो[15]।

१ हसवाहलो[16]। समत १७१५ दीयो।

१ देवलियो। पछै रावल जसवत मारीयो · उरो लीयो[17]।

१ वेघम गांव ९४ चोतोडसूँ गाउ[18] २२ बूंदीरै काकड[19]। रेख रु १००००)।

---

1 और। 2 परस्पर मंत्रणा हुई। 3 गावका नाम। 4 इतनी। 5 जागीरमें दे कर। 6 पाच हजार घोड़े और उनके असवारोंके साथ मनसवदार वनाया। 7 वदलेमें असवार १००० की सेवा निश्चित की। 8 पुनः दे दिया। 9 गावका नाम। 10 जव्त। 11 ले ली। 12 पास। 13 खखर-भखरकी (जगल और पहाड़ो की) जगह। 14 पास। 15 वापिस दे दिया। 16 वासवाड़ा। 17 ले लिया। 18 गाउ (गव्यूत) = दो मील। 19 सीमा।

रॉणो अमरसिघ, राणा प्रतापरो । समत १६१६ चैत सुद ७ रो जनम । पवार-पूरबीयाँरो[1] भाणेज । पातसाह जहांगीरसु वरस नवरो विखो जाजरीयो[2] । घणी लडाई करी विखा माहे । मालपुरो (साहिजादो खुरम) राजा मानसिघ उदैपुर बैठा मारीयो[3] । अकवररै दोर माहे[4] । पछै पातसाह जहांगीर ,जोर हठ ऊपर आयो[5] । सगर वडो ग्रासियो हुवो चीतोड आइ वसीयो[6] । धरतीरा रजपूत कितरा-हेक मिलीया[7] और मिलणनूँ तयार हुवा । पातसाह जहागीर आप आय अजमेर बैठो, तरै आपरो दाव[8] देख राणो अमरसिंघ साहिजादानूँ घोघुदे आय मिलीयो । असवार १००० री चाकरी कबूल करी । पछै साहिजादे खुरम दिन १ राणानूँ राख सीख दीनी[9] । कंवर करननूँ ले नै खुरम अजमेर आयो समत १६७१ रा फागुण माहे । संमत १६७६ राणे अमरसिंघ उदैपुर काल कीयो[10] ।

रांणा अमरसिंघरा बेटा –

१० राणो करन । संमत १६४० रा सावण सुदी १२ रो जनम । समत १६९४ फागुणमे काल प्राप्त हुवो[11] ।

१० अरजन अमरारो । सदा राणारो चाकर हीज रह्यो । देवड़ा विजारो दोहीतो ।

१० सूरजमल अमरारो ।

११ सुजाणसिंघ । पातसाही चाकर । फूलीयो पटै ।

११ वीरमदे । पातसाही चाकर ।

१० राजा भीम, वडो रजपूत हुवो । विखे सारे माहे ठोड ठोड़ भीव पातसाही फोजासूँ लड़ीयो । पछै विखै मिटीये[12] साहिजादा खुरमरै चाकर रह्यो । समत १६७९ राजाई

---

1 पूरवियें परमारोका । 2 सहन किया । 3 खुर्रम और मानसिंह कछवाहाके उदयपुरमें बैठे हुए मालपुराको लूट लिया । 4 अकबरके शासनकालमें । 5 बादशाह जहाँगीर अत्यन्त हठ पर चढ़ा । 6 सगर ग्रासियेकी (लूट खसोट करनेवाला) स्थितिमें होते हुए भी चितौड आकर बस गया । 7 देशके कितने ही राजपूत उससे मिल गये । 8 अवसर । 9 जानेकी आज्ञा दी 10 उदैपुरमें मरा । 11 मरा । 12 संकट मिटने पर ।

किताव पायो[1]। मेड़तो जागीरमें पायो। विखे माहे खुरम साथे फिरीयो। समत १६९१ काती सुदी पूरबनु ढस नदी ऊपर लडाई हुई परवेज मोहबतखानसूँ। तठै[2] कांम आयो।

११ किसनसिघ।

११ राजा राइसिघ। समत १६९५ राजाई पाई। नाराणदास पातावतरो दोहितरो।

१० वाघ, राणा अमरारो। समत १६६५ एक वार रावलै वसतो थो। गाव २० दूधवड[3] देता था, पण रह्यो नही।

११ सवळसिघ। पातसाही चाकर हुवो। वाघ प्रथीराजोतरो दोहितरो।

१० रतनसी, राणा अमरारो।

१० रांणो करन अमरारो। समत १६७६ टीके बैठो। सु सतोसी ठाकुर हुवो।

राणा करनरा वेटा –

११ राणो जगतसिघ। समत १६६४ रा भादवा सुद १२ रो जनम। मेहवेचा-राठोडारो[4] भाणेज।

११ गरीवदास। घणा दिन राणाजी कनै रह्यो। पछै पातसाही चाकर हुवो। समत १७१४ रा जेठ माहे धवलपुररी लडाई काम आयो, मुरादवगस साथे।

११ छत्रसिघ।

११ मोहणसिघ सुरतेरो।

११ राजसिघ।

राणो जगतसिघ समत १६९४ मे उदेपुर टीके बैठो। समत १७१० काळ प्राप्त हुवो। जगतसिघ वडो दातार विवेकी ठाकुर हुवो। कलजुग[5] माहे वडा २ सुक्रत कीया। वडा २ दान दीया।

---

1 राजाका पद मिला। 2 वहा। 3 वीस गांवो सहित दूघोड़का पट्टा देते थे फिर भी नहीं रहा। 4 मारवाड़के मालानी प्रान्तमें मेहवा नगरके नाम पर मेहवेचा - राठोड़ोंकी एक शाखा। 5 कलियुग।

१२ रांणा राजसिंघ ।

१२ अरसी ।

वात[1] एक रांणो उदैसिंघ उदेपुर वसाइयारी[2]—

समत १६२४ चैत सुद ११ अकबर पातसाह चीतोड लीवी। सीसोदीयो पतो जगावतरो जैमल वीरमदेओत,[3] ईसर वीरमदेओत और ही घणो साथ गढमे काम आयो। चीतोड छूटा राणो उदयसिंघ एक वार कुभलमेर आयो। तठा[4] पछै वेगो हीज उदेपुर वसायो। उदैपुररी ठोड़ अठै[5] देवडा वसता गाव ५२ गिरवाररा[6] कहावता। तिका गावारी विगत—

"गिरवार देवडारो। अजेस[7] देवडा इणा गावा माहे माणस[8] हजार २००० रहे छै। १ पीछोली। १ पालडीरी। ठोड उदैपुर।

| | | | |
|---|---|---|---|
| | १ आहाड। | १ दहवारी। | १ टीकली। |
| १ लकडवा। | १ कलडवा। | १ मटूंण। | १ कोटडो। |
| १ तीतरडी। | १ भवणो। | १ आवरी। | १ वेदलो। |
| १ रुआध। | १ छापरोळी। | १ लखाहोळी। | १ वेहडवा। |
| १ चीखलवा। | १ वडगाव। | १ देवडी। | १ मूंडखसोल। |
| १ वडी। | १ थूर। | १ कवीथो। | १ वरसडो। |
| १ नाई। | १ बुजडो। | १ सीसारमो। | १ धार। |

देवडो बलू उदेभाणोत[9] देवडामे वडेरो[10]। दीवाणरो चाकर छै। टका५०००सूं इये जायगा[11] आपरै नांवे[12] पाधर[13] माहे पीछोला तळाव ऊपर सहर उदैपुर वसायो। गाव निजीक छोटोसो माछळो मगरो[14] छै। माछळारा मगरासूं उतरनै[15] सहर छे। दीवाणरा मोहल[16] पीछोळारी पाल ऊपर छै। मोहलाथी[17] आथवणनूं[18] तळाव लगतो[19] सहर छै। कोस २ रै फेर छै[20]। सहररी एक कांनी[21]

---

1–2 राणा उदैसिंहने उदयपुर बसाया जिसका एक वर्णन। 3 वीरमदेका पुत्र। 4 जिसके बाद तुरत ही उदयपुर बसाया। 5 यहां। 6 देवड़ोके इन गावोंका समूह पहाडोंसे घिरे हुए रहनेके कारण गिर वार=गिरि वाला कहलाता था। 7 अभी तक। 8 मनुष्य। 9 उदैभाणका पुत्र। 10 पुरखा। 11 इस जगह। 12 अपने नामसे। 13 समतल भूमि। 14 पहाड। 15 उत्तर दिशाकी ओर। 16 महल। 17 से। 18 पश्चिममें। 19 लगता हुआ। 20 दो कोसके घेरेमें है। 21 ओर।

माछळारो मगरो छै। एकण-कानी[1] खरक-[2] दिस सिसरवारो मगरो छै। तळाव घणो भरीजै तरै [3] पाणी मगरै ताई[4] जाय छै[5]। तळावमे पांणी माछळारा मगरारो, सीसरवारा मगरागे घणो आवै छै। तळाव निपट [6] वडो छै। माहे मगरमछ रहै छै। तळाव ऊंडो घणो छै। ते[7] तळावरी मोरी[8] छूटै छै। तिणथी[9] घणी धरती दोळो[10] फिरै छै। तिणरो घणो हासल हुवै छै[11]। पछै तळावरो पाणी वेडच नदी भेळो हुवै छै,[12] अहाडरी पाखती जातो थको[13]। पीछोला पाखती दीवाणरा कोट, महल, सहर छै। मोहलासूं निजीक तळाव पीछोला माहे लाखोटारी[14] ठोड़ तळाव विचै रांणे अमरसिंघ वादळ-महल करायो छै। तळावरी पेली तीर [15] राणे जगतसिंघ मोहण-मिंदररा मोहल कराया छै सु छै[16]। वाग छै। सहररी पाणीरी मुदार[17] तळाव पीछोला ऊपर छै। बीजो[18] पाणीरो निवाण[19] तिसडो[20] सहररी पाखती घाटू छै[21]। वाग-वाडी छै[22]। सहर माहे देहुरा[23] १५ तथा २० छै। जैनरा, सिवरा।

सहररी वसतीरो उनमान[24]–

१ घर २००० महाजनारा – ओसवाळ, महेसरी, हूवड, चीतोडा, नागदहा, नरसिंघपुरा, पोरवाड।[25]

२ घर १५०० ब्राह्मणारा।

३. घर ५०० पचोळीयारा घणा[26], दूसरा भटनागर।

---

1 एक ओर। 2 वायव्य और पश्चिम दिशाके बीचकी दिशा। 3 तब। 4/5 तक जाता है। 6 अत्यन्त। 7 उस। 8 नाली। 9/10 जिससे पानी बहुत सी भूमिके चारो ओर फिर जाता है। 11 जिसका बहुत लगान प्राप्त होता है। 12 वेडच नदीमें मिल जाता है। 13 आहाड गावके पास जाते। 14 किनारेमे पानीकी दूरी और गहराईका अनुमान लगानेके लिये बनाया हुआ मान सूचक टीबा एवं तैराकोकी प्रतिस्पर्द्धामें निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुँच जानेका चिह्न या स्थान (लक्ष्य घट्ट)। 15 परले किनारे। 16 कराये है सो है। 17 आधार। 18 दूसरा। 19 जलाशय। 20 जैसा। 21 कम है। 22 बाग बगीचे है। 23 मंदिर। 24 अनुमान। 25 महाजनोकी (वणिक समाजकी) सात जातियोंके नाम। 26 कायस्थ और भटनागरोके मिलकर ५०० घर, जिनमें कायस्थोके अधिक।

४ घर ६० भोजग[1] ।

५ ५०० खाट भील[2] ।

६ ५००० माहिलवाडियो लोक[3] ।

७ घर १५०० रजपूत ।

८ ९००० पूणजात[4] ।

सहररी वसती घर हजार वीसरो उनमान छै ।

उदैसागर तळाव समत १६२० तथा समत १६२१ राणे उदैसिघ बंधायो । कोस १० रै फेर[5] पाणी छै । पाळ लबी गज ५००रो ब्रधेज छै[6] । आडी गज २५०[7] । ऊंची गज ७० पाणीमे । गज पाणी वारै उघाडी[8] । नाळो[9] गज ५० ऊडो, गज १२ रै पनै[10] भाखर वाढ काढियो छै ।

पीछोलो राणा लाखारी वार[11] माहे किणही विणजारे बँधायो[12] । पाणी कोस ८ रै फेरमे छै ।

श्रीएकलिगजी महरसू कोस ५, देहुरो मगरा ऊपर छै । उदैपुरसूं भरहेर[13] कूंण माहे छै । गाव देलवाडो झाला कल्याणवाळो एकलिगजीथी कोस १ छै । देवी राठासणरो[14] देहरो भाखर[15] ऊपर छै, मु एकलिगजीथी कोस २ । एकलिगजीरा देहुराथी बेउ[16] तरफ भाखरारी गाळ[17] छै । देहुरारा दोळो छोटो कोट छै । देहुरो एकलिगजीरो चौमुखो[18] छै । चार दरवाजा छै । देहुरा ऊपर डड कळस[19] सोनारो छै । पाखती और ही देहुरा घणा छै, नै एकलिंगजीरा देहुरा

1 शाकद्वीपी अर्थात सेवक जाति । 2 भील, नायक आदि । 3 कृषि कर्म करने वाली समस्त जातियें, जिनमें चाकर आदि आश्रित जातियें और भील, थोरी, नायक आदि भी सम्मिलित है । 4 इनके अतिरिक्त पवन अर्थात् शेष जातियो के ९००० घर है । (ब्राह्मण आदि चार वर्णोके अतर्गत समस्त जातिओके समूहको छत्तीस-पवन कहा जाता है) । 5 घेरमें । 6/7 जिसकी लवाईका वाध ५०० गज और चौडाईका २५० गज है । 8 वारह गज पानीके ऊपर । 9/10 नालेकी गहराई ५० गज, जिसकी चौडाई १२ गज–पहाडको काट कर निकाला गया है । 11 समय । 12 किसी वनजारेने उसे वघवाया था । 13 ईशान और पूर्वके वीचकी दिशा । 14 राष्ट्रश्येना देवी । 15 पहाड । 16 दोनो । 17 दरी । 18 चार मुंहो (द्वार) वाला । 19 मदिरके शिखरके ऊपरका ध्वजदण्ड और कलश सोनेके है ।

निजीक उदैपुर दिसा निजीक कुंड छै। एकलिंगजीथी निजीक[1] उदैपुर दिसा[2] कोस १ नागद्रहो गाव छै। नागदहा गावरा उगवण वडो तळाव छै। पडिया-भाजा घणा देहुरा छै[3]। नागदहाथी सीसोदिया नागदहा कहावै छै। इण गाव इणारा वडेरा रह्या छै। तळाव उदैसागर उदैपुर सहरसूं कोस ३ उगवणानूं छै, दहवारीरी घाटीसूं निजीक। तळाव निपट वडो। कोस २० चोगिरद विसतार छै भरीजै तरै[4]। घोवूंदै कुंभलमेररै मगरांरो पाणी आवै। तिणरी नदी वेडच आवै छै, सु तळाव माहे आवै छै। थोडो वहुत पाणी वेडचमे सदा वहतो रहै छै नै तळाव उदैसागर दोळा चोगरद मगरा छै। पावडा २०० तथा २५० उदैसागररी पाळरो वधेज छै। सिगळो[5] नाळो मोरीरुखो[6] सदा वहतो रहै छै। तळाव हेठै[7] पाणी नाळारो वहै छै, तिण ऊपर राणै जगतसिघरा कराया मोहल छै।

घाटी गाहरी हकीकत[८]—

दहवारी घाटी सहरथी कोस ३ छै। केवडारी नाळ सहरसूं कोस १ कूंण रुपागास[9] माहे छै। सहरसूं कोस ८ डूंगरपुर वासवाळा गुजरानरै पैडे[10] भाखर नाळ कोस ३ छै। केवडो गाव नाळारै पैलै ढाळ छै[11]। दोना कानी भाखर छै। जावररी नाळ सहरसूं कोस ८ दिखणादनूं। चावडेरानूं पैडै। दीवाणरै विनाण[12] चावड मगरा छै। विखैरी मदार[13] इणा मगरा माथै छै। जावररी खाण रूपारी[14] रोज १ रु० ८००) तथा ५००) आवै। जसद, रूपो तीसरै[15] घोवूंदो कोस ९ आथूणनूं[16]। जीमणैरो[17] घाटनूं पैडो। खमणोररो घाटो सहरती[18] कोस ३ ईसाण-कूंणनूं[19] मारवाडनूं घाटो। मायररो

---

1 एकलिंगके पास। 2 उदयपुरकी ओर। 3 टूटे-फूटे और विना टूटे-फूटे अनेक मंदिर हैं। 4 तब। 5 समस्त। 6 जिधर मोरी है उस रुखमें। 7 नीचे। 8 वर्णन। 9 पूर्व और अग्निकोणके बीचकी दिशा। 10 मार्ग। 11 उस ओरकी ढलाईमें। 12 संकटकालमें राणाके गुप्त रूपसे रहनेके लिये चावडके पहाड है। 13 आधार। 14 जावरकी चांदीकी खानसे ८००) व ५००) की आय होती है। 15 उसमेंसे चादीके साथ जसद भी निकलता है। 16 पश्चिमकी ओर। 17 दहिनी ओर। 18 शहरसे। 19 ईशानकोण।

घाटो कोस १४ पचाध-कूँणनूँ[1]। आवड-सावडरा वडा मगरा छै। घाटारै ढाळ देहुरो राणपुरमे श्रीआदनाथजीरो सा धरणरो[2] करायो। वडो प्रसाद[3] छै। पहली अठै वडो सहर वसतो। ऊदा-कूँभावतारो वसायो। हमै तो[4] सहर सूनो[5] छै। राणपुर आगे कोस तीन सादडी वसै छै। घाणेरारो[6] घाटो उदैपुरसूँ कोस १९ वायव[7] कूँणमे, गढ कुभलमेर निजीक। जिल्हवाडारो घाटो सहरथी[8] कोस २३। मानपुरैरो घाटो सहरथी कोस ४० सारण उत्तरे।

गिरवारी हकीकत–

उदैपुररी गिरदवारी कोस ५। आगे गिरवो[9] कहीजै। गाव ५२ देवडारो उतन[10] छो। तिण माहे उदैपुर वसिया वे तूट गया[11]। हळखडसा[12] अजै[13] गावा माहे छै।

च्यार-छपनरी[14] विगत–

उदैपुर कोस[15] छपनिया-राठोडारो[16] उतन छै। श्रै छपनिया राठोड सोनगरा पोतरा। वडा भूमिया[17]। राणो उदैसिघ इणारै मेवाड त्रास तोडणनू हुवो थो[18], मु राणा प्रतापरी वार[19] माहे जाता तूटा। पिण छूटा-फूटा[20] छपनिया अजेस-ताई[21] छपनरा गावा माहे छै। मेवास[22] को नही।

च्यारै छपनरा गाव २२४–

५६ एक झाडोलरी लार[23]।

५६ एक सलूँबर लार।

---

1 उत्तर और वायव्य कोणके बीचकी दिशा। 2 शाह धरणका बनवाया हुआ राणपुरमें आदिनाथजीका मदिर। 3 बडा मदिर है। 4 अब तो। 5 खाली। 6 घाणेराव नामक गाव। 7 वायव्य कोण। 8 से। 9 उसके पूर्व गिरवा कहलाता था। 10 जन्म-भूमि। 11 उदैपुर वसा तव वे टूट गये। 12 हल चला कर कृषि पर निर्वाह करने वाले (कृषक)। 13 अब भी। 14 राठोडोंके छप्पन-छप्पन गाँवोके चार समूह। 15 कोसोंकी सख्या मूल प्रतिमें नहीं है। 16 चार समूह वाले छप्पन-छप्पन गावोमें रहने वाल राठोड राजपूत, जो अब भी छपनिया राठोड ही कहलाते है। 17 बडे जागीरदार। 18/19 राना उदयसिंह इनका मेवाडमें रहना उखाडनेको तत्पर हुआ था सो राना प्रतापके समयमें ये टूटे। 20/21 फिर भी छुट-पुटे छप्पनिये अभी तक इन छप्पनके गावोंमें है। 22 छिपे हुए रह कर लूट-खसोट करनेकी स्थितिमें कोई नहीं है। 23 छप्पन गाँवोका एक समूह झाडोल गाँवके अन्तर्गत।

५६ सैवरारी लार ।

५६ च्रावँड लार ।

उदैपुरसूं इतरै[1] कोसे[2] औ सहर छै–

| | |
|---|---|
| २९ चीतोड । | ४० सोभत । |
| २० कुंभलमेर । | ९० अहमदावाद । |
| ३५ सीरोही । | ४५ ईडर । |
| ३० डूंगरपुर । | ४० देवळियो । |
| ५२ मनदसोर[3] । | ३५ जोजावर । |
| ४० मीमच[4] । | २० कपासण । |
| २० ताणो । | १७ मोही । |
| ६७ जोधपुर । | ६० मेडतो । |
| ५० जाळोर । | ६० मालपुरो । |
| ६५ अजमेर । | ८५ वधनोर । |
| ३० वांसवाळो । | ९० उजेणसूं अजमेर[5] । |
| ४५ माडलगढ । | ५० वूंदी । |
| ३५ करहेडो । | १२ घोघूंदो । |
| ११ ऊटोळाव[6] । | |

चीतोडसूं इतरा[7] सहर इतरै कोसे –

| | |
|---|---|
| २९ उदैपुर । | ४० वूंदी । |
| ४० गढ रिणथभोर । | १३ पुर । |
| ३५ वधनोर । | ५० वाँसवाहळो । |
| २८ कोठारियो । | २७ दसोर[8]। |
| २५ फूलियो । | ६० उजेण । |
| १७ माडलगढ । | ६७ मेडतो । |
| १५ वेवम । | १७ माडल । |
| ७० ईडरगढ । | ३० देवळियो । |

1 इतने । 2 कोसों पर । 3 मदसोर । 4 नीमच । 5 उज्जैन हो कर अजमेर ६० कोस । 6 ऊठाला । 7 इतने । 8 मंदसौर ।

१५ मीमच[1]। ५७ मूळपुरो[2]।

४५ सिरवाड।

दीवाणरी हद, कोसा, दिसावारी विगत—

मारवाड कूंण-वायव[3]। उत्तरथा डावी[4]। अजमेरसूं कोस ६०, ब्यावर राणारी। समेळ खालसा[5] अजमेररी। मानपुरारो घाटो[6]। सारण घाटावळ[7]। जाजपुरसूं हद लागै[8]।

रामपुरासूं कोस ४५ तथा ५० हद। उगवणथा कूंण जीवणी दिस गाव जारोडो रामपुरारो[9]।

देवळियासूं कोस ४२, दखणरी डावी तरफ[10] दीवाणरो गाव धीरावद नै[11] आगै देवळियो कोस ५ विचै छोटो गाव भैसरोड दीवाणरी[12]।

बूंदी कोस ६५ तथा ७० उगवण[13] था[14] क्यूंई[15] डावेरी[16] दसोर दिसा[17] हद। कोस २५ तथा २७ दिखणथा डावेरी रूपारास[18] नीमच दीवाणरी। लिखमडी दसोररी।

डूंगरपुर वासवाळा बीच भीडवाडो मूंडूलो गाव दीवाणरो छै। डूंगरपुरसूं हद कोस १९ दिखण खरक[19] दिसा।

सोमनदी सीव कोस १९। सलूंबर, सेवाडी, आसपुर, ईडरसूं कोस ३० खरक कूंण माहे। पानोरो भीलारो मेवास, दीवाणरा थको छै[20]। गाव छाळी-पूतळी राणारी। दलोल ईडररो। डूंगरपुर वासवाहळा बीच गाव जवाछ भीलारो मेवास छै, सु दीवाणरा थका छै।

---

1 नीमच। 2 मालपुरा। 3 वायव्य कोणकी ओर मारवाड। 4 उत्तरसे बाईं ओर। 5 समेल। अजमेरके अंतर्गत बादशाही गाव है। 6 दर्रा। 7 बडा दर्रा। 8 जहाजपुरको सीमा लगती है। 9 पूर्वसे दाहिनी ओर रामपुरेका जारोडा गांव। 10 दक्षिणकी बांई ओर। 11 और। 12 धरियावद गाँवके आगे देवलिया ५ कोस, उसके बीच छोटा गाँव भैसरोडगढ़ जो दीवानका (महाराणाका) है। 13 पूर्व दिशा। 14 से। 15 किंचित्। 16 बांई ओर। 17 ओर। 18 एक गाँवका नाम (मारवाडकी १६ दिशाओंमेंसे 'रूपारास' एक दिशा भी है जो आग्नेय और पूर्व दिशाके बीचमें है)। 19 मारवाडकी १६ दिशाओंमेंसे एक दिशा जो वायव्य और पश्चिम दिशाके बीचमें है। 20 भीलोंकी रक्षाका (गुप्त) स्थान 'पानोरा' जो दीवाणका (महाराणाका) है।

सीरोहीसूँ हद कोस २५ आथुण[1] दिसा ।

वासवाहळो उदैपुरसूँ कोस ४० वीच डूँगरपुर । काकड[2] नही ।

उदैपुरसूँ कोस ५० ईडर । इण मारग[3]–

१ उदैपुरसूँ सीगडियो । ३ चंदवासो । ४ आहोर । ७ भीमरो ओगो (गोडो) । ७ पानोरो भीलारो । ९ छाळी पूतळी राणारी । ३ दलोल कलोल ईडररी । ९ ईडर ।

उदैपुररी हवेलीरा[4] गाव निजीक[5] तिणरो[6] हैसो[7] भोगरो[8] वरसाळी[9]-हैसो ३ लाग सूवो[10] आधो । ऊनाळी[11]हैसो ३ आध पडै ।

वात–

कछवाहो मानसिघ कवरपदे[12] । अकबर पातसाह गुजरात मेलीयो छौ[13] । तद चीतोडधणी प्रताप छै । सु राणेजी मानसिघ कनै[14] सोनगरो मानसिघ अखैराजोत, डोडियो भीव[15] साडावत मेलनै हळभळ कराई हुती[16] । सु मानसिघ कछवाहो पाछो वळतो[17] डूँगरपुर आयो । उठै[18] रावळ सैंसमल मेहमानी करी[19] । उठाथी[20]सलूँबर आयो । तरै सीसोदिये रावत खगार रतनसीयोत मेहमानी करी । राणोजी तद घोघूँदै रहै छै । रावत खगार मानसिघरी रीत-भात दीठी[21] । प्रकत एकण भातरी छै[22] । सु राणाजीनू कहाडियो[23]–'राज मानसिघसूँ मत मिळो । ओ एकण भातरो आदमी छै ।' राणो वरजियो रह्यो नही[24] । आय मिळियो । मेहमानी करी । जीमण पगा[25] विरस[26] हुवो । तद मानसिघ दरगाह गयो । राणा ऊपर मुहम

---

1 पश्चिमकी ओर । 2 सीमा । 3 उदैपुरसे ईडर जाते समय निम्न प्रकार गाँव अंकित संख्याकी दूरीसे मार्गमें आते हैं । 4 निजी । 5 समीप । 6 जिसका । 7 हिस्सा । 8 कृषककी ओरसे ( खेत भोगनेके उपलक्षमें ) खेतके स्वामीको दिया जाने वाला अन्नके रूपमें अमुक परिमाणमें निश्चित किया हुआ एक कर । 9 खरीफ ( बरसाती या सावनू ) फसलका भाग । 10 सहित । 11 रबी (वसंत ऋतु) की उपजका भाग । 12 कुमार-पद पर । 13 भेजा था । 14 पास । 15 डोडिया शाखाका क्षत्रिय साडाका पुत्र भीम । 16 तैयारी कराई थी । 17 पीछे लौटता । 18 वहाँ । 19 भोजन आदिसे सम्मान किया अतिथि-सत्कार किया । 20 वहासे । 21 तौर-तरीका, चालढाल । 22 प्रकृति एक निराले ही ढंगकी है । 23 कहलवाया । 24 मना करने पर भी माना नहीं । 25 भोजनके कारण । 26 मनोमालिन्य ।

माग लीधी[1] । घोडा ४०००० ले ऊपर आयो । निजीक आया तठै दुरदास परबतसिघरो पूरबियो नै सीसोदियो नेतो भाखरोत बे[2] वासै[3] मेलिया था[4], सु मानसिघरो डेरो बनास ऊपर गाव मोळेला हुवो छै । नै राणारो डेरो लोहसिगे हुवो छै। उदैपुरसूं कोस ९ उत्तरनू । कोस ३ रो बीच छै । तद मानसिघ सिकार-रमतो[5] असवार हजार १००० राणारा डेरासूँ कोसेक[6] आयो नै आपरो[7] डेरो कोस २ इक[8] वासै रह्यो, तरै[9] इण दावसूँ दीठो[10] । वडी घातमे आयो[11] । राणानू जाय कह्यो "वेगा हुवो[12], ज्यूँ बैठा छौ त्यूं चढो[13] । मानसिंघ वडी घातमे[14] । चाळीस हजार घोडा वासै मेल-नै हजार असवारसूँ आयो । रावळो बडो भाग[15] । केई मार लाछा केई भाज जाय छै[16] ।" तद राणेजी चढणरी तयारी करी । पण झाले वीदे चढण न दिया। सवारै[17] खभणोर बनासरै ढाहे[18] वेढ[19] हुई । राणा कनै असवार हजार ९००० तथा दस हुता । कछवाहे बेढ जीती । राणे हारी । इति सपूर्ण ।।

अथ मेवाडरा भाखरारी[20] वात लिख्यते—

रूपजी-वासरोड[21] देसरै फळसै[22] छै । रूपजीसूं कोस ३ जील-वाळो दिखणनू[23] छै। जीलवाळाथी कोस ३ रीछेर उगवणनू छै। रीछेर वाघोरारी खाभ[24] छै । जीलवाडा नै रीछेर वीच अमजमाळरो वडो भाखर छै । लाबो कोस ५ छै । उलै-कानी[25] कैलवो छै । वाघोररै आगै घाटो गाव छै। तठा आगै[26] भोरडारो पहाड लाबो कोस ५ उत्तर-दिखण छै । तठै भोरड नै मछावळा वीच

---

1 मेना माग कर ली। 2 दोनोंको । 3 पीछे । 4 भेजा था । 5 शिकार खेलता हुआ । 6 कोस भर निकट आ गया । 7 अपना (उसका) । 8 दो कोस भर । 9 तब । 10 दुरसदासने देखा कि मानसिंह अच्छे दावमें आ गया है । 11 आक्रमण कर दें ऐसी स्थितिमें आ गया है । 12/13 शीघ्रता करो । जैसे बैठे हो वैसे ही चढनेकी तैयारी करो । 14 मानसिंह वडी घातमें आ फँसा है । 15 श्रीमान्का बडा भाग्य । 16 कइयोंको मार लेते है और कई भाग जाते है । 17/18/19 दूसरे दिन प्रात काल खमनोरके पास बनास नदीके तट पर युद्ध हुआ । 20 पहाडोंकी । 21/22 रूपजी-वासरोड मेवाड देशकी सीमा-द्वार पर स्थित है । 23 को । 24 पर्वतकी मोडमें आया हुआ है । 25 इस ओर । 26 वहाँसे आगे ।

समीचो गाव कूंभावतां सीसोदियारो उतन छै । उदैपुरसूं समीचो कोस १७, रूपजीथी कोस १२ छै । कूंभळमेरसूं कोस १० समीचो छै । तठा आगै मछावळो पहाड कोस ७ लांबो छै । गाव ९ मछावळा दोळा[1] छै–१ समीचो । १ मदार । १ मचीद । १ मदारडो । १ वरदाड़ो । १ वरणो । १ गमण । १ ओरू । मछावळा ऊपर पांणी घणो । झाड[2] घणा । वेरणी नावै[3] । तठा आगै वरवाडो । तठासू वर नदी नीसरी छै । वनास नीसरी छै[4] । तठा आगै घासेररो मगरो कोस १ लाबो छै । तठा आगै पीडरझापरो मगरो छै । घांसेर नै पीडरझाप वीच झासनाळो कोनरो कोस २ छै । तठा आगै खमणरो मगरो छै । तठै लोहसीग गांव छै । तठै एक छोटी-सी नदी नीसरी छै । खमणरो मगरो उत्तर दिखण कोस २ छै । तठा आगै ईसवाळरो मगरो छै । कडी गाव वसै[5] छै । गिरवारा भाखरासू जाय लागो छै । ईसवाळ उदैपुरसू कोस ५ उत्तर पछिमनू छै । जीलवाड़ाथी कोस ५ देसूरी । देसूरीथी कोस १ घाणेरो[6], कुभळ-मेररी तळेठी[7] तठै । आगै कोस २ कुभळमेररो पहाड़ कोस १५ री गिरदवायमे[8] छै । सादडी, रांणपुर, सेवाडी ताई[9] कुभळमेररो मगरो छै । सेवाड़ी कुभळमेरसू कोस ७ छै । तठा आगै राहगरो मगरो छै । निपट वडी ऐदी[10] ठोड़ छै । पाणी पहाड़ माहे निपट घणो छै । गाव २५ राहग दोळा वसै छै । राहग कोस १६ लाबो छै । राणारै विखो[11]विनाण रहणनू वडी ठोड़ छै । राहग सीरोहीरा सरणवआरै मगरै जाय लागो छै । राहग कोस १५ लाबो, कोस १५ पनरै पहळो[12] छै । कोस ३० री गिरदवाई छै । गावां रैत[13]– सीरवी[14], वाभण[15], वांणीया[16] वसै छै । गावाँरी विगत –

भाटोद, भूणोद, माल्हणसू, नॉणो, वेहड़ो, पाद्रोड़, पीडवाड़ो सिरोहीरो । वेकरीयारो घाटो । जूही नदी उठै छै । राहग वालीसारो

---

1 चारो ओर । 2 वृक्ष । 3 वर्णन करनेमें नहीं आवै । 4 जहासे वर और बनास नदियें निकली है । 5 बसा हुआ है । 6 घाणेराव । 7 तलहटी । 8 विस्तार में 9 । तक । 10 अत्यन्त विकट स्थान है । 11 सुरक्षाके लिये सकट कालमें । 12 चौड़ा । 13 प्रजा । 14 एक कृषक जाति । 15 ब्राह्मण । 16 वनिये ।

उतन[1]। जरगा नैं राहग वीच आ ठोड देसेहरो देस कहीजैं। उणा गावा रजपूत, सांसण[2] वसै छै। खरवड, चंदेल, बोडाणा, चादण वसै छै। रैत ज्यू भोग दै[3]। चावळ, गोहू[4], चिणा, उडद घणा नीपजै। आबा छै। विचली-पाख[5] मछावळा नै जरगा वीच कुहाडियो नळो[6] कहीजै छै। उदैपुरसू कोस २० छै। कुहाडीयो नळो कोस १० लाबो छै। कळूझो रेवली उठै गाव छै। जरगो कुहाडिया नळासू जीमणो छै। जरगारी पैली-कानो[7] केलवाडो नै दिखणनू रोहिडो गाव छैं। केलवाडाथी कोस ९ रोहिडो छै। दोळा-दोळा[8] जरगारा गाव छै। ऊपर–१ सायरो। १ आंतरी। १ गुढो। १ काकरवो। १ कीसेर। १ गूदाळी। जरगा ऊपर राजा हरीचदरी थापी गुसाईरी पादुका छै[9]। तठै त्रिसूल छै। जरगा ऊपर पाणी घणो। तठा आगै नाहेसर भाडेररा मगरा कोस सात ७ रोहिडासू छै, सु रोहिडासू लागे छै। धरती निपट बाकी[10]। गाव अठै घणा छै। मेवाड सीरोहीरी काकड। नै[11] मारग पिण सीरोहीनै[12] उदैपुरसू जाय। गाव–१ ढोल, १ कमोल, १ सीघाड़, १ बोखड़ा। घोघूद भाखर उलै-कानै[13] भाडेरथी कोस ४ उरै पूरबनू। गाव दिखणनू–गाव अठै पार-बाहिरा[14] छै। ग्रै निपट[15] वडा मगरा। टगरा-वती, झडोलरा मगरा, गढ आहोररा मगरा, नाहेसररा मगरा,

---

1 निवास, ठिकाना। 2 सासण (शासन) = साधु ब्राह्मण आदिको किसी राजा या जागीरदारकी ओरसे प्राय. उसकी मृत्युके समय सकल्प करके दानमें दिये हुए खेत वा ग्राम आदि जिन पर उनका निजी शासन रहता है और उनसे किसी भी प्रकारका कर नहीं लिया जाता हैं। किन्तु यहा 'सासण' शब्द दानमें दी हुई भूमिके अर्थमें व्यवहृत नहीं हुआ है। इस प्रकारकी भूमिके भोक्ताओसे तात्पर्य है। मंदिर, मठो आदिका पूजा आदि प्रबध निरतर चलते रहनेके निमित्त एव चारण, भाटो आदिकी काव्य रचनाओं पर भेंट स्वरूप दी जाने वाली भूमि वा ग्राम भी 'सासण' कहलाते हैं। कहीं-कहीं 'सासण' और डोंलीको, किंचित् अंतर होते हुए भी एक ही मानते हैं। 3 खरवड़, चदेल आदि राजपूत जो यहा रहते है (उन्हें राजपूत होनेके नाते कोई मुआफी नहीं है) साधारण प्रजाकी भाँति भोग आदि कर देते है। 4 गेहू। 5 मध्य-पार्श्वमें। 6 नाला। 7 उस ओर। 8 चारों ओर, आसपास। 9 जरगा पहाडके ऊपर राजा हरिश्चन्द्र द्वारा स्थापित गुसाँईकी चरण-पादुका है। 10 विकट। 11 और। 12 को। 13 इस ओर। 14. अपार। 15 अत्यन्त।

पनोरा भाडेरा मगरा, पई-मथारारा मगरा, देवहररा मगरा। इणाँ आगै माणचरा मगरा कोस १५ खरक माहै। भील वसै।

इणाँ-आगै[1] ईडर दिसा[2] गगादासरी सादडीरा मगरा, भील वसै। इणां आगै छाळी-पूतळीरा मगरा, दलोल कलोलरा मगरा ईडरसू कोस ७ उरै। डूगरपुर नै देव गदाधर वीच जवाछरा मगरा छै। भील वसै। ईडर डूगरपुरसू कोस १० छै। पीपळहडी सीरोडरा मगरा, छपन चावड नै जवाछ, जावर वीच उदैपुरसू कोस १७। चावळ, गोहू हुवै। झाड, पाहाड घणा छै। सूरज दीसै नही। वारवरड़ारा मगरा, भील वसै। चावळ, गोहू ऊपजै। आंवा फूलाद[3] घणो। तठा आगै डूगरो[4] देस छै। डूगरपुरसू डावो[5] वाँस-वाहळौ छै। वासवाहळाथी[6] देवळिया वीच मेवाडरा गाव छपनरा जांनो,[7]जगनेर[8] छै। सु[9] देस मूडल[10] कहीजै। गाव धीरवद वडवाळारो परगनो छै। अठै वडा भाखर छै। घणा झाड छै। राठोड़ छपनिया अर चहवाण वसै छै। तठा-उरै[11] धीरवदथा आथुणनू मेवलरा मगरा छै। तठै अै गांव छै —

१ सलूवर। चूडावतांरो उतन।

१ वाहरडो। सलूवरथी १२।

१ वाभोरो। सारगरो। सारग देओतारो[12] उतन।

वाहरड़ा सलूवर वीच वडा पाहाड़ छै। वाहरड़ाथी कोस ३ उदैसागर आथवणनू छै।

उदैसागरसू कोस १ दहवारी छै।

दहवारीथी कोस २ आहाड़ छै।

आहाडथी कोस १ उदैपुर छै। [पीछोलारी पाळ मोहल[13] छै। उदैपुरसू कोस ५ सीगडियारो भाखर पछमनू[14] छै। वडो मगरो छै। तठा आगै धाररो पाहाड कोस ३ उदैपुरसू छै। लाखाहोळी

1 इनके आगे। 2 ओर। 3 पुष्पो वाले वृक्ष पौधे आदि। 4 डूंगरपुरका। 5 बांया। 6 से। 7/8 गांवोके नाम। 9 वह। 10 मण्डल ? 11 जहासे इस ओर। 12 सारगदेवके वंशजोका। 13 महलमें। 14 पश्चिममें।

उतरनू छै। तठै चीरवारो घाटो उतरनू छै। आंबेरी गाव छै। चीरवाथी[1] कोस २ एकलिगजी छै। उदैपुरसू कोस ५ एकलिंगजी छै।

एकलिगजीसू कोस १ राठासणरो मगरो छै। कोस २ गिरदवाई छै। पाणी नही।

एकलिगजीसू कोस १ झालावाळो देलवाडो छै।

देलवाडाथी कोस ७ कोठारियो चहवाणारो[2] छै। उदैपुरसू कोस १२ छै। अठै देलवाड़ा कोठारिया बीच सहलसा[3] मगरा छै।

कोठारियासू उगवणनू मेवाड़रो मझ[4] देश चौड़ो छै।

कोस २५ चीतोड कोठारियासू छै, उगवणनू।

चीतोड़थी कोस १ अरवणरा मगरा मोटा छै। पिण ऊपर पाणी नही। नै अरवणरा मगराथी कोस २ पठार[5] छै। भाखर ऊपर गाव छै। तिका[6] गावारी विगत–

पठाररा गाव–

४४ खैरबरा। रैत गूजर, बाभण।

८४ रतनपुररी चोरासी[7], चूडावतारी ठोड। गोहू, चिणा नीपजै[8] ९४ वेघमरो बडो मुलक। बडी पनवाडी। गोहू, चिणा नीपजै। चूडावतारी ठोड़।

वेघमथी कोस ७ बीझोली पँवार इंद्रभाणरी।

महीनाळ तीरथ माडलगढथी कोस ७ वीझोली। गाँव २४ ऊपरमाळरा छै।

वीझोलीथी कोस ९ भैसरोडगढ। वडा भाखर छै।

भैसरोडथी कोस ९ कोटो। पळाइतो[9] हाडावाळो छै।

भैसरोडथी कोस १ बूदी छै।

---

1 से। 2 चौहानो। 3 थोडी और छोटी पहाडियें है। 4 मध्य। 5 पहाडकी ऊपरी समतल भूमि। 6 उन। 7 ८४ गांवो वाले एक प्रान्तको 'चौरासी' कहा जाता है। 8 उत्पन्न होते हैं। 9 हाडा शाखाके चौहानोका पलाइता गांव है।

भैसरोडथी कोस ४ रिख-विसळपुर मेवास[1] छै । भील वसै छै । भैसरोड पचळदेस[2] । गाव २५ लागै । गाव वारै हवेलीरा[3] भैसरोडसू लागै ।

तठा-आगै[4] गाव ८५ कूडाळरा । मोहिल-माकडारो परगनो कहावै छै[5] । उदैपुरथी कोस ५० ।

भैसरोडसू कोस २० रामपुरो । दखणनू कोस १२ ताँई[6] रामपुरै दिसा भैसरोडरी हद छै । भैसरोड हेठै[7] चामळ[8] नदी वहै छै । तीन नदी भैसरोडरा कोट दोळी फिरै छै । भैसरोड कोट १ भीतरो छै । बीजो खाई गढरै आकार पड गई छै[9] । घर ८०० कोट माहे वसै छै ।

नदी तीनरी विगत-१ चावल[10] । १ वाभणी[11] । १ पगधोई ।

मेवळ मेरारी[12] नै पटै वभारारै[13] । माहे सीसोदिया सारग-देओतारो उतन । इणारो[14] एक छेह[15] उदैपुरथी कोस ६ उदैसागररै नाळै हद । बीजो[16] छेह देवळियाथी कोस ३ वडो मेरवाडो हुतो[17] । वूरड, वरगट, वुजमा, लडमर, इणा[18] जातारा मेर गाव १४० माहे रहता, नु एक वार राणै जगतसिघ काढिया हुता[19] । पछै झाले कल्याण अरज कर नै उरा अणाया[20] । हमार[21] राणै राजसिघ मेर परा काढ नै[22] सिगळा[23] गावामे सीसोदिया, चूडावत, सकतावत, राणावत, वसीया[24] सूधा[25] वसाया छै । नै मेर देवळियारै मेरवाडे गया । विगाड करै छै । देवळियानै मेवल वीच मूडळरो मुलक कहावै छै । मुदै[26] ठोड धीरावद, तठै[27] ही मेर वसता । रैत हुवा चालता के[28] मेवासी हुवा चालता ।

---

1 वीसलपुर वालोंका 'रिख' नामक मेवास (लुटेरोंका रक्षा स्थान) भैसरोडसे चार कोस पर स्थित है । 2 पाञ्चाल देश । 3 राजा व जागीरदारकी निजी सम्पत्तिके । 4 वहांसे आगे । 5 कहलाता है । 6 तक । 7 नीचे । 8 चम्बल । 9 गढ़ीके समान एक दूसरी खाई बन गई है । 10 चवल । 11 ब्राह्मणी (ब्रह्मणी) 12/13 मेवल मेर-क्षत्रियोंकी और वभाराकी जागीरोंमें । 14 इनका । 15 छोर । 16 दूसरा । 17 था । 18 इन । 19 निकाल दिया था । 20 पीछे कल्याणसिंह झालाने अर्ज करके वापिस बुलवा लिया । 21 अभी । 22 निकाल करके । 23 समस्त । 24 वसीवान, जागीरदारके कामदार आदि वे लोग जिनसे किसी प्रकारका टैक्स नहीं लिया जाता है । नाई, कुम्हार आदि कई जातिया भी जागीरोंमें वसीवान होती हैं । 25 सहित । 26 मुख्य स्थान धीरावद 27 । वहा ही । 28 कई ।

गाव १४० लागै । सु राणै राजसिघ परा काढ नै रजपूत सारंगदेग्रोत वसाया छै । पिण उठै पाणी घणो लागै छै[1] । न वसै[2] ।

नाहेसर भील धणी[3] । वडा स्यॉमधरमी[4] । राणारै चाकर छै । वडेरा रावत कहावै[5] । हमार रावत नरसिघदासरै मुदै[6] छै । भाखररो नॉव नाहेसर छ । मुदै ठोड़रो नॉव गॉव जूड़ो । परगनो पिण जूडारो कहावै छै । उदैपुरसू कोस २५ घोघूदै लगतो छै । सीरोहीरा भीतरोट लगतो उगवण दिसा नाहेसर । उलै ढाळ[7]नै आथुण दिसा भाखररै ढाळ सीरोहारो भीतरोठ[8] छै । अबावथी कोस १० तथा १२ नाहेसररा गॉव ९०० री केहवत[9] छै । धरती मॉहे रैत भील, कुळबी[10], वॉणीया, गूजर रहै छै ।

एक भाखर भाडेररो । कोस १० लॉबो, कोस २ पहलै[11] । नाहेसर कोस १२ लाबो, पैनै[12] कोस २ । तिण बीच जूडारो मुलक । गाव १ वासै[13] वीघा ५०० तथा ७०० खेती लायक । बीजी[14] धरती भाखरां हेठै । झाड - आबा, रायण[15] पिण आबली झाड घणा । धान साळ[16], गोहू, चिणा, मकी, उडद घणा नीपजै । वालरण-काकडी[17] घणी नीपजै । दीवांणरै नास-भाज विखानू[18] वडी ठोड़ इतरी[19]–

इतरा गावा मांहे–

९०० नाहेसर, नरसिंघदासजी ।

२० पनोर, रॉणो दायाळदास भील ।

९४ गगादासरी सादड़ी, गगादासरा पोतरा[20] छै ।

१४० झाडोली, टगरावटी । भील रैत थका रहै छै[21]। पटै झालारै[22]।

---

1 परन्तु वहांका पानी अधिक लगने वाला (अस्वास्थ्यकर) है । 2 अतः वहां नहीं रहते । 3 नाहेसरका स्वामी भील । 4 स्वामीभक्त । 5 मुख्य वयोवृद्ध रावत कहलाता है । 6 अभी प्रमुख रावत नरसिंहदास भील है । 7 इस ओरके उतारमें । 8 सिरोही राज्यका एक प्रान्त । 9 कहे जाते है । 10 कलबी एक कृषक जाति, पटेल । 11 चौड़ाईमें । 12 चौडा । 13 पीछे, लिये । 14 दूसरी । 15 खिरनीका वृक्ष । 16 लाल चावल, शालि । 17 एक प्रकारकी ककडी जो अम्लरहित और लबी होती है, वालम वा वालण ककडी । 18/19 विपतिके समय महाराणाके भाग कर जानेके लिये इतने सुरक्षाके बड़े स्थान है । 20 पौत्र । 21 भील प्रजाकी स्थितिमें रहते है । 22 झाला राजपूतोकी जागीरीमें ।

२५ छाळी-पूतळी । ईडररी कांकड ढलोल-कलोमसू लागै ।

२५० जवाच । भील रहै । डूगररै पूठवाड़[1] भील खगार भगारो रहै छै । कोस १५० माहे भील छै ।

वनास नदी नीसरी[2] तैरी[3] हकीकत –

जरगारा भाखरथी नीसरी । तिको[4] जरगो उदैपुरसू कोस २९ छै । उठाथी[5] रोहिडै गाव आवै । जको राजा हरचदरो वसायो छै । उठाथी कोस २ गांव वरवाडो मेवाडरो तठै[6] आवै । आगै कठाड़ गाव मदाररै गाव माछमे नै घासाररै मगरे वीच नीसरै नै काम-सकराही गाव वसै छै तठै आवै । उठाथी खभणोर आवै, उदैपुरथी कोस १२ । उठाथी कोठारिये आवै । तठा आगै गाव मोही तुवरावाळे आवै । तठा आगै गाव कुराज आवै । तठा आगै मीरमी पहुनै[7] आवै । उठा आगै गाव छाकरलो[8] पुरगे छै । पुरसू कोस ६ आगै माडळगढरै आकोले आवै । उठा आगै जावद-नदराय वीच नीसर नै गांव चीहळी आवै, उठै चोलेररो पारसनाथ छै । उठा आगै पाड़लोळी जाजपुररो गाव छै, तठै आय नै जाजपुर आवै । तठाथी[9] सावड़रै गाव देवळी आवै । आगै डावर तोडारै[10] गाव आवै, तठै खारी[11] वधनोर वाळी भेळी हुई । आगै तोडाथी कोस ४ गोकर्ण राह छै[12] । वडो तीर्थ छै । मधुकीटभ[13] तपस्या की छै । रांवण तपस्या की छै तठै आवै । तठा आगै तोडारा गाव विसळपुर रावर आवै । तठै सीसोदीये रायसिघ मोहल[14] कराया छै । तठा आगै वणहडै हुय[15] टूक आई । पछे मलीरणैरै गाव झूपडाखेडे[16] सोहड भगवतगढ सैसभारिजै मलीरणैरै वीछूदैनै हुय[17] जीरोतरो गाव हाडोतीरो हुय नै आगै खडरगढ चावळ भेळी हुई[18] । तठै देवी वरवासणरो थांन छै[19] ।

---

1 पीछेकी ओर । 2 निकली । 3 जिसकी 4 वह । सो । 5 वहांसे । 6 वहां । 7 हो कर । 8 गांवका नाम । अन्य प्रतियोंमें 'वाकरलो' लिखा है । 9 वहांसे । 10 गावका नाम टोडाका । 11 एक नदीका नाम । 12 टोडासे आगे ४ कोस गोकर्ण महादेव नामक प्रसिद्ध तीर्थस्थानको जानेका मार्ग है । 13 पुराणोंमें वर्णित मधुकैटभ दैत्य । 14 महल । 15 हो कर । 16 गाँव 17 को हो कर 18 से मिल गई । 19 जहां पर कछवाहोकी कुलदेवी 'वरवासण'का मदिर है ।

वात पहली यूं[1] सुणी थी । सवत १६२४ चीतोड़ तूटी । तठा पछै राणै उदैसिघ आय उदैपुर वसायो[2], सु खिडीये खीवराज कह्यो[3]– चीतोड तूटी पेह्ली वरस ५ तथा १० उदैपुर राणै उदैसिघ वसायो थो । उदैसागर पण पेह्ली करायो छो[4] । चीतोड तूटी पछै राणो उदैसिघ आयोई नहीं[5] । घोघूदै हीज रह्यो । राणै उदैसिघ समत १६२९ घोघूदै काळ कियो[6] । राणा प्रतापनूं टीको घोघूदै हुवो[7] ।

कछवाहो मानसिघ कँवर थको[8] गुजरात गयो थो । पाछो वळतो[9] नीसरियो[10] तरै सलूंबर आयो, तरै राणो घोघूदै छो । उदैपुर मानसिघनै मेह्मानी करी, तिणसूं वेरस[11] हुवो । पछै मानसिघ पातसाह् कनै गयो । हकीकत कही । तद मेवाड ऊपर वहीर हुवो[12] । खभणोर वेढ हुई । तठा पछै राणामे विखो हीज रह्यो । समत १६७१ राणो अमरसिघ साह्जादे खुरमसूं मिळियो । तठा पछै रांणो अमरसिघ उदैपुर आयो । तठा पछै राजथान[13] उदैपुर हुवो । राणानूं मेवाड़ हुई, तद मेवाड ऊपर पचह्जारी जात,पच ह्जार असवाररो मुनसब दियो छो[14] । तिणरी जागीरमे इतरी ठोड दीवी छी[15]–

१ माडळगढ, समत १७११ उतरियो थो[16] । समत १७१५ वळे पाछो दियो । रुपिया २०००००)

१ वधनोर, समत १७११ उतरीयो थो । समत १७१५ वळे दियो छै ।

१ फूलियो, उरो लियो समत १६९४ पातसाह् साहिजहा[17] ।

१ जिह्रण गाव १२, देवळियारी गडासिध[18] छै ।

---

1 इस प्रकार । 2 वि० स० १६२४ में चित्तोड टूट गया (चित्तोडमें पराजय हो गई), जिसके बाद राना उदयसिंहने आ कर उदयपुर वसाया । 3 जिसके सम्बन्धमें खिडिया चारण खींवराजने इस प्रकार कहा । 4 था । 5 आया ही नहीं । 6 मर गया । 7 राना प्रतापको राज्य तिलक घोघूदामें हुआ । 8 राजकुमारकी स्थितिमें । 9 पीछे लौटता । 10 निकला । 11 मनोमालिन्य । 12 जब मेवाड पर चढ कर रवाना हुआ । 13 राजस्थान । 14 रानाको जब मेवाड मिली तब मेवाड पर (रानाको) पाच हजार जात और पाच हजार सवारका मनसव दिया था । 15 जिसकी जागीरमें इतने स्थान दिये थे । 16 जब्त हो गया था । 17 फूलिया, जो पहिले मेवाडमें था और शाहजहाने जिसे वि० स० १६९४ में जब्त कर लिया था (उसे वापिस नहीं दिया) । 18 निकट ।

१ भैंसरोड, गाव १२४ खखर-भखररी[1] टोड छै, राणारै ।
१ सीमच, गाव ४५ छै । चीतोडसू कोस १५, रु० २,२५०००) ।
१ वसाड, समत १६९४ पैंजारखान रावत केसरीसिंघ मार लीयो । मनदसोर निजीक ।
१ मुणेर, गाव १२ रामपुरा कनै । समत १६९४ मे तागीर[2] ।
१ डूगरपुर, समत १६९४ तागीर कियो । समत १७१५ वळे दियो ।
१ देवळीयो तागीर कियो थो । समत १७१५ वळे दियो[3] ।
१ वासवाहळो एक वार उतरीयो छो । हमै तो राणारै छै[4] ।
१ वेघम, गाव ९४, चीतोडसू कोस १२, वूदीसू काकड । रु० १०,०००) ।

वात १ चारण आसीये गिरधर कही । समत १७१९ रा भादवा सुदी ९ नै–

माडवरो पातसाह वहादर एक वार गढ चीतोड ऊपर आयो[5] । गढ़ घेरियो तिण दिन चीतोड टीके राणो विक्रमादित्य सागारो, वाळक छै । हाडी करमेती हाडा नरबद भाडावतरी बेटी । तिणरै पेटरो[6] उदैसिंघ, विक्रमादित सगो भाई[7] छै । पछै कितरैहेक[8] दिन गढ एकण तरफ भिळियो[9] । सीसोदीया खाडारै मुहै गया[10] । तठै आदमी १४ सिरदार काम आया । तितरै माहले बाहरले वात कीवी[11] । गढ ऊपर पातसाहरा आदमी गया, तरै राणारा आदमी तळेटी आय नै सला करी । उदैसिंघनू कौल-बोल दे नै पातसाहरै पावै ले गया[12] । चाकरी राणा उदैसिंघरी कवूल करी । बहादर पातसाह उदैसिंघनू ले नै कूच कियो । कितराहेक[13] दिन हुवा । पातसाह वहादररै वेटो न छै[14], तरै अमरावे[15] पधार नै अरज पोहचाई ।

1 स्थान विशेषका नाम (वन-पर्वत) । 2 जब्त । 3 पुन दे दिया । 4 अब तो रानाके अधिकारमें है । 5 चित्तोडगढ पर चढ कर आया । 6 कोखका । 7 सहोदर भाई । 8/9 कितनेक दिन वाद गढमें एक ओरसे प्रवेश कर अधिकार कर लिया । 10 शिशोदिया तलवारके मुहसे काम आये । 11 इतनेमें भीतर और वाहर वालोने परस्पर वात-चीत की । 12 उदैसिंहको वचन दे कर वादशाहके चरणोमें ले गये । 13 कितनेक दिन हो जानेके वाद । 14 नहीं है । 15 तव राजाओने जा कर अर्ज पहुंचाई ।

पातसाह तो पुखता[1] हुवा छै। कोई एक भतीजो खोळै ल्यो[2]। तरै पातसाह कह्यो–'राणारो भाई खूब[3] छै। वडा घररो छोरू छै[4]। इणनू हू मुसलमान कर नै खोहळै लेइस[5]।' आ वात मुसकस थपी[6]। (उदैसिघरा चाकरा आ वात सुणी) उदैसिघनू खबर हुई। इणे[7] विचार कर नै रातरा नास आयो[8]। परभात हुवा[9] पातसाहनै खबर हुई, कह्यो–उदैसिघ नास गयो। तरै पातसाह तुरत वॉसै चढियो। सतावी[10] गढ आय घेरियो। तरै उदैसिघ, विक्रमादित्य दोयानू[11] काढ नै[12] इणारी[13] मा हाडी करमेती जूहर कर बळी[14]। हाडी करमेती साथै इतरी बळी––

१ हाडी करमेती।

१ करमेतीरी बेटी १। खीची भारथीचदनू परणाई हुती[15]।

१ बैर[16] विक्रमादितरी १, हाडी कला जगमालोतरी[17] बेटी।

१ रा देवीदासरी बेटी। इतरी करमेती साथै वळी।

इण मामले[18] इतरा रजपूत काम आया–

१ रावत दूदो रतनसीरो।

१ सीसोदियो कमो रतसीरो।

१ रावत वाघो सूरमचदरो।

१ हाडो उरजन नरबदरो।

१ रावत सतो रतनसीरो।

१ रावत वाघो सूरजमलोत।

१ सोनगरो मालो, बालारो। इणरो उतन देवळीयारी काकड।

१ सोळकी भैरवदास नाथावत। प्रोळ काम आयो, सु चीतोड भैरव प्रोळ कहावै छै[19]।

१ रावत देवीदास सूजावत[20]।

---

1 वृद्ध। 2 गोद ले लीजिये। 3 बहुत अच्छा है। 4 बडे घरका पुत्र है। 5 इसको मैं मुसलमान बना कर गोद ले लूगा। 6 तय हुई। 7 इसने। 8 भाग कर आ गया। 9 होने पर। 10 शीघ्र ही। 11 दोनोको। 12 निकाल कर। 13 इनकी। 14 जौहर कर जल गई। 15 व्याही थी। 16 स्त्री, पत्नी। 17 जगमालका पुत्र। 18 युद्धमें। 19 पोलमें मारा गया अत वह चित्तोड का दरवाजा भैरव-पोल कहलाता है। 20 सूजेका पुत्र।

१ सीसोदियो नगो मिघावत[1]। जगारो भाई।

१ झालो सिघ अजारो। इतरा रजपूत काम आया।

वात एक राणा कूभा चित भरमियारी[2]–

कोई समद माहे साह गयो थो। तिकै[3] एक मृतक देह दीठी[4] थी। तिणरी वात राणा कूभानू कही। तद राणो कूभो चित-भरमीयो हुवो। क्यूही[5] रोवै, क्यूही वोलै। तद कूभळमेर रहता, सु गढ ऊपर एक ठोड मामा-कुड छै। मामा वड छै। तठै राणो वैठो थो। कूभारै वेटो मुदायत[6] ऊदो थो, तिण कूभानू कटारीया मार नै आप पाट वैठो[7]। तद भला-भला रजपूत तिणा घणो वुरो मानियो[8]। आपती[9] सको[10] वडा ठाकर मन खाच रह्या[11]। कोई दरवार आवै न छै। नै भाई वेटा मेल दीया छै[12]। पछै रायमल ईडर थो, तिणसू कहाव करनै छानै तेडायो[13]। रायमल आयो तरै वडा ठाकरारा वेटा ऊदै कनै रहता, तिणानू[14] पाच वडे ठाकुरै कहाडीयो[15]–उदानू मिस कर नै[16] कठीक[17] दिन ४ रेक[18] सिकारनू ले नीसरो[19]। पछै वो कवरारो साथ ले नीसरियो। वासै रायमलनू वडा ठाकुर हुता सु ले नै चीतोडरै गढ ऊपर ले आण मीघासण वैसाणियो[20]। टीको काढियो। वाजा वजाया। कवरानू उमरावे तेड लिया[21]। ऊदानू कहाड मेलीयो[22]– थारो काळो मूह्डो[23], तू परो जावै[24], नही तो तोनू रायमल मारसी[25]। पछै ऊदो सोझत आयो। केई दिन वसीरै दुहरै[26] रह्यो।

एक वात मुणी हुती–कवर वाघारी वेटी परणियो हुतो। पछै वीकानेरनू गयो। उठी हीज मृवो। उणरी ओलादरो तो कोई वीकानेररी तरफ छै।

---

1 मिघका पुत्र। 2 विक्षिप्त। 3 जिसने। 4 देखी। 5 कभी, कुछ। 6 राज्यका मुख्य अधिकार रखने वाला। 7 गद्दी पर बैठा। 8 जिन्होने बहुत बुरा माना। 9 आपसे। 10 समस्त। 11 मन खींच लिया। 12 भेज दिया है। 13 बुलाया। 14 जिनको 15 कहलाया। 16 वहाना करके। 17 कहीं भी। 18 चारेक। 19 ले निकलो। 20 पीछेसे रायमलको, वडे ठाकुर जो थे उन्होने उसको ला कर चित्तोडके गढ सिंहासन पर विठा दिया। 21 बुला लिया। 22 कहला भेजा। 23/24/25 तेरा काला मुंह, तू यहांसे चला जा, नहीं तो तुझे रायमल मार देगा। 26 मदिरमें।

दूहो साखरो[1]–

ऊदा बाप न मारजै, लिखियो लाभै राज ।
देस वसायो रायमल, सरचो न एको काज[2] ।।

राणा राजसिंघनू पातसाही तरफरी इतरी जागीरी छै– तिणरी विगत लिखी छै–

छ हजारी जात । छ हजार असवार त्या-माहे[3] पॉच उवारा-उरदी[4] । एक हजार दुअसपाह[5] ।

रुपिया-दाम[6] आसामी १७००००० ) ६९०००००० ) ।

तलब जात[7] छ हजारी ३००००० ) १२०००००० ) ।

खास जात[8] छ हजारी १४००००० ) ५६०००००० ) ।

ताबीनदार[9] असवार ६००० तिणमे एक हजार दुअसपाह १७००००० ), ६९०००००० ), ५००००० ), २०००००० ) ।

इनाम २२००००० ), ९९०००००० ) ।

तिनखाह १२५००० ), ९६०००००० ) ।

सूबै अजमेर रु० १२५०००० ), ४७५०० ), १९०००० ) ।

सिरकार अजमेर परगनो १ । ४७५०० ) १९ ।

प्र० जोजावर १७२७५०० ), ६९१००००० ) ।

सरकार चीतोड महल २७–२५००० ), १०००००० ) ।

प्र० हवेली मोकीली मोहल २–५५००० ), २२०००० ) ।

प्र० उदैपुर महल ३ । ४००० ), २२००००० ) ।

प्र० अरणो महल २७५००० ), ११००००० ) ।

प्र० इसलामपुर कोसाथळ ३७५० ), १५०००० ) ।

प्र० इसलामपुर मोही ९७५०० ), ३५०००० ) ।

प्र० ऊपरमाल व भैंसरोड महल २–५०००० ), २०००० ) ।

---

1 साक्षीका । 2 दोहेका भावार्थ—हे उदयसिंह ! तुझे अपने पिताको नहीं मारना चाहिये था । राज्य तो भाग्यमें लिखा हो तो मिलता है । तेरा एक भी काम सिद्ध नहीं हुआ । राज्य तेरे छोटे भाई रायमलको बदा था जो देशको बसानेका अधिकारी हुआ । 3 तिनमें । 4 विना वरदीके । 5 द्विगुणित । 6 रुपयेका चालीसवां भाग । 7 व्यक्तिगत वेतन सम्बन्धी । 8 मुख्य २ व्यक्तियोंके वेतन सम्बन्धी । 9 प्रत्येक समय हाजिर रहने वाले सवार ।

प्र० बेघू २००००), ९००००)।

प्र० वणोर २०००००), ९००००००)।

प्र० पुर ७५०००), ३०००००)।

प्र० जीरण २७५०००)।

प्र० साहिजिहानाबाद कपासण १२५०००), ५०००००)।

प्र० सादडी २५०००), १००००००)।

प्र० साहिजिहानाबाद कणवीर ७५००), ३००००)।

प्र० घोसमन ३५०००), २०००००)।

प्र० मदारे ५०००००), २०००००)।

मीमच महल ३१२५०), ५००००)।

प्र० हमीरपुर २५००००), १०००००००)।

प्र० वधनोर २०००००), ९००००००)।

प्र० मंडलगढ ४०००००), १६००००००)।

प्र० डूगरपुर २०००००), ९००००००)।

प्र० वासवाहळो १७२७५००), ६९१०००००)।

३७५०००), १५००००००)

सिरकार कूभलमेर मेहल ९५ त्या मॉहे महल ६२ पहाडा माही।

वाकी महल २३ त्या माहे महल ३ साहिजादे खुरम राणा अमर ऊपर आयो[1] तद राजा सूरजसिघनू इनाम दिया था, त्यारी जमै न थी, सु राणा राजसिघरै छै[2]—१ गोढवाड। १ सादडी। १ नाडूल।

वाकी महल २० त्यारा नाम पढिया न जाय। २१५००००), ९६००००००), ५००००), २००००००) सूवो मालवै परगनो।

१ वसाड २००००००), ९९००००००)।

वात १ सीसोदिया राघवदे लाखावतरी। राघवदेनू राणै कूभै, राव रिणमल मारियो—

तिकण समय[3] राणो कूभो मोकळोत चीतोड राज करै नै रावघदे धरती माहे क्यूही[4] उजाड-विगाड[5] करै। तरै राणै कूभै राघवदेनू

---

1 चढ कर आया। 2 जिनकी जमा नहीं थी, वे राणा राजसिंहके अधिकारमें हैं। 3 उस समय। 4 कहीं कुछ। 5 लूट-खसोट।

मारणो तेवडियो[1]। पछै एक दिन राघवदे दरवार आवतो थो। पहरणनू आगी[2] हुती। तिणरी बाह ढीली हुती, सु आधी काढी थी। तरै आय नै एक बाह गणै कूभै पकडो ने एक पाखती[3] राव रिणमल पकडी। नै दोना बगला राघवदेरै कटारी लगाई। सु राघवदे कटारी लागता आपरी[4] कटारी दातासू काढी[5]। तरै इणा बाह छोड दी। तरै ग्रो जलेबखानानू[6] नीसरियो। इणा हाथ छोड दिया। जाणियो कटारी सवळी लागी छै, आपै हेठो पडसी[7]। नै तितरै[8] प्रोळरै बारणै[9] आयो। तितरै एक रजपूत झटकारी दीनी सु माथो तूट पडियो। सु माथो पडिया ही उठ दोडीयो[10]। तरै सगळाई[11] अळगा[12] हुवा, तरै आपरो[13] माथो दुपटीसौ[14] कडियारै[15] दोळो बाध जलेब[16] आय नै आपरै[17] घोडे चढियो नै आपरा वरानू खड़िया[18]। परभात हुवो तरै पडावल चीतोडसू कोस १७ छै, तठै गाव निजीक आयो। तरै कोई बैर[19] पिणहार जिण दीठो। तरै कह्यो–'देखो कोई माटी[20] माथा विगर चढियो जाय छै।' सु वा बैर मैले-माथे हुती[21]। तिणरी छाया पडी। तरै राघवदे घोडासू छिटक पडियो[22]। उठै ५ क[23] सात बैरा राघवदेरी, पडावलथी आय नै बळी[24]। सु राघवदे सीसोदियो पूजीजै छै।

साखरो गीत–

राय आगण राण कुभकन रूठै,<br>
हाथा ग्रहे हिंदुवै-राय।<br>
काढी राघव भली कटारी–<br>
दाता, सरसी ऊपर[25] डाय॥ १॥

---

1 विचार किया। 2 अगरखी। 3 एक ओरसे। 4 अपनी। 5 निकाली। 6 पासकी राज्य-सभा। 7 अपने आप नीचे गिर जायगा। 8 इतनेमें। 9 बाहिर। 10 सिर गिर जाने पर भी उठ कर दौड गया। 11 सब ही। 12 अलग। 13 अपना 14 दुपट्टेसे। 15 कमर। 16 पास। 17 अपने। 18 चलाया। 19 पनिहारिन-स्त्री। 20 मनुष्य 21 वह स्त्री रजस्वला थी। 22 गिर गया। 23 अथवा 24 पडावलसे आ कर सती हुई। 25 गीतका अर्थ — हिंदुपति राजा कुभकर्णने क्रोध करके राज्य आगनमें राघवदेवके हाथ पकड लिये। उस समय राघवदेवने अपने दातोसे अपनी कटारीको खूब निकाला, जो उसके ऊपर दाव = आक्रमण करनेवालोसे एक श्रेष्ठ (पराक्रम) की बात थी।

वात १ बीठू भाभण[1] कही–

माडवरा पातसाहरो मेवाड जेजियो[2] लागतो। सु जद राणो रायमल राज करै। सु रायमल स्यांणो[3] ठाकुर हुवो, सु क्यूही[4] बोलतो नही। रायमलरै वेटो प्रथीराज हुवो। सु प्रथीराज सिकार रमणनूं गयो थो। सु सिकार रमता एक लुगाई घडो भरिया जावती थी, तिणरै सोकलारी[5] लगाई। सु गोढवाडरो लोक ओछो-बोलो[6] तो हुवै छै। तरै उण लुगाई कह्यो–"कवरजी मारो घडो काई फोडियो। इसडा[7] तरवारिया[8] छो, तो मेवाड जेजियो लाग छै सु परो छोडावो[9]। तितरै[10] पाखतीरा[11] ऊभा था[12] तिणा उणनूं डराई। कह्यो–"तू बोल मती।" नै प्रथीराज बोलियो–"क्यू हो ठाकरा! आ काई कहे छै?" किणहेक कह्यो, आ यू कहै छै–"आखा[13] मेवाडनूं माडवरा पातसाहरो जेजियो लागै छै, सु कवरजी छुडावो नी क्यू?[14]" तरै आप कह्यो–"जेजियो ले छै सु कुण छै?" तिण कह्यो–"तिके पाटण कोट माहे हीज रहै छै। वे दीवाणरा चाकर न छै। वे माडवरा पातसाहरा चाकर छै। जेजियो उघरावै[15] छै।" तद दीवाण कुभळमेर रहता। नै कवर आ वात सुण नै सिकार रम पाछो

---

1 ब्राह्मण नामक बीठू जातिका चारण। 2 जजिया नामक एक कर जो बादशाही समयमें हिंदुओंसे लिया जाता था। 3 शान्त स्वभावका। 4 कुछ भी। 5 शस्त्रका अग्रभाग, चूकना, नोक। (यह शब्द चूकनो वा 'चूकलो' होना चाहिये। मारवाडमें 'चूक' नोकदार कोनको कहते हैं। गाडीमें जुते हुए बैलों आदिको चलानेके लिये लकडीके अग्रभागमें पैनी चूक लगा कर बनाई हुई चूकनो' काममें लाई जाती है, जिसे 'आर' वा 'परागो' भी कहते हैं। गोढ़वाडमें 'च' 'छ' आदि वर्गोंका उच्चारण 'स' की भाँति ही किया जाता है अतः यहाँ 'चूकनो' वा चोकनोके स्थान 'सोकलो' लिखा गया है। 6 अपशब्द बोलने वाले। (प्रकरणमें तो स्त्रीकी ओरसे ओछा बोलना नहीं प्रतीत होता। इसके विरुद्ध प्रिथीराजके ओछे व्यवहार और प्रजाकी एक स्त्रीके साथ दुर्व्यवहार और अपमानक साहसपूर्ण, समुचित और प्रेरणाप्रद कटाक्षमय उत्तर है, जो वास्तविक और समयोचित है। यही नहीं, जो उस समयके शासकगणोंकी कर्त्तव्य-हीनता और निरकुशता एवं दूसरी ओर सर्वसाधारणमें देश और जातिके अपमानके अनुभवका परिचायक है।) 7 ऐसे। 8 तलवार चलाने वाले। 9 हटवा दे। 10 इतनेमें। 11 पास वाले। 12 खडे थे। 13 समस्त। 14 उसको कुँवरजी क्यो नहीं हटवाते? 15 जजिया वसूल करते हैं।

छूटो छै। कितराएक दिना चावडारा ही मगरा[1] अवदूळे छुडाया। सु राणो अमरसिंघ घणो हीज पछतावो करै छै। भीवनू कहै छै– "भीव! देख! आपाथी[2] चावडारा मगरा छूटा। आ वडी ठोड छूटी[3]। मोनू[4] उदैपुर छूटारो धोखो न हुवो तितरो[5] इण ठोड छूटारो पछतावो हुवै छै[6]। इण ठोड-छूटता एक रातीवासो[7] ओ[8] बीजो अवदूलै सूनो कियो तो घणो बुरो दीससी[9]। तरै भीम तसलीम कर[9A] कह्यो–"अवस दीवाण! आज अवदूलाथी इसो मामलो करू[10], लडतो २ अवदूलारी डोढिया ताई[11] जाऊ" दीवाणसू कहनै[12] विदा हुवो[13]। सु आ खबर अवदूलेनै हुई, जु! भीव वीदा हुवो सु कहै छै[14]–"हू[15] लडतो २ अवदूलारी डोढिया ताई[16] जाईस[17]।" सु अवदूलै ही घणा[18] पातसाही लोक उमराव था सु दोढिया राखिया छै। भीव दिन घडी ४ चढता विदा हुवे छै। सु पहली तो केई आपरी[19] धरतीरा लोक तुरकासू जाय मिलीया था, त्यासू[20] मामलो कियो। पछै रात आधी एकरो[21] अवदूलारा लसकर ऊपर तूट पडीयो सु पेहली तो आडै धस[22] आया सु वाढ नाखीया[23]। घणा घोडा, रजपूत, पातसाही लोक डेरा मारिया[24]। यू करता मारतो कैहतो "आवै माहराणो अमरसिंघ[25]।" सु असवार हजार दोयसू दोढियारै मुहडै[26] आयो। अवदूलै ही घणी जावता[27] कीवी थी। दोढी घणो साथ[28] सु अठै लडाई हुई। घणो तरवारियारो रीठ पडियो[29]। पातसाही, लोक, सिरदार, माणस[30] ५० तथा ६० वडा उमराव मारिया। अठै

---

1 पहाड। 2 अपनेसे। 3 रक्षाका यह बडा स्थान भी छूट गया। 4 मुझको। 5 उतना। 6 पश्चात्ताप होता है। 7 रातको रहनेका (भय रहित) स्थान। 8 यह। 7/8/9 यह दूसरा रात्रिनिवासका स्थान भी अवदुल्लेने अपनेसे छुड़वा कर सूना कर दिया तो बहुत बुरा दीखेगा। 9A प्रणाम करके। 10 युद्ध कर्म। 11 तक। 12/13 कह कर रवाना हुआ। 14 भीम अपने ऊपर चढ कर रवाना हुआ है और वह कहता है कि। 15 मैं। 16/17 ड्योढी तक चला जाऊँगा। 18 बहुत से। 19 अपनी ही। 20 उनसे। 21 लगभग आधी रातको। 22 सामने। 23 काट डाले। 24 डेरोका नाश किया। 25 यो मारता जाता और कहता जाता था कि 'महाराणा अमरसिंह आ गया है'। 26 ड्योढीके द्वार पर आ गया। 27 प्रबंध किया था। 28 सैनिक। 29 तलवारोंमें घमासान युद्ध हुआ। 30 मनुष्य।

भीवरा ही मांणस २० तथा २५ जीनसालिया[1] पडिया। पडिया-पडिया कहता "दोढिया ताई तो गया[2]। आघी चूरी जाय नही[3]।" आगै तिके बहादर सिलहा-किया[4] ऊठिया। तिणथी डोढी चूरी जावै नही[5]। आगै भीवरै ही लोह[6] एक दोय लागा, नै आप जिण घोड़ै चढियो थो, जिण घोडारो पग पडियो[7]। जोयो[8], ज्यू[9] आघो जाणरो तोल क्यू ही नही[10]। तरै रजपूते भीवनू पाछो वाळियो[11]। कटक बारै[12] आया तरै आपरो[13] घोडो छिटकनै पडियो। तरै घोडारो पग निलग[14] छिटक पडियो। तरै भीव कह्यो–'दोढिया आगै घोडारो पग पडियो।' बीजै[15] घोडै चढ नै चलाया मु दीवाण छपनरै मगरै था। भीव आय मुजरो कियो। रातरा मामलारी वात कही। दीवाण बोहत राजी हुवा। भीवरी घणी दिलासा[16] करी। कह्यो–"साबास भीव! वडो मामलो कियो।" पछै[17] इण मामला हुवा पछै[18] अबदूलो च्यार[19] मास तॉई दीवाणरी फोज ऊपर दोडियो नही[20]।

**गीत–**

खित[21] लागा वाद त्रिनह खूदालम,<br>
सूता अणी सनाहे साथ।<br>
थापै खुरम जेवडा थाणा,<br>
भीव करै तिवडा भाराथ ॥ १ ॥<br>
हुवा प्रवाडा हाथ हिंदुवा,<br>
असुर सिघार हुवै आराणा।

---

1 पखरेत घोडोके सवार। 2 घायल पडे-पडे कहते थे कि ड्योढियो तक तो पहुँच ही गये। 3 आगे शत्रुओका चूर्ण करके नही पहुँचा जा सकता। 4 कवचधारी। 5 जिससे ड्योढी पर खडे शत्रुओका नाश किये बिना आगे नही जाया जाता। 6। तलवारके घाव। 7 घोडेका पाव टूट गया। 8 देखा। 9/10 तो आगे बढनेका कोई उपाय नही। भीमको पीछा लौटाया। 12 बाहिर। 13 अपना (उसका)। 14 घोडेका पाव टूट कर अलग जा गिरा 15 दूसरे। 16 खातिर, सन्मान। 17 फिर। 18 बाद। 19 चार। 20 दीवानकी (महाराणाकी) सेना पर चढाई नही की। 21 पृथ्वीके लिये दोनो (दिल्ली और मेवाडके) बादशाह ऐसे युद्धरत हुए कि दोनो अपनी सेनाके साथ कवच धारण करके ही सोया करते। खुर्रमने जितने थाने स्थापित किये भीमने वहा जा कर उतने ही युद्ध किये ॥ १ ॥ हिंदुओके हाथो (यशस्वी) युद्ध हुए जिनमे तुर्कोंका अपार सहार हुआ।

साह आलम मूकै सहिजादो,
रायजदो थाप लियो राण ॥ २ ॥
मडियो वाद दिली मेवाडा,
समहर तिको दिहाडै सीव ।
अवस न पैठा किसा भाखरा ?
भाखर किमै न विढियो भीव ? ॥ ३ ॥
आरंभ जाम अमर धर ऊपर,
लडै अमर छल ताम लग ।
आवढियो घटियो असुरायण,
खूमाण माजसियो खग ॥ ४ ॥

वात—

सोदो–वारहठ[1] थाहरु[2] चीतोडरो । वूदी राणा खेतारी वार[3] माहे हाडा लाल[4] कनै गयो हुतो[5] । मु लाल वात कहता कुई दीवाण दिसा वुरो वोलियो[5 A] । तरै थाहरू पेट मार मूवो[6] । कोई कहै छै–कमळ-पूजा[7] कर मूवो । तिण दावै[8] सीसोदिया हाडारै वैर पडियो । घणा दिन अदावत वुही[9] । घणो वैर धुखियो[10] । पछै सीसोदियासू हाडा पींच सकै नही[11] तरै वैर भागो[11 A] । सीसोदिया १२ सिरदार हाडारै परणिया[12], नै गाव[12 A] २४ वूदी राव दायजै[13] दिया, वूदी नै[14]

---

उधर शाहआलम खुर्रमको भेजता है तो इधर राणा अमरसिहने अपने भाई (रायजादा) भीमको नियुक्त कर दिया है ॥ २ ॥ दिल्ली और मेवाड वालोंके परस्पर ऐसा युद्ध जमा जो उन दिनोके युद्धोकी एक (चरम) सीमा थी । तुर्क कौनसे पहाडोमे नही घुसे और भीमने उनका पीछा कर कौनसे पहाडोमे युद्ध नही किया ? ॥ ३ ॥ अमरसिंह अपने आरभकालमे ही युद्ध लडता रहा । उसने जितने भी आक्रमण किये उनमे मुसलमानोका बल क्षीण होता गया । इस प्रकार खुमाणके वशज अमरसिंहने अपनी तलवारको पवित्र किया ॥ ४ ॥

1 चारणोकी एक शाखा । 2 चारणका नाम । 3 समय । 4 वूंदीके हडा लालसिह । 5 था । 5 A लालसिहने वात करते समय दीवान(राना खेता)के सवधमे कुछ वुरे शब्द कहे । 6 तव थाहरू पेटमे छुरी मार कर मर गया । 7 सिर काट कर । 8 इसी कारण । 9 शत्रुता चलती रही । 10 शत्रुता अधिक जग उठी । 11, 11 A फिर जव हाडे सीसोदियोको नही पहुँच सके तव जाकर शत्रुता मिटी । 12 वारह सिसोदिया सरदारोंने हाडोके यहा विवाह किया । 12 A दहेजमे गाव ६ ही दिये है भूलमे २४ लिख दिये गये है । गावके नाम भी छ ही है । 13 दहेज । 14 और ।

मालगढ वीच । गावारा नाम–

| | | |
|---|---|---|
| १ जीलगरी | १ धनवाडो | १ वाजणो |
| १ खिणीयो | १ भीलडियो | (१ वको) |

इतरा गाव दिया ।

वात पठाण हाजीखान राणै उदैसिंघ वेढ[1] हुम्माई हुई, तिणरी धधवाडिये खीवराज लिख मेली[2] । समत १७१८रा वैसाख माहे–

हाजीखान पठाण ऊपर मालदेरी फोज अजमेर आई । रा० प्रथीराज जैतावत । तद हाजीखान राणै उदैसिंघ कनै आदमी मेलिया[3] । कह्यो–"माहनू राज मारै छै[4] । म्हे तो रावळा थका बैठा छा[5] ।" तरै राणो असवार हजार ५००० सू तुरत चढियो । अजमेर आयो । तरै राठोडे भेळा होय नै[6] प्रथीराजनू[7] कह्यो–"आपे ही मरस्या[8] । राव मालदेरै आगै ही[9] वडा ठाकुर था सु मारा काम आया छै । नै आपै मरस्या तो ठकुराई हळवी पडसी[10] । आपै उठै जाय साथ भेळो करनै लडाई करस्या ।" इण भात राठोडै समझाय नै प्रथीराजनू पाछा मारवाड ले गया । सु प्रथीराज खिमाणो थको वगडी रीयो[11] । वारै उतरियो[12] । गावमे न गयो । नै इण मामलै राणा साथै सिरदार–राव सुरजन, राव दुरगो, राव जैमल मेडतियो, साथे हुता । तठा पछै राव मालदे वेगो ही कटक कियो । सु रावजीरै मेडतियासू खुसाण हुती[13] । सु राव मालदे कहै मेडता ऊपर जास्या । नै राव प्रथीराज कहै अजमेर जाय राणारा साथसू वेढ करस्या । सु पछै रावजी मेडते आया । मेडतियासू वेढ हुई । राव प्रथीराज काम आयो । वेढ हारी । राव राणारी तो वात अठै हीज नीवडी । तठा पछै कितरेक[14] दिने रा० तेजसी डूगरसियोत नै वालीसा सूजानू राणै उदैसिंघ कह्यो–थे अजमेर जाय नै हाजीखाननू कहो–"म्हे थानू राव मालदे कना

---

1 युद्ध । 2 दधवाडिया शाखाके चारण खीवराजने लिख भेजी । 3 भेजे । 4 मुझको प्रथीराज मारता है । 5 हम तो आपके आश्रयमे बैठे है । 6 इकट्ठे हो करके । 7 को । 8 हम ही परस्पर मरेगे । 9 पहिले भी । 10 और हम मरेंगे तो अपनी ठकुराई अशक्त हो जायगी । 11 प्रथीराज लज्जित हो कर वगडीमे जा कर रहा 12 वाहिर ठहरा । 13 खटक थी । 14 कितनेक ।

राख लिया छै। थे म्हानू केहेक[1] हाथी, क्युहेक[2] सोनो, थाहरै अखाडो छै[3] तिणमे रगराय पातर छै सु म्हानू दो।" तरै ठाकुरा राणाजोसू कह्यो–"हाजीखान भलो मांणस छै नै विखायत थको छै। दीवाणजी वडो उपगार कियो छै[4]। सु हाजीखांननू आ वात कहाडियारो जुगत न छै[5]।" सु आ वात दीवांण मानी नही। या ठाकरांनै माडा मेलिया[6]। अै अजमेर गया। आ वात कही तरै हाजीखान कह्यो–"म्हारै देणनै तो क्युही नही। नै पातर[7] तो माहरी[8] बैर[8A] छै।" तद इण वात ऊपर हाजीखान नै राणारै अदावद[9] हुई। तरै राणारा परधानानू तो सीख दीवी[10]। नै राव मालदे कनै आदमी २ आपरा[11] मेलिया। म्हारी मदत करावो। तरै रावजी असवार १५०० रा० देवीदास जैतावत साथै दे नै मेलिया। देवीदास जैतावत, रावळ मेघराज, लखमण भादावत, जैतमाल जैसावत, बीजा ही[12] घणा ठाकुर साथै दे नै मेलिया। सु अै[13] पिण अजमेर आया। भेळा हुवा। राणो आप पिण उदैपुरसू चढियो। दस देसोत[14] साथै हुवा। राणो हरमाडै आयो। हाजीखान पिण हरमाडै आयो। वले वीचरा तेजसी नै बालेसो सूजो फिरिया। दीवाणजीनू कह्यो–"वेढ नै कीजै। पाच्च हजार पठाण नै हजार राठोड दोनूरा मरसी।" सु आ वात दीवाण मानी नही। खेत वुहारीयो। अणी वाटी[16]। तठै[17] हाजीखान दाव कियो। साथ थो सु आग ठेल ऊभो कियो[18]। नै असवार हजार १००० सू आय भाखरीरै ओटै[19] जाय ऊभो रह्यो। नै राणो आप हरोलारा[20] अणी माहे थो सु गोळरा अणी माहे जाय ऊभो रह्यो। तरै हाजीखाननू आ खवर आई तरै हाजीखान गोळरी अणी माथै तूट पडियो[21]। तरै

---

1 कितनेक। 2 कुछ। 3 तुम्हारे पास स्त्रियोका दल है उसमे रगराय नामकी एक नर्तकी है, जिसको मुझे दो। 4 हाजीखान भला आदमी है और मकटग्रस्त है। 5 अत हाजीखानको यह वात कहलवाना योग्य नही है। 6 इन ठाकुरोको वलात् भेज दिया। 7 नर्तकी। 8 मेरी 8A स्त्री। 9 शत्रुता उत्पन्न हो गई। 10 रवाना किया। 11 अपने। 12 दूसरे भी। 13 ये। 14 दस वडे ठिकानोके जागीरदार। 15 रणक्षेत्रको साफ किया। 16 सेनाके अग्रभागमें रहने वाले वीरोका वटवारा किया। 17 वहा हाजीखानने एक चाल चली। 18 अपनी सेनाको आगे भेज कर खडी कर दी। 19 आडमे। 20 सेनाके अग्रभागमे था सो पृष्ठ भागमें आ कर खडा रहा। 21 टूट पडा।

राव दुरगारो घोडो वढियो[1]। तद दुरगो हाथी चढियो। हाजीखान फोज माहे ऊभो थो, तिण दुरगारा हाथीनू कटारो वाही[2]। तीर १ राणा उदैसिघरै लागो। तरै फोज भागी। तठै इतरो[3] साथ राणारो काम आयो–१ रा० तेजसी डूगरसीयोत, १ बालीसा सूजो, १ डोडियो भीव, १ चूडावत छीतर अै तो सिरदार नै आदमी १०० बीजा[4] काम आया। नै आदमी १५० हाजीखॉनरा कॉम आया। नै आदमी ४० राव मालदेरा कॉम आया। रावजीरै इण मॉमलेमे मेडतो आयो। तठा पछै हाजीखॉन ऊपर पातसाहरी फोज आई। पछै हाजीखाँननू राव मारवाड माँहे एक बार जैतारणरै गॉव लौठीधरी[5]–नीबोळ आणियो[6]। पछै केई दिन अठै रह्यो। नै पछै हाजीखाँन गुजरात गयो। पछै पातसाहनू हसनकुली मालम कियो। अजमेरसू हाजीखॉन मारवाड गयो छै। तरै पातसाह हुकम कियो। जिण राखियो छै तिणनू मारल्यो। तरै फौज जैतारण आइ। तरै हाजीखाँन तो नीसरियो[7]। पछै राव रतनसीनू नै जैतारण मारी।[8]

वात–

रॉणा अमरारै विखै[9], रावत नारायणदास अचलदासोत सकतारो पोतरो[10] रॉणा सगरनू जाय मिलियो। तद सगरनू चितोड घणा परगनासू थी। नाराणदासरो सगर घणो आदर कियो। गॉव ६४सू वेघम, गॉव ६४सूं रतनपुर दियो। तठा हछै कितरेक दिनै रॉणा अमरारै नै पातसाहरै मेळ हुवो। तरै सगरसू चीतोड़ उतरी। सगर परो गयो। चीतोड रॉणा अमरारो अमल हुवो[11]। पिण वेघम राणारा आदमी गया त्यानू[12] रावत नाराणदास अमल दे नही[13]। तरै दीवाण रावत मेघनू वेघम ऊपर विदा कियो। तरै मेघ आदमी २ मेलनै रावत नाराणदासनू कहाडियो[14]-"श्री दीवाएजी आपएै[15] माइत[16] छै। आपएा

1 कटा। 2 कटारी फेंकी। 3 इतना। 4 दूसरे। 5 गावका नाम (लोटोती-नीवोल)। । 6 ले आये। 7 निकल गया। 8 राव रतनसीको मार कर जैतारणको लूट लिया। 9 सकटम। 10 पौत्र। 11 अधिकार हो गया। 12 उनको। 13 अधिकार करने नही देते। 14 कहलवाया। 15 चित्तोडके राना (अमरसिंह)। 16 माता-पिता है।

जोररी ठोड काई नही[1], नै मोनू विदा कियो छै[2], सु आपणो घर एक छै, सु थे मो[3] आवताँ पेहली गाँव छोडज्यो" तरै राव सही-समधोतरै[4] गाँव छोड बारै गूढो दियो[5], इणा गाँवमे अमल कियो[6], आ वात राणै अमरसिघ सुणी। तरै चहुवाँण बलूनू वे घमरी तसलीम कराई[7]। आ बात मेघरै भाई-बधे सुणी। तरै तुरत मेघनू खबर पोहँचाई। मेघ वेघम वलूनू दीनी सुणी नै घणो बुरो माँनियो। कह्यो– मरणरी वेळा म्हानू[8] नाराणदास ऊपर मेलिजै, नै वाघारो[9] बलूनू दीजै, तो म्हानू चाकर जाँणिया नही। वेघम कै[10] चूडावतारी, कै[11] सकतावताँरी। चहुवाँण कुण ? तरै मेघ पाधरो[12] वेघमथी[13] उदैपुर आय नै पटो छोडियो[14]। तरै कवर करन बोल बाह्यो[15]–"इतरो अहकार करो छो, तो पातसाह कनै जाय मालपुरो पटै करावजो।" पछै मेघ सामान करनै पातसाह (जहागीर) कनै गयो। पातसाह राणारी विखारी वात पूछी। रावत मेघ सारी वात कही। पातसाह राजी हुवो। रावत मेघनू मालपुरो पटै दीयो। तठा पछै[16] कितरेक दिने राणै कवर (करण) नू पातसाह कानीनू चलायो[17]। तद कवर करननू राणै अमरै[18] कह्यो–"मेघनू दावै त्यू कर[19] मनाय लावज्यो" सु कवर करन मालपुरै आयो, तरै मेघ सामो आयो[20]। मेहमानी करी। पातीयै बैठा[21]। थाळी परूसी[22]। तरै करन हाथ खाच बैठो। तरै मेघ विनती कीनी। कुण वास्तै ? तरै कवर करन कह्यो–"थानू दीवाणजी वुलाया छै। आवो तो हू जीमू[23]।" तरै मेघ कह्यो–"म्हे थारा

---

1 यह ठौर वल-परीक्षाकी नही है। 2 मुझे ससैन्य भेजा है। 3 मेरे आनेसे पहले ही। 4/5 तव रावने उसके कहनेके अनुसार गावको छोड वाहिर आकर अपने लिये किसी रक्षित स्थानमे डेरा डाला। 6 इन्होने गाव पर अधिकार कर लिया। 7 तव चहुआन वलूको वेघमका पट्टा कर देनेकी स्वीकृतिके उपलक्षमे मुजरा करवाया। 8 मुझको। 9 जीतमे प्राप्त की हुई जागीरी। 10/11 वेघम या तो चूडाके वशजोकी अथवा सकताके वशजोकी 12 सीधा। 13 से 14 जागीरीका अधिकार छोड दिया। 15 तव कुमार करनने ताना मारा। 16 जिसके वाद। 17 वादशाहकी ओर भेजा। 18 अमर (सिह) ने। 19 जैसे हो वैसे। 20 तव मेघ स्वागत करनेको सामने आया। 21 भोजन करनेके लिये एक पक्तिमे वैठे। 22 थालीमे भोज्य-पदार्थ परोसे गये। 23 तुम आओ (मेरे साथ चलो) तो मैं भोजन करू।

विसेरिया-चाकर छां[1] । ज्यू थे कहस्यो त्यू करस्या[2] । पिण हूँ पातसाहजीसू सीख कर आवस्या[3] ।" पछै मेघ जाय पातसाहजीसू सीख करी । पछै राणा अमरसिंघ कनै आयो । पछै राणै घणी मया करी[4] । रावत मेघ मागियो सु पटो दीयो । तिका[5] गावारी विगत–

वेघम ६४ ।

८४ रतनपुररी चोरासी ४२ गोठोळाव ।

१२ वीनोतो १२ वासियो-पोपळियो ।

३ गाव, उदैपुर निजीक[6] खड-ईंधणनू[7] ।

इसडो[8] पटो मेवाडमे किणहीनू[9] हुवो नही । टका लाख २५००००री रेख सुणीजै छै ।

तठा पछै मामलो १ सकतावत नै रावत मेघरै हुवो, तिणरी वात–

रावत मेघनू वेघम पटै छै । सु वेघमरा एक गाव माहे सीसोदियो पीथो वाघरो[10], सकतावत रहै छै । तिणरै नै रावत मेघरै क्यूहीक अणवणत हुई[11], तरै उणनू मेघ कहाडियो । तू म्हारो गाव छाड दे । तरै ओ गाव छाडै नही । तरै मेघ पीथा वाळो वाळियो[12] । तद रावत नाराणदास अचलावतनू पातसाहीरी दीधी भणाय पटै[13] । तरै पीथो आय रावत नाराणदास कनै पुकारियो । माहरै[14] तू वडैरो रावत, नै म्हा मारे[15] मेघ अतरा[16] हवाल[17] किया । तरै नाराणदास खेड[18] करी । राठोड जगमालोत, रतनसीयोत, चादावत सीसोदियो, आपरा भाई-बध असवार १२०० करी वेघम ऊपर चलाया । सु मेघ तो तठा पेहली दिन १ तथा २ परणीजण गयो थो । गाव वेघमथी कोस १५

1 हम आपके विसोरिया सेवक हैं । (विसेरिया चाकर-वशीवानोका एक भेद है, जो वशीवानोसे भी विशेपता रखता है – ये सव प्रकारके लाग और कर आदिसे मुक्त होते हैं)। 2 ज्यो आप कहेंगे त्यो ही करेंगे । 3 आज्ञा लेकर आऊगा । 4 कृपा की । 5 उन । 6/7 उदयपुरके समीप तीन गाव घास और ईंधनके लिये । 8 ऐसा । 9 किसीको भी । 10 पीथा वाघाका पुत्र । 11 उसके और रावत मेघके कुछ अनवन हो गई । 12 राव मेघने पीथावाला गाव जला दिया । 13 उन दिनो रावत नारायणदासको वादशाहकी ओरसे दिया हुआ 'भिणाय' गाव पट्टे मे । 14 मेरे । 15 मेरेमे । 16 इतने । 17 दुर्दशा । 18 अपने वीरोको वुलाया ।

छै। तठै पिण थोडी वोहत जाण[1] मेघनू हुई। वासै[2] मेघरो वेटो नरसिंघदास घरे थो। रावत नाराणदास तो जाणै मेघो घरे छै। आदमी २ नाराणदास आगै वेघम मेलिया। कह्यो–"जाय रावत मेघनू कहो, वारै आव।" नाराणदास आयो। सु आदमी आय देखै तो रावत परणीजण गयो छै नै नरसिंघदास थो तिणनू जाय रावत नाराणदासरै आदमीए[3] कह्यो। तरै नरसिंघ तो वुरो हुवो[4]। कोट जड वैस रह्यो[5]। पछै सकतावते वेघम दोळो वोडो फेरियो। हाथी १ मेघरो सीव माहे सैल गयो थो[6], सु उरो लीयो। हाथी १ ले भणाय आया। वीजो विगाड क्यू ही न कियो। वडो वोल खाटियो[7]। तठा पछै रावत मेघ परणीजण गयो थो सु आयो। वात सुणी। गाहो लाजियो[8]। वेटा नरसिंघदासथी घणो वुरो मानीयो[9]। काढ दियो[10]। कह्यो–"म्हानू मुहडो मत दिखाव[11]" तिण ऊपर चूडावतारा साथनू मेघ तेडा मेलिया[12]। वडी खेड करी। वड-वडा रजपूत सको ठाकुर चूडावत आय भेळा हुवा। असवार ५००० हजार ऊपर भेळा हुवा। रावत मेघ वेघमथी चढियो। मजल एक आयो। सकतावत पिण असवार मरणीक[13] भेळा हुवा। पछै रावत मेघ हीज विचार कर दीठो। घर १ छै। गोत कदम हुसी[14]। तरै आपसू हीज पाछो वळियो[15]। भाईवघ सिगळा[16] मानसिंघ करणोत वीजे[17] घणो ही कह्यो। सकतावत प्रवाडा वदसी[18]। इण आगै कठै ही फिर सका नही। पिण मेघ कह्यो–"जाणो मु दुनी कहो[19]। मोसू[20] तो गोत-हत्या नही हुवै।" उठाथी मेघ फिर आयो। पछै पँवार केसोदाससू क्यू वोलाचाली हुई। तरै मेघो केसोदास ऊपर आयो। भैसरोड पटै थित छै। केसोदास वेटा २ सू सामो आयो। वाज मूवो[21]। पछै राणै रीस कर मेघ रावतनू छुडायो।

---

1 जानकारी। 2 पीछे। 3 आदमियोने। 4 नाराज होगया। 5 कोटके किमाडोको वन्द कर अन्दर वैठ गया। 6 मेघका एक हाथी यो ही फिरने चरनेके लिये जगलमे गया हुआ था। 7 मेघके घर पर नही होनेसे उसने अपने वचनका पालन किया। 8 खूव लज्जित हुआ। 9 नाराज हुआ। 10 निकाल दिया। 11 मुझको मुह मत दिखाओ। 12 वुलाया। 13 मौतसे नही डरने वाले। 14 गोत्र हत्या होगी। 15 पीछा लौट गया। 16 समस्त। 17 इत्यादिने। 18 सकतावत विजय कर जायगे। 19 दुनिया चाहे सो कहो। 20 मुझसे। 21 लडकर मर गया।

सीसोदिया चूडावतारी साख। समत १७२२ पोह वदी ५ खिडियै खीवराज लिखाई–

१ सीसोदियो चूडो लाखावत, २ रावत काधळ।

२ कूतल २ माजो।

२ तेजसी २ रावत कांधळ चूडावत।

३ रावत रतनसी काधळोत।

४ रावत दूदो। हाडी करमेतीरै मामलै चीतोड काम आयो।

४ सतो। चीतोड काम आयो। करमेतीरै मामले।

४ करमो। चीतोड काम आयो। करमेतीरै मामले।

४ रावत साईदासरै नु खोळै[1] लियो।

४ रावत खगार रतनसीरो।

५ रावत प्रतापसिघ। वास वाहळै काम आयो।

६ सालवाहण।

५ रावत किसनो खगाररो।

६ रावत तेजो। ऊँटाळी काम आयो।

७ रावत मानसिघ।

८ रावत प्रथीराज।

८ रावत रूघनाथ। सलूबर पटै।

९ रतनसी।

६ लाडखान किसनावत।

७ जसू।

८ फरसराम।

५ रावत गोयद खगाररो। वेघम पटै। नाउवे-वाघरेड़ै काम आयो।

६ रावत मेघ।

७ रावत नरसिघदास।

८ रावत जैलसी। गाव २४, आठाणो पटै।

७ रावत राजसिघ। वेघम पटै।

८ महासिंघ।

---

1 गोद।

६ जोध गोयदोत ।

६ केवळदास गोयदोत ।

६ अचळदास गोयदोत ।

४ खेतसी रतनसीरो । जिण सगरो बालीसो मारियो ।

५ नाथू (रतनसीरो)।

६ सहंसमल ।

७ वेणीदास ।

३ सिघ काधळोत ।

४ नगो । करमेतीरै मामले चीतोड़ खाडैरै[1]मूडै कांम[2] आयो ।

५ वेटो थो सु चीतोड जूहरमे बळियो ।

४ जगो । मही नदी ऊपर चहुवाण करमसी सांवळदास मारियो, तठै काम आयो ।

५ पतो जगावत । समत १६२४ चीतोड काम आयो ।

६ कलो ।

७ नराइणदास । रांणपुर काम आयो ।

८ वाघ । नान्हो थको मूओ ।

६ सेखो ।

७ दलपति ।

८ मोहणसिघ ।

७ रूपसी ।

८ पचाइण । रूपसीरो ।

८ बालो ।

६ करन पतावत ।

७ नरहरदास ।

८ जगनाथ । मानसिघरै खोळै ।

८ जसवंत ।

८ सुजाणसिंघ ।

७ मानसिघ ।

---

1/2 खडगसे मारा गया ।

८ केसोदास
८ सूरजमल ।
८ कचरो ।
८ जगतसिघ ।
७ माधोसिंघ ।
८ गोवरधन ।
८ डूगरसी ।
८ जगरूप ।
८ रामसिघ मानसिहरो ।
८ प्रतापसिघ ।
७ राजसिघ करनोत ।
८ गजसिघ ।
८ सबळसिंघ ।
४ सागो सिंघोत ।
५ गोपाळदास । बाकारोळीरी वेढ काम आयो ।
६ बलू । विखामे मीच[1] मूवो ।
६ कचरो ।
७ इद्रभाण ।
७ परसराम ।
६ जीवो ।
७ अमरो ।
७ भोपाळ ।
७ कमो ।
५ दूदो सॉगावत । राणपुररी वेढ काम आयो ।
६ अचळो । माडळ काम आयो ।
७ जैत ।
८ कान ।
७ ऊदो ।

---

1 मृत्युसे मरा (युद्धमें नही) ।

६ ईसरदास ।

७ हमीर ।

७ गोकळदास । कैलवो पटै । टका लाख ४०००००) री रेख ।

७ प्रथीराज ।

५ जैमल सांगावत । वसीरा मगरा[1] काम आयो । विखेमे ।

६ नराइणदास ।

७ गोइददास ।

७ गोकळदास । वसीरो परगनो पटै । टका लाख ३०००००) री रेख ।

६ पूरो जैमळोत ।

६ मानसिघ जैमलोत ।

८ सूरजमल । राणपुररी वेढ काम आयो ।

६ मोहणदास ।

७ किसन । साहडा पटै । टका २००००) री रेख ।

७ अजवसिघ ।

६ जगनाथ

६ सहसमल ।

७ करन

७ भोपत

७ सुदरदास

८ चत्रभुज ।

२ कूतळ चूडावत ।

३ नारणदास ।

४ कमो ।

५ माडो ।

६ जमो ।

६ लूणो ।

७ सेवळसिघ ।

७ रामसिघ ।

---

1 वसीके पहाडोमे ।

७ डूगरसी ।
२ माजो चूडावत ।
३ नीबो ।
४ सुरताण ।
४ सूरो ।
५ सावळदास ।
६ करमसी ।
६ करन ।
७ राजसिघ ।
७ सबळसिंघ ।
२ तेजसी चूडावत ।
३ रावळ सावळदास ।

वात सीसोदिया डूगरपुर वासवाहळारा धणियारी

अै[1] रावळ करनरै बेटा राहप, माहप हुवा। तिण माहे राहप राणारा[2] चीतोड धणी । रावळ माहपरा[3] वागड़ धणी । अै सदा चीतोडरा राणारी चाकरी करता । पछ सै दिल्लीरा पातसाहॉसू पिण रजूआत[4] राखै छै । वागडनू गाव ३५०० सै लागै । आधा डूगरपुर वासै आधा वासवाहळा वासै हुवा । पेहली तो ठकुराई डूगरपुर मुदै[6] हुती । पछैसू रावळ उदैसिंघ गागैरै सूधी तो वागड एक छत्र भोगवी । नै रावळ उदैसिघरै बेटा २ हुवा—रावळ प्रथीराज नै जगमाल हुवा । सु रावळ प्रथीराज, उदैसिघ मूवा टीकै बैठो । जगमाल धरती वारै नीसरियो[7]। तिण ऊपर रावळ प्रथीराज काढणनू फोज विदा कीवी । तिण माँहे सिरदार चो० मेरो वागडियो, राव परबत लोलाडियो छै । सु अै जगमाल ऊपर गया । आ धरती माहेता[8] जगमालनू घेच काढियो[9]। जगमालरा गाडा लूटिया । कई रजपूत मारिया । जगमाल हाथा-पडता[10] नास गयो । भाखरे पैठो[11]। धरती वस करनै

---

1 ये । 2 राहप राणाके वशज चित्तोडके धणी । 3 और माहपके वशज वागडके धणी । ४ समस्त । 5 आनेजाने और हाजिरीका सबब । 6 मुख्य । 7 जगमाल अपने देशमे वाहिर निकल गया । 8 में से । 9 खदेड दिया । 10/11 जगमाल पकडे जानेकी स्थितिमें होते हुए भी अति त्वरासे भाग गया और पहाडोमें घुस गया ।

अै पाछा डूगरपुर आया। अै जाणै छै मन माहे म्हे वडो काम कर आया छा। सु म्हे क्यूई वधारो पावस्या[1]। माहरो घणो मुजरो हुसी[2]। मु रावळरै कोई खवासण-धाइभाई हुतो साथे[3]। सु फोज माहीथी[4] आगै वध नै घरै आयो थो। तिको पछै रावळ प्रथीराजरै मुजरै आयो[5]। तरै उणनु जगमाल ऊपर फोज गई ती तिणरी हकीकत एकत तेड पूछी[6]। तरै अै लोक क्यूही मरण-मारणरी वात समझै नही। तद रावळ आगै कह्यो–"जगमाल मारणरी घात माहे आयो हुतो, पिण चहुआण मेरे, रावत परवत टाळो कीयो[7]।" इण पाणीरा पोटला सोह साचा कर बाध्या[8]। वे ठाकुर फोज ले डूगरपुर आया। तरै रावळ प्रथीराज माहे वैस रह्यो। इणारो मुजरो ही लियो नही। अै दिलगीर हुय डेरै गया। पछै आपरा इतवारी चाकर खवास पासवाना साथै इणानू घणा ओळभा कहाडीया। "थे लूणहरामी हुवा। जगमालनू जाण दीयो। वोहत बुरी की। म्हे थानू दोनू वास राखा नही[9]।" इणे कह्यो–"म्हे तो भली चाकरी करी छै। रावळजी न जाणियो तो भली हुई।" तरै उण साथै इणानू तीन पानारा बीडा मेलिया हुता सु दीया। तद अै रीसायनै चढिया। मु घरै गया नही। जठै[10] जगमाल भाखरे थो, तठै[11] अै दोनू कोस एक ऊपर आय उतरिया। आपरै घरमाहे वडा आदमी परधान था, मु जगमाल कनै मेलिया। कहाडियो–"थारो दिन वळियो[12]। थारै धरतीरी चाह छै तो वेगा आय म्हासू मिलो" इणारा परधान जगमाल कनै गया। सारी वात समझाई, कही। तरै जगमाल कहण लागो। मोनू इणा ठाकुरारो वेसास[13] आवै नही। तद परधानासू सपत कर[14] जगमालरी हद-भात[15] खातर करी[16]। पछै जगमाल परधानानू साथे कर चहुवाण मेरो परवत कनै वे पाधरा आया। सीलकोल[17] करडा हुवै छै[18]। तिसडा[19] करनै इणा ठाकुरानै जगमाल

---

1 सो हम कुछ (पृथ्वीके रूपमें) और इनाम पायेगे। 2 सत्कार। 3 रावलके साथमे कोई खवास-धाभाई साथमें था। 4 मे से। 5 सेवामें आया। 6 एकान्तमें बुलाकर पूछा। 7 परन्तु चौहानो, मेरो और रावतने पहाडका आश्रय लिया। 8 इसने सभी झूठी वातोको सच्ची करके दिखादी। 10 जहां। 11 तहा। 12 तुम्हारे दिन फिर गये अर्थात् अच्छे दिन आगये। 13 विश्वास। 14 शपथ। 15 अत्यधिक। 16 आश्वासन दिया। 17, 18, 19 जितनी भी कडी प्रतिज्ञा होती है वैसी करके इन ठाकुरोको जगमालके पास ले गये।

कनै ले गया । इण आपरा आण जगमालरा गाडा भेळा किया[1] । भेळा हुय सारा धरती विगाडता हुवा थाणा ठोड-ठोड मारिया । मास ४ तथा ५ माहे धरती घणकरी[2] सारी सूनी कीवी । तरै प्रथीराज आपरा परधान हुता[3], तिणनू तेड पूछियो[4]– कासू कियो चाहीजै ?[5] तरै उणे कह्यो—"म्हे तो क्यू समझा नही[6] । जिण राजसू आ बात वीणती करनै कढायो छै, उणरा समझणरी छै ।"[7] तरै प्रथीराज परधानानू कयो[8]–"हुई सु नीवडी[9] । म्हे थानू[10] विगर पूछिया विचार कियो, तिणरा फळ म्हे रूडा भोगवा छा ?[11] । हमै थे भलो जाणो ज्यू करो[12] । मोसू धरती रखै रहे नही[13] । तरै प्रथीराजरा परधान रावळरै कहै वात कराय, बोलबध ले[14], जगमाल, मेरा, परबत कनै गया । वात सारी मेरा परबतसू कीवो । कह्यो – हमै एक हुवो[15] । कहो त्यूँ करा । कहो सु जगमालनू दा । कहो सु थानू वधारो दिरावा ।"[16] तरै राठोडै चहुवाणै कही–वा वात व्हे गई[17] । हमै बात बीजी[18] हुई । थाहरै वात की चाहीजै तो वागडरा हैसा दोय हुसी[19] । दोय रावळ हुसी । आधो-आध धरती बटसी[20] । दूजी वात वणणरी न छै ।"[21] तरै परधान पाछा प्रथीराज कनै गया । वात सारी माड कही ।[22] तरै रावळ कयो–"कासू कियो चाहीजै ?" तरै परधान कह्यो–"माठी वात छै[23] । आज पेहली न हुई सु हुवै छै । आ वात माहरा समझण जोग नही । रावळा उमरावानू वळे[24] इतबारी[25] चाकरानू बोलावो, त्या जोगी वात छै । राज[26] पिण[27] दिन पाच–दस विचार देखो । पछै किणहीनू ओलभो देण पावो नही ।" पछै रावळ प्रथीराज आपरा चाकर छा[28], तिणा सारानू पूछ दीठो । सको[29] कहण लागा–"धरती वसणरी नही ।

---

1 इन्होने अपने गाडोको लाकर जगमालके गाडोके साथ कर दिया । 2 अधिकतर । 3 थे । 4 उनको बुलाकर पूछा । 5 क्या करना चाहिये ? 6 तब उन्होने कहा–"हम तो कुछ समझते नही । 7 जिसने आपको इस बातकी प्रार्थना कर निकलवाया है उसके समझनेकी है । 8 कहा । 9 होनी सो हो गई । 10 तुमको 11 जिसका फल हम अच्छा भुगत रहे है । 12 अब तुम अच्छा समझो वैसा करो । 13 मुझसे किसी भी प्रकार धरती रह नही सकती । 14 वचन लेकर । 15 अब एक हो जावे । 16 कहो जितना वधारा (और अधिक प्रदेश) दिला दें । 17 वह बात तो समाप्त हुई । 18 अब बात दूसरी होगी । 19 तुमको बात करनी ही आवश्यक है तो वागड के दो भाग होगे । 20 बटेगी । 21 दूसरी बात बननेकी नही । 22 सब बात अथसे इति तक कही 23 बुरी बात है 24 और पुन 25 विश्वासपात्र 26 आप 27 भी 28 थे 29 सभी ।

जांणो त्यूकर मेळ करो।" तरै परधानानू रावळ प्रथीराज सूधो कह्यो–"जाणो सु जगमालनू दे मेळ कर आवो।" तरै परधान जगमाल मेरा कनै आया नै वात करी। गाव ३५०० सैरो आध जगमालनू दियो। वासवाहळो पग-ठोड[1] थापी। दोय रावळ हुवा। दोया सारीखी[2] राजधानी हुई। तरवार सामा वासवाहळारा धणियारी विसेख हुई।[3]

वात वांसवाहळारा मानसिघरी–

रावळ मांनसिंघ, रावळ परतापरै खवास पदमा विणियाणीरै पेटरो[4]। रावळ प्रतापरै और वेटो को न थो, नै मानसिघ निपट सुलखणो[5] हुतो। पाच रजपूत देसरै मिळ मानसिहनूँ टीको दियो। राज करै छै। पछै चहुवाणारो नारेळ आयो[6]। आप परणीजण उठै गयो। वासै[7] वासवाहळै आपरा परधान राख गयो हुतो। वासै खुधुरै भीले क्यू विगाड कियो। तरै परधान थोडा हीज साथसू खुधु ऊपर गया। तठै वेढ हुई। रावळ मानसिघरै साथ नै भीलारै। वा वेढ भीला जीती[8]। रावळरो परधान हारियो। उणै[9] वेइजत[10] कर घोडा लेनै छोडिया। पछै रावळ परणीजनै आयो नै आ वात सुणी। सु काकण–डोरडा[11] खुल्या नही छै। रावळ मानसिंघरै डील आग लागी[12]। खुधु ऊपर चढ दोडियो। जायनै खुधु मारी[13]। गाव चोगिरद घेर नै खुधुरो धणी भील झालियो[14]। नै उणनू[15] पकडनै लेनै आयो। कोस १० आण डेरो कियो छै। उण भीलरै पगे बेडी छै। हाथ छूटा छै। उणसू आप डाकर[16] करै छै। डेरे कूचरी तयारी करै छै। चो० मान सावळदासोत, रा० सूरजमल जैतमालोत पिण निजीक छै। ओ खुधुरो धणी भील लाजरो[17] आदमी हुतो। तिण जाणियो मोनू रावळ वेइजत

1 रहनेका स्थान, राजधानी। 2 दोनोंके लिये एक सरीखी। 3 तलवारके सम्मुख वासवाडाके स्वामियोकी विशेषता रही। 4 प्रतापकी घरमे रक्खी हुई वनियेके स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न रावल मानसिंह। 5 मानसिंह अत्यन्त सुलक्षणो वाला था। 6 फिर चौहानोकी ओरसे विवाह सबन्धके लिये नारियल आया। 7 पीछे। 8 उस युद्धको भीलोने जीता। 9 उसने। 10 वेइज्जत। 11 विवाह ककण। 12 रावल मानसिंह अत्यन्त कुपित हुआ। 13 जा करके खुंधु गावको लूट लिया। 14 पकड लिया। 15 उसको। 16 डाटते हैं। 17 लज्जा (प्रतिष्ठा) वाला आदमी था।

करसी । नै कोट गयो तरै मोनू मारसी[1] । तरै भील किणहीकरी तरवार रावळा[2] खोळा माहे छानैसे[3] लेनै, रावळरै वासे आयनै, रावळ मानसिघरै झटकारी दीवी । सु झटको वहि गयो[4] । सोर हुवो । चो० मान रा० सूरजमल आय भीलनू ही मारियो ।

मानसिघरै बेटो को[5] न थो । पछै कोहेक[6] दिन मान हीज वासवारलारो धणी हुय बैठो । तरै तिण दिना डूगरपुर रावळ सहसमल धणी छै । तिण मानसू कहाव कियो–"जु तू कुण आदमी सु वासवाहळारी धरती खाय ?[7]" सु आ वात मानी नही मान । तद माहो-माह अदावद[8] हुई । तद रावळ सहसमल चढ मान ऊपर आयो । वेढ हुई । चो० मान सावळदासोत वेढ जीती । रावळ सहसमल वेढ हारी । बैस रह्यो[9] । तठा पछै राणै प्रताप उदैसिघोत वात सुणी–इण भात मान मोट-मरद[10] थको वासवाहळो खाइ छै । तरै वासवाहळा ऊपर फोज, सीसोदियो रावत रायसिघ खगारोत नै सीसोदियो रतनसी काधळोत नै असवार हजार ४००० दे विदा किया । चहुवाण मान यॉरै सामा आयो । आयनै वेढ करी । रावत रायसिघ काम आयो । दीवाणरो साथ भागो । मान चहुवाण वेढ जीती । राणो ही बैस रह्यो । तठा पछै चहुवाण माननू सारा वागडियॉ-चहुवाणा मिलनै कह्यो– "तोनू घणी फबी छै[11] । आपे वासवाहळारा धणी कदै नही[12] । आपे वासवाहळारा भड-किवाड छा[13] । थभ छा[14] । तू कोहेक पाटवी जगमालरो पोतरो पाट[15] माथै थाप । तद उग्रसेन कल्याणरो मोसाळ[16] थो, तिणनू तेडनै रावळाईरो टीको दियो । रावळा मोहला[17] माहे आधा मोहल मान लिया । आधा मोहल उग्रसेननू दिया । रावळ कह बोलायो । आधो हासल[18] रावळनू आधो हासल

---

1 और अपने कोट (स्थान) जाने पर मुझको मारेगा । 2 अपने । 3 गुप्त रीतिसे । 4 तलवारके झटके अपना काम किया । 5 कोई नही था । 6 कई । 7 तू कौन होता है जो वासवाडाकी धरतीका उपभोग कर रहा है । 8 परस्पर । 9 शत्रुता । 10 शान्ति करके बैठ गया । 11 वलपूर्वक । 12 तेरी वहुत फव गई (अनुकूलता मिलती रही) । 13 हम वासवाडेके स्वामी कभी नही । 14 हम वासवाडेकी रक्षा करने वाले शूरवीर है । 15 स्तम्भ है । गद्दी पर स्थापन कर । 16 ननिहाल । 17 महल । 18 राज-करा ।

मॉंन लियो वॉसवाहळारो । रावळरो हलण-चलण[1] वासवाहळामे नही । मॉन निपट आगतो[2] चालै । इणरै कीयॉ ही सारै नही[3] । रावळरै राजलोक[4] मॉहे वेअदवी मॉन घणी करै । रावळ घणो ही वळै[5], पिण जोर को चालै नही । तिकॉ दिनॉ राव आसकरन चद्रसेनोत इणरै परणीयो हुतो । सु आसकरन मारॉणो, सु आसकरनरी ठाकुरॉणी हाडी रॉड थकी[6] उग्रसेनरै राजलोक भेळी छै । वाळक छै, सु वडी रूपवत छै । सु मॉन इणसू वुरी निजर राखै छै । आ वडै घररी वहु त्वै तिसडी[7] सीलवत छै । सु मॉननू इण आपरी धाय मेल कहाडियो[8]– "तू रावळरो घर घणो ही विगोवै[9] छै, नै तू मॉणस[10] छै तो म्हारो नॉम मत लेइ ।" आ चकित थकी रहै छै[11] । मॉन ऑधो हुवो वहै छै[12] । सु एक दिन उरडनै[13] इणरै घर मॉहे आयो । इण दीठो[14], म्हारो धरम[15] न रहै, तद आ हाडी पेट मार मूई[16] । तिण समै रावत सूरजमल जैतमालोत रावळ उग्रसेनरै वास[17] छै । रुपिया हजार ६००० रो पटो पावै छै । सु आ वात हाडी इण कारण मूई सुणी । इसी कही तद सूरजमलनू घणी खारी लागी[18] । नै सूरजमल रावळनूँ कह्यो– "माथै सूत वॉधो छो[19] । हाथे हथियार झालो छो[20] । रजपूतरो खोळियो धारियो छै[21] । मरणो एकरसू छै[22] । ओ थॉरै घरमे किसो धूकळ ?"[23] तरै रावळ कह्यो– "सोह वात देखॉ छॉ[24] । जॉणॉ छॉं, पिण जोर कोई चालै नही । दाव[25] को लागै नही ।" तरै सूरजमळ रावळनू कह्यो– "वळ वॉध, हीमत पकड, इणनू दाव-घाव कर परो काढस्या ।[26]" रावळसू वोल-कोल किया । पछै सूरजमल मॉननू कवाडियो[27]–रावळरै घर विगोयै न सारियो[28] । राठोडॉ तॉई पोहतो

---

1 अविकार। 2 मर्यादारहित । 3 इसके कुछ भी अधिकारमे नही । 4 अन्त पुर। 5 क्रोध करता है । जलता है । 6 वैधव्य पालन करती हुई । 7 वैसी । 8 कहलाया । 9 कलकित करता है । 10 मनुष्य । 11 यह सावधान रहती है । 12 मानसिह मदान्धकी भाति चलता है । 13 वलात् साहस करके । 14 देखा । 15 पतिव्रत धर्म । 16 पेट मे कटारी मार कर मर गई । 17 उन दिनो रावत सूरजमल जैतमालोत रावल उग्रसेनकी सेवामे रहता है । 18 वुरी लगी । 19 सिर पर पगडी वाधते हो । 20 हाथमे शस्त्र धारण करते हो । 21 क्षत्रीका शरीर धारण किया है । 22 मरना एक वार है । 23 तुम्हारे घरमे यह कैसा उत्पात । 24 सब वात देखता हूँ । 25 कोई उपाय नही लगता । 26 छल कपट कर किसी भी प्रकार इसे निकाल देगे । 27 कहलाया । 28 रावलका घर विगाडनेसे काम नही वना ।

छै[1] । भली न की छै ।" सु मॉन तो गिनारै ही नही[2] । तद राव केसोदास भीवोत चोळी-महेसर[3] छै । वडी ठाकुराई छै । राव सूरजमल केसोदास वीच आदमी फेर वात करी[4] । कह्यो–"रावळ उग्रसेनरो ऊपर करो । रावळरी थॉनू बैहन परणावस्यॉ । इतरो दायजो देसॉ । फलॉणै दिन अजॉणजकरा[5] आवजो ।" ऊठै मॉन चहुआँणनूं तो खबर ही नही । अदावत माथै रावळ उग्रसेन, सूरजमल नै आपरा आदमियॉनै साथ सारा हीनू सिलै[6] कर बैठा छै । राव केसवदास आदमी १५०० सू आॅण फळसै नगारो दियो[7] । तद मॉन रावळ कनै खवर करणनै आदमी मेलिया था । आगै मॉनरो आदमी देखै तो रावळरो साथ सिलै कर बैठो छै । उण जाय कह्यो–"रावळरै भेदू[8] कोई आवै छै । थॉसूं चूक[9] छै । तद मॉन गढरी बारी कूद नाठो[10] । चाउडो भोजो सायरोत और ही साथ कॉम आयो । मॉनरो घर भार-भरत[11] रावळरै हाथ आयो । मॉन नास गयो[12] । ठाकुराई रावळरै हाथ आई । पछै सूरजमलनू रुपिया हजार २५००० पटो दियो । मॉन दरगाह[13] गयो । उठै घणा पईसा खरचनै वॉसवाहळो पटै करायो । फोज मदत ले आयो । तरै रावळ सूरजमल नीसर भाखरे पैठो[14] । सूरजमल साथ लेनै वसी मॉही रह्यो । रावळनू सासरै मेळ दीनो[15] । अै भाखर छै[16] । मॉनरो थाणो भाईबध काळजो[17] वडा २ डीळ[18] छै । सु भीलवण आठा राखिया छै । पछै भीलवणरा थाणा ऊपर एक दिन अजाणजकरा सूरजमल नै रावळरी साथ आय दोपहररा पडिया । कोई दइवरो फेर दियौ[19] । रावळरो साथ कॉम नायो[20] । नै चहुवॉण मानरा भाईबध असी आदमी वडा-वडा सोह[21] काम आया । मानरै पातसाही फोजरो सिरदार वासवाहळै थो, तठै

---

1 अब राठोडो तक पहुंचा है । 2 परवाह ही नही करता । 3 गावका नाम । 4 आदमी भेजकर वातचीत की । 5 अचानक । 6 कवच धारण कर । 7 गावके द्वार पर आकर नगाडा वजवाया । 8 गुप्त सहायक । 9 तुम्हारे दगा है । 10 भाग गया । 11 घर गृहस्थीका सामान । 12 भाग गया । 13 वादशाहके दरवारमें । 14 तव रावल सूरजमल निकल कर पहाडोमे घुस गया । 15 रावलको ससुराल भेज दिया । 16 ये पहाडमें रहते है । 17 अपने कलेजेके अर्थात् रक्त सबन्ध वाले । 18 कुटुम्वके बडे वडे शूर वीर हैं । 19 भाग्यने पलटा खाया । 20 रावलके मनुष्य युद्धमे काम नही आये । 21 समस्त ।

खबर आई। वे चढनै भीलवण गया। खेत[1] सभाळियो। तरै सिरदार-मुगल मानन् पूछियो—"तीन सै च्यार सै आदमी काम आया छै, इण मांहे थाहरा कितरा नै रावळरा कितरा[2]?" तरैमान कह्यो—"अै तो सोह म्हारा काम आया[3]।" तरै तुरका कह्यो—"थे लूण-हरामी कीवी, तिसी सभ्फा पाई।[4]" तरै तुरक ऊठ परो गयो। मांनरो वळ छूटो[5]। तरै मान वासवाहळो ऊभो मेळनै दरगाह गयो[6]। तद सूरजमल रावळन् खबर मेली। तद रावळ आय वांसवाहळै वैठो। धरती हाथ आई। मान दरगाह गयो, तठा पछै कितरेक दिने रावळ उग्रसेन नै सूरजमल ही दरगाह आया। मान पईसारै पाण पातसाही सारी हाथ की छै। इणानू पाखती[7] कोई वैसण न दे। मानन् वासवाहळो दीजै छै। तरै सूरजमल रावळनू कह्यो—"वामणांनू वासवाहळै कर लागै छै[8]। सु थे छोडो। म्हे अठै रहा छा[9]। सु मान मारणी आसी तो मारस्या[10] पछै धरती माहे कर छोड़ाई[11]। पछै रावळ हालियो। सूरजमल वासै रह्यो। पछै चहुवाण मान वीच आपरो रजपूत गागो गोड फिरै। पछै घात[12] देख मानरा डेरा ऊपर आयो। ब्राहनपुर चहुवाण माननू मार कुसळै सूरजमल कनै गयो।

वात सीसोदिया डूगरपुर वांसवाहळारा धणियारी—

समत १७०७ रै वरस मुहतो नरसिघदास जैमलोत डूगरपुर गयो थो। तरै रावळ पूजारो करायोडो देहरो[13] छै। तिणरै थाभै[14] रावळ पूजै आपरी पीढी[15] मडाई छै। तठाथी लिख ल्यायो[16]। पीढियांरी विगत—

१ आदि श्रीनारायण। २ कमल। ३ ब्रह्मा। ४ मरीच।

---

1 युद्धक्षेत्रको सम्हाला। 2 कितने। 3 ये तो समस्त मेरे ही काम आ गये (मर गये)। 4 वैसी सजा पाई। 5 मानकी शक्ति टूट गई। 6 तब मान वासवाड़के ऊपर अधिकार जमानेकी वात छोड़ कर वादशाहके दरवारमें गया। 7 इनको पासमे कोई वैठने न दे। 8 ब्रह्मणोको वासवाडेमें कर लगता है। 9 हम यही रहते हैं। 10 मानको मारनेका अवसर आयगा तो मार देगे। 11 पीछे देशको करसे मुक्त किया। 12 मारनेका अवसर। 13 मदिर। 14 स्तम्भ पर। 15 वशावली। 16 उस स्थानसे लेखकी प्रतिलिपि करके लाया।

५ कस्यप । ६ सूरज । ७ वैवस्वतमनु । ८ ( इक्ष्वाकु ) इखुक । ९ (विकुक्षि) विकुथ । १० जन्हु। ११ पवन्य। १२ अनेरण(अनरण्य) १३ काकस्त (ककुत्स्थ)। १४ विस्वावसु । १५ महामति । १६ चयवन। १७ प्रदुमन । १८ धनुर्द्धर । १९ महीदास । २० जोवनाव(युवनाश्व)। २१ सुमेधा । २२ मानधाता । २३ कुरथ सुरथ । २४ वेन । २५ प्रिथु । २६ हरिहर । २७ त्रिसकु । २८ रोहितास । २९ अम्वरीप । ३० ताडजघ । ३१ नाडीजघ । ३२ धु धमार । ३३ सगर । ३४ असमज ३५ असुमान । ३६ भागीरथ । ३७ अरिमरदन । ३८ खीरथुर । ३९ खीरुज । ४० दिलीप । ४१ रघु । ४२ अज । ४३ दसरथ । ४४ रामचन्द्र । ४५ कुस । ४६ अतिथ । ४७ निखध । ४८ नील । ४९ नाभ । ५० पुडरीक । ५१ खेमधन । ५२ देवाणिक । ५३ अहिनधु । ५४ जितमत्र । ५५ पारजात । ५६ सील । ५७ अनाभि । ५८ विजै । ५९ वज्रनाभ । ६० वज्रधर । ६१ नाभ । ६२ विनिजैधि । ६३ धिखनाश्व (धिषताश्व)। ६४ विश्वनि (विश्वाजित्)। ६५ हनु । ६६ नाभसुख (नाभमुख)। ६७ हिरन । ६८ कौसल्य (लौसल्य) । ६९ व्रहान्य (ब्रह्मान्य) । ७० उदैकर पत्रनेत्र । ७१ हदनेत्र। ७२ पुधन्वा ( सुधन्वा ) । ७३ हावसिद्ध । ७४ सुदर्सण । ७५ सहवण (सहवर्ण)। ७६ अगिनीवरण (अग्निवर्ण)। ७७ विजैरथ । ७८ महारथ । ७९ हईहय (हैहय) । ८० महानद । ८१ अनदराज । ८२ अचल । ८३ अभगमसेन (अभगसेन) । ८४ प्रजापाल (जापाल) ८५ कसेन (कनकसेन) ८६ जितसत्र (जितशत्रु) । ८७ सुजत । ८८ सलाजीत (सत्राजित = शत्रुजित) । ८९ सवीर । ९० सकत (सुकव = सुकृत) । ९१ समत (सुमत) ९२ चादसेह (चद्रसेन) । ९३ वीरसेह (वीरसेन) । ९४ सुजय । ९५ सुजित। ९६ विलापानस । ९७ हसनवसू । ९८ विजैनित्य । ९९ भासादित । १०० भोगादित । १०१ जोगादित । १०२ केसवादित । १०३ ग्रहादित । १०४ भोजादित । १०५ बापोरावळ । १०६ खूमाण रावळ । १०७ गोयदरावळ। १०८ मोहित रावळ । १०९ अजुरावळ ११० भादो रावळ । १११ सीहो रावळ ११२ सक्तिकुमार रावळ । ११३ सालवाहण रा०

(गालिवाहन) । ११४ नरवाहण रावळ । ११५ जसोब्रह्म रावळ । ११६ नरब्रह्म रावळ । ११७ अवोपसा रावळ (अवापसाव रावळ) । ११८ कीरत ब्रह्म रावळ । ११६ नरवीर रावळ । १२० उतम रावळ । १२१ भालो रावळ । १२२ सुरपुज रावळ । १२३ करन रावळ। १२४ गात्रड रावळ । १२५ हास रावळ (हस रा०) । १२६ जोगराज रावळ । १२७ वीरड रावळ । १२८ विरसेह (वीरसेन) रावळ । १२६ राहप रावळ । १३० देदो रावळ । १३१ नस्ता (नरू) रावळ । १३२ अरहड रावळ । १३३ वीरसीह रावळ। १३४ अरसी रावळ । १३५ राइसी (रासी) रावळ । १३६ सामतसी रावळ । १३७ कुमसो (कुमरसी) रावळ । १३८ मयणसी रावळ । १३६ समरसी रावळ । १४० अमरसी रावळ । १४१ रतनसी रावळ । १४२ पूजो रावळ । १४३ करमसी रावळ । १४४ पदमसी रावळ । १४५ जैतसी रावळ । १४६ तेतसी रावळ । १४७ समरसी रावळ $\frac{2}{139}$ । १४८ रतनसी रावळ $\frac{2}{141}$ । १४६ नरब्रम रावळ । १५० भालो रावळ $\frac{2}{121}$ । १५१ केसरीसिंह रावळ। १५२ सांमतसी रावळ$\frac{2}{136}$ । १५३ सीहडदे रावळ । १५४ देदोरावळ$\frac{2}{130}$ । १५५ वरसिह रावळ । १५६ भडसूर रावळ । १५७ डूगरसी रावळ । १५८ करम (करमसी $\frac{2}{143}$) रावळ । १५६ प्रतापी रावळ। १६० गोपो रावळ । १६१ स्यामदास रावळ । १६२ गागो रावळ । १६३ उदैसिघ रावळ । १६४ प्रथीराज रावळ । १६५ आसकरण रावळ । १६६ सहसमळ रावळ। १६७ करमसीरावळ$\frac{3}{143\text{-}158}$ । १६८ पूजोरावळ$\frac{2}{142}$ । १६६ गिरधर रावळ । १७० जसवत रावळ । १७१ खुमाण सिंघ रावळ $\frac{2}{106}$ । १७२ रामसिघ रावळ । १७३ उदैसिघ रावळ$\frac{2}{163}$ ।

इति पीढ्यारी विगत ॥

वात सीसोदियारी–

रावळ समरसी चीतोड राज करै छै । सु किणहीक भात लोहडा[1]– भाईनू कह्यो– "म्हे तोनू चीतोड दीनी ।" खुसी हुय कह्यो– लोहडै-भाई घणी चाकरी कर रीझाया तरै आप घणू खुसी हुइ

1. छोटा भाई ।

कह्यो–"म्हे तोनू चीतोड दीनी ।" तद लोहडै भाई कह्यो–"मोनू चीतोड कुण देसी[1] ? चीतोडरा धणी थे छो[2] ?" तरै समरसी कह्यो–"म्हारो बोल[3] छै । चीतोड तोनू दी ।" तरै उण कह्यो–"चीतोड खरी दी तो रजपूतारो बोल ह्वै तरै[4] ।" तद आप रजपूतानू कह्यो–"ठाकुरा ! सगळा बोल दो ।" तरै रजपूता कह्यो–"थे खरै-मन दी छै ? म्हा कना बोल समझ नै दिरावज्यो[5] ।"

तरै आप कह्यो–"म्हे खरै-मन दी छै । थे निसक बोल दो ।" तरै रजपूते सगळे बोल दियो । तरै ठाकुराई[6] सोह[7] भाईनै दे नै, राणाईरो खिताब[8] देनै, आप आय गाव आहाड वसियो । कितरेक दिने कितराक साथसू कहण लागो[9]–"जु आ धरती म्हे भाईनू दीनी । इण धरती माहे तो मोनू रहणो धर्म नही । काइक बीजी धरती खाटीजै[10] ।"

तरै वाटबडोद डूगरपुर कनै छै । तठै चोरासी-मिलक[11], भोमिया आदमी ५०० रो धणी छै । तिको, एक डूम[12] इणरै छै[13], तिणरी बैरसू चोरासी-मिलक हालै छै[14] । जोरावर थको चौडै-चापटै[15] । सक किण हीरी मानै न छै । डूम घणो ही बल-बल[16] मरै छै । उण डूमरी बैरनू लेनै आप माळियै[17] सूवै, तठा पछै सारी रात वळे डूमनू ओळगाडै[18] । किण ही दिन डूम ओळगण नावै तो मोहकम कूटाडै[19] । डूम नासण मतै छै[20] । पिण ऊपर रखवाळा आदमी रहै, तिण आगै कठी ही नास न सकै । डूम पिण सासतो घात जोवै छै[21] ।

---

1 मुझको चित्तोड कौन देगा ? 2 चित्तोडके स्वामी आप हैं । 3 मेरा वचन है । 4 तब उसने कहा—सचमुच ही दी हुई तो तब समझी जायगी जब आपके सरदारोका वचन भी साथमे हो जाए । 5 तब क्षत्रियोंने कहा–आपने सच्चे मनसे दी है ? हमारेसे वचन समझ करके दिलवाना । 6 राज्य-सत्ता । 7 समस्त । 8 पदवी । 9 अपने साथवालोसे कहने लगा । 10 कोई दूसरी धरती प्राप्त करनी चाहिये । 11 चौरासीमालिक । 12 गाने-बजानेका काम करने वाली जातिका एक व्यक्ति । 13 इसके पास है । 14 उसकी पत्नीसे चौरासी मालिक रमण करता है । 15 जबरदस्तीसे खुले आम । 16 डूम बहुत ही जलता है । 17 महल । 18 गायन करवाता है । 19 किसी दिन डूम गानेको नही आवै तो उसे खूब पिटवाता है । 20 डूम भागनेके विचारमें है । 21 डूम भी सदैव (शाश्वत) भागनेकी ताकमें रहता है ।

किण[1] कनै जाऊ ? किण कनै पुकारू ? तरै किणहीक उण डूमनू कह्यो–"रावळ समरसी चीतोड छोडनै आहाड आय वैठो छै। वडी जमियत[2] छै कनै। थारी मदत हुसी तो उठासू[3] हुसी। दूजो घर[4] तोनू को नही।"

तरै एकण दिन डूम घात देखनै उठासू उठ पाधरो[5] आहाड रावळ समरसी कनै आयो। डूम रावळ समरसीनू कहण लागो–

"अठे वैठा कासू करो[6] ? हू[7] कहू सो करो। थानू वडोदतीरा[8] चोरासी माराऊ।"

आगै समरसीरो मन नवी धरती लेणनू हूतो हीज[9] सु वात दाय आई[10]। डूमनू हकीकत पूछी। डूम सारी वात कही नै कह्यो–

"असवार ५०० सू वेगा चढो।"

तद डूमनू साथे लेनै रावळ समरसी वडोदैनू चढियो। अजाणजकरा जाय उतरिया। वडोदरै फळसे पागडा छाड नै[11] अढाई सै आदमी जेल[12] माहे राखिया नै आदमी २५० डूमनू लेनै कोटडीनू चलाया। नै आदमी ४० तथा ५० प्रोळरै[13] मूहडै वैठा था सु मारनै आघा वसीया[14]। घर माहे चोरासी थो तठै डूम साथै हुय वतायो। तरै चोरासीनू पण मारियो। आपरी आण-दाण[15] फेरी। नै कितरोहेक साथ नै ओ डूम अठै राखियो। आप विचार दीठ, आ ठोड छोटी। अठै माहरो पूरो पडै नही। तद डूगरपुररी ठोड भील आदमी हजार पाचसू रहै छै। डूगरपुररी वडी ठाकुराई छै। तठै रावळ समरसीरो चाकर रहणनू खोट[16] कर आयो। पछै डूगरसू मिळियो। डूगर पूछायो–"कहो राज ! क्यू आया ?" तरै रावळ समरसी कह्यो–

म्हे चीतोड तो भाईनू दीनीनै जाणा छा कहेक रूडी ठोड माणस च्यार मास राखै। नै पछै म्हे कठीक रोजगारसूं जावस्यां।

---

1 किसके। 2 घोडे और और सरदारोका एक समूह। 3 वहास। 4 दूसरा स्थान तेरे लिये कोई नही। 5 सीधा। 6 यहा वैठे क्या करते हो ? 7 मैं। 8 वडादका जागीरी इलाका (तुम्हारे द्वारा वडोदतीके चौरासियोको मरवा दू)। 9 थाही। 10 यह वात पसद आई 11 वडोदके द्वार पर घोडोंमे उतर कर। 12 अपने साथ। 13 द्वारके। 14 आगे वढे। 15 अपनी आज्ञा प्रवर्त्त की। 16 दगा।

दिलीरै पातसाहरै कै माडवरै पातसाहरै जावस्या। जितरै[1] थे कठेक पग-ठोड[2] दिखावो तो अठै आय रहा।" तरै उण एक वार तो कह्यो–

"थे कालै चोरासी-मिलक मारिया। अवै म्हानू थारो वेसास[3] न आवै।"

तरै समरसी कह्यो–

"चोरासी मारणमू म्हारै काम को न हुतो। पिण डूम आय पुकारियो, तरै वा वात हुई। वा धरती डूम भोगवै छै। रावळै[4] दाय[5] आवै तो, राज रावळा आदमी मेल[6] अमल[7] करो। माहरे उठै को न छै[8]। माहरै उण धरतीमू काम कोई नही।"

डूगरसूघणी लला-पतो[9] मिळाई। तरै डूगर रावळ समरसीनै राखियो। सु डूगर भील भाखररी खभ[10] हीमे डूगरपुर वसायो छै, तठै रहतो। रावळनू डूगर नेडी हीज ठोड पाधर[11] मे वताई। तठै अै आपणा गाडा आण वसी[12] सूधा[13] छोडिया। वाड वाळिया[14]–टापरा[15] किया। घणी चाकरी करनै डूगरनै राजी कियो। मास ५ तथा ६ हुआ, सु खरची गाठरो खाय। मागै क्यू ही नही। नै मास-खड[16] वळे आडो-पाड[17] नै डूगरसू कहाव कियो। कह्यो—

"म्हारै वेटी ४ मोटी हुई छै। हमै म्हेई राज कनै मास १ माहे सीख करस्या। पिण डावडियारा हाथ पीळा[18] किया न छै। सु फिकर छै। थे कहो तो डावडिया परणाइ ला।"

डूगर कह्यो–

"भली वात छै। वेटिया परणावो। म्हे ही हीडा[19] करस्या।" तद समरसी व्याह थापिया। भाई-वध सगानू कागद मेलाया–"फलाणै[20] दिन घणो साथ लेनै वेगा आवजो।"

---

1 जवतक। 2 पाव रखनेको स्थान। 3 विश्वास। 4 आपके। 5 पसद। 6 भेजकर। 7 अधिकार। 8 हमारा उधर कोई नही है। 9 डूगरसे बहुत सी चापलूसीकी वाते बनाई। 10 पहाडकी नाल और तलहटीमे। 11 खुला मैदान। 12 वशीवान सेवक। 13 सहित। 14 वाड (घेरा) बनाया। 15 झोपड़े बनाये। 16 एक आध मास। 17 और वीचमें डालकर। 18 किन्तु अभी तक कन्याओके विवाह नही किये हैं। 19 हम भी काममे मदद करेंगे। 20 अमुक।

पछै डूगरनू कहाडियो–

वडा ठाकुर ठोड-ठोडसू जानी[1] आवसी। तिणनू उतारणनू जोड २ सडा[2] वधायनै करावा।'

तरै डूगर कह्यो–"भली वात।"

तरै सडो १ तो निपट वडो, डूगर रहै छै तठै भाखर कनै निजीक वधायो। सडो १ रावळधरा वासै ऊचो निपट सवळो[3] वंधायो। सड़ो १ आपरो गुढो[4] थो तठै वधायो। जानारी[5] पिण आवणरी तयारी हुई। कितरो एक साथ आप न्योतिहार[6] तेडिया, तिके आय भेळा हुवा। व्याहरै साहा[7] पेहली आप डूगर कनै गया। घणी हलभल[8] की। वीनती की। दिना दोय माहे साहो आयो छै। जान आवसी तरै तो जानियारा हीडा करीजसी[9]। पिण माहरै घणी वात थे छो, जिण भेळा रहा छा। सवारै राज सारा साथ सूधा अठै आरोगो[10]। डूगर कह्यो–"भली वात।" तरै रावळ रातू-रात मेहमानीरी तयारी करी। तिण सारी रसोई माहे धतूरो, वचनाग, जाभो[11] घालियो। दारुफूल उलटारो पुलटियो[12]। सारी तयारी कीवी। पछै सवारै तीजै पोररा[13] डूगरनू –वेटा, भाया, परधाना सारा साथ सूधो तेडनै आदमी ७०० साड[14] वडा भील वडा सडा माहै वैसाणिया[15]। आदमी ४०० चाकर-आवर[16] वीजा[17] सडा माहे वैसाणिया। भली भात परुसारो[18] कियो, नै दारु पावता गया। तरै सारा लोट-पोट वेसुध हुवा। तरै सडा वेऊ आडा देनै लगाड दया[19]। कितरा एक वळमुवा[20]। वाकीरा[21] फळसारै मुहडै आया, मुखीली-खुटका[22] विगर मारिया। और साथ डूगररा घरा ऊपर मेलियो। मुकोई उठै हुता मुही

---

1 वराती। 2 एक प्रकारके वडे पडवे वा झोपडे। 3 दृढ। 4 निजी रक्षाका स्थान। 5 वराती। 6 वे सगे सवधी जिनको विवाहमें नोता देना आवश्यक होता है। 7 विवाहका दिन। 8 हलचल। 9 किये ही जायगें। 10 कल आप अपने कुटुम्व और नोकर चाकरो सहित मेरे यहा भोजन करिये। 11 अधिक। 12 फूल मद्यको पुन औटा कर अधिक मादक वनवाया। 13 तीसरे प्रहर। 14 छाटे हुए अच्छे। 15 विठाया। 16 नोकर चाकर आदि। 17 दूसरे। 18 परोसगारी। 19 तव दोनो सडोको ढककर आग लगादी। 20 जलकर मरगये। 21 शेष 22 विना प्रतिकार और सरलता से मार दिये।

मारिया । माल-वित[1] सारो[2] हाथ आयो । इणविध तो डूगरपुर ले आपरी राजधानी उठै कीवी । वडी ठकुराई हुई । विणजारा वहण लागा[3] । नै घणो दाण आवै छै ।

तिण दिन गळियो-कोट डूगरपुरसू कोस १२, तठै टाटळ-रजपूत भोमिया-माणस[4] हजार दोढ-दोयसू रहै । तिण माहे असवार ५०० छै । सासता[5] डूगरपुररो धरती मारै । विगाड करै । गळियो-कोट वडो कोट । तठै रहै । वाहर वासै हुवै, तितरै कोटमे पैसै[6] । कोटसू जोर लागै नही । नै कोटरी उणरै जावताई[7] घणी । उवेचकिया रहै[8] । रावळ घात घणी ही करै, पिण दाव लागै कोई नही । तरै रजपूत भाई २ रावळरै इतवारी चाकर था, तिणानू जोगीरो भेख करायनै गळिये कोट घात जोवणनू मेलिया । घणो खरच दियो । वे जोगी हुय गळिये कोट गया । वे आगला[9] ओपरा[10] आदमीनू गावमे रहण दै नही । सु वे चरचा सुणनै मास १ गावरै बारे बेस रह्या तळावरी पाळ ऊपर । कठै ही भीख मागण नै जाय नही । आपरो (भेद) कोई न जाएै त्यू आधीरा पछै छानै कर खाय[11] । किणही आवत-जावतसूँ बोलै नही । तरै उणरी वडी मानता[12] हुई । पछै गावरा साहूकार, परधान, कोटवाळ, वडेरा माणस हुता तिके गाव माहे जोगिया नूँ घणो हठ करनै ले गया । अै कहै–'म्हे न हाला[13] ।' पिण माडेई[14] ले गया । कोटरै मुहडै[15] ठाकर द्वारो छै, तठै राखिया । अै किणहीरै घर मागण न जाय । किणही सूँ घणा बोलै नही । इणारी वडी मानता हुई । तरै वडेरो टाटलारो धणी थो सु वेळा ५ तथा ७ इणारै दरसणनूँ आयो । कहण लागो–

"म्हारो धर प्रवीत[16] करो । कोट माहे पधारो ।" इणा वेळा दोय च्यार उजर कियो, पिण कोट माहे ले गया । उठै जिमाडिया[17] ।

---

1 धनमाल । 2 समस्त । 3 बनजारे उधर होकर चलने लगे । 4 निजके खेतोवाले क्षत्री लोग । 5 निरतर । 6 वाहर (पदचिन्हो को देखकर पीछा करनेवाले) पीछे पहुचने को होती है उतने मे ये कोट मे घुसजाते हैं । 7 रखवाली । 8 वे खूब सावधान रहते हैं । 9 गलिया कोटवाले । 10 अपरिचित और ऊटपटाग । 11 आधीरात को छिपकर भोजन वनाकर खाते हैं । 12 मान्यता । 13 हम नही चलते । 14 वलात् । 15 सामने । 16 पवित्र । 17 भोजन करवाया ।

कौट माहे हीज राखिया । अै कोटरा लगाव[1] देखै । पिण लगाव को कठै ही निजर नावै[2] । मास छ उणानूं कोट माहे रहतानूं हुवा । प्रोळ जाबताई घणी । दाव को लागै नही । सूई सचार कठै ही नही[3] । गळियोकोट नदी ऊपर छै । सु खाई माहे बारी १ छै । सु खाई सुराग रुखी छै[4] । तठै छानो[5] आवण-जावणरो राह छै । सु किणहीक परधानरै वेटे सदभाव माहे वात करता जणायो । तरै जोगिया पूछियो—"वा वारो कठीनै छै ।" तरै उण वताई । फलाणी ठोड छै । पछै दिन ५ तथा ७ नै उठै जाय बैठा । रातरा उण वारीरी खवर ले, वाहिर जाय माहि आवणरा भूमिया[6] हुवा । पछै उण टाटलारै कठीक व्याह-गाह[7] थो । तठी सारो साथ चढियो[8] । अै भाई वेउ आलोजीया ।[9] वरस १ आपानूं अठै आया हुवो । आज सारीखो दाव कदै लाभस्यै नही ।[10] तरै भाई एक रावळ कनै डूंगरपुर गयो नै भाई एक जोगी थको गळियेकोट माहे रह्यो । रावळनू सारी जाय कही । कह्यो—"कोट चाहीजै तो इण घडी चढो । रात थकी उठै पोहचो । म्हारो भाई बारीरै मुहडै बैठो छै ।" रावळ तिण वेळा असवार हजार १०००, पाळा[11] ५०० सू चढ दोडियो । आगै ओ वारी खोल वैठो थो । उण बारीरी तरफ हुय रावळ साथ सूधो कोटमे पैठो[12] । तितरै भाख फाटी[13] । टाटलारो जामो वरस वारै हुवा तासु[14] सारा वाटा काटिया[15] । बैरा पकड बध कीवी[16] नै गळियोकोट हाथ आयो । गाव ३५०० माहे रावळरी आण-दाण फिरी । वडी धरती हाथ आई ।

डूगरपुरथी कोस १ पछिमनू रुद्रमाळो देहुरो[17] नवो हुवो छै ।

---

1 सेंव । 2 नही आता है । 3 सूई प्रवेश करे उतना भी छिद्र कही नही । 4 वह खाई सुरगके रुखमें वनी हुई है । 5 गुप्त । 6 जानकार । 7 फिर उस टाटलाके कही विवाह आदि था । 8 वहा सव लोग चले गये । 9 इन दोनो भाइयोने विचार किया । 10 आज जैसा अवसर नही मिलेगा । 11 पैदल । 12 प्रवेश किया । 13/14 इतनेमें प्रभात हुआ । 14/15 टाटलाके समयको वारह वर्ष वीत गये थे सो उसके और आगे वढनेके सभी मार्ग मिटा दिये गये । 16 स्त्रियोको पकड कर वद कर दिया । 17 शिवका मदिर ।

गाव १७५० से तो डूंगरपुर कदीम छै वागडरा[1]। नै गाव १२ पवारारा सागवाडिया कडाणारा मारनै लिया छै[2]।

आ बात झूलै रुद्रदास भाणरै, साइया झूलारै पोतरै कही[3]। समत १७१६ रा चैत माहे। जैतारण माहे।

डूंगरपुररै देसरी सीव[4] इतरी[5] ठाड लागै—
गाव १७५०

उदैपुर दिसा गाव ६, सोम नदी सीव।

उत्तरनू ईडर दिसा गाव पुजूरी। गाव ६।

भीळारो मेवास पछिमनू।

वासवाहळा दिसी मही नदी। गाव १३। नदी मही डूंगरपुरसू कोस १० छै। तिका माडवरा भाखरासू आवै छै। सु सीरोही परगना हुइ नै देवळियाथी कोस ५ आय नै पाछी मुडी छै[6]। सु वास-वाहळा डूंगरपुर वीच हुय नै आगै गुजरातरै लूणैवाडा माहे वहै।

डूंगरपुर सहरती[7] उगवण[8] नै दिखण बेउ[9] तरफ भाखर छै। खोहळ[10] माहे सहर मगरारी खभ[11] वसियो छै। छोटो सो कोट छै। उठै रावळरा घर छै। गाव माहे देहुरा घणा छै। चोहटा[12] घणा। हाटै उसडी पीठ को नही।[13]

डूंगरपुरथी उत्तर दिसनू रावळ पूजारो करायो गोवरधननाथरो वडो देहरो छै।

गावसू ईसून[14] कूणमे रावळ गोपारो करायो वडो तळाव छै।

सहररै पाछै[15] भाखर छै। ऊपर सिकाररो आहुखानो[16] पिण उणहीज[17] भाखर छै। घणी दूर आउखानारे वास्ते भीत[18] छै।

---

1 वागडके १७ ५० गावोके सहित डूंगरपुर पहलेसे है ही। 2 बारह गाव पवारोके जिनमें साग, फल, सब्जी आदिकी बाडियें है उन्हें भी अधिकारमें कर लिया है। 3 यह बात साइया झूलाके पोते और भाणके पुत्र रुद्रदास झूलाने कही। 4 सीमा। 5 इतनी। 6 पीछी मुड गई है। 7 से। 8 पूर्वदिशा। 9 दोनो। 10 पहाडकी नाल। 11 पहाडके नीचे 12 चौराहे। 13 दुकानो पर वैसा व्यापार नही। 14 ईशानकोण। 15 पीछे। 16 आखेट स्थान। 17 उसी। 18 दीवार।

सहरसूं कोस पूणरी[1] तहड कूणमे गागडी[2] नदी छै। तिणरै ढाहै[3] रावळ पूजारो करायो वडो राजवाग छै।

वात वासवाहळारी—

मूळ तो कदीम ठाकुराई वागडरी डूगरपुर हीज हुती[4]। पछै रावळ जगमाल उदैसिघोत, रावळ प्रथीराज उदैसिघोत कनै आध वटायनै गाव १७५० लिया। वासवाहळो राजथान कियो। तठा पछै इतरा पाट हुवा[5]–

(१) रावळ जगमाल उदैसिंघरो।
(२) किसनो जगमालरो। पाट वैठो नही।
(३) कल्याण किसनारो। पाट बैठो नही।
(४) रावळ उग्रसेन कल्याणमलोत।
(५) रावळ उदैभाण।
(६) रावळ समरसी।
(७) राउळ कुळसिध समरसीरो।
(८) रावळ अजबसिंध।
(९) रावळ भीमसिघ।

आगै तो वट डूगरपुर वासवाहळे सारीखो हुवो थो पिण आज वासवाहळो क्यू डूगरपुरथी[6] सरस[7] छै। हासळ वासवाहळै भळेरो छै। मही नदी वासवाहळाथी कोस ३ उगवणनू[8] छै। मही नदी मांडवरा भाखराथी आवै छै। डूगरपुरथी कोस १० मही नदी वहै छै। डूगरपुर वासवाहलै मुदै[9] रजपूत चहुवाण—वागडिया। चहुवाण डूंगरसी वालाउतरा पोतरां माथै।[10] इणारै वाप-दादा सदा डूगरपुर वासवाहळारा धणियानै थापै—उथापै[11] छै। नै वाहरली फोजा राणारी, पातसाहरी आवै छै, तरै चहुवांण स्याम नदी राणारै मुलकरै गडा

---

1 पोन। 2 एक नदी। 3 नदीका ऊचा किनारा। 4 प्रारम्भमे प्राचीन समयसे ही वागडकी ठकुराई डूगरपुरमें ही थी। 5 जिसके वाद इतनी राज गद्दियें हुई। 6 से। 7 अच्छा। 8 की ओर। 9 मुख्य। 10 जो वालावत डूगरसीके पोतोसे यह (शाखा-वागडिया चौहानकी) प्रसिद्ध हुई। 11 स्थापन करते और हटाते हैं।

सघ[1] छै, तिण लोपता[2] चहुवाण सदा मरै छै। स्याम नदीरै ढाहै चहुवाण काम आयारी छतरिया[3] छै। वागडरै काठै[4] चहुवाण भड-किवाड[5] रजपूत वेढीला[6] छै। सु धणियारै नै चहुवाणारै रस[7] थोडा दिन हुवै छै। तद मारवाडरा रजपूतानू वडा-वडा पटा देनै सदा वागडरै राजथान वास राखै छै। राठोडे उठै वडा-वडा प्रवाडा[8] किया छै। तिण राठोडारो उठै वडो नाव[9] छै। वडो इतवाद छै।

वासवाहळारै सीवरी[10] विगत—

सर्ब गाव १७५०

डूगरपुरसूं सीव पछिम दिसा देवळियो लागै। राजपीपळो निजीक छै।

वासवाहळै गाव १७५० तो कदीम छै डणारै। तठा पछै इतरी धरती वासवाहळारा धणिया वळे[11] नवी खाटी[12] छै।

आ वात चारण-भूलै रुद्रदास भाणरै, साईया भूलारै पोतरै कही। समत १७१६ रा चैत माहे। मुहता नैणसी आगै जैतारणमे[13] भोमियारा मार लिया, भोग पडिया[14] गाव १४० सीरोहीरा भीलांरा मेवासरा तथा देवडारा, महीरै पैलै-काठै[15] कोस ६ उगवण-दिसा[16]। गाव १२ खुधुरा उगवणरा[17] खळ-महीडारा[18]। गाव १२ पीढी मगरा-महीडारा[19]।

गैहलोता चोवीस साख भिळै—

१ गैहलोत, २ सीसोदिया, ३ आहाडा, ४ पीपाडा, ५ हुल, ६ मागळिया, ७ आसायच, ८ कैलवा, ९ मगरोपा, १० गोधा,

---

1 निकट। 2 जिसको लाघने पर। 3 स्मारक। 4 सीमा पर। 5 रक्षक-शूरवीर, द्वाररक्षक। 6 युद्ध-रसिक। 7 स्वामी और चौहानोके परस्पर प्रीति थोडे दिन ही निभती है। 8 युद्ध, युद्ध विजयकी कीर्ति। 9 ख्याति। 10 सीमा की। 11 और पुन। 12 प्राप्त की है। 13 यह बात भाणके पुत्र और साइया झूलाके पोते झूले चारण रुद्रदासने वि० स० १७१६ के चैत्रमें मुहता नैणसीको जैतारनमें कही। 14 निम्न प्रकार गाव भोमियोके थे जिनको ठोक कर अपने अधिकारमें ले लिये और उनको भोगमे ( एक प्रकारकी कर-वसूली प्रथा ) डाल दिये। 15 मही नदीके उस किनारे पर। 16 पूर्व दिशामें। 17 पूर्व दिशाकी ओर। 18 एक जाति। 19 पीढीके मगरा महीडोके।

११ डाहळिया, १२ मोटसिरा, १३ गोदारा, १४ भावला, १५ मोर, १६ टीवणा, १७ मोहिल, १८ तिवडकिया, १९ वोसा, २० चद्रावत, २१ घोरणिया, २२ वूटावाळा, २३ वूटिया, २४ गाहमा,

अथ पवारांरी पैंतीस[1] साख—

१ पवार, २ सोढा, ३ साखला, ४ भाभा, ५ भायल, ६ पेस, ७ पाणीसवळ, ८ वहिया, ९ वाहळ, १० छाहड, ११ मोटसी, १२ हुवड़, १३ सीलारा, १४ जैपाळ, १५ कगवा, १६ कावा, १७ ऊमट, १८ धाधू, १९ धुरिया, २० भाई, २१ कछोटिया, २२ काळा, २३ काळमुहा, २४ खैरा, २५ खूट, २६ टल, २७ टेखळ, २८ जागा, २९ छोटा, ३० गूगा, ३१ गैहलडा, ३२-कलोळिया, ३३ कूकणा ३४ पीथळीया, ३५ डोडकाग, ३६ वारड ।

चहुवाणारी चौवीस[2] साख—

१ चहुवाण, २ सोनगरा, ३ खीची, ४ देवडा, ५ राखसिया (साखसिया), ६ गीला, ७ डेडरिया, ८ वगसरिया, ९ हाडा, १० चीवा, ११ चाहेल, १२ सैलोत, १३ वेहल, १४ वोडा, १५ वालोत, १६ गोलासण, १७ नहरवण, १८ बेस, १९ निरवाण, २० सेपटा, २१ ढीमडिया, २२ हुरडा, २३ माल्हण, २४ वक्रट ।

साख इत्ती पडिहारा भिलै[3], भाट खगार नीलियारै लिखाई[4]—

१पडिहार, २ ईदा[5], मळसिया, काळपाघडिया, वूलणा, ३ लूलो, रामियारा पोतरा[6], ४ रामवटा, ५ वोथा, मारवाड माहे छै, पाटोदी धकै[7] छै, ६ वारी, मेवाड माहे रजपूत छै, मारवाड मे तुरक छे[8], ७ धाधिया, पाधरा-रजपूत[9] घणा छै, जोधपुररी[10] मे छै, ८ खरवर, मेवाड में

---

1 शीर्षकमें ३५ शाखाए लिखी है किंतु ३६ है। 2 शाखा, भेद। 3 पडिहारो में इतनी शाखाये शामिल हैं। 4 नीलिया ग्रामके निवासी भाट खगारने लिखवाई। 5 पडिहारो की ईंदा शाखाकी मळसिया, काळ पाघडिया और वूलण। ये तीन अवान्तर शाखायें है। 6 रामियाके पोते लूणो शाखाके है। 7 वोथा शाखाके राजपूत मारवाडमें हैं। वे पाटोदीके परे रहते हैं। पाटोदी वालोतरासे १२ मील उत्तरमें और-जोधपुरसे ६० मील पश्चिममें है। 8 वारी शाखाके राजपूत तो मेवाडमें है और जो मुसलमान हो गये हैं वे मारवाडमें रहते हैं। 9 साधारण राजपूत (विना जागीरीके) अधिक हैं। 10 जोधपुरके प्रदेशमें रहते हैं।

घणा । ९ सीधका, मेवाडमे नै वीकानेररै देस मे छै । १० चोहिल, मेवाडमे घणा । ११ फळू, सीरोही जालोर[1]री मे घणा । १२ चेनिया, फलोधी दिसा[2] छै । १३ बोजरा । १४ भागरा, मारवाडमे भाट[3] छै । धनेरियै, भू भळियै नै खीचीवाडै रजपूत छै । १५ वाफणा, वाणिया[4] । १६ चौपडा, वाणिया[5] छै । १७ पेसवाळ, रवारी[6], खोखरियावाळा । १८ गोढला । १९ टाकसिया, मेवाडमे छै । २० चादोरा, कु भार[7], नीबाजवाळा । २१ माहप,-रजपूत, मारवाडमे घणा । २२ डूराणा, रजपूत छै । २३ सवर, मारवाडमे रजपूत छै । २४ खू मोर । २५ सामोर । २६ जेठवा, पडिहारा मिलै ।

साख सोळकियारी—

१ सोळकी, २ वाघेला, ३ खालत, ४ रहवर, ५ वीरपुरा, ६ खेराडा, ७ वेहळा, ८ पोथापुरा, ९ सोजतिया, १० डहर, सिध[8] नू, तुरक हुवा, ११ भूहड, सिधमे तुरक हुवा, १२ रूभा, तुरक हुवा थटा दिसी[9] ।

वात देवळियारै धणियारी—

इण परगनारो नाम ग्यासपुर छै, तिणरो[10] देवळियो गाव छै । सु देवळियाथी कोस ५ ईशान-कूण[11] माहे छै, उठै गढ कोई न छै,

---

1 सिरोही और जालोर प्रदेशमे अधिक । 2 फलोदीकी ओर है । 3 पडिहारोकी भागरा शाखा वाले राजपूत भाट हो गये जो मारवाडमें रहते है । 'भाट' संस्कृतके 'भट्ट' शब्द का अपभ्रश है । विविध जातियोकी वशावलियें लिखना इनका धधा है । वशावलिया लिखने और सुनानेकी वृत्ति अगीकार करनेके वदलेमें भेट, पूजा-सन्मान, त्याग और दानादि ग्रहण करनेके कारण यह जाति अपनेको ब्राह्मण मानती है और अब 'ब्रह्मभट्ट' नामसे इनकी प्रसिद्धि है । 4 'वाफना' शाखाके पडिहार अब ओसवाल वनियो की एक शाखा है । 5 'चौपडा' शाखाके पडिहार अब ओसवाल वनियोकी एक शाखा है । 6 खोखरिया गावके रहनेवाले 'पेशवाल' शाखाके पडिहार भेड बकरी और ऊट आदि रखने और चरानेका धधा करनेके कारण ये 'रेवारी' कहलाने लग गये और भाटोकी भाति ही अलग जाति में परिवर्तित हो गये । 7 नीवाजमे रहने वाले 'चादोरा' शाखाके पडिहार मिट्टीके बरतन बनानेका धधा करनेके कारण 'कुम्हार' जातिमें परिवर्तित हो कर क्षत्रियोसे अलग पड गये । 8 सोलकी शाखाके 'डहर' राजपूत सिधमें जा कर मुसलमान हो गये । 9 सोलकी शाखाके 'रूभा' राजपूत सिधमे नगर-थट्टाकी ओर जा कर मुसलमान हो गये । 10 ग्यासपुर परगनेका मुख्य गाव देवलिया है । 11 ईशान कोण ।

भोखरारी खाभ[1] माहै ग्यासपुर छै। घर ५० वसै छै। तठै मेरारी कदीम ठाकुराई थी। मेर मेवासी थका[2] रहता। नै खीवो राणा मोकलरो वेटो हुवो तिकै जाय सादडी तेजमालरी उदैपुरसूं कोस २५, चीतोड़सूं कोस २० दिखणनूं[3] तठै जाय रह्यो। रांणो कूंभो पाट छै[4]। माहो माहि भाया ग्रास-वेध लागो[5]। खीवै माडव जाय पातसाहरी फोज आण[6] मेवाडनूं वडो धको दियो। वडो ग्रासियो हुवो[7]। कूंभो नै खीवो लडता रह्या, पिण खीवानूं काढ सकिया नही। राणो कूंभो नै खीवो खसता-खसता[8] मूवा। चीतोड रांणो रायमल पाट वैठो। खीवारै टीके रावत सूरजमल वैठो। सु राणो रायमल नै सूरजमल घणी ही खसाखूंद[9]। सूरजमल घणी धरती गिरवा सूधी लिया रहै[10]। सादड़ी थका भोगवै[11]। तद गाव १७ सासण[12] दिया सूरजमल। सु वे सांसण अजेस[13] छै। रावत वाघ करमेती हाडीरै मांमलै काम आयो[14]। तद करमेती कना सही घताड दी तका गावारी विगत[15]—

१ भीमेल, १ धारता, १ गोठियो, १ वीझणो, १ वासोलो, १ भुरखिया, १ वालिया, थाहरनूं, १ चारणखेडी, १ खरदेवळो, भाटरो, १ मुआळी। इतरा गाव सासण दिया। यूं करता पछै रायमलरै कवर पृथ्वीराज-उडणो[16] लाघा-वलाय[17] मोटो हुवो सु सूरजमलसूं पृथीराज जोर लागो[18]। घणी वेढ[19] कीवी। आखर[20] सादडी वडी वेढ हुई।

---

1 दो पहाडियोके बीचका ढालू और नीचा स्थान। 2 मेरे लुटेरे थके वहा रहते थे। 3 को। 4 राणा कुभा चित्तौड सिंहासन पर है। 5 भाइयोमे परस्पर भूमि-कर विभागके लिये विरोध उत्पन्न हो गया। 6 ला कर। 7 वडा उपद्रवी हो गया। 8 लडते-लडते। 9 द्वेष। 10 सूरजमल गिरवा तक बहुतसी भूमि दबाये बैठा है। 11 सादडीका भी उपभोग करता है। 12 उस समय सूरजमलने १७ गाव दानमें दिये थे। 13 अभी तक। 14 करमेती हाडीके सम्बन्धमें जो युद्ध हुआ उसमें रावत वाघ काम आया। 15 उस समय गावोंके दानपत्रमें करमेतीके हस्ताक्षर करवा दिये गये जिनकी सूची इस प्रकार है। 16/17 'उडणो' और 'लाघा-वलाय' रायमलके पुत्र पृथ्वीराजके ये विशेषण हैं। उडणो = बहुत तेज गतिसे जाकर कार्य सम्पादन करने वाला। लाघा-वलाय = इस पारसे उस पार जा कर शत्रुओंमें भय उत्पन्न करने वाला, लाघने वालोमें बला रूप। पृथ्वीराजने एक ही दिनमें टोडा और जालोर विजय किये थे। इतनी लम्बी दूरीको लाघ कर उसी दिन दोनो स्थानो पर विजय प्राप्त करनेके असाधारण कार्यके उपलक्ष्यमें पृथ्वीराजने अपने नामके साथ ये विशेषण प्राप्त किये। 18 वेगपूर्ण पीछा किया। 19 लडाई। 20 अन्तमें।

सूरजमल पूरे[1] घावे पडियो । तिण वेढथी[2] गिरवो छूटो । नै सूरज-मलरा दिया दहवारीरै बारै गाव वीभणो नै वासोलो वीजा ही सासण गाँव घणाई दिया सु अजेताई[3] छै । इण वेढ ही सादडी छूटी नही । पीढ़ी ४ ईणारै रही ।

१ रावत खीवो मोकलरो ।

२ रावत सूरजमल ।

३ रावत बाघ सूरजमलोत । चीतोड वहादररै मामलै काम आयो ।

४ रावत वीको ।

एक दिन सीसोदिया रावत सूरजमल खीमावत ऊपर अजाण-जकरो[4] कवर प्रथीराज रायमलोत आयो, सु पैहलै दिन राणो रायमल नै सूरजमल मामलो हुवो थो, तठै राणारी वयू कम हुई थी[5] नै सूरजमलरी वधती हुई थी[6] । सु सूरजमलरै क्यु हेक घाव लागा था नै दूजै दिन प्रथीराज टूट पडियो तद सूरजमलरै घाव निपट घणा लागा । सु रजपूत सूरजमलरी डो'ळी[7] ले भाखरनू नीसरिया, तरै वासै[8] साथ प्रथीराज भाखर चाढै छै । सु प्रथीराजरो वनो देवडो नै सूरजमलरो चाकर महियो अै दोनू वाभिया[9] । वनै महियानू मार लियो । अै दोनू ठोडै दूणेटो पावता[10] । नै महियो सीसोदियो छै ।

देवळिये रजपूत सीसोदिया सहसावत नै सोनगरा छै । सीसोदियो जोगीदास जोधरो । जोध गोपाळरो । सहसो, खीमो मोकलरो । सु आज जोगीदास भलो रजपूत छै ।

रावत वोको–वीका-रो बेटो भानो टीकै[11] हुवो । नै चीतोड धणी राणो अमरसिघ हुवो । नै सैदनू जीहरण मीमच छै[12] । दीवाणरै नउवो वाघरडै हद छै[13] । तठै रावत गोवद खगाररो चूडावत थाणै[14]

---

1 घावोसे पूर्ण हो कर गिर पडा । 2 से 3 अभी तक 4 अचानक 5 (पराजित होने के कारण) न्यूनता रही । बाजी ढीली रही । 6 और सूरजमलकी वाजी बढतीमें रही थी । 7 सोये हुए आहत और मूर्च्छित व्यक्तिको कन्धो पर उठा कर लेजानेकी एक टिकटी । 8 पीछे । 9 लडे । 10 दोनो स्थानोमें ये दूसरोसे दुगुना मुआवजा पाते थ । 11 गद्दी बैठा 12 जीहरण और मीमच पर सैयदका अधिकार है । 13 अमरसिहके राज्यकी सीमा नेउवा और वाघरडा गावो तक है । 14 थाने पर स्थित है ।

छै। तिण ऊपर[1] सैंद आयो। तद रावत गोवद काम आयो। तठा पछै राणारा हुकमसू सीसोदिये जोध सकतावत मोरवण, कराथो, कुडळरी सादडी जीहरणरा गाव कितराएक मुकातै लिया[2]। जोध, वाघ वेऊ[3] भाई वसिया। जोध एक ठोड, वाघ एक ठोड धरती वीच घाती[4]। उणरी[5] धरती वसण दै नही। आपरी वासै[6]। मीमचरै गाव चौथ[7] मागे छै। नै रावत वीको अठाथी राणै उदैसिघ ठेल काढियो छै,[8] तो पिण[9] इणारो[10] सादडी माहे दखल छै। वीके जाय देवळिये गुढो कियो[11]। तद उठै वडेरी मेरारे आसारण दादी छै[12]। उणरो कारण घणो छै[13]। वे कयो म्हे थानू रहण नही दाँ अठै[14]। तरै इण घणा सूस-सपत[15] किया। पछै होळीरै दिन चूक करनै मेर सोह मारिया[16]। वीके देवळियो लियो। उण आसारणारा वेटा-पोतरानू गाव १ अजेस छै[17]। तिणरो वडो इतवार छै[18]। गाव ७०० देवळियानू लागे नै देवळियारै पूठीवासै[19] गाव १०० माहे मेर रहे छै। केई रैत[20] छै, केई मेवासी[21] छै। वडी धरती छै[22]। गोहू, उडद, चावळ, वाड[23] घणो हुवै। आवा महुडा घणा[24]। गाव ३०० भाखर माहे, गाव ४०० भाखरारै वारै छै।

इतरी धरती देवळियेरा नवी खाटी[25]--

गाव ८४, सुहागपुरो सोनगरारो उतन[26]। रावतसिघ आ ठोड लीवी। वे सोनगरा चाकर थका अजेस धरती माहे रहे छै[27]। रामचद[28]

---

1 जिस पर चढाई कर। 2 इजारे पर लिये। 3 दोनो। 4 जोधने एक स्थान पर और वाघेने एक दूसरे स्थान पर भूमि पर अधिकार किया। 5 उसकी ( सैयद की ) भूमि आबाद नही होने देते। 6 अपनी भूमिको वसाते है 7 आयका चतुर्थांश 8 और रावत वीकाको राणा उदयसिंहने यहासे निकाल दिया है। 9 तोभी। 10 इनका। 11 रक्षास्थान वनाया। 12 वहा ( देवळिये ) मे उस समय मेरोकी एक आसारण पितामही रहती थी। 13 उसकी बहुत प्रतिष्ठा है। 14 उसने कहा हम तुमको यहा नही रहने देंगे। 15 तव इसने वहुत प्रकार सौगध खा कर वचन दिया। 16 किन्तु होलीके दिन छल करके उसने सब मेरोको मार दिया। 17 अभीतक एक गाव उन असारणोके वेटे पोतोके अधिकारमे है। 18 उनका वडा सम्मान और भरोसा है। 19 पीछेकी ओर 20/21 कई नियमपूर्वक प्रजाके रूपमे और कई लुटेरोके रूपमे 22 भूमि अच्छी उपजाऊ है। 23 गन्ना। 24 आम और महुआ अधिक। 25 इतना-भूप्रदेश देवलिया वालोने और नया प्राप्त किया। 26 जन्मभूमि। 27 वे सोनगरे नौकर की स्थितिमे अभी तक उस धरती मे रहते है। 28 वह न्यायी और धर्मात्मा होनेके कारण भगवान् रामके आचरणोका अनुवर्ती कहा जाता था।

कहावतो, राव पदवी। वडो ठाकुर हुवो। देवळियाथी कोस चवदै दिखणनू माळवा माहे वडी धरती। गोहू, वाड, मसूर, चिणा, ज्वार घणी नीपजै।

गाव १४० परगनो वसाडरो। देवळियाथी कोस ४ उगवण[1] माहे, वडी धरती। गोहू, वण[2], वाड, ज्वार, चावळ नीपजै।

गाव ६४ परगनो नेणेररो। देवळियाथी कोस १० दिखणनू सुहागपुरै लगती। दिखण दिसनू अरणोदगौतमजी[3] वडो तीरथ छै। गोहू, वाड, वण, ज्वार, चावळ नीपजै।

गाव १२ सेवना[4] मदसोर रावत हरीसिघ दबाया छै। क्यु ही मुकातो दै छै। देवळियाथी कोस १० घणा दिन मुकातो-कर[5] लियो।

इतरा गावा परगनॉसू देवळियारो काकड[6] लागै। १ दसोर, १ रतलाब[7], १ बलोररो परगनो राणारो। सोनगरा वालावतारो उतन। झाडी घणी। १ जीहरण-राणारी, १ धीरावद-राणारी, १ वासवाहळो।

इतरा परगनासू काकड लागै—

नदी २ जाखम नै जाजाळी। देवळियारा भाखरामे नीसरै छै[8]। तिणरो पाणी निपट बुरो छै। देवळियेथी कोस ५ पछिमनू छै। उदैपुरसू देवळिये जाईजै तद आडी आवै छै[9]। पाणी पीवै तिणनै तो खेद[10] करैहीज पिण पग माहे बोडै[11] तिणनू ही दखळ[12] करै छै।

वात—

सीसोदियो जोध, वाघ मुकातो जीहरणरो ले रह्या छै। धरती भोग घाती[13] छै। सैदसू पिण जोरावरी[14] करै छै। रावत भानारै गावासू लागै छै, नै अै चढनै देवळियेरै मेरारा गाव मारै छै[15]। रावत भानैनै इणारै जोर विरस[16] छै। तद भानै सैदनू कह्यो—'अै

---

1 पूर्व दिशा। 2 रुई 3 एक तीर्थ-स्थान। 4 गावका नाम। 5 इजाराकी स्थितिमे मिलने वाला कर 6 सीमा। 7 रतलाम नामक शहर। 8 निकलती है। 9 उदयपुरसे देवलिये जाना होता है तब बीचमे आडी आती है। 10 रोग, कष्ट। 11-12 किन्तु पाँव डुबानेमे भी गडबड कर देता है। 13 भूमि पर अधिकार कर लिया है। 14 जबरदस्ती। 15 लूटते है। 16 अनबन।

वळाया[1] अठै क्यू राखै छै। सवारै श्रै थानू[2] हीज मारसी।' तरै सैद माखण ही वात मानी। एक वार दीवाण श्रमरसिघ कनै पुकार की 'जोध माहरा[3] गाव मारै छै'। 'माहरै माथै चढसी' श्रा वात जोध साभळी[4]। तरै माहोमाह दरवार माहै जोर चढिया[5]। वात कराडा वारै हुई[6]। भानो पाछो देवळियै गयो। जोध पाछो गाव गयो। सैद माखण मदसोररो फोजदार नै रावत भानो मांणस श्रसवार १५०० जोध ऊपर श्राया। जोध श्रसवार १००, पाळा दोयसैसू चढ सामो श्रायो। तठै चीताखेडैरै पैलै-कानै[7] वड थो तठै वेढ हुई। जोध सैद माखण नै रावत भानैनू मारनै जोध काम श्रायो। तठापछै उणे[8] गावे जोधरा वेटा नाहरखान भाखरसी रह्या। सैद पिण धको खाधो[9]। देवळियैरै धणिये पिण धको खाधो। देवळियै टीकै सिघो तेजावत भानारो भाई वैठो। पछै मीमच राव दुरगो। रामपुरारा धणीनू तरै राव दुरगे कह्यो—'म्हे दीवाणरा चाकर छा। जाणै ज्यू[10] मीमच-जीहरणरी धरतीरा गाव ले, दीवाण जाणै ज्यू म्हानै[11] दे। तरै जाणिया[12] सु गॉव लिया पछै देवळियैरै धणियानै पिण दीवाण टीको मेलियो। दिलासा करी[13]। कह्यो—'रावत भॉनो पिण म्हारो भाई मूवो' जोध पिण म्हारो भाई मूवो। हमै जोधरा बेटा उठै छै। थे नाव मत ल्यो।' रावत सिघ हुकम माथै चढायो[14]। तरै धरती वसी। पछै राणा श्रमरसिघरै त्रिखो वरस सात हुवो। धरती राणा सगरनू हुई। पछै राणा श्रमरसिघसू वात हुई। तरै मीमच-जीहरण राणाजीनू पातसाह दीवी। देवळियैनै राणा रै मुलक काकड इण गावा[15]—

जीहरण-मीमचरा गाव——

१ चीताखेडो—राणारो।

१ जथलो—रावतरो। सीसोदिया जोधवाळो।

१ उगरावण—राणारो।

---

1 ये वलाए यहा क्यो रखता है। 2 कल तुमको ही मारेंगे। 3 हमारे। 4 सुनी 5 उग्र वादविवाद हुआ। 6 वात मर्यादाके वाहिर होगई। 7 उस ओर। 8 उन गाँवोमे 9 सैयदको भी हानि उठानी पडी। 10 जिस प्रकार ठीक समझे। 11 मुझे। 12 मनवाछित 13 ढाडस बँधाया। 14 रावतसिहने आज्ञा शिरोधार्य्य की 15 देवलियावालो और राना के देशकी सीमा इन गाँवोंसे मिलती है।

१ अवलीरो टूक–रावतरो ।

१ बळोर–राणारी ।

१ वाभोतर, धमोतर रावतरी ।

१ हरवार, वघरेडो, वडगाव रावतरी । नै

१ भैंरवी राणारी । घाटो[1] छै ।

देवळियैरा गाव–चीताखेडो, उगरावण, धमोतर चाकर रावतरा ।

रावतसिघ तेजारो मूवो[2] । पाट रावत जसवत देवळिये हुवो । तद वसाडरो गाव मोडी रावत जसवत नाहररो सकतावत राणा जगतसिघरो मेलियो[3] थाएै रहै घणा साथसू । रावत जसवत सिघावत मदसोररो फोजदार जानिसारखाँ थो तिणनू भखाइ[4] दीवाणरा थाणा ऊपर आणियो[5] । रावत आप साथे न छै । देवळियारो साथ घणो भेळो छै[6] । रावत जसवत नरहरोत इतरा साथसू काम आयो—

१ रावत जसवत नरहरोत ।

१ सीसोदियो जगमाल वाघावत ।

१ सीसोदियो पीथो वाघावत ।

२. सीसोदियो कान, सादूळ नरहरोत ।

१ सबळसिघ चतुरभुजोत पूरवियो ।

इतरो साथ काम आयो । तिको गुसो मनमे राखनै राणो जगतसिघ उदैपुर रावत जसवत सिघावतनू रामसिघ करमसेनोत कना[7] रावत जसवत नै बेटो महासिघ मराया । नै तद पैहली[8] साह अखैराजनू देवळियारी गडासघ धीरावदरो दीवाणरै परगनो छै, तठै चूक[9] माथै घणा साथसू राखियो थो । साहनू लिख मेलियो थो जु थे जाय देवळियो लेजो-मारजो । पिण साह गयो नही । उठै सीसोदियो जोध गोपाळोत रावत हरीसिघनू टीकै बैसाणियो[10] । पछै सीसोदियो

1 दो पहाडोके वीचका वडा मार्ग । 2 तेजाका पुत्र रावतसिंह मरगया । 3 भेजा हुआ । 4 वहकाकर । 5 रानाके थाने पर चढाकर ले आया । 6 सामिल है । 7 से, द्वारा । 8 उससे पहले । 9 छल द्वारा मारलेनेके निमित्त । 10 गद्दी पर विठा दिया ।

जोध गोपाळोत रावत हरीसिघनू दरगाह ले गयो। पछै देवळियो राणाथी अलहादो कियो[1]। पछै उजैण अहमदावाद चाकरी कीवी[2]।

## अथ बूंदीरा धणियांरी ख्यात लिख्यते।

वार्ता--

चौवीस साख चहुआणारी, तिण माहै साख १ राव लाखणरा पोतरा हाडा बूंदीरा धणी।

बूदीमे मीणा कदीम रहता। नै हाडो देवो बागारो भैंसरोडथी विखायत थको[3] जाय बूंदी रह्यो हुतो। मु एक बात यू सुणी[4]--बूदी माहे बाभण[5] रहता, तिणारी बेटी मैणा कहे म्हानू परणावो[6]। तद बाभणा उजर घणो ही कियो[7]। पिण मैणा मानै नही, तरै हाडा बाभणारा जजमान था, मु बाभण देवा कनै भैंसरोड जाय पुकारिया। तरै हाडा कह्यो--"थे बेटी द्यो[8]। व्याह थापो[9]। नै उणनू कह राखजो। म्हे हीडा[10] माहै क्यू समझा न छा। माहरा हाडा जजमान छै। भैंसरोड रहै छै, मु म्है तेडस्या[11]।" तद मैणा कह्यो--"भली बात छै।" पछै व्याह थाप नै हाडानू तेडिया। तद मैणानू बाभणा कह्यो--"म्हे म्हारी रीत व्याह करस्या[12]" तद मैणा मदध[13] हुता किण ही खोट-चूक[14] री बात समझ्या नही। पछै साहा[15] पैहली सडा[16] सबळा बणाया। माहै हाडे सोर पथरायो[17]। ऊपर घास पाथरियो[18]। पछै मैणानू बुलाय जानीवासै[19] उतारनै दारू पायो। तरै छकिया बेसुध हुवा[20]। तरै केई घावे मारिया[21], के सडामे फूक दिया[22]। हाडै मैणा सोह[23] मारनै वळै[24] गाव ऊपर जायनै वांसै[25] को रह्यो थो सो कूट-मारनै[26] बूदी लीवी। बीजा[27] हुता मु नास गया, तिके बूदेला बाजै छै।

---

1 देवलियाको रानाके अधिकारमे छीन लिया। 2 देवलियाके स्वामीने उज्जैन और अहमदाबादकी सेवा स्वीकार की। 3 विपदावस्थामे। 4 इस सबबमे एक बात यो सुननेमे आई। 5 ब्राह्मण। 6 विवाह करदो। 7 तब ब्राह्मणोने बहुतेरी आपत्ति की। 8 तुम बेटी देना स्वीकार करलो। 9 विवाहकी तिथि निश्चित करलो। 10 प्रथानुसार परिचर्या करनेमे हम कुछ नहीं समझते। 11 बुलायेंगे। 12 हम अपनी रीतिमे विवाह करेंगे। 13 मदान्ध। 14 छल-कपट। 15 विवाहसे प्रथम। 16 बडे झोपडे। 17 हाडोंने उनके अन्दर बारूद बिछवा दिया। 18 बिछा दिया। 19 जनिवासा। 20 नशेमे छककर अचेत होगये। 21 तब कइयोको तलवारके घाट उतार दिया और कइयोको सडे जलाकर फूक दिया। 23। समस्त। 24 पुन। 25 पीछे। 26 ठोक-पीट कर। 27 और थे सो भागगये।

एक वात यू सुणी--

हाडो देवो वागारो, वूदी वेखरच थको आय भैंसरोडथी रह्यो हुतो[1]। कनै आपरी वसी[2] हुती। नै देवै राणा अरसी लखमसिअोतनू वेटी दीवी थी। सु राणो अरसी अठै जान कर[3] वडी फोज ले परणीजण आयो। सु परणिया पछै राणै अरसी देवानू पूछियो--'थारी कासू हकीकत ?[4]' पूछी तरै देवै कही। तरै राणै कह्यो--'थे अठै काहिणनू रहो[5] ?' उरा आवो[6]। तरै देवै कह्यो--'माहरी एक अरज छै, एकत मालम करसू।' तद राणै एकत पूछियो। तरै देवै कह्यो--'आ भली धरती मेणा हेठै[7] छै नै मैणा निवळा सा छै। जिकै छै सु आठ पोहर छकिया दारू मतवाळा थका रहै छे, सु दीवाण[8] साथरी[9] मदत करो तो मैणा मारनै आ धरती लू नै दीवाणरी चाकरी करू। तरै देवै मागियो सु देवानू राणै डेरो उठै (सू) हीज दियो[10]। देवो फोज ले, वूदी मैणा ऊपर रात थकी आयो[11]। नीसरणरा घाट[12], नास-भाजरा हुता सु भूमिया था सु सोह रोकनै मैणा सारा कूट-मारिया। वीजा जठै हुता सु सोह नास गया। देवै आपरी आण फेरी[13]। मैणा मारनै राणारी हजूर आयो[14]। राणो बोहत राजी हुवो। देवानू कह्यो--'वळै कहो सु करा[15]। तरै देवै कही--दीवाणरा ऊपरथी सारी वात भली हुई[16]। मास ४ असवार सौपाच मदत पाऊ। तरै राणै असवार ५०० मदत देनै आप चीतोड चढियो। पछै देवै भोमिया[17] था सु सारा कूट मारिया। वीजा धरती माहे था सु सारा नास गया। पछै देवै आपरा भाईबध तेड नै[18] ठोड-ठोड वसी[19] राखी। आपरी जमीयत[20] राखी।

---

1 देवाके पास पैसा नही था अत वूदीमे भैंसरोड आकर रहगया था। 2 कामदार आदि वे कर-मुक्त नौकर-चाकर जिन्हे उस जागीरदारका 'चोटी-वढिया' और 'वसीरा लोक' भी कहते है। 3 वरात वनाकर। 4 तुह्मारी क्या स्थिति है ? 5 तुम यहा काहे को रहते हो ? 6 (हमारे यहा) आजावो। 7 अधीन। 8 राना। 9 सेना। 10 जितने मनुष्योकी सहायता देवाने मागी उतने मनुष्य रानाने अपने ऊनिवाससे ही उसे दे दिये। 11 रात रहते मैनो पर चढकर वूदी आगया। 12 द्वार, मार्ग। 13 देवेने अपने शासनकी आज्ञा प्रवर्त्त कर दी। 14 मैनोको मारकर रानाके दरवारमे आया। 15 और कोई काम हो तो कहो सो वह भी कर दिया जाय। 16 रानाकी सहायतासे सव वात ठीक हुई। 17 छोटे जागीरदार। 18 वुलाकर। 19 स्थान-स्थान पर कर-मुक्त मत्री, नौकर-चाकर आदि नियुक्त कर दिये। 20 उष्ट्र और अश्वारोही।

धरती रस पडी[1]। दीवाणरा साथनूं सीख दीवी। तठा पछै आपही वडी जमीयत करनै दसरावानैं[2] राणारै मुजरै गयो नै मेवाड़री चाकरी करण लागो।

एक वात यूं[3] सुणी--हरराज डोड[4] बूंदीरो, मैणारो एकल असवार घणो धरतीरो विगाड करै। तद मैणा घणा ही खसथाका[5]। हरराजनूं पोहच[6] सकै नही। कितराएक रिपिया[7] मैणा कना वरसरा वरस नाळबधीरा[8] लै नैं धरती पिण मारे। तिण समै हाडा देवा वागावतरै घोडो १ थो सु माडवरै पातसाह मगायो। इण दियो नही। तरै देवो भैंसरोड परी छोडनै बूंदी मैणारो मेवास जाण अठै बूंदी आयो। तरै बूंदीरै मैणे दूडी-नाचणरो[9] घर थो, तठै घर-ठोडनूं[10] जायगा दिखाई। सु दूडीनूं वयु अगमरी[11] खबर पडती। सु दूडीनै देवै भेळै रहता सुख[12] हुवो। सु दूडी एकत देवानूं कहै छै–'इण धरतीरा धणी थे हुस्यो[13]।' पछै मैणे एक दिन हथाई[14] वैठा कह्यो–'इण हरराज डोड म्हा माहै वडी लीक[15] लगाई छै। माहरै माथै डड कियो छै सु पिण लै नै धरती पिण मारै छै[16]।' तरै देवे कह्यो–'इणनूं कोई पालै[17] तो तिणनूं थे कासूं[18] दो।' तरै मैणै वडेरै[19] कह्यो–माहरै धरतीरो हासल छै, तिण माहैसूं आध म्हे थानूं देवा। तरै इणा बोल-कोल सूंस-सपत करी[20]। नै दीवाळीरो दीवाळी हरराज डोड बूंदी आवतो, घावदेतो[21]। सु देवो तो उण अैराकी-घोडै चढनै पाखर घातनै जीनसाल पहर तयार हुवो[22]। नै पैली-कानै

---

1 भूमि पर पूर्ण अधिकार होगया। 2 दशहरा। 3 इसप्रकार। 4 डोड जातिका क्षत्री हरराज इकल्ला घुडसवारी करके मैणो और उनकी भूमि का विगाड करता है। 5 मैणे प्रयत्न कर थक गये। 6 हरराजको नही पहुंच सकते। 7/8 प्रतिवर्ष नालबधी-कर के रूपमे कितने ही रुपये भी लेलेता है और लूटपाट कर भूमिमे विगाड भी करे। 9 दूडी नामक नर्त्तकी। 10 तव रहनेके लिये स्थान दिखाया। 11 भविष्य। 12 प्रीति। 13 इस भूमिके स्वामी तुम होवोगे। 14 वातचीत वा पचायतकी चौकी। 15 धाक जमा रखी है। 16 हमारे पर डड भी लगा दिया है सो भी लेता है और लूटपाट भी करता है। 17 रोकदे। 18 क्या। 19 तव वडे और वृद्ध मैणोने कहा। 20 तव इन्होने कौल-वचन और सौगद शपथ की। 21 प्रहार करता। 22 देवा तो उस अरवी घोडे पर पाखर डाल, कवच पहिन चढकर तैयार हुआ।

हरराज गावरा मैणा आवतो दीठो[1]। तद मैणातो सरव नासगया न घरा माहै पैठा[2]। नै देवो ग्रोळरै बारै आयो नै देवै हरराजनै आवतो दीठो। हरराज देवैनै दीठो। देवै घोडैनू चढ कोरडो[3] वाह्यो[4]। तद हरराज पाछा फेरिया[5]। देवै वासै घातिया[6]। वीच [7]वाहळो १ ऊडो हुतो सु हरराजरो घोडो डाक[8] पैलै तीर जाय ऊभो। बेऊ[9] घोडा आमा-सामा कर ऊभा रह्या। वात हरराज देवैनू पूछी—"थे कुण[10]? कठासू आया[11]?" तरै देवै आपरी हकीकत कही—"चहुवाण बूदीरो देवो म्हारो नाव छै[12]।" तरै कह्यो—"थे अठै कद आया[13]।" तरै कह्यो—"मास च्यार हुवा।" कह्यो—"हमै कासू विचार[14]?" तद देवै कह्यो—'म्हे था ऊपर बीडो लियो छै[15]। अठै वळै आवस्यो तो थानू मारस्या[16]। पछै हरराज कह्यो—"हमै पछै हू नही आवू" तरै माहो-माहे सुख हुवो। नै पागडा छाडिया[17], उतर मिळिया। तठा पछै कितरैएक दिनै देवै हरराजनू आपरी बेटी दी। सु वा देवारी बेटी निपट फूटरी छै[18]। तद मेणो वडेरो छै तिको देवानू कहै—"म्हानू परणावै[19]" इण घणा ही उजर किया[20]। मैणा मानै नही। तद बेटी देणी करी। पछै हरराज डोड कोसीथुर सोळकी सगा रहता तिके तेड मीणानू सडा माहै घात कूट-मारिया। देवै बूदी इण तरै लीवी।

अथ हाडारै पीढियारी विगत—

१ राव लाखण[21]—नाडूल धणी। २ बली।[22]

---

1 उस ओरसे मैणो ने हरराजको आते हुए देखा। 2 घरोमे घुसगये। 3 चावुक। 4 मारा। 5 पीछा लौटाया। 6 देवा उसके पीछे हुआ। 7 वीचमे एक गहरी छोटी नदी थी। 8 कूदकर, लाघकर। 9 दोनो। 10 तुम कौन?। 11 कहासे आये? 12 बूदीका रहने वाला चौहान देवा मेरा नाम है। 13 तुम यहा कब आये? 14 अब क्या विचार है? 15 हमने तुमारे विरुद्ध वीडा उठाया है अर्थात् तुम्हे मारनेका निश्चय किया है। 16 यहा फिर कभी आवोगे तो तुम्हे मारदेगे। 17 घोडोसे उतरे और परस्पर अक भरकर मिले। 18 अत्यन्त रूपवती है। 19 मुझको व्याह दे। 20 उसने बहुत ही एतराज किया। 21 राव लाखण वडा वीर और नीतिज्ञ था। इसने नाडोलको अपने अधिकार मे कर लिया था। यह साभर नरेश वावपतिराजका छोटा पुत्र था। 22 कई प्रतियोमे लाखणके वाद 'सोहित' वा 'सोही' नाम लिखा है और 'सोहितके' वाद 'वली' वा 'वलराज' मिलता है। यही शुद्ध है।

| | |
|---|---|
| ३ मोहित । | ४ महदराव । |
| ५ अणहल । | ६. जिदराव । |
| ७ आमराव । | ८. माणकराव । |
| ९ सभराण । | १० जंतराव । |
| ११ अनगराव । | १२. कुतसीह । |
| १३ विजेपाल । | १४. हाडो[1] । |
| १५ वागो । | १६ देवो वागारो, जिण वूंदी मैणा कना लीवी । |

हाडो देवो वागारो परवार—

२ समरसी ।

२ जीतमल—तिणरी बेटी जसमादे[2] हाडी रावजोधारै पटराणी राव सूजारी मा । २ भागचद । २ रायचद । २ राव रामचद ।

समरसी देवारो आंक २—

३ नापो । ३ हरराज । ३ हाथी ।

नापो समरसीरो आंक ३—

४ हामो टीकायत[3] । ५ लालो, तिणरी ओलादरा नव-ब्रह्म[4] लखानखेडेवाळा हाडा छै । ५ वरसिंघ । ६ वैरो । ६ लोहट – लोहट-वाळीरा[5] हाडा छै । ६ जव । जवदूरा वासला मियारै-गुढै रहै छै[6] ।

जवदू हामारो आक ६ ।

७ वछो । ८ साहरण । ९ मीया । ९ सावळदास ।

साहरणरो आक ८ ।

९ सावत । १० वळकरण । ११ जोध । १२ दुरगो । १० तेजो । ११ मान । ११ नारण । १० दोलतखान । ११ रूपसिंघ । १० खीवो । १० ऊदो । ११ रायसिंघ । ११ तुलछीदास । १० कलो ।

---

1 कोटा वूदी आदिके चौहानोंकी 'हाडा' सज्ञा इन्हीके नामसे हुई। 2 जीतमलकी पुत्री जसमादे हाडी जोधपुर वसानेवाले राव जोधाकी पटरानी और रावसूजाकी माता थी। 3 राज्यगद्दीका अधिकारी। 4 लखानखेडा वाले लालाके वशज नव-ब्रह्म-हाडा कहलाते है। 5 लोहटके नामसे प्रसिद्ध 'लोहटवाळी' प्रदेशके हाडा इसी नामसे प्रसिद्ध है। 6 जवदू के पीछेके (वशज) 'मिया-रो-गुढो' नामक गावमे रहते है।

वैंरो वरसिघरो ग्राक ६--

७ भाडो। ८ नारणदास भाडारो। बूदी धणी। रावसूजारी बेटी खेतूबाई परणियो हुतो[1]। ग्रमल[2] निपट घणो खावतो। सु नारण-दास पैसाब करण बैठो हुतो सु यूहीज ऊघियो[3]। सु खेतूबाई राव ऊपर साडीरो छेह नाखनै ऊभी रही[4]। यू करता सवार हुवो, रावरी ग्राख खुली[5]। देखे तो खेतू ऊभी छै। तरै राव राजी हुवो। कह्यो-"माहरा घर-सारू[6] थे जाणोसु[7] मागो। तरै बाई कह्यो-"माहरै तो थारी सलामतीसू[8] सोह थोक[9] छै, पिण रावळो[10] ग्रमलरो पोतो[11] मो कनै[12] रहै।" तरै पोतो खेतूनू सापियो। खेतू ग्रमल दिन २ घटायो। तठा पछै बाईरै[13] सूरजमल बेटो हुवो। पछै नारणदास एक वार राणा सागारी वार पातसाह माडवरो झालियो छै[14]। ६ सूरजमल वडो ग्राखाडसिध[15] रजपूत हुवो। राणा रतनसी सागावतनू मरतो ले मूवो[16]।

हाडो मीयो[17] वछारो, ग्राक ८।

६ सावळदास। १० चद्रभाण। ११ नरहरदास। भावसिघ रै परधान। मीयारै खेडै सादियाहेडै रहै छै[18]।

**वात हाडै सूरजमल नारणदासोतरी नै राणा रतनसी सांगावत मांमलो हुवो तिण समैरी[19]।**

राणो सागो रायमलोत चीतोड राज करै छै। टीकायत बेटो रतनसी राठोड धनाईरै[20] पेटरो छै। राणो सागो पछै हाडी करमेती, हाडा नरबदरी बेटी परणियो थो। सु राणो करमेतीसू घणी मया

---

1 जोधपुरके राव सूजाकी पुत्री खेतूवाईको व्याहा था। 2 अफीम। 3 पेशाव करते हुएको ही नीद ग्रागई। 4 खेतूवाई पेशाव करते हुए निद्रित नारायणदासके ऊपर अपनी साडीका छोर डालकर खडी रही। 5 इसी प्रकार प्रात काल होगया तव राव नारायणदास की नीद उडी। 6 हमारे घरकी सामर्थ्यानुसार। 7 चाहे जो। 8/9 मेरे तो ग्रापकी कुशलपूर्वक विद्यमानतासे सभी वस्तुए है। 10 ग्रापका। 11 अफीमका वटुग्रा। 12 मेरे पास। 13 जिसके वाद खेतूवाईके सूरजमल नामक पुत्र उत्पन्न हुग्रा। 14 पकडा है। ग्राश्रय लिया है। 15 महावली। 16 सूरजमल मरता हुग्रा रतनसीको भी ले मरा। 17 वछाका पुत्र हाडा मीया। 18 मीयाका गाँव सादियाहेडे रहता है। 19 नारायणदासका पुत्र हाडा सूरजमल ग्रौर सागाका पुत्र रतनसीके परस्पर युद्ध हुग्रा उस समयका वर्णन। 20 राव सूजाका पुत्र वाघाकी कन्या राठोड धनाईकी कोखसे रतनसीका जन्म हुग्रा।

करै छै[1]। पछै करमेतीरै बेटा २ हुवा–विक्रमादित, उदैसिंघ। तिणासूं राणो घणी मया करै छै। सु एक दिन दीवाणसूं करमेती अरज कीवी–"दीवाण घणा दिन सलामत रहै, पिण विक्रमादित उदैसिंघ नान्हा[2] छै। रावळै टीकाइत साहबीरो धणी रतनसी छै। राज बैठा काइक इणारो मूं'ल[3] करो तो भलो छै।" तरै राणै पूछियो–"थे किण भांत अरज करो छो।" तरै करमेती हाडी कह्यो–"इणानूं रिणथभोर सारीखी ठोड रतनसी नै पूछनै दीजै नै हाडा सूरजमल सारीखा रजपूतनूं बाह झलाईजै[4]। आ बात दीवाण ही कबूल करी। सवारै दीवाण जुडियो[5], तरै कंवर रतनसीनूं राणै सागै कह्यो–"विक्रमादित उदैसिंघ थारा लोहडा[6] भाइ छै। तिणानूं एक पग-ठोड[7] दीनी चाहीजै।" सु राणो वडो दूठ[8] ठाकुर छो, सु रतनसी क्यु[9] फेर कही सक्यो नही। कह्यो–"रावळै विचार आवै सु ठोड दीजै।" तरै राणै रतनसीनूं कह्यो–"रिणथभोर इणानूं[10] दो।" तरै रतनसी कह्यो–"भला।" तरै राणै विक्रमादित उदैसिंघनूं कह्यो–"म्हे थानूं रिणथभोर दियो। थे ऊठ तसलीम करो[11]।" तरै इणे तसलीम करी। तरै हाडो सूरजमल दरबार बैठो थो। तरै राणै सागै सूरजमलनूं कह्यो–"म्हे विक्रमादित उदैसिंघनूं रिणथभोर दा छा[12] सु थे इणारी बाह झालो। औ म्हे थाहरै खोळै घाता छा[13]।" तरै सूरजमल कह्यो–"म्हारै इण वातसूं काम कोई नही। हूं चीतोड टीके वैसे जिणरो चाकर छूं। म्हारै इणसूं कोई तल्लो[14] नही।" तरै राणै सागै वळै घणो हठ कर कह्यो–"औ डावडा[15] नान्हा छै। थाहरा भाणेज छै। बूंदीसूं रिणथभोर निजीक छै। तूं भलो रजपूत छै। तद इणारी बाह तोनूं झलावा छा।" सूरजमल अरज कीवी–"दीवाण फुरमावो सो तो सिर-माथा ऊपर[16]। म्हे हुकमरा चाकर छा[17]। पिण दीवाणनूं सौ वरस पोहचै[18] तरै म्हानूं रतनसी मारणनूं तयार हुवै,

1 राना करमेतीके ऊपर बडी कृपा रखता है। 2 छोटे हैं। 3 आपके बैठे इनका भी कुछ प्रबंध करदें तो भली बात है। 4 सुपुर्द करदें। 5 सवेरे दरबार जुडा। 6 छोटे। 7 रहनेका स्थान। 8 जबरदस्त। 9 कुछ भी। 10 इनको। 11 प्रणाम करो। 12 देते हैं। 13 तुमारी गोदीमें रखते हैं। 14 मतलब। 15 बच्चे। 16 शिरोधार्य। 17 हमतो आज्ञाका पालन करनेवाले सेवक हैं। 18 सौ बरस पहुँचे मरजाना।

तिणवास्तै म्हासू आ वात दीवाणरै कहै ह्वै नही। नै रतनसीजी फुरमावै तो वात अलादी[1] छै।" तरै राणै रतनसी सामो जोयो। रतनसी कह्यो सूरजमलनू–"थे दीवाण हुकम करै सु करो। अै म्हारा भाई छै। थे म्हारा सगा छो। रजपूत छो। म्हे थासू[2] बुरो माना नही।" तरै सूरजमल दीवाण कह्यो त्यू कियो। राणै सागै रिणथभोर विक्रमादित उदैसिघनू दियो। इणे जाय अमल[3] कियो।

हाडो नाराइणदास मूवो तरै राणै सागै सूरजमलनू टीको मेलियो। लाल-लसकर-घोड़ो अैराकी कीमत रु० २००००), हाथी मेघनाद कीमत रु० ६००००) री, रो दियो। राणो सागो हाडा सूरजमलथी[4] बेटाथी[5] इधको प्यार करै छै। आ वात अठै ही रही।

तठा पछै कितराएक दिने राणै सागै काळ-कियो[6]। टीके रतनसी बैठो। हाडी करमेती आपरा बेटानू ले रिणथभोर गई। रतनसीरी छाती माहै रिणथभोर भावै नही[7]। पूरविया पूरणमलनू रिणथभोर मेलियो। कह्यो–"थू विक्रमादित उदैसिघनू तेड लाव[8]।" तरै ओ रिणथभोर गयो। तरै हाडी करमेती कह्यो–"अै तो डावडा नान्हा छै। इणारो जबाब सूरजमलजी करसी। तरै ओ बूदी सूरजमलजी कनै गयो। जायनै कह्यो–"राणै रतनसी विक्रमादित उदैसिघनू तेडाया[9] छै। सु वे कहै छै–"माहरो जवाव सूरजमलजी करसी।" तरै सूरजमल कह्यो–म्हे ही आवा छा, तरै दीवाणसू हकीकत[10] मालम करस्या।"

तरै पूरणमल चीतोड आयो। राणै हकीकत पूछी तरै इण कह्यो– "वे तो घणू ही आवै पिण सूरजमल आवण दै नही[11]।" तरै रतनसीरै डील आग लागी[12]। आगै पिण टीकारो सूरजमल हाथी १ घोडो १ ले आयो थो, सु रतनसी राखिया नही। कह्यो–"राणै सागै तोनू

---

1 और रतनसी कहदें तो वात दूसरी है। 2 आपसे। 3 अधिकार। 4 के साथ। 5 से। 6 मर गया। 7 विक्रमादित्य और उदयसिहके अधिकारमे रणथभोरका रहना रतनसीको सहन नही होरहा है। 8 बुलाकर ले आ। 9 बुलाया है। 10 तव रानाको वृत्तान्त निवेदन करूगा। 11 करमेती तो भेजनेके लिये तैयार है परन्तु सूरजमल आने नही देता। 12 तव रतनसीके शरीरमे क्रोधाग्नि उठ गई।

लाल-लसकर-घोडो, मेघनाद हाथी टीके दिया मु मोनू दै[1]।" इण कह्यो—"हूं क्यू जाट पटेल थो नही, सु चारण दिया था, मु हमैं पाछा मागिया दू[2] ?" वात कराड़ा[3] वारै हुई।

रांणो रतनसी सूरजमलनू मारणरा दाव-वाव[4] करै छै। तिण समै चारण भांणो, मीसण जातरो, मोडारो वारहठ, चीतोडरै गाव राठ-कोदमिये रहै छै। सु नावजादी[5] चारण छै। वडो आखरारो कहणहार छै[6]। सु भाणारा जजमांन[7] गोड छै। वूदीरा चाकर छै। तिणां कनै जाय छै। मास १ दुय मास उठै रहै। तरै भाणो हाडा मूरजमलरै पिण उठै जावै, तरै मुजरो करै। गुणे गीता गावै[8]। तद मूरजमल घणी मया करै छै। एक दिन सूरजमलजी कह्यो—"भाणाजी ! हालो[9] ! सूरारी सिकार जावा !" भांणो नै मूरजमल सिकार सूरारी गया। वीजो साथ हाके मेलियो[10]। भाणो नै मूरजमल दोय जणा हीज हुता। सूर तो हाथ नाया[11] नै दोय रीछ आजाजीत[12] आगै पाछै आया। इसडा कदै आंखियां ही दीठा नही[13]। जिणा दीठां मरीजै। सु सूरजमल उणसू वाथा हुवो[14]। एक कटारीसू मार पाडियो। तितरै दूजो आयो। उणनू ही उणहीज भांत मारियो। भाणनू वडो इचरज आयो[15]। सु भाणै कह्यो—"थे कासू कियो[16] ?"

तरै कह्यो—"कासू करा[17] माडां गळै पडिया[18]।" पछै पाछा आया। भांणै गीते-गुणे सूरजमलनू रीझावियो[19]। तरै मूरजमल जांणियो—लाल लसकर-घोडो नै मेघनाद हाथी लारे राणो पडियो छै। सु माहरा परधान रजपूत मोनू दवायने राणानू दिरावसी, तो

---

1 मुझको दे। 2 मैं कोई जाट पटेल तो था नही जिसको चरानेके लिये दिये हो नो अब मागने पर मैं वापस करदू। 3 वात सीमा वाहर हो गई। 4 मारनेका अवमर और उपाय। 5 विख्यात। 6 वडी चमत्कारी कविता करने वाला है। 7 यजमान। 8 गुणोकी कविता वना कर सुनाता है। 9 चलें। 10 साथके दूसरे मनुष्योको शिकार खोज कर घेर लानेके लिये भेज दिया। 11 सूअर तो हाथ नही आये। 12 जो किसीसे भी जीते नही जा सकें। 13 ऐसे कभी आखोसे देखे नही। 14 सूरजमल उमसे वाहु-युद्ध करने लगा। 15 आश्चर्य हुआ। 16 आपने यह क्या ही आश्चर्यजनक काम किया ? 17 क्या करें। 18 वलात आकर ऊपर पड गये। 19 भाणाने सूरजमलके गुणोंके गीत गाकर प्रसन्न किया।

हू भाण सरीखा पात्रनै[1] दे नै अमर करू[2]। घोडो हाथी दोनू भाणनू दिया। भाणनू वडी मोज दे[2], लाख[3] दे विदा कियो। सु राणारो डेरो चीतोडथी कोस १० सिकार रमणरे मिस कियो छै। मन माहै सूरजमल मारणरो मनो छै। राणी पवार रावत करमचदरी वेटी साथै छै। सु भाण उठै आयो दीवाणरै मुजरै[4]। तरै दीवाण पूछी—"कठै हुता[5] ?" भाणै अरज कीवी—"वूदी हुतो।" तरै रतनसी कह्यो—"सूरजमलरी वात कहो।" तरै घणा सूरजमलरा वखाण[6] किया। तरै राणानू सुहाणो नही। भाणो समझ्यो नही। जु राणो इणसू इतरी कुमया[7] करे छै। तरै राणै पुछियो—"इतरा सूरजमलरा वखाण करो छो सु इतरो सूरजमलमे कासू दीठो[8] ?" तरै भाणै रीछारी वात माड कही नै कह्यो[9]—"दिवाण ! सूरज-मल इसडो रजपूत छै सु जिको उणनू मारै सु कुसळै न जाय।" तरै राणै इण वात ऊपर वोहत भाणासू वुरो मानियो। तितरै किणी एक भाणनू पूछियो—"थे इतरो सूरजमलरो जस करो सु हमार थानू कासू दियो ?" तरै कह्यो—"मोनू लाल लसकर-घोडो, मेघनाद हाथी नै लखपसाव दियो।" तरै राणारे वळै जोर आग लागी[10]। भाणनू कह्यो—"थे माहरी हदमे मत रहो, थे वूदी जावो।" तरै भाणै पूछ-झाटक[11] ऊठियो। पाछो वूदीनै हालियो[12] तठा पैहली आ खवर सूरजमलनू पोहती[13]। सूरजमल सामा आदमी भाणरै मेलिया। घणो आदर कर तेड हिरणामो गाव सासण कियो[14]। घोडा, हाथी, लाखपसाव घणोई द्रव्य दियो। कह्यो—"म्हारो भाग ! दीवाण मोसौ वडी मया करी। भाण सरीखो पात[15] दियो।" सु राणो सिकार खेलतो-खेलतो वूदी दिसा आवै छै। सूरजमल कनै

1 भाणके समान सुपात्र चारणको दानमे दे अपना नाम अमर करदू। 2 मुख पहुचाया। 3 लाख-पसाव नामक दान देकर विदा किया। 4 भाण वहा पर राणाकी सेवामे प्रणाम करनेको आया। 5 कहा थे ? 6 प्रशसा। 7 अच्छा नही लगा। 8 अवकृपा रखता है। 9 क्या देखा ? 10 तव भाणने रीछोको मारनेकी वात विस्तारपूर्वक कही और फिर कहा। 11 रानाके और अधिक क्रोधाग्नि भभक उठी। 12 एकदम। 13 चल दिया। 14 पहुँची। 15 हिरणामो गाव शासन-दानमे दिया।

आदमिया ऊपर आदमी आवै छै–"सताव[1] आवो ।" सूरजमल जाणै छै–"जाऊ क न जाऊ ?" तरै एक दिन माजी खेतू राठोडनै पूछियो–"मोनू राणारा आदमिया ऊपर आदमी तेडा[2] आवै छै। मोसू राणो बुरो छै। मोनू मारसी। कहो तो विखो कर राणानू हाथ दिखाऊ।" तरै मा कह्यो–"इसडी[3] वात क्यू कीजै ? आपै इणारा सदा चाकर छा। इसडी[3] तो आज पैहली आपासू बुरी कोई हुई नही। जो राणो तोनू मारसी तोही सताव राणा कनै जावो। घणी चाकरी करो।" तरै सूरजमल राणा कनै गयो। गोकह्लरै[4] तीरथ वाळो वाजणो गाव बूदी चीतोडरी गडासध[5] छै, तठै आय मिळियो। राणो मनमे घणी खोट[6] राखै छै। नै सूरजमलरो आदर घणो कियो। 'सूरजमल भाई !' कह बतळायो। पछै एकण दिन कह्यो–"म्हे एक हाथी लियो छै, तिण म्हे भेळी[7] असवारी करा।" पछै उण हाथी राणो चढियो। सूरजमल ही घोडै चढ आयो। एकण ठोड साकडी दिसी[8] सूरजमल ऊपर हाथी वहतो थो। रतनसी आप चढियो थो। सूरजमल ऊपर हाथी झोकियो[9], सु सूरजमल घोडो लात मार काढ दियो[10]। दाव टाळियो। सूरजमल रीस करी। राणै कह्यो–"हाथी माडा[11] आयो। घणी हळभळ की[12]।" दिन एक आडो घातनै कह्यो–"आपै सिकार मुअरगारी मूळारी[13] खेलस्या।" तरै सूरजमल कह्यो–"भली वात।"

एक दिनरी वात छै। राणो पंवार राणी आगै कहै छै[14]–"एक म्हे सासतो सूअर–एकल मारस्या[15]। थानू तमासो दिखावस्या।"

तीरथ गोकह्लरै पवार राणी सिनान करण गई थी। तथा पैहली सूरजमल सिनान करण गयो थो। सु पवार आई तरै सूरजमल

---

1 शीघ्र। 2 बुलावे पर बुलावे आते है। 3 ऐसी। 4 'गोकर्ण' नामक तीर्थ-स्थान जो टोडारायसिंहके पास है। 5 निकट। 6 दगा। 7 साथमे सवारी करें। 8 सँकडे मार्गकी ग्रोर। 9 डाल दिया। 10 किन्तु सूरजमलने घोडेको लात मार कर आगे निकाल दिया। 11 हाथी बलात् आ गया। 12 प्रसन्न करनेके लिये खुशामदकी बातें की। 13 किसी बडे वृक्ष आदिकी खोहमे दबकर शिकारकी टोहमे बैठे रहनेका स्थान। 14 राना अपनी पवार जातिकी रानीसे कह रहे हैं। 15 आज हम एक बहुत बलवान् सूअरको मारेंगे।

धोतियो हीज पैहर कनै हुय नीसरियो तरै पवार सूरजमलनूं दीठो। किणहीनूं पूछियो–"ओ कुण ?" तरै कह्यो–"ओ सूरजमल हाडो बूंदीरो धणी, जिणसूं दीवाण कुमया करै छै।" तरै पवार समधी[1]–"राणो सूअर-सूअर करै छै सु इणनूं मारण मतै छै।" रातै पवार गई तरै राणै वळै वात सूअररी चलाई। तरै पवार कह्यो–"ओ सूअर म्हे दीठो[2]। उणरौ नाव थे मत ल्यो।" तरै राणो कह्यो–"थैं कासूं[3] दीठो ?" तरै इण सूरजमलरी वात कही। तरै राणै कह्यो–"तूं कासूं जाणै ?" तरै पवार कह्यो–"उणनूं छेड़सी सु कुसळै न आवै।" तद राणै बुरो मानियो। पछै सवारै राणो सूरजमलनै ले सिकार गयो। मूळै बैठा। दूजो साथ आपरो, पारको दूरो कियो[5]। राणो नै पूरणमल पूरबियो छै। सूरजमल नै सूरजमलरो एक खवास छै। तिण समै राणै पूरणमलनूं कह्यो–"तूं सूरजमलनै लोह कर[6]।" सु इणसूं लोह कियो न गयो। तरै राणै घोड़ै चढ सूरजमलनूं झटको वायो[7]। सु माथारी खोपरी ले गयो। सूरजमल ऊभो[8] छै। तितरै[9] पूरणमल तीछेर[10] वाह्यो सु सूरजमलरी साथळ[11] लागो। सूरजमल दोड नै पूरणमलनूं पाडियो[12]। उण कूकवा किया[1]। तरै राणो उणरा ऊपरनूं वळै आयो। सूरजमलनूं लोह वाह्यो। सूरजमल वागरी[14] जेह[15] झालनै[16] कटारी गळा नीचासूं वाही सु राणारी सूटी[17] आवता रही। राणो घोडासूं हेठो पडियो[18]। पडतेहीज पाणी मागियो। तरै सूरजमल कह्यो–"काळरा-खाधा[19] हमे पाणी पी सकै नही।" पछै सूरजमल राणो बेहूं मुवा। पवार सती हुई। राणारो दाग पाटण हुवो। रतनसीरै बेटो कोई न हुतो[20]। तरै रजपूते सारै मिळनै करमेती हाडी नै विक्रमादित उदैसिघनूं रिणथभोरसूं तेड लिया[21]। अै आया।

---

1 समझ गई। 2 इस सूअरको हमने देखा। 3 तुमने कैसे देखा ? 4 आश्रय-स्थानमे दबकर बैठ गये। 5 अपने और पराये मनुष्योको दूर भेज दिया। 6 उस समय राणाने पूर्णमलको कहा कि—तू सूरजमल पर तलवारसे प्रहार कर। 7 तलवारसे प्रहार किया। 8 खडा है। 9 इतनेमे। 10 एक प्रकारका छोटा भाला। 11 जाघ। 12 गिरा दिया। 13 चिल्लाया। 14 घोडेकी वाग। 15 सिरा। 16 पकडकर। 17 नाभिमे पार हो गई। 18 नीचे गिर गया। 19 काल-कवलित। 20 न था। 21 बुला लिये।

विक्रमादितनूं टीको हुवो । विक्रमादित उदैसिंघ सूरजमलरा बेटा । सुरताणनूं बूंदीरो टीको दियो ।

भाटी बैरागी आव ७ ।

८ नरबद भाटीरो ।

९ उरजण नरबदरो । राणा उदैसिंघरो नानो । उरजण चीतोड़ काम आयो । भरजत सावात[1] लागी तरै सुणीजें छै—तीन जणा उडिया । तिणां उडतां तरवार काढी सु तिकामें एक उरजण ।

९ भीमरा वसतरा भाठी रहै छै[2] । गाव बूंदीसूं कोस ६ तठै छे ।

९ पत्ताइण ।

१० सूरो ।

११ मान सूरारो ।

१२ केसोदास मानरो ।

१३ प्रताप हींडोळै[3] वसै ।

९ हरराज नरबदरो ।

९ सांवळ ।

९ अखैराज ।

हाडी करमती राणा उदैसिंघरी मा, नरबदरी बेटी ।

## वात

हाडो सूरजमल, राणो रतनसी बेहू[4] काम आया । रतनसीरै बेटो हुवो नहीं । तठा पछै टीकै विक्रमादित बैठो सु थोडाही दिन जीवियो । नै विक्रमादितरै[5] फेर चीतोड पातसाह बहादर तोडियो ।

---

1 सुरंग । 2 भीमके वंशज नाठीमें रह रहे हैं । 3 प्रताप हींडोले नामक गांवमें बसता है । 4 दोनों । 5 विक्रमादित्यके समयमें गुजरातके बादशाह बहादुरने चित्तौड़को तोड़ा ।

उरजण काम आयो। तठा पछै चीतोड उदैसिंघ टीकै बैठो, तरै सूरज-मलरा बेटा सुरताणनू तेड बूंदीरो टीको दियो। सु सुरताण कुलखणो[1] ठाकुर हुवो। हाडो सहसमल, सातळ बूंदी वडा उमराव हुता। तिणांरी सुरताण रीसाय नै आख काढी[2]। और ही उपाध करै[3]। तरै बूंदीरा उमराव सारा राणा उदैसिंघ कनै आया। कह्यो–"ओ धरती लायक नही[4]।" तरै उरजन आगै थोडो सो पटो पावतो। चीतोड काम आयो हुतो। नै सुरजण राणारो चाकर हुतो गाव १२ पटो पावतो। पछै वार एक जगनेर काम दीवाणरै पडियो थो तठै सुरजन घावै पडियो हुतो[5], तरै दीवाण फूलियारो परगनो दियो हुतो। पछै फूलियो तागीर कर बधनोर दी हुती। तिण समै सुरताणरी आ खबर बुरी आई तरै राणै उदैसिंघ सुरजननू बूंदी दीवी। टीको काढियो। रजपूत सारा आय मिळिया। सुरजन दिन-दिन वधतो गयो। राणै वडो इतबार कर इतरा गढ पटै देनै रिणथभोररी कूची सूपी।

१ बूंदी गाव ३६०।
१ पाटण।
१ कोटो।
१ कटखडो।
१ लाखेरो गाव।
१ नैणवाय।
१ आरतदो।
१ खैरावद–गाव ८४। बूंदीसू कोस ३५।

राव उरजण नरबदरो आक ६—
१० राव सुरजण।
१० राम।

---

1 कुलक्षणो वाला। 2 सुरतानने क्रोध करके जिनकी आखे निकलवा दी। 3 और भी कई उपद्रव करता रहता है। 4 पृथ्वी पर राज्य करने योग्य नही। 5 वहा सुरजन घावोसे जर्जरित होकर गिर गया था।

११ दूदो—लकडखानरो । जैसा भैरवदासरी बेटी जसोदारो ।

११ जीतमल ।

११ नरहरदास ।

१२ साईदास । वूदीरै वणखेडै ।

१३ रूपसी ।

१३ प्रतापसी ।

१३ सकतसिंघ ।

११ रायमल ।

१२ रामचद । तिगरै वसवाळा पीपळू छै ।

११ राव भोज सुरजणरो । आहाडा हिंगोलारी बेटी कनकावतीरा पेटरो[1] । कोई कहै जगमाल लाखावत आहाडारी बेटीरो[2] ।

हाडा सुरजनरो वडो इतवार राणै ऊदै कनै[3] परगना ७ पटै दीना । गढ रिणथभोररी कूची देनै थाणादार कर राखियो । रांणै उदैसिंघ सादू रामारै मामलै सीसोदियो भाणो गोती[4] हाथसू मारियो । तरै आप द्वारकाजी जात पधारिया तरै सुरजन साथै हुतो । तद रिणछोडजी द्वारो इसडो न हुतो[5] । पछै सुरजन दीवाण कना हुकम मागियो, कह्यो—"कहो तो हू रिणछोडजीरो देहुरो फेर कराऊ ?" दीवाण कह्यो—"भली वात ।" तरै सुरजन रिणछोडजीरो देहुरो हमार विराजै छै सु करायो[6] । पछै समत १६२४ अकवर पातसाह चितोड़ तोडियो । रा० जैमल, ईसर सीसोदियो, पतो जगावत काम आया । पाछा वळता रिणथभोर घेरियो । वरस १४ सुरजननू

1 कनकावतीकी कोखसे उत्पन्न । 2 कोई कहते हैं कि लाखाके पुत्र जगमालकी पुत्रीसे उत्पन्न । 3 हाडा सुरजनका राना उदयसिंहके निकट वडा भरोसा । 4 सादू रामाचरणके लिये अपने गोत्री भाणाको रानाने अपने हाथसे मार दिया था । 5 तव श्री द्वारकाके रणछोडजीका मदिर ऐसा नही था । 6 तव सुरजनने श्री रणछोडजी का मदिर जैसाकि अवतक वना हुआ है—नया वनवाया ।

गढमे रहता हुवा था । पछै सुरजनरो बळ छूटो । तरै कछवाहै भगवतदाससू वात करायनै समत १६२५, चैत सुद ६ पातसाहसू मिळियो । इतरी वातरो कौल कियो—"हू राणारी दुहाई खाईस[1] । राणा ऊपर विदा नही हुवा[2] ।" गढ पातसाहनू दियो । सुरजन पातसाहसू आय मिळियो । परगना ४ चरणा ७ वाणारसी दिसला[3] दिया । पातसाह आगरै जायनै सीसोदियो पतो जगावत, रावत जैमल वीरमदेओत आगरारी पोळ हाथिया चढाय माडिया[4] । सुरजननू कूकररी भात मडायो[5] । तरै सुरजन गाढो लाजियो[6] । पछै वाणारसी गयो । उठै सुरजनरा कराया मोहळ[7] छै । सु सुरजनरो छोटो बेटो थो, पातसाहरै पावै रह्यो । नै बडो बेटो दूदो रिणथभोर थो हीज । राणा उदैसिघ कनै गयो । राणै क्यु रोजीनो कर दीनो[8] । पछै सुरजन वेगो हीज मूवो । तरै पातसाह टीको दे नै बूदी भोजनू दीवी । दूदै बूदी थी ग्रासवेध माडियो[9] । सासतो धूकळ करै[10] । धरती वसण दै नही । वेळा १० आगरै अबखास माहै आय भोजसू मामलो कियो[11] । तद रतन दूदा कनै रहतो । पछै दूदानू विस हुवो[12] । पछै भोज वूदी आयो । खराव हुई धरती भौज वसाई । धरती दिन-दिन रस पडती गई[13] ।

✦

1 मै शपथ राणाकी उठाऊगा । 2 राणाके ऊपर चढाई करके नही जाऊगा । 3 तरफके । 4 पत्ता और जैमल वडे वीर थे । चित्तौडमे वडी वीरतासे लडकर काम आये इसलिये वादशाह अकवरने प्रसन्न होकर आगरेके किलेके द्वार पर इन दोनोके चित्र हाथी पर वैठाकर चित्रित करवाये । तभीसे यह रिवाज राजमहलो और मदिरो आदिके द्वारो पर इनके चित्र मँडवानेका चालू हुआ । 5 अपने हाथसे रणथभोरका किला सुपुर्द कर देनेके कारण सुरजनका चित्र कुत्तेकी भाति वनवाया । 6 खूब लज्जित हुआ । 7 महल । 8 राणाने दैनिक वेतन नियत कर दिया । 9 दूदेने वूंदीके साथ (कर-वसूलीके सम्बन्ध मे) लूट-खसोट करना शुरू कर दिया । 10 निरन्तर उत्पात मचाता रहता है । 11 दस वार आगराके आम और खास दरवारमे आकर भोजसे वखेडा किया । 12 दूदा विप देकर मार दिया गया । 13 दिन प्रतिदिन भूमि वसने लगी ।

# बूंदीरा देसरी हकीकत

समत १७२१ रा जेठ माहै रा० रामचद जगनाथोत[1] मडाई। बूदी सहर भाखर लगती[2] वसै छै। रावळा-घर[3] भाखरके आधोफरै[4] छै। पिण माहै पाणी मामूर[5] नही। सहर आयो पीजै[6]। भाखर वाळारो सहर लगतो[7]। झाड[8] घणा। वळारै भाखरमे पाणी घणो। सहर माहै पाखती[9] पाणी घणो। वडो तळाव सूरसागर, तिणरी मोरी[10] छूटै छै, तिणसू वाघ-वाडी घणा पीवै[11]। वागे[12] आवा फूलाद[13] चपा घणा। सहर वस्ती उनमान[14] घर ५०० वाणियारा, घर १०० वांभण-विणजारारा[15], घर सो पाच भईया-हीडागरारा[16]।

राव भावसिघनू हमार[17] जागीरमे इतरा[18] परगना छै। तिणांरा गाव—

३१६ प्र० वूदी।

३६० खटखड वूदीसू कोस ६।

८४ पाटण वूदीसू कोस १२।

४२ लाखेरी गोडा वाळी, वूदीसू कोस ६।

वूदीरी पाखती हाडोतीरा परगना—

१ परगनो मऊ खीचियारो। उतन मऊरा परगना मा है। सिध भली नदी सदा वहती रहै छै। मऊसू कोस ७ गाव धूळकोट छै तठै नीसरै छै[19]। पाणी मूळ घुडवाणरो आवै छै[20]। आहीज[21] नदी गढ गागुरणरै हेठै[22] नीसरै छै। तिको मऊरो परगनो राव रतन

---

1 जगन्नाथके पुत्र राव रामचदने सवत् १७२१ के ज्येष्ठ मासमे लिखवाई। 2 पास। 3 जागीरदारके घर। 4 मध्यमे। 5 सर्वथा। 6 शहरमे आने पर पानी पीनेको मिलता है। 7 अरावली पहाड शहरके निकट। 8 वृक्ष। 9 पास। 10 मोरी वहती हैं। 11 जिससे वाग और वाडियोको वहुत पानी सीचा जाता है। 12 वागोमे। 13 पुष्पो वाले वृक्ष और पौधे। 14 अनुमान। 15 ब्राह्मण-वनजारे, वैलो पर माल इधरसे उधर ला-लेजा कर क्रय-विक्रय करने वाली एक प्रसिद्ध व्यापार करने वाली जाति। 16 पाच सौ घर छुट भाई नौकरोके। 17 अभी। 18 इतने। 19 मऊसे। 20 कोस पर धूलकोट गावके पासमे होकर निकलती है। 21 गुडगावके श्रोतका पानी ही मुख्यकर इसमे आता है। 22 यही।

मार लियौ[1]। बूंदीथी कोस ३० गाव १४४० लागै । मऊ छोटो सो सहर पिण छै । पीपाड सारीखो रडी[2] ऊपर वसै छै । भाखर छै । अगवारै[3] गाव ७०० चौडै छै । पछवारै[4] गाव ७४० भाखर भाड छै । मऊरा कोटरा पठा[5] हेठै नदी उतार सदा वहतो रहै । सेभो[6] को नही । सेवज गोहू चिणा घणा[7] । धरती काळी, वाड[8] चावळ घणा । रैत लोधा, किराड, मीणा वसै[9] । हाडा भगवतसिघरी जागीरीमे पाई छै[10] । सु भगवतसिघ वडा-वडा मोहळ[11], तळाव नवा सवराया छै। घर हजार दोय २००० वसै छै ।

१ कोटो, बूंदीथी कोस १२, गाव ३६० लागै । निपट वडी ठोड । जोधपुररा धणीरै सोभत ग्रासवेधरी[12] ठोड त्यू बूंदी दूजी ठोड कोटो । नदी चबल ऊपर हाडै मुकन्दसिघरा कराया वडा मोहळ छै ।

१ खैरावद, बूंदीथी कोस ४०, मऊथी कोस १४ । दूजो नान[13] मिलकी-अभिरामपुर । गाव ८४ लागै ।

१ पैळाइतो, बूंदीथी कोस १४, कोटाथी कोस ८, गाव ८४ ।

१ सागोद, बूंदीथी कोस २५, गाव ८४ ।

१ वाटी, खीचियारो उतन । बूंदीथी कोस २५ । कोटासू कोस ७, गाव ५१ ।

१ घाटोली, खीचियारो उतन । बूंदीसू कोस २५, कोटासू कोस ६, गाव ३१ ।

---

1 खोस कर उस पर अधिकार कर लिया । 2 छोटी पहाडी परका (वा ऊचा उठा हुआ) समतल मैदान । 3 आगेकी ओरके ७०० गाव तो चोडे-मैदानमे है । 4 और पीछेकी ओरके ७४० गाव पहाडो पर वृक्षोसे घिरे हुए हैं । 5 पानीको रोकनेके लिए वाधके रूपमे वनाई हुई एक दृढ दीवार अथवा दीवारकी नीवमे पानीकी टक्करको रोकनेके लिये वनाई हुई पुष्टि । 6 नदी-नालो आदिका पानी सोखनेसे कूओ आदिमे पानीका वढाव । 7 (अत ऊपरकी भूमिमे नमी वनी रहनेके कारण) सेवज (विना सिंचाईके उत्पन्न होने वाले) गेहूँ चने अधिक । 8 ईख । 9 लोधा, किराड और मीणे—यह प्रजा वसती है । 10 प्राप्त हुई है । 11 महल । 12 (१) अधिक कर प्राप्त होने वाली उपजाऊ भूमि, (२) सकटके समय रक्षाका स्थान । 13 नाम ।

१ गागुरण, वूदीथी कोस ३०, मऊसू कोस ४, कोटासू कोस १० खीची अचलदास वाळी । भाखर ऊपर वडो गढ छै । निपट चोडौ, जिण माहै माणस[1] हजार १०००० रहै । गढ वासै[2] नदी सिंध वहती सदा रहै छै । तिणरो पाणी गढ माहै वाळियो छै[3] । आगै तो गढ सूनो-ठमठेर सो थो[4] । हमार हाडै मुकदसिंघरी जागीरमे मुकदसिंघगढ जोर सवरायो[5] । वडा मोहल कराया । गागुरण सहर घर ७०० तथा ८०० वसै छै । नदी सिंध - आ मऊरा परगना माहै वहै छै । मूल आ गुडवाणथी आवै छै ।

मऊथी निजीक[6] सहर इतराएक कोस छै—

एवारो परगनो गांव १२ । सदा हाडांरो उतन[7] थो । हमै पातसाहजी और जागीरदारनू दियो छै । मऊ कोटा वीच छै ।

गूगोर, खीचियारो उतन । मऊसू ऊगवण[8] कोस २५, गाव ३६० लागै छै । छोटोसो गढ छै । सहरमे घर १००० वसै छै ।

खातखेडी मऊथी कोस २०, भील चक्रसेणीरी ठोड[9] । हाडा भगवतसिंघनू छै[10] । मारली[11] गाव ७०० ।

चाचरणी, खीची वाधरी[12] । खीचियारो उतन । मऊथी कोस १५ । खाताखेडीथी कोस ५ । गाव ८४ ।

वेहु[13] सिंधलवाली, गोपलदे भगवतसिंघनू जागीरमे ।

चाचरड़ो, खीची सावलदासरो । गाव ४२ । खाताखेड़ीसू कोस ७ । मऊरै परगनै वडेररा[14] गाव नावजादीक छै[15] ।

१ देवीखेड़ो ।

---

1 मनुष्य । 2 पीछे । 3 जिसका पानी गढमे घेरकर लाया गया है । 4 पहले यह गढ सूना और खाली था । 5 अभी मुकुन्दसिंहने अपनी जागीरीमे गढको खूब सुधरवाया । 6 पास । 7 जन्मस्थान 8 पूर्व दिशामे । 9 भील चक्रसेनकी जागीरी । 10 जो अभी हाडा भगवतसिंहके अधिकारमे है । 11 जिसको भील चक्रसेन पर आक्रमण करके अपने अधिकारमे कर लिया । 12 चाचरणी गाव खीची वाधकी जागीरका । 13 दोनो । 14 पुरखाओके । 15 ख्याति प्राप्त ।

१ हरीगढ ।
१ जोलपो ।
१ मोही ।
१ मोटपुर ।
१ कूडी ।
१ बभोरीरो परगनो । गाव ८४ ।
१ जरगो ।
१ अटरोह । गाव ८४ ।
१ धूळोप ।
१ जीलवाढो । गाव ८४ ।

धरती रैतरो हैसो[1]—
वाड[2] वीघे १ रु ५)
आवळ[3] वीघे १ रु ५)
वण[4] वीघे १ रु. १॥)

ऊनाली पीयल नही[5] । सैवज[6] घणा । साळ[7], गोहू, वाड, चिणा घणा । रैत देस माहै[8]—

बाभण[9]—गूजरगोड । पारीख ।
मीणा ।
धाकड । किराड ।
अहीर ।

नदी ४ हाडोती माहै—
१ चाबळ[10] ।
१ सिंध ।

---

1 प्रजासे भूमिका कररूपमे प्राप्त किया जाने वाला भाग इस प्रकार है। 2 ईख प्रति वीघे रु ५) । 3 आँवल प्रति वीघे रु ५) । 4 रूई प्रति वीघे रु १॥) । 5 सिंचाई द्वारा की जाने वाली ग्रीष्मकालीन-कृषि यहा नही होती। 6 परिमाणसे अधिक वर्षा होनेके कारण भूमिमे आर्द्रता बनी रहनेसे बिना सिंचाईके होने वाली शरत्कालीन कृषि। 7 शालि—साठी चावल। 8 देशमे इस भाँति प्रजा वसती है। 9 ब्राह्मण। 10 चम्बल।

१ पार ।
१ पुडण ।

## वात

वूदीरा देसरा रजपूतारी विगत—
मुदै[1] हाडा सावतरा असवार ५०० जोड[2] ।
हाडो लिखमीदास मांनसिघरो, गाव नादणौ ।
हाडो प्रथीराज केसोदासरो, भोजनेर ।
हाडो रायभाण रायसिघरो, तलावस मीयारै गुढै ।
हीडोळारा हाडा, परतापरा पोतरा[3] ।
हाडा खजूरीरा, तिलोकरामरो लखमण ।
दहियो हमीर, जैमालरो पोतरो ।
दहियो सावळदास, गोवरधन सुदरदासोतरारै पटो रु २००००) ।
दहिया आसामी ३० चाकर छै । आदमी ३०० ।
सोळंकी आदमी ४०० सौ ।
हरीसिघ रायवदासरो ।
मूर नाहरखानरो ।
रावत जगतसिंघ मानसिघरो ।

गोड सागावत—
रावत आसकरण ।
गोड सुदरदास ।
गोड गैपावत ।
वालणोत सोळंकी, आसामी दस तथा पनरै, आदमी १०० ।
नवब्रह्मरा हाडा, आसांमी दस तथा १५, आदमी १०० ।
राठोड ऊदावत, कछवाहा, आसामी १०, आदमी १०० ।
बीकावत-सादूळरा बेटा-पोतरा[4], आदमी १०० ।

1 मुख्य । 2 पांचसो जोड अर्थात् एक हजार । 3 पोता । 4 बेटे-पोते ।

राजावत आदमी १०० ।

हाडा रामरा रामोत कहावै छै । आज वडै वाधै छै[1] मुदै आदमी २०० ।

इतिश्री बूंदीरा धणिया हाडांरी ख्यात वार्ता सम्पूर्ण ।

लिखत वीडू पना, वाचै जिकण सिरदारसूं मुजरो मालम हुसी ।

++

---

1 आज ये वडी उन्नति पर है ।

# वागड़िया चहुवांणारी पीढ़ी

अै मुधपाळरा पोतरा कहावै छै[1]। पीढियारी विगत—

| | | |
|---|---|---|
| १ ब्रह्मा। | १४ सिघराय | २७ मुधपाळ। |
| २ वैवस्वत। | १५ राव लाखण। | २८ वीसळदे। |
| ३ रावण। | १६ वळ। | २९ वरसिघदे। |
| ४ धुध। | १७ सोही। | ३० भोजो। |
| ५ तपेसरी। | १८ जिंदराव। | ३१ वालो। |
| ६ तप। | १९ आसराव। | ३२ डूगरसी। |
| ७ चाय। | २० सोहड। | ३३ लालसिह। |
| ८ चहुवाण। | २१ मुध। | ३४ वीरभाण। |
| ९ तपेसरी। | २२ हापो। | ३५ सूजो। |
| १० चपराय। | २३ महिपो। | ३६ फरसो। |
| ११ सोम। संभर वसाई। | २४ पतो। | ३७ केसरीसिघ। |
| १२ साहिल। | २५ देदो। | ३८ माहिसिघ। |
| १३ अवराय। | २६ सेहराव। | ३९ लालसिंह। |

## वार्ता

चहुवाण डूगरसी वालावत वडो रजपूत हुवो। वागड पिण को[2] दिन रह्यो छै। राणा सागारै पिण वास थो[3]। वडो कायदो[4] बडो पटो[5] पायो। वधनोर राणै सागै पटै दी थी। घणा दिन वधनोर रही। वधनोर डूगरसीरा कराया वडा-वडा तळाव छै, वावडिया मोहळ छै। राणो सागो नै अहमदनगर मुदाफर पातसाहसू वेढ[6] हुई, तठै डूगरसी आप धावै पडियो[7]। वेटा, भाई, भतीजा इण वेढ़ सारा

1 ये मुधपालके पोते कहलाते हैं, स० २७ पर मुधपाल है। इसके पूर्वकी वशावली अशुद्ध है। मुधपालके बादमे जो हैं वे ही वागडिया चौहान मुधपालके पोते कहलाते हैं। वागड प्रान्त (डूगरपुर-वासवाडा) मे रहनेके कारण वागडिया-चौहान कहलाये। 2 कुछ। 3 राना सागाके पास भी रहा था। 4 प्रतिष्ठा। 5 जागीरी। 6 लडाई। 7 जहा डूगरसी स्वय आहत होकर गिर पडा।

काम आया । कान्है डूगरसीरै वडो पराक्रम कियो । किवाड लोहरा अहमदनगररी पोळरा तापिया[1] था । तठै हाथी लाग न सकै, तरै कान्ह महावतनू[2] कह्यो–"हू वीच आऊ छू, मोनू वीच देनै हाथी कना किंवाड भजाय नाख[3] ।" तरै कान्ह किवाडा आडो आयो[4] । हाथी कान्हरै मोरै दात टेकनै किवाड तोड नाखिया[5] ।

२ कान्ह डूगरसीरो ।
२ सूरो डूगरसीरो ।
३ भाण ।
३ करमसी ।
४ जसवत ।
५ केसोदास ।
६ सावळ ।
७ गोपीनाथ ।
८ सूरतसिंघ । मही ऊपर काम आयो[6] ।
९ सिरदारसिघ । राणै जैसिघरै वारै[7] ।
३३ अखैराज डूगरसीरो ।
३३ लाल डूगरसीरो । चीतोड काम आयो ।
३४ सावळदास ।
३४ वीरभाण । रावळ करमसी उग्रसेन लडिया तद काम आयो ।
३५ मान । समत १६५१ मान नै रावळ उग्रसेन विरस[8] हुवो, तद मान पातसाहरै वसियो[9] । पछै समत १६५८ व्रहानपुरमे रा० सुरजमल माननू मारियो । रावळ उग्रसेन कना[10] रा० सूरजमल बाभणानू कर लागतो सु छुडायो ।
३६ सत्रसाल ।

---

1 अहमद नगरकी पोलके किंवाड अग्निसे तपाये हुए थे । 2 को । 3 मै वीचमे आता हूँ, मुझको वीचमे देकर हाथीके द्वारा किवाडोको तुडवा डाल । 4 तव कान्ह किवाडोंके पास आकर खडा रहा । 5 हाथीने कान्हकी पीठमे अपने दोनो दातोको टिका कर, टक्कर मार कर किवाडोको तोड डाला । 6 मही नदी परकी लडाईमे काम आया । 7 समयमे । 8 वैर, शत्रुता । 9 तब मान वादशाहके पास जाकर रहा । 10 द्वारा ।

३५ सूजो—रांणा जगतसिंघरी फोज साथै अखैराज डूगरपुर मारियो[1] तद काम आयो ।

३६ फरसो ।

३३ लाखो डूगरसीरो ।

३४ नाथो ।

३५ वेळावळ ।

३५ सकरदास ।

३६ रिणमल ।

३५ हाथी वाळारो ।

१ किसन हाथीरो

२ कपूर किसनरो ।

३ ईसर कपूररो ।

४ भीम ईसररो ।

५ जसकरण भीमरो ।

६ प्रतापसिंघ जसकरणरो ।

७ सिरदारसिंघ प्रतापसिंघरो ।

८ गुलालसिंघ सिरदारसिंघरो । वांसवाहळै रहै छै ।

इति वागडिया-चहुवाणांरी ख्यात संपूर्ण ।

लिखत वीठू पना ।

1 विजय किया ।

## अथ वात दहियांरी

( परबतसर माहै लिखी । समत् १७२२ आसोज माहै )

दहियारो उतन मूळ सुणियो छै। दिखणनू नासक त्रबक गोदावरी कनै, गढ थाळनेर थो[1] । इतरी ठोड दहियारै अजमेर माहे हुती[2]—

१ देरावर–परबतसर गाव ५२ ।

१ सावर–घाटियाळी ।

१ हरसोर । विल्हणरो वेटो हरधवळ धणी ।

१ माहरोटरो विल्हणवटी नाव[3] ।

१ परबतसर साह परवत माडवरै पातसाहरो करोडी आयो तिण आपरै नावै वसायो । पवार करमचदरी वार माहै समत १५७९ साह परवत जुहर[4] ।

दहियारै पीढचारी विगत—

१ आदनारायण ।

२ कमल ।

३ ब्रह्मा ।

४ पित्रावरण ।

५ अगस्त ।

६ पोलस्त ।

७ पाराशिख ।

८ दुरवासा ।

९ जैरिख ।

१० निकुभ ।

११ राजरिख ।

---

1 सुननेमे आया है कि दहियोकी आदि जन्म-भूमि दक्षिणमे गोदावरीके पास नासिक-त्र्यम्बकके थालनेर गढ थी । 2 इतने स्थान दहियोके अजमेर प्रान्तमे थे । 3 मारवाडके मारोठ गावके प्रान्तका नाम विल्हणवाटी । 4 माडूके वादशाहकी ओरसे नियत किया हुआ 'परवत' नामक जुहर जातिके माहेश्वरीने स० १५७९मे पँवार कर्मचदके समयमे अपने नामसे 'परबतसर' नामक गाव वसाया ।

१२ दधीच[1] ।

१३ विमलराजा ।

१४ सिवर ।

१५ कुलखत ।

१६ अतर ।

१७ अजैवाह ।

१८ विजैवाह ।

१९ सुगल ।

२० सालवाहन । हसावली रानी ।

२१ नरवाहण ।

२२ देहड, मडळीक देरावर[2] ।

२३ वूहड, मडळीक ।

२४ गुणरग, मडळीक ।

२५ दोराव राणो ।

२६ भरह राणो । भदियावद वासो

२७ रोह राणो । रोहडो वसियो ।

२८ कडवराव राणो ।

२९ कीरतसी राणो ।

३० वैरसी राणो ।

३१ चाच राणो । देवी केवायरो देहुरो करायो । भाखरी ऊपर गाव सिण हडियै[3] ।

३२ अनवी[4] उधरण । परवतसर माहरोट धणी । वडो रजपूत हुवो । तिणरै वेटारा पिड[5] २ ।

---

1 दधीचि ऋषिके वशज दहिया क्षत्री हैं। मारवाडके किणमरिया गावके केवायदेवीके मदिरके स० १०५६ के शिलालेखमे दहियोका दधीचि ऋषिके वशज होनेका उल्लेख है। दाहिमा ब्राह्मण भी दधीचिके वशज कहे जाते हैं। 2 देरावरका माडलिक राजा देहड। 3 चाच रानाने सिणहडिया (अब इसका नाम किणसरिया) गाँवके पास पहाडी पर केवाय देवीका मदिर बनवाया। 4 किसीके सम्मुख नही झुकने और अपने नामसे प्रख्यात होने वाला तेजस्वी और महाबली। 5 जिसके दो पुत्र।

३३ जगधर रावत उधरणरो । परवतसर धणी तिकै माडल, परबतसरथी कोस १ छै तठै ठाकुराई । उठै देहुरा, वावडी, कूग्रा ग्रजैस छै[1] ।

३४ दूदो रावत जगधररो ।

३५ रावत मालौ दूदारो ।

३६ रावत कुतल मालारो ।

३७ रावत मोडो कुतलरो ।

३८ रावत सूजो नै जोगो मोडारा ।

३९ पेरजखान जोगारो ।

४० हरीदास ।

४१ रामदास, सिणहडियै छै ।

३३ विल्हण ग्रनवी उधरणरो । तिणरै सारी माहरोठ हुती । गाव देपारो, माहरोटथी कोस २ भाखरमे छै तठै वसता । तठै कोट छै, तळाव छै । तठै ठाकुराई हुई । वे देपारा दहिया कहावै ।

३४ बीबो, तिणरो करायो परबतसर बीबासर तळाव छै । इणरी बैर कवळावती राणा ईहडरी वेटी । तिणरो करायो राणोळाव तळाव छै । जेळूरी वैहन[2] ।

३५ पोहपसेन बीबारो । राजा कुतरी वेटी रतनावती परणियो हुतो । कुतल गाव १२ सू पीपळू दीवी थी । छतीसपवन दीवी थी । खेजडली दीवी थी[3] ।

३६ कवळसी ।

३७ जैसिघ ।

३८ कील ।

---

1 ग्रभी तक है । 2 बीबा—जिसने परवतसर गाँवमे बीबासर नामक तलाव बनवाया था । इसकी स्त्री राना ईहडकी पुत्री ग्रौर जेलूकी बहिन कमलावती थी जिसने राणोलाव तलाव बनवाया था । 3 बीबाका पुत्र पुहपसेन, जो राजा कुन्तकी कन्या रत्नावतीसे व्याहा था । कुतलने रत्नावतीको बारह गाँवोके साथ पीपळू गाँव दहेजमे दिया था ग्रौर उसके साथ छत्तीसपवन ग्रौर खेजडली भी । (छत्तीसपवनसे तात्पर्य ३६ जातियोका दहेजमे देनाभी हो सकता है) ।

३९ नरवद । कहै छै–नागोर मारी हुती[1] ।
४० लखो ।
४१ आसो ।
४२ सूरज ।
४३ प्रथीराज, चीतोड कांम आयो । हाडांरो चाकर ।
४४ जैमल ।
४५ हमीर निपट वडो रजपूत हुवो ।
४६ विहारी, ४६ रांमदास, ४६ मुकददास, ४६ नरहरदास
४५ विजैराम जैमलरो ।
४६ मोहणदास ।
४७ सु दरदास ।
४८ सावळदास ।
४८ स्यांम ।
४८ गोवरधन ।
४७ महासिघ ।

## गीत[2] दहिया हमीररो

महाकाळ जमजाळ जोधार जैमल्लरो,
कळहरो कथन ससार कहियो ।

1 कहा जाता है कि नरवदने नागोरको विजय किया था। 2 दहिया हमीरके सम्बन्धके गीतका अर्थ—

जयमलका पुत्र वीर हमीर महाकाल और यमपाशके समान हो गया है । संसारमे युद्ध करने वालोमे वह कथनरूप (प्रशंसा करने योग्य) कहा गया है । दुरात्मा बादशाहके लिये हाडा दूदा शल्यरूप हुआ किन्तु दहिया हमीर उसी दूदाके हृदयमे शल्यरूप हुआ ॥ १ ॥

नृपति नरवदका वशज दहिया हमीर अत्यन्त निर्भय वीर हुआ । अपने स्वामीका काम सिद्ध करने वालोमे वह बडा वीर और धीर पुरुष हुआ । हाडा दूदा तो बादशाहके हृदयका शल्य हुआ परन्तु उस हाडाके हृदयका शल्य तो हमीर ही हुआ ॥ २ ॥

अत्याचारोसे मुक्ति दिलाने वाले रण-कुशल हमीरने, सदा सजग हुआ रहकर अपने स्वामीके कामोको सिद्ध अर्थात् विजय करके उनपर उसकी ओरसे अधिकार किया । जिस प्रकार पराक्रमी दूदाने बादशाहको चैन नही लेने दिया उसी प्रकार दुरात्मा दूदाके हृदयमे भी हमीर शल्यकी भाति खटकता रहा ॥ ३ ॥

दुरत पतसाहरै सालव्हो दूदडो,
दूदडा तणै उर साल दहियो ॥१॥

निबड भड निडर नरनाह नरवद्दरो,
सकज भड स्यामरो काम सधीर ।
हियै पतसाहरै साल हाडो हुवो,
हियै हाडा तणै साल हमीर ॥२॥

आवरत-कहर असवार आखाड सिध,
काम पह चाड इधकार कियो ।
दूदडै दूह पतसाह ओसुख दियौ,
दुरत दूदा उर साल दडयो ॥३॥

इति दहिया परबतसररारी ख्यात वार्ता सपूर्ण ।
लिखत वीठू पना । वाचै जिण सिरदारसू मुजरो[1] मालम हुसी ।

++

---

1 प्रणाम ।

# अथ बूंदेलांरी[1] वात लिखंते

राजा वरसिघ बू देलारै इतरा[2] गढ हुता[3] । बूंदेला सुभकरणरै चाकर चक्रसेन मडाया[4] समत १७१०–

१ जगहरो परगनो, तिणरो गाव उडछो तिणनू गाव १७०० लागै । रु० ७००००)

१ भाडेररो परगनो, गाव ३६० । उडछाथो कोस १२, रु० ५०००००)

१ एलछरो परगनो, गाव ३६० । उडछाथी कोस १२, रु० ७०००००)

१ परगनो राड, गाव ७०० । उडछासू कोस ३०, रु० ६०००००)

१ परगनो खोटोलो, गाव १७०० । उडछाथी कोस २०, रु० ३०००००)

१ परगनो पवई, गाव १४०० । उडछाथी कोस ४०, रु० १५००००)

प्र० पाडवारी, गांव १४०० । उडछाथो कोस २०, रु० ७०००००)

१ प्र० धमाणी, गाव ६०० । उडछासू कोस ४०, रु० ७०००००)

१ प्र० दमोई, गाव ३५०, उडछासू कोस ५०, रु० १०००००)

१ प्र० सीलवनी । धामणी, चवरागढ वीच ।

१ गढ पाहराद गीराजरी ठोड ।

१ चोकीगढ, गूडारो ।

१ गुनोर, गूडारो ।

१ उदैपुर सिरवाजरै मैडै[5] ।

१ कछउवा उडछाथी कोस १२ ।

---

1 राष्ट्रकूटो (राठोडो) की गहरवार शाखाके जिन क्षत्रियोका बूंदेलखडसे सम्बन्ध रहा वे बूंदेला कहाये । 2 इतने । 3 थे । ४ लिखवाये । 5 आगे की ओर । उस ओर पासमे ।

१ करहर, उडछाथी कोस २० ।

१ दिहायलो नरवररै मैंडै ।

१ खुटहररै मैंडै अरणोद ।

१ बुडूण ।

१ पबउवा, उडछासू कोस २० ग्वालेररै मैंडै ।

१ बेडछो ग्वालेर निजीक ।

१ दभोड वेडछै कनै[1] ।

१ कुच आलमपुररै मैंडै ।

१ मोहनी, गाव ८४, इद्ररुखी[2] ।

१ गोओद भदावररै मैंडै ।

१ अवाइनो ।

१ साहरो लागरपुर घाघेडो गाव १५००

१ चवरागढ गूडरो जुगराज लियोथो, तिणनू गढ वावन लागता[3] ।

## बूंदेलांरी वात

कविप्रिया ग्रथ केसोदासरो कियो[4]–तिण माहे बूदेला रै वसरी इण भात वात कही छै—

अै सूर्यवसी । सूर्यवसरै विषै श्रीरामचन्द्ररो अवतार । तिणथी[5] कितरेहेक पीढिया इणारो गहरवार गोत्र कहाणो ।

१ राजा वीरू गहरवाररो ।

२ राजा करन महाराजा हुवो तिण वाणारसी[6] वास कियो ।

३ राजा अर्जुनपाळ तिण मोहनी गाव वसायो ।

४ राजा सहजपाळ ।

५ राजा सहजइद्र ।

---

1 पास । 2 इन्द्रदिशाकी ओर । 3 गूडा जिलेका चवरागढ वरसिंहके पुत्र जुगराजने जीत लिया था जिसमे ५२ किलेथे । 4 कवि केशवदास रचित 'कविप्रिया' नामक ग्रन्थ । 5 जिनसे कितनीहीक पीढियोके पीछे इनका गहरवार गोत्र कहलाया । 6 काशी ।

६ राजा नागदे ।

७ राजा प्रथीराज ।

८ राजा रामचद्र ।

९ राजा राजचद्र ।

१० राजा मेदनीमल ।

११ राजा अर्जुनदे । तिण षोडस महादान कीना[1] ।

१२ राजा प्रतापरुद्र ।

१३ राजा भारथचद्र हुवो, तिणरै वेटो न हुवो तरै भाई मधुकर-साहनू राज आयो ।

१४ राजा मधुकरसाह प्रतापरुद्ररो । तिण उडछो[2] वसायो । तिण मधुकरसाहरै इग्यारै ११ वेटा हुवा ।

१३ दुलहराम टीकै मधुकरसाहरै हुवो ।

१३ सग्रामसाह ।

१२ होरलराउ ।

१२ नरसिघ ।

१२ रतनसेन ।

१२ इंद्रजीत ।

१२ रनजीत ।

१२ सत्रजीत ।

१२ वलवीर ।

१२ हरसिघदे ।

१२ रनधीर । सग्रामसाह, दुलहराम आक १३ ।

१४ भारथसाह ।

१५ देवीसाह ।

१६ किसोरसाह ।

१४ किसनसाह ।

---

1 जिसने सोलह महादान किये । 2 ओडछा – जो बूदेलोकी राजधानी है ।

१५ जगतमिण । श्रीजोरै[1] कावलमे चाकर रह्यो हुतो । एकण ठोड पीढिया यू पिण माडी छै[2]–

१ राजा वीरू ।

२ गहनपाळ ।

३ राजा सहजग ।

४ राजाराम ।

५ राजा नानगदे

६ राजा प्रथीराज ।

७ राजा रामसिघ

८ राजा चद्र ।

९ राजा मेदनीमल

१० राजा अर्जुनदे ।

११ राजा मलूखा ।

१२ राजा प्रतापरुद्र ।

१३ राजा मधुकरसाह ।

१४ राजा वरसिघदे ।

राजा वरसिंघदे मधुकर साहरो । वडो भाग्यवान हुवो । पातसाह जहागीररा हुकमसू खोजो अवलफजल मारियो । पातसाह घणो निवाजियो[3] ।

१३ राजा जुगराज ।

१४ राजा विक्रमाजीत ।

१३ राजा पाहडसिघ ।

१४ सुजाणसिघ राजा । तीन हजारी असवार ।

१३ चद्रमिण ।

१३ भगवानदास ।

---

1 जगत्मणि – जोधपुरके महाराजा जसवतसिह जब काबुल गये थे तो उनके पास नौकर रहा था। 2 एक स्थान पर वशावली इस प्रकार भी लिखी है। 3 प्रसन्न हुवा, पुरस्कार दिया।

१४ सुभकरन । श्रीजीरै वास रु० ३५०००) पटो ।

१४ सकतसिंघ ।

१३ प्रेमसाह ।

१४ भगवंतराय ।

१५ चपतराय । वडो रजपूत हुवो । जुगराज मारियां पछै धरती माहे वडो विखो कियो[1] ।

१६ सालवाहन ।

१५ सुजांणराय ।

१५ भीवराय ।

१६ राजा वरसिंघ दे । धरमातमा हुवो । मुथराजीमे श्री केसोरायजीरो देहरो करायो । पातसाहरी चाकरी अखड कीवी नै मुवां पछै टीकै जुगराज वैठो । सु वैठा पछै केई दिन तो घणो ही तपियो[2] पछै श्रीठाकुरजी वीच देनै चवरागढ गूडारो लियो[3] । पछै समत १६६६ रा काती माहै पातसाहसू विरस[4] हुवो तरै पातसाह फोज की[5] । खानदोरा अवदूलाखान और हिंदू मुसलमान विदा किया । पातसाह चढ ग्वालेर आयो । फोजा देस माहै दखल कियो[6] । इणसू घणी लडाई-वेढ कोई हुई नही[7] । पारपखै[8] पातसाहरै माल आयो । जुगराज देस छोड नाठो[9] । आगै जाता आप वैठा विक्रमाजीत माराणो[10] । पछै पातसाहजी उडछै पधारिया । वीरसमद वडो तळाव छै, तठै पातसाहजी को[11] दिन रह्या । पछै पातसाहजी सिरिवाज माहै हुय व्रहानपुर पधारिया । पछै दोलतावाद पधारिया ।

इति वूंदेलारी ख्यात वार्ता सपूर्ण ।

---

1 चपराय—वडा वीर राजपूत हुआ । जुगराजको मारनेके पीछे इसने पृथ्वी पर वडा भय उत्पन्न कर दिया । 2 गद्दी वैठनेके वाद कई दिन तक तो धर्मपूर्वक निष्कटक राज्य किया । 3 फिर श्री ठाकुरजीकी शपथ खाकर धोखेसे गूंडा जिलेके चँवरागढ पर अधिकार कर लिया । 4 शत्रुता । 5 सेना भेजनेकी तैयारीकी । 6 देशमे सेनाने अधिकार कर लिया । 7 इससे युद्ध नही हो सका । 8 अपार धन । 9 भाग गया । 10आगे जाकर उसके जीते जी उसका पुत्र विक्रमाजीत मारा गया । 11 कई ।

# वारता गढ़बंधवरा धणियांरी

वाधवरो मुलक आद करणा—डहरियारो। नवलाख-डहर कहावै[1]।

करणो-डहरियो मारै पेट थो[2]। दिन पूरा हुआ तरै करणारी मा कस्टी[3]। तरै जोतखियै कह्यो[4]—"हमार वेळा बुरी वहै छै[5]। अै दोय घडी टळै, पछै छोरू हुवै तो महाराजा-प्रथीपत हुवै[6]।" आ वात करणारी मा सुणी, तरै उण आपरा पग ऊचा वंधाया[7]। सु वा तो मर गई[8], नै करणो घडी दोय पछै जीवतो जायो[9]। मोटो हुवो[10]। करणो वडो महाराजा हुवो। गगा-जमुना वीच्च घणी धरती करणारै हुई। करणै आपरी[11] मारी वात सुणी—"म्हारे वास्तै म्हारी मा इतरो कस्ट सह्यो। इण भात देह त्यागी।" तरै करणै चोरासी तळाव नवा खिणायनै[12] एक दिन आपरी मारी वांसै तर्पण[13] किया। और ही घणा धरम किया[14]। करणारो राजथान गढ कालजर, प्रयागजीसू कोस ४० छै तठै हुतो।

वाघेल-धरती वसी-लेनै[15] वधवगढ राजथान कियो। वरसिघदे वाघेलो गुजरातसू गगाजीरी जात आयो हुतो। तद अठै वधवरी ठोड निवळासा[16] लोधा[17] रजपूत रहता। ठोड[18] खाली दीठी। तरै गगाजीरा पुलण[19] मनोहर देखनै अठै रहणरी कीवी। लोधानू मारनै

---

1 आदिमे वाधवदेशका अधिपति करना डहरिया था। डहरियोंकी सख्या वहा पर नौ लाख होनेके कारण वह प्रदेश 'नौ लाख डहर' कहलाता है। 2 करना डहरिया जव गर्भस्थ था। 3 गर्भके दिन पूरे हुए तव करनाकी माताको प्रसव-पीडा हुई। 4 तव ज्योतिषियोने कहा। 5 इस समय लग्न-ग्रहादि अशुभ चल रहे है। 6 ये दो घडी निकल जाँय और वादमे पुत्र उत्पन्न हो तो वह महाराजा और पृथ्वीपति होवे। 7 इस वातको करनाकी माताने सुना तव उसने उस लग्नमे प्रसव नही होने देनेके लिए अपने पावोको ऊपर वधवा लिये। 8 सो वह तो इस कष्टसे मर गई। 9 किन्तु करना दो घडी पश्चात जीवित उत्पन्न हुआ। 10 वयस्क हुआ। 11 अपनी। 12 खुदवाकर। 13 पितरोकी सतुष्टिके लिये अजलिमे पानीके साथ यव तिल आदि भर कर जलदान देनेकी एक मृतक-क्रिया। पितृ-यज्ञ। 14 और भी वहुतसा पुण्य-दान किया। 15 वाघेल वरसिंहदेने किसी भी प्रकार का कर नही लिये जानेकी छूट दी गई हो ऐसी वसी (प्रजा) को वसा कर वाघवगढ स्थानमे अपनी राजधानी वनाई। 16 निर्वल जैसे। 17 लोधा राजपूतोका एक वश। 18 स्थान। 19 सुन्दर तट-प्रदेश देख कर।

वरसिघदे आ धरती लीवी । वधवगढ वसियो ।

१ राजा वरसिघदे ।

२ राजा वीरभाण । २ जांमणीभाण ।

३ राजा रामचद–वीरभाणरो वडो दातार हुवो, दान च्यार कोड[1] दिया ।

१ कोड नरहर महापात्रनू ।

१ कोड चत्रभुज दसौंधीनू[2]

१ कोड भड्या मधुसूदननू ।

१ कोड तानसेन कलावतनू ।

४ वीरभद्र रामचद्ररो ।

५ दुरजोधन ।

६ प्रतापादीत ।

५ राजा विक्रमाजीत मुकदपुर रहतो । राजा मानसिघरो जमाई ।

६ बाबू इद्रसिंघ मानसिघरो दोहितो ।

६ सम्पसिघ ।

६ राजा अमरसिघ, जिणनू समत १६९० मे राजा श्रीगजसिघजी वेटी चादजी[3] परणाई । वधव उरै[4] कोस २० गाव रैया वसतो । समत १७०७ अमरसिघ काळ कियो[5] ।

७ राजा अनोपसिघ ।

७ फतैसिघ ।

७ मुगढराय ।

इति वंधवगा धणियारी ख्यात वार्ता संपूर्ण ।

++

---

1 राजा रामचन्द्रने एक-एक करोडके चार कोडपसाव दान किये । 2 भाटको । 3 महाराजा गजसिहजीकी कन्या चादजी राजा अमरसिहजीको व्याही थी । 4 यह गढ-वधवसे इरली तरफ गाव रीवामे रहता था । रीवा आज पूर्वमे वाघेलोकी राजधानी है । 5 मर गया ।

# वात सीरोहीरा धणियांरी

आद चहुवांण अनळकुडरी[1] उतपत । वसिस्ठ-रिखीस्वर आवू ऊपर राकस निकदणनू[2] खत्री ४ उपाया—

१ पँवार ।　　　　२ चहुवाण ।

३ सोळंकी ।　　　　४ डाभी ।

चहुवाण घणकरा[3] सारा राव लाखण नाडूळ धणी । तिणरी पीढी आसराव हुवो । तिणरै घरै वाचाछळ[4] देवीजी आया छै । तिणरै पेटरा बेटा ३ हुवा । देवडा कहाणा छै । आवू पवारारी ठाकुराई हुती । तद आवूथी कोस ५ ऊमरणो छै तठै सहर वसतो । पछै वीजडरा बेटा ५ महणसी, आल्हणसी, · † ऐ लोग गूढो कर रह्या था[5] । पछै पवारासू सगाई देणी कीवी[6] । २५ सॉवठी दी[7] । एक भाई ओळ रह्यो[8] । पछै वै जान कर आया[9] । सगळानू डेरा देराया[10] । परणीजणनू जुदा बुलाया । भला रजपूतानू वैरारा वेस पहराया[11] । पछै परणाय सुवण मेलिया[12] । तठै के चँवरिया माही पचीस सिरदार मारिया[13] । नै जानीवासै साथ उतरियो उणनू अमल-पाणिया[14] माहै काई वळाई[15] दी सु वे छकिया तरै कूट-मारिया[16] । ओळ दियो थो उण उठै वासै[17] सिरदार थो तिणनू मारियो । आवू ऊपर चढ दौडियो । आवू हाथ आयो । स१२१६ रा माह वद १ पवारासू गयो ।

---

1 चौहानोकी उत्पत्ति अग्नि-कुण्डसे । 2 वशिष्ठ ऋषिश्वरने आवू पर राक्षसोका नाश करनेके लिये चार क्षत्रियोको उत्पन्न किया । 3 बहुतसे । 4 वाचा-वचन, छल-अभिलाषा इच्छा-पूर्तिका वचन देने वाली देवी । 5 ये लोग छिपकर रह-रहे थे । 6 पीछे पवारोको अपनी पुत्रियाँ देनेका वचन दिया । 7 एक साथ २५ दी । 8 धनकी एवजमे एक भाईको उनकी चाकरीमे रखा । 9 पीछे वे वरात लेकर आये । 10 समस्तको रहनेके लिये जनिवासे दिलवाये । 11 चुनिंदा राजपूतोको स्त्रियोका वेश पहिनाया । 12 फिर उनका पाणिग्रहण कर सौभाग्य-रात्रि मनानेको भेजा । 13 वहा कई विवाह-मडपोमे २५ सरदारोको मार डाला । 14 अफीम-शराब आदिमे । 15 बला । 16 ठोक-पीट कर मार दिया । 17 पीछे ।

---

† श्री रामनारायण दूगड इसी ख्यातके अपने हिंदी अनुवादमे पृ १२१ मे वीजडके छ पुत्रोके नाम जसवत, समरा, लूणा, लूभा, लखा और तेजस्वी लिखते हैं सो ठीक प्रतीत होते है । महणसी, आल्हणसी वीजडके पुत्र नही है ।

पीढी सीरोहीरा धणियारी, समत १७२१ रा माह माहै आढ़ै महेसदास लिख मेली।

समत १४५२ वैसाख वद २, गुरुवार राव सहसमल सोभारै सरणुवारै भाखररी खभ[1] नवो सहर आवूथी कोस १० वसायो। आवूनै सरणुवारो भाखर एक लगती डाक[2] छै। सरणुवारो भाखर एढो[3] क्यु न छै।

पीढियांरी विगत—

१ सालवाहन
२ जैवराव
३ अवराव नै गोगो भाई
४ दळराव
५ सिंघराव
६ राव लाखण[4]
७ वळ
८ सोही
९ महोराव
१० अणहल
११ जिंदराव
१२ आसराव
१३ आल्हण
१४ कीतू[5]
१५ महणसी
१६ पतो
१७ विजड़। अठै तो महणसीरो मडियोडो छै नै केई विजड कीतूरो कहै छै।
१७ लुभो
१८ सळखो
१९ रिणमल
२० सोभो
२१ राव सहसमल[6]
२२ राव लाखो
२३ राव जगमाल
२४ राव अखैराज जगमालरो
२५ राव रायसिंघ अखैराजरो
२५ राव दूदो अखैराजरो
२६ राव उदैसिंघ रायसिंघरो
२६ राव मानसिंघ दूदारो
२६ राव सुरताण

---

1 सोभा और सरणुवा दोनों पहाड़ोंके बीचमें। 2 आवू और सरणुवाके दोनों पहाड़ एकत्र मिले हुए हैं। 3 दुर्गम। 4 लाखणके समयका एक शिलालेख सं० १०३९ का नाडोलमें प्राप्त है। 5 कीतूने जालोर पर अधिकार कर लिया था। सं १२१८ का इसका एक ताम्रपत्र नाडोलमें प्राप्त हुआ है। 6 सहसमलने चन्द्रावतीकी राजधानीको छोड़कर अपने पिताके स्मारक-स्वरूप सिरोही नगर बसाया था।

२७ राव राजसिंघ सुरताणरो　　२८ राव अखैराज राजसिंघरो

देवडो रिणमल सलखारो आक १९—

२० सोभो　　२१ सहसमल, जिण सीरोही वास कियो।

२२ राव लाखो, जिण लाखेळाव तळाव करायो।

२० गजो रिणमलरो, जिणरो परवार—

२१ डूगर, तिणरा सीरोही देस डूगरोत-देवड़ा।

राव लाखारा बेटा आक २२—

२३ राव जगमाल　　२३ हमीर

२३ सकर　　२३ ऊदो

राव जगमाल कना[1] भाई हमीर धरती आध बटाय लियो थो। पछै माहोमाहि लडिया। जगमाल हमीरनू मारियो। राव जगमालरो अखैराज राव सीरोही हुवो, आक २३,२४। राव अखैराज वडो[2] रजपूत हुवो। तिण एक वार जालोररो खान पकडि बदीखाने दियो[3]।

२५ राव रायसिंघ महाराज हुवो छै। घणा दान-पुन्य किया। मेवाडरा धणियासू, जोधपुररा धणियासू वडा उपगार किया। माला आसियानू कोड दी[4], तिण माहे गाव खाण सासण कर दोवी छै[5]। सुकाळ-दुकाळ अरहट ३०० हुवै छै। पता कलहटनू कोड दी[6]। तिण माहे माटासण गुजरातरै पैडै नजीक छै[7]। वड गाव कनै[8]। तिण अरहट ५० हुवै छै। रायसिंघ भीनमाळ पर आयो थो[9]। विहारियारा थाणारो साथ काबो गढोकोट माहे थो[10]। कोट घेरियो हुतो। सु तीर १ माहिले बाह्यो[11]। सु रावरै वगतरी बाह माहे हुय काखमे लागो। राव काळ कियो[12]। दाग काळधरी रावरै चाकरे दियो[13]।

---

1 से। 2 वडा वीर। 3 इसने एक वार जालोरके खान मलिक मजाहिदखाको पकड कर कैद कर लिया था। 4 आसिया शाखाके चारण मालाको करोड-पसाव दिया। 5 उसमे खाण नामक गाव शासनमे दे दिया है। 6 कलहट शाखाके चारण पत्ताको करोड-पसाव दिया। 7 माटासण गाव गुजरातके मार्गके समीप आया हुआ है। 8 वडगावके पास। 9 रायसिंह भीनमाल पर चढ कर आया था। 10 विहारी पठानोके आदमी और कावा गढा, ये कोटके अदर थे। 11 अदर वालोने एक वाण चलाया। 12 राव मर गया। 13 रावके चाकरोने कालदी गावमे उसकी दाहक्रिया की।

सती उठै हुई। राव रायसिंघ राव गांगारी वेटी चांपावाई परणाई हुती।

२५ राव दूदो अखैराजरो। वडो ठाकुर हुवो। रायसिंघ मरते हुकम कियो "माहरो वेटो लोहडो[1] छै। पाच रजपूतां टीको भाई दूदानू देजो। वेटो उदैसिंघ छै, तिणनू दूदो मोटो करसी[2]।" तरै दूदो पाट तो बैठो छै, पिण साहबीरो धणी[3] उदैसिंघनू राखतो नै आपरा वेटा मानसिंघनू नजीक न आवण देतो। राव दूदै अदो वाघेला गावड़ो एक मारियो[4]। तिणरा वडा छद छै, कळहट पातारा कह्या। पछै राव दूदो मुवो। मरते कह्यौ–"म्हारा वेटानू टीको मत दो। टीको रायसिघरा वेटा उदैसिंघनू देजो।" तरै उदैसिंघनू तेडनै कह्यो–"थारी दाय[5] आवे तौ म्हारा वेटा मानसिंघनू लोहियाणौ गाव देजो।" पछै दूदो मुवो। पाचे रजपूते परधाने उदेसिंघनू पाट थापियो[6]। मानसिंघनू लोहियाणो दियो। वरस एक तो रूड़ो-भलो नीसरियो[7], नै पछै उदैसिंघ दूसण चीतारियो[8]–"मोनू मानसिंघ तुको १ वाह्यो थो[9]।" तरै रजपूते तो वरजियो[10]। इणरै बाप तोसू निपट भली कीवी छै[11]। आपरा वेटानू टीको न दिरायो नै थानू भातीजनू दिरायो। कह्यो–"मानसिंघ थारो हुकमी-चाकर[12] छै।" पिण उदैसिंघ कहै–"लोहियाणाथी परो काढीस[13]।" पछै फोज मेल परो काढियो[14]। राणांरै मेवाड गयो[15]। मानसिंघनू गाव १८ वरकाणो वीझेवासू पटै दियो[16]। पछै मानसिंघ दोय-च्यार सिकार माहे मुजरो कियो[17], सु राणो मया करै छै[18]। तितरै वरस १ राव उदैसिंघनू सीयळ नीसरी न थी,

---

1 मेरा पुत्र छोटा है। 2 उसको दूदा पाल-पोप कर वडा करेगा। 3 राज्यका स्वामी। 4 राव दूदाने अदा वाघेलाको मार दिया और उसका गाव लूट लिया। 5 तेरी इच्छा हो तो। 6 पाच प्रधान राजपूतोने मिल कर उदयसिंवको गद्दी विठाया। 7 एक वर्ष तो ठीक निकल गया। 8 पीछे उदयसिंहको मानसिंहका एक दूपण याद आया। 9 मानसिंहने मुझे एक उलहना दिया था। 10 मना किया। 11 इसके पिताने तेरा वहुत उपकार किया है। 12 आज्ञाकारी सेवक। 13 निकाल दूगा। 14 निकाल दिया। 15 राना उदयसिंहके पास मेवाड चला गया। 16 रानाने मानसिंहको वरकानेका ठिकाना वीझेवाके साथ १८ गावोका पट्टा करके दे दिया। 17 मानसिंहने दो-चार शिकारोंमे साथ रह कर अभिवादन किया अर्थात् अपने कौशल और सेवाका परिचय दिया। 18 अत राना वडी कृपा रखता है।

सु सीयळ नीसरी थी[1]। आ खबर मानसिंघ दूदावतनू सीरोहीथा को एक[2] आयो हुतो तिण कही हुती। राणो सिकार चढियो छै,कुभळमेर दिसी[3]।नै राणानू आ खबर न छै, नै मानसिंघनू को एक सीरोहीसू वळै[4] आयो तिण कह्यो–'उदैसिंघ दबाव माहे छै[5]।' पछै राव उदैसिंघ सीयळसू मुवो[6]। तरै रजपूते दीठो[7], इणरै तो बेटो को न छै। मानसिंघ दूदा-वत राणा कना छै। राणो आ खबर सुणनै उठै मानसिंघनू मागनै कुभळमेरसू आघो-हीज आवै[8] तो आज देवडारा घरसू आबू जाय। तरै पाच ठाकुरे[9] रावनू मुवो पोहर २ किणहीनू सुणायो नही नै साहणी जैमल निपट वडा आदमी हुतो। इतबारी लायक[10], तिणनू मानसिंघ दिसा[11] कागळ लिख सारी वात कहि–समझायनै चलायो। नै पाछै रावनू दाग दियो[12]। साहणी जैमल सारी रात खडि[13] दिन पोहर एक चढता पहैली कुभळमेर मानसिंघरै डेरै आयो। चीबो[14] सावतसी थो, तिणनू कान माहे वात सारी समझायनै कही। तरै कह्यो–"मानसिंघ राणा कनै छै। दरबार कुभळमेर जुडियो छै[15],तठै गयो। मानसिंघ आवतो दीठो जाणियो[16]। जु जैमळ अठै आयो सु उठै कुसळ नही।" मानसिंह मिस कर ऊठियो। आपरै साथ माहे आयो[17]। सामा जैमलसू मिळियो। जैमल वात थी सु निजरामाहे[18] समझाई। भेळा हुय डेरै आयनै चीबा सावतसीनू सारी वात समझाय कह्यो–"म्हे नासा छा[19]। राणारा आदमी आवै तिणानू कहिजो, मानसिंघ सूअर २ हेरिया[20] छै, तठै गयो छै।" नै मानसिंघनू लेनै उडाया असवार ५ सू[21], सु रात पोहर एक जाता सीरोही नजीक

---

1 उदयसिंहको पहले चेचक नही निकलीथी सो अब निकल आई। 2 सिरोहीसे कोई आया था उसने कहा था। 3 की ओर। 4 पुन। 5 उदयसिंह बीमारीमे दबता जा रहा है। 6 फिर राव उदयसिंह तो चेचकसे मर गया। 7 तब सरदारोने विचार किया। 8 आगे चलाही आवे। 9 तब पाच प्रधान ठाकुरोने रावके मर जानेकी बात दो पहर तक किसीको नही सुनाई। 10 साहनी जयमल जो बडा चतुर, योग्य और विश्वासपात्र था। 11 को। 12 दाह-सस्कार किया। 13 चलकर। 14 चौहान क्षत्रियोकी एक जाति। 15 जुडा हुआ है। 16 मानसिंहने जयमलको आता देखा जाना। 17 अपने मनुष्योके पास आया। 18 सकेतमे। 19 हम भागते हैं। 20 तलाश किये है। 21 और मानसिंहको ले कर जयमल ५ सवारोसे उडा।

आया । वाग माहे आय उतरिया । साहणी जैमल रजपूतानू खबर दी । रजपूत सारा राते हीज मानसिंघ कनै आया, मिळिया । वासै[1] राणै डेरै खवर कराई—मानसिंघ कठै ? तरै चीवै सावतसी कह्यो—"आहेडिए[2] सूअर दोय हेरिया था तठै गयो, हमार आवै छै ।" सु यू करता आथरण हुवो[3] । तरै राणै वळै मांनसिंघनू याद कियो । तरै कोस १०एक ऊपर मांनसिंघ नाठो जातो[4] मिळियो थो सो उणे कह्यो—"मानसिंघ तो दूपहर दिन चढियो थो तरै म्हानू सीरोहीनू नाठो जातो असवार ५ सू मिळियो हुतो," तरै राणै कह्यो—"कासू जाणीजै[5] ?" तरै किणहीक कह्यो[6]—"सीरोहीथा आदमी एक म्हारै आयो तिण कह्यो—"राव उदैसिघनू सीयळ नीसरी छै नै गाढो[7] दुखी छै ।" तरै राणै कह्यो—"जाणीजै छै के उदैसिंघ मुवो[8] ।" औरै पिण कह्यो—"आ वात मिळती दीसै छै ।" तरै राणै कह्यो—"मानसिंघरै डेरै रजपूत छै तिणानू तेड आवो[10] ।" तरै देवड़ो जगमाल वडेरो रजपूत हुंतो मु रगणारी हजूर आयो[11], तरै जगमालनू राणै कह्यो—"यू मानसिंघ काय नाठो, म्हे कासू करता था[12] ?" तरै जगमाल कह्यो—"मु तो वात मानसिंघ जाणै ।" तरै राणै जगमालसू कहाव कियो[13]—"परगना ४ सीरोहीरा म्हानू लिख दो ।" तरा जगमाल दीठो[14]—"हू उजर करू, राणो वासै साथ चाढै, वे कठै ही उतरिया होय तो कोई कवाइत[15] होय ।" तरै जगमाल घणा विनासू[16] बोलियो—"मानसिघ दीवाणरो चाकर छै, म्हानू किसो उजर छै । जांणो[17] सु धरती दीवाण ले, जाणो मु मानसिंघनू दे ।" तरै परगना ४ रो कागळ राणै लिखायो । तितरै[18] वात करता रात घणी गई, कह्यो—"सवारे मतो वताय देसा[19] ।" दीवाण ही सोय रह्या । मानसिंघरो चाकर

---

1 पीछे । 2 शिकारियोने । 3 ऐसा करते-करते सूर्यास्त हो गया । 4 भागता जाता । 5 इससे क्या समझना चाहिये ? 6 तव किसीने कहा । 7 खूब । 8 ज्ञात होता है कि उदयसिंह मर गया । 9 औरोने भी कहा । 10 वुला लाओ । 11 दरवारमे आया, मेवामे आया । 12 मानसिंह इस प्रकार क्यो भाग गया, हम उसके विरुद्ध कुछ करतो नही रहे थे ? 13 तव रानाने जगमालसे कहा । 14 तव जगमालने विचार किया । 15 कोई अनर्थ हो जाय । 16 विनय । 17 चाहे सो । 18 तव, इतनेमे । 19 प्रात काल हस्ताक्षर करवा देंगे ।

देवड़ो जगमाल सोइ रह्यो । सवारे हथियार बांध तयार हुय सीख मागण जाता हुता, तितरै राणारा पिण आदमी सामा तेडा आया[1] । जगमालनू राणै कह्यो–"राते परगना ४ देणा किया छै, तिण कागळमे मतो घातदो[2], तरै देवडे जगमाल कह्यो–"माहरा दिया परगना न आवै[3] । मानसिघ उठै छै, धरतीरा सारा रजपूत उठै छै[4] ।" इण जवाब मता दिसा यू कह्यो[5]–तरै राणै कह्यो–"रजपूता भलो आपरो दाव कियो[6] ।" तरै रजपूतासू राणै कह्यो–"म्हे चार परगना मागा छा, तिणनू था साथै थाणानृ विदा करा छा[7] । थे थाणो वैसाण नै आवा जाज्यो[8] ।" तरै देवडे जगमाल कह्यो–'सीरोहीरा धणी रावळा[9] चाकर छै, सगा छै[10] । अठाताऊ[11] दीवाण वात कहणनू[12] करै? अेक म्हा साथै[13] प्रोहित भलो आदमी मेलोजै[14] । राव जवाब करसी सु दीवाणसू आय मालम[15] करसी । तरै दीवाण ही वात कबूल करी[16] । इणा साथै प्रोहित मेलियो[17] । आगै रजपूते सीरोहीरा मिळनै राव मानसिघनू टीको दियो[18] । नै रावरो रजपूत पिण राणारा प्रोहितनू[19] ले सीरोही आयो । प्रोहितरो घणो आदर-भाव कियो । हाथी १, घोडा ४ दीवाणनू प्रोहित साथै आपरा आदमी दे पेसकस मेलिया[20] । कागद माहे घणी मनुहार लिखी नै कह्यो— 'च्यार परगनारी कासू वात छै[21] ? सीरोही सारो दीवाणरी छै । हू दोवाणरो रजपूत छू ।" तरै दीवाण पिण राजी हुवा ।

२७ राव मानसिघ दूदारो । वडो दूठ[22] ठाकुर हुवो । सीरोही

---

1 इतनेमे रानाके मनुष्य भी बुलानेके लिए सामने आ गये । 2 उस पत्रमे हस्ताक्षर कर दो । 3 मेरे देनेसे परगने आपको नही मिल सकते । 4 मानसिंह उधर है, देशके सब सरदार वहा है । 5 इसने हस्ताक्षर करनेके सम्बन्धमे यह उत्तर दिया । 6 राजपूतोने अपना अच्छा दाव खेला । 7 जिसके लिए तुम्हारे साथ गारद भेज रहा हूँ । 8 तुम वहा पर थाना लगवा कर आगे जाना । 9 आपके । 10 सम्बन्धी हैं । 11 यहा तक । 12 किसलिये 13 मेरे साथ । 14 भेजिये । 15 विदित करा देगा । 16 स्वीकार कर दी । 17 भेज दिया । 18 राजतिलक किया । 19 को । 20 रावने पुरोहितके साथ हाथी १, घोडे ४ और अपने कुछ आदमी पेशकशीमे भेजे । 21 चार परगनोकी कौनसी बात है ? 22 पराक्रमी, जबरदस्त ।

घणो तपियो[1]। पातसाही फोजासू घणी वेढ कीवी[2]। सीरोही पाखती निपट वडा मेवास कोळियारा छै[3]। आज पैहली किणही सिरोहीरै धणी कदै[4] अै[5] मेवास अमल कियो न थो। सु मानसिंघ एकण दिन फोज वावीसा[6] ठोडै ऊपर विदा कीवी[7]। तिण फोजा वावीस ही ठोडै गाव भेळ उणांनू परा काढनै उवै ठोडा लीवी[8]। रावरा थाणा मेवासे वैठा। मास ६ रह्या। पछै कोळीसारा रावरै पगे आय लागा। राव हुकम कियो सु हुकम माथै चढाय लियो। पछै राव कोळियांनू खुसी हुय धरती पाछी दी। आपरा थाणा बुलाइ लिया[9]।

राव रायसिघरी वैर[10]--राव उदयसिघरो मा--चापावाई। राव गागारी वेटी सु निपट दाढीक-आदमी[11]। सु उदैसिंघरी वैरनू आधांन[12] छै। मु चापा वाई केहवै--"सवारै माहरै पोतरो हुसी[13]। मानसिंघ कुण आदमी जिको टीको भोगवै छै?" पछै मानसिंघ चापावाईनै उदैसिघरी वैर गरभवतीनू ऊजळै लोहडै मारी[14]।

मानसिघ, सुरताणरी वसीरी-वरकसोरै लिया पंचाइण पंवार परधान हुतो तिणनू विस दियो[15]। तिणरो भतीज कलो पंवार थो सु रावरै खवास हुतो[16]। सु राव आवू चढिया था उठै कलानू क्यू धकोसो दिरायो[17]। पछै आथणरा[18] राव आरोगता था तरै कले पॅवार रावनू कटारी वाही[19], नै कुसळै गयो[20]। राव कटारी लागा पछै पोहरेक जीवियो[21]। तरै रजपूते पूछियो--"रावळो तो ओ सूळ छै[22]। रावळै वेटो न छै। टीकारो किणनै हुकम छै?" तरै राव

---

1 सीरोही पर वहुत समय तक कुशलतासे शासन किया। 2 बादशाही फौजोमे अनेक लडाइया लडी। 3 सिरोहीके पास कोलियोके वहुत वडे मेवासे थे (मेवासा = लुटेरोके रहनेका स्थान)। 4 कभी। 5 इन। 6 वाईस। 7 भेजी। 8 उन फौजोने वाईस ही स्थानोके निकटके गावोसे उनको निकाल उन गावो पर अधिकार कर लिया। 9 अपने थानोको वापिस वुला लिया। 10 स्त्री, पत्नी। 11 वुद्धिमान और दृढता वाली स्त्री। 12 गर्भ। 13 कल मेरे पौत्र होगा। 14 फिर मानसिहने चम्पावाई और उदयसिहकी गर्भवती पत्नीको तेज धार वाले शस्त्रसे मार डाला। 15 भाग्यके पुत्र सुरतानकी कर-मुक्त प्रजामे वलात् कर प्राप्त करनेके कारण पँवार पचायणको मानसिहने विष देकर मरवा डाला। 16 प्रीतिपात्र सेवक। 17 वहाँ कलाको कुछ धक्कासा दिया। 18 सध्याके समय। 19 कटारी मारी। 20 और कुशलपूर्वक चला गया। 21 एक पहर तक जीवित रहा। 22 आपका तो यह हाल है।

मानसिंघ कह्यो–"टीको सुरताण भाणरानू[1] देजो ।" पछै सारै रजपूते नै देवडे विजै हरराजोत मिळनै राव सुरताणनू टीको दियो । सुरताण राव हुवो ।

राव सुरताण भाणरो । तिणरै पीढियारी वात—

राव लाखो आक २२ ।

२३ ऊदो लाखारो । टीकै बैठो नही

२४ रणधीर ।

२५ भाण रिणधीररो ।

२५ सूजो रिणधीररो । देवडे विजै मरायो ।

२५ प्रताप रिणधीररो ।

२६ राव सुरताण[2] ।

२७ नाहरखान[3] ।

२७ चदो ।

२७ जैसिंघदे ।

२७ वाघ ।

२७ करन ।

२६ साईदास । मोटै राजा मारियो[4] ।

२७ रायसिघ ।

२७ राम ।

२८ भोपत ।

## वात राव सुरतांणरी

राव मानसिघ मुवो तरै राव सुरताणनै सारै रजपूते मिळ टीके बैसाणियो । देवडा विजारो घणो कारण छै[6] । विजोराव सुरताण

1 राज्य तिलक भाणके पुत्र सुरतानको करना । 2 राव लाखाका पुत्र । 3 खानान्तनाम सिरोही और उत्तर गुजरात आदिमे पाये जाते हैं । 4 जोधपुरके मोटा-राजा उदयसिंहने साईदासको मारा था । 5 गद्दी पर बैठा दिया, राज्यतिलक कर दिया । ( सुरतान १२ वर्षकी अवस्थामे वि स १६२८मे गद्दी बैठा ) । 6 देवडा विजयका बहुत मान और प्रभाव है ।

कनै धणी-धोरी छै[1] । राव मानसिघरै वैर वाहडमेरी थी[2], तिणरै पेट आधान थो[3] । राव मानो मुवो तद पछै वेटो जायो[4] । नै राव सुरताण विजो कहै छै त्यू करै छै। पिण देवडो सूजो रिणधीरोत-रावरै काको, तिको भला २ रजपूत, भला २ घोडा राखै छै, सु विजानू सुहावै नही । विजो जाणै छै मानारो वेटो तेडाऊ[5] । सुरताणनै परो काढू[6]। तो सूजो मारियो चाहीजै[7] । तरै आपरानू कह्यो[8]–"सूजो मारो[9]" तरै सिगळै[10] कह्यो–"आ वात मत करो । सीरोहीरो धणी सुरताण हुय निवडियो[11] । थे रावरो काको मा मारो[12] ।" पिण विजो किणरो कह्यो मानै[13] ? देवडा रावत सेखावतनू कह्यो। रावत वालीसा जगमालरै डेरे सूजानू मरायो। देवडो गोयंददास देवीदासरो डेरा कनारे थो[14] । विजो सूजारै डेरे घोडा असवाव लूटणनू आयो, तरै गोयददासही वाज मुवो[15] । राव मानारो वेटो वाहमेर थो, तिणनू देवड़े विजै तेडायो थो[16], सु निजीक आयो । विजो सामी चढियो[17] नै राव सुरताणनू सैहर-वंद करी काळ धरी गयो[18] नै आपरा रजपूत कनै राख गयो। कह गयो–"सुरताणनू इण ओरा माहेथी वारै नीसरण मत देजो[19] । पछै राव जाणियो–विजो पाछो आयो हुवो मोनू मारसी[20] । तरै एक देवडो डूगरोत भलो रजपूत थो, एक चीबो हुतो । तरै उण डूगरोतनू समझायो । कह्यो–"तू मोनू काढि, तोनू ढबावणवाळो हूंई छू[21] ।" उण कह्यो—"राव ! जाणू छू, सको सु सहु करो[22] ।" कह्यो–

1 राव सुरतानके पास विजय कर्त्ता-वर्त्ता है । 2 राव मानकी पत्नी वाहडमेरी थी । ( राव मानसिहकी पत्नी वाडमेरके रावकी कन्याथी ) । 3 उसके गर्भ था । 4 राव मानके मरनेके वाद उसके पुत्र हुआ । 5 मानाके पुत्रको वुला लू । 6 सुरतानको निकाल दू । 7 किन्तु इसके लिये सूजाको मरवा देना चाहिये । 8 तव अपने वालो को (अपने मनुष्योको) कहा । 9 सूजाको मार दो । 10 तव सवने कहा । 11 सिरोहीका स्वामी सुरतान हो चुका । 12 आप राव सुरतानके चचा सूजाको मत मारो । 13 परन्तु विजय किसकी सुने ? 14 देवीदासका पुत्र गोविंददास उस समय सूजाके डेरेके पास था । 15 तव गोविंददास भी लडकर मर गया । 16 वुलवाया था । 17 स्वागत करनेके लिये सामने गया । 18 और राव सुरतानका सैर (घूमना-फिरना) वदकर कालद्री चला गया । 19 और यह कह गया कि सुरतानको इस कोठरीसे वाहर नही निकलने देना । 20 रावने यह जान लिया कि विजय लौट कर आते ही मुझे मार देगा । 21 तू मुझको वाहर निकाल, तुझको शरण देकर रखने वाला मैं ही हूँ । 22 उसने कहा, राव! यह मैं जानता हूँ, आप जो कर सको वह सव करो।

"मेवाड, जोधपुर हू वसीस तो पिण रु० २००००) रो पटो मोनू कोकोई देणोइज करसी[1]। उणसू सील-कवल किया[2]। वीचमे महादेवजी दिया[3]। तरै सिकाररो मिस कर नीसरिया[4]। चीवासू भेद भागो नही[5], तरै कोसे २ गया चीवो कहै–"हू इण वातमे जाणू नही, जाण न दा[6]।" तरै डूगरोत थो, तिण कह्यो चीवानू–"तू उरो ग्राव, हू तोनू मारीस[7]।" तरै चीवो झख मार रह्यो। राव सुरताण नासनै रामसेण गयो[8]।

## वीचली वात छै[9]

देवडे विजै सूजानै मारनै सूजारी वसी ऊपर साथ मेलियो[10]। उठै मालो सूजावत[11] मरियो। वसी सारी लूटी। प्रथीराज नै स्यामदासरी मा इणानू द्रैहड १ माहे ऊपर पला नांखनै रही[12]। वे परा गया तरै द्रैहड माहेथी रातरा नीसरनै ग्रावूरी गोढै वार गया[13]। राव सुरताण रामसेण ग्रायो। तरै ग्रेही सूजारा वेटा इणारा गाडा रामसेण ले ग्राया[14]। देवडो विजो राव मांनारा बेटा साम्हो गयो थो, तरै उणै विजारै खोळै डावडो ग्राण मेलियो[15]। डावडानू कांई बलाइ हुई सु जीव नीसर गयो[16]। विजो पाछो ग्रायो, नै देवडा समरानू कह्यो–"मोनू टीको दो।" घणी ही कही पिण इणै कह्यो–"राव लाखारै पेटरा तो वीस जणा छै[17]। जठा सूधो एक डावडो

---

1 रावने कहा, मेवाड या जोधपुर जहा भी मै जाकर रहूँगा, इनमेसे कोई न कोई मुझे रु० २००००) के पट्टेकी जागीरी दे ही देंगे। 2 उससे शपथकी ग्रौर वचन दिया। 3 कोई प्रतिज्ञा-भग नही करे ग्रत वीचमे महादेवजीको रख कर प्रतिज्ञाको दृढ किया। 4 तव शिकारका वहाना करके वहासे निकल गये। 5 चीवाको इस भेदका पता नही लगा। 6 जाने नही दूगा। 7 मैं तुझको मार दूगा। 8 राव सुरतान भाग कर रामसीन चला गया। 9 वीचका छूटा हुग्रा प्रसग है। 10 सूजाकी प्रजाके ऊपर सेना भेजी। 11 सूजाका पुत्र। 12 पृथ्वीराज ग्रौर श्यामदासकी माता, इन दोनो बच्चोको एक खड्डेमे उन पर कपडा डालकर छिपकर रही। 13 ग्रावूकी सीमासे वाहर चले गये। 14 तव यहही सूजाके इन पुत्रोके गाडोको रामसीन ले ग्राया। 15 तव उसने ग्रपने वच्चेको लाकर विजयकी गोदमे रख दिया। 16 वच्चे को न जाने क्या वला हुई कि उसके प्राण निकल गये। 17 राव लाखा के वशमे २० व्यक्ति है।

वरस १रो हुवै तठा सूधो थारी कुण मजाल, तू टीको लै[1] ?" इणे-उणे विरस हुवो[2]। अै रीसाय परा गया[3]। विजो मास चार हुवा सीरोही भोगवै छै[4]। आ वात रांणै साभळी, तरै राव कलो मेहाजलोतनू[5]— दीवांणरो भांणेज थो, इणनू टीको दे, साथै फौज दे सीरोहीनू विदा कियो। अै सीरोही आया। विजो नीसर ईडर गयो। कलो सीरोही धणी हुवो। राव कलो सीरोही साहिवीरो धणी। मदार चीबा खीवा भारमलोत ऊपर छै[6]। देवड़ो सूरो, हरराज पिण चाकर छै। पिण दिलगीर तो गाढा छै[7]। नै सुरताण पिण आण कलानू जुहार कियो छै[8]। गाव केइक पटै दिया छै तठै रहै छै। करैक[9] चाकरी पिण करै छै। एकण दिन राव कलो दरवारथी[10] ऊठियो छै। देवडो समरो, सूरो हरराज दुलीचे वैठा छै, तरै त्रीबै पाता फरासनू कह्यो— "दुलीचो उरो ल्याव[11]।" फरास आय देखै तो अै ठाकुर बैठा छै। तरै पाछो गयो। चीबे पातै पूछियो—"दुलीचो लायो ?" तरै फरास कह्यो—"सूरोजी,समरोजी, हरराज बैठा छै।" तरै चोबै कह्यो—"थारा वाप लागै छै[12]? दुलीचो उरो ल्याव।" तरै फरास वळै[13] आयो, तरै इणे दीठो[14]। ओ फिर-फिर जाय। तरै इणे कह्यो—"दुलीचो चीवो पातो मगावै छै ?" तरै इण कह्यो—"राज[15] सारीही बात समझो छो।" तरै अै परा ऊठिया,कह्यो—"परमेस्वर कियो तो कलारी जाजम नही वैसां[16]।" अै रीसायनै घरै गया[17]। सुरतांणसू इणे वात कराई— तू आव, म्हा भेळो होय[18]।" तरै राव नासनै समरा, सूरारा गाडा

---

1 जहा तक इस वशमे एक भी वच्चा एक वर्षकी आयुका मौजूद है, तेरी क्या मजाल कि तू राज्यका अधिकारी वने? 2 इनके और उनके परस्पर विरोध हुआ। 3 ये रुष्ट हो कर चले गये। 4 विजय चार माससे सिरोहीका राज्य कर रहा है। 5 मेहाजलका पुत्र। 6 सव कामका आधार भारमलका पुत्र चीवा खीवाके ऊपर है। 7 परतु मनमे वहुत नाराज है। 8 सुरतानने भी आकर कलाको (राज्याधिकारी होनेका) प्रणाम किया। 9 कभी-कभी। 10 से। 11 कालीन उठाकर ले आव। 12 क्या ये तेरे वाप लगते है ? 13 फिर। 14 तव इन्होंने देखा। 15 श्रीमान् आप। 16 परमेश्वरने चाहा तो अव हम कलाकी जाजम पर (कलाके दरवारमे) नही वैठेंगे। 17 ये रुष्ट होकर घर चले गये। 18 सुरतानसे इन्होंने कहलवाया कि तू आकर हमारे शामिल हो।

था तठै आयो[1]। इणे भेळा हुय टीको राव सुरताणरै काढियो[2]। देवडो विजो ईडर चाकरी करै थो सु विजानू राव सुरताण तेडायो[3]। विजो रोह, सरोतरे होय आय उतरियो[4]। तरै आ खबर राव कलैनू नै चीबा पातैनू पोहती[5]। विजो आवै छै। तरै कलै देवडे रावत हामावतनू असवार ५०० देनै घाटारै मूडै विजै सामा मेलियो[6]। रावत हामावत गाव माळ आय ऊतरियो नै विजो गाव ब्रहमाण आय ऊतरियो[7]। ब्रहमाणथी कोस १ माथै वेढ[8] हुई। असवार १५० विजै कनै था। रावत कनै तो साथ घणो थो, पिण विजो जीतो[9]। आदमी ४० कलारा काम आया। आदमी ६० घावै-पडिया[10]। रावत हामावत कलारी फोजमे सिरदार तिको पूरे-घावै पडियो[11]। आदमी १३ विजारा काम आया। विजो वेढ जीतनै रामसेण राव सुरताण भेळो हुवो[12]। विजो आवता सामा सुरताणरो घणो बळ वधियो[13]। विजो राह-वेधी[14] रजपूत थो। सु रावजीनू कह्यो–"मिलकखानजी जाळोररो धणी छै। इणनू आपणी भीर[15] करो।" तरै मिलकखान विचै आदमी फेरियो[16]। कह्यो–"म्हे रुपिया लाख १ थानू दा छा[17]। थे माहरो मदत आवो।" तरै मिलकखान कह्यो–"लाख रुपिया वासतै भाईबध मराया न जाय। सीरोहीरा परगना ४ मोनू दो तो थाहरी मदत आऊ। परगनारी विगत—१ स्याणो, १ वडगाव, १ लोहियाणो,

---

1 तब राव सुरताण जहाँ समरा और सूराके गाडे इसकी प्रतीक्षामे खडे थे, दौड कर वहा आया। 2 इन्होने सम्मिलित होकर राव सुरतानको राज्य-तिलक कर दिया। (यह राज्यतिलक रामसीनमे हुआ था)। 3 देवडा विजय ईडरमे चाकरी करता था उसे सुरतानने वुला लिया। 4 विजय सिरोत्रा गाव होता हुआ रोहुआ गावमे आ पहुँचा। 5 तब यह ममाचार राव कला और चीवा पातेको पहुँचा। 6 तब देवडा कलाने हामाके पुत्र रावतको ५०० सवारोके साथ गिरवरकी घाटीके द्वार पर विजयको रोकनेके लिए भेजा। 7 हामाका पुत्र रावत माल गावमे ठहरा और विजय वरमाण गावमे आकर ठहरा। 8 लडाई। 9 परन्तु विजयकी जीत हुई। 10 आहत हुए। 11 सम्पूर्ण आहत होकर गिर गया। 12 राव सुरतानके शामिल हुआ। 13 विजयके आ जानेसे सुरतानका वल वहुत वढ गया। 14 दूरदर्शी। 15 इसको अपना सहायक वनाओ। 16 तव इसके लिए मिलकखाके वीच आदमीका आना-जाना किया गया। 17 हम एक लाख रुपये तुमको देते हैं।

१ डोडियाळ[1] । किणही कह्यो-"औ परगना दीजै । किणही कह्यो— औ परगना न दीजै ।" तरै विजै कह्यो-"औ तो परगना माथै सटै मागै छै[2], नचीत दो[3] ।" तरै परगना ४ मिलकखानजीनू दिया । तरै असवार १५०० खानजी लेनै राव सुरताण, विजै भेळो हुवो[4] । राव कलो सीरोहीथा[5] चलायनै आदमी हजार ४००० था[6] सामा काळधरी आय उतरियो । मोरचा मडिया । नाळा माडी[7] । अठै इण काळधरीरा डेरा निपट गाढा सभाया[8] । नै राव सुरताण कनै आदमी हजार तीन ३००० भेळा हुवा छै । राव सुरताणनू खबर हुई-"काळधरी कले इण भात सभी छै । काळधरी जाइजै तो धको खाइजै[9] । तरै राव सुरताणरै समरो, सूरो, विजो देवडो वडा राह-वेधी[10] रजपूत था, त्यां कह्यो[11]-"आपरौ काळधरीथा कासू काम छै[12] ? आपै तो पाधरा सीरोहीनू चलावस्या[13] । कलारै लडियो जोइजसी तो आय लडसी[14] । तरै इणा तीन फोज करी नै सीरोहीनू चलाया । काळधरीसू कोस १ नीसरिया[15] तठै राव कलो आडो आय लडियो[16] । वेढ हुई[17] । वेढ राव सुरताण जीती[18] । कलै हारी[19] । इण वेढ माहे विहारियै[20] निपट घणो वळ कियो । राव सुरताणरी तरफ आदमी वीस कांम आया । त्या मांहे[21] मुदायत[22] देवडो सूरो नरसिंघोत समरारो भाई काम आयो । राव कलारो अतरो साथ कांम आयो[23] ।

---

1 विहारी-पठानोका आधिपत्य हट कर जब जालोर जोधपुरके अधिकारमे आ गया, तब सिरोहीके ये चारो परगने भी स्वत मारवाड-राज्यमे मिल गये थे। आज समस्त राजस्थान भारतका एक प्रान्त बन जाने पर मारवाड और जैसलमेर राज्यके साथ सिरोही राज्य भी राजस्थानके जोधपुर-डिवीजनका एक अगमात्र रह गया है। 2 ये परगनेतो वह सिरके बदलेमे मागता है। 3 निश्चिन्त होकर दें। 4 सम्मिलित हुआ। 5 सिरोही मे। 6 चार हजार सहित। 7 मोरचे पर तोपें रखी गईं। 8 इधर इसने कालद्रीके मोरचेको अत्यन्त दृढ रखा। 9 कालद्री चले जायँ तो हानि उठाना पडे। 10 दुरदर्शी, युद्धानुभवी, अनुभवी। 11 उन्होने कहा। 12 अपनेको कालद्रीसे क्या काम है ? 13 अपन तो सीधे सिरोहीकी ओर चलावेंगे। 12 कलाको लडनेकी आवश्यकता है तो वहा आकर लडेगा। 15 निकल गये। 16 जहा पर राव कला आडा आकर लडा। 17 लडाई हुई। 18 राव सुरतानने लडाई जीतली। 19 कलैकी हार हुई। 20 विहारी पठानोने। 21 उनमे। 22 मुख्य। 23 राव कलाके इतने मनुष्य काम आये।

१ चीबो पतो ।

१ सीसोदियो मुकददास ।

१ सीसोदियो स्यामदास ।

१ सीसोदियो दलपत ।

४ कांम आया । राव सुरताण वेढ जीती । कलो नास गयो[1] । सुरताण खेत सोधियो[2] । पछै राव सुरताण सीरोही आय बैठो । राव कलारा माणस[3] सीरोही था । राव सुरताण सेझवाळै बैसाण, राव कलो थो तठै पोहचता किया[4] । राव सुरताण सीरोही धणी हुवो । सीरोही मुदो देवडा विजै माथै छै[5] । पछै विजो दिन-दिन जोर चढतो गयो छै । सुरताण नै विजै गाढो विरस छै[6], पिण राव पूज सकै नही[7] । तिण टाणै राव सुरताण बाहडमेरी परणियो, तिका वहू सीरोही आई[8] । बहू बाहडमेरी ठाकुराईरो नै विजारो घाट[9] देखनै रावनू कह्यो–"ओ ठाकुराईरो किसो सूल[10] ? धणी थे कना विजो धणी[11]?" तरै राव सुरताण कह्यो–"धरती माहे रजपूत नही, विजासो बलाय सामा माडै[12] । तरै बाहडमेरी कह्यो–"पेट भरस्यो तो धरती माहे रजपूत घणाई छै[13] ।" तरै राव कह्यो–"थे दस माणस तेडावो[14] ।" तरे बाहडमेरी आपरा पीहरसू आदमी २० तेडाया[15] सु आदमी २० वीस निपट प्रबळ आया । आदमी रावरा पासवान[16] हुवा । रावरी दछा रूडी दीठी[17], तरै केई धरतीरा भला रजपूत पिण

---

1 कला भाग गया। 2 सुरतानने रणक्षेत्रका निरीक्षण किया। 3 अत पुर, जनाना। 4 राव सुरतानने उनको पालकीमे विठाकर जहा राव कलाथा वहा पहुँचा दिया। 5 विजय सिरोहीका सर्वेसर्वा वना हुआहै। 6 सुरतान और विजयके आपसमे खूव विरोध है। 7 किन्तु रावका वश नही चलता। 8 उस समय राव सुरतानने (वाहडमेरके जागीरदारकी कन्या) वाहडमेरीसे विवाह किया। वह वधू सिरोही आई। 9 ढग। 10 जागीरदार होनेका और जागीरीका यह कैसा ढग ? 11 जागीरीके स्वामी आप हैं अथवा उसका स्वामी विजय है? 12 पृथ्वी पर राजपूत नही जो विजय जैसी वलासे सामना करे। 13 उदरपूर्ति कर दोगे तो पृथ्वी पर राजपूत वहुत है। 14 तुम दस मनुष्योको वुला लो। 15 तव वाहडमेरीने अपने नैहरसे वीस आदमी वुलवाये। 16 वाहडमेरसे आये हुए आदमी रावके अगरक्षक वने। 17 रावकी दशा अच्छी देखी।

राव कनै आय रहण लागा । विजे नै राव माथा पडिया लीजै छै[1] । तिण समै वीजारा भाई २ लूणो, मानो वडा रजपूत था सु रावथी जुदा विजाथी फाटनै आय मिळिया[2] । रावरो चेळो दिन-दिन भारी हुतो गयो[3] । एक वार सीरोही माहेसू देवडा विजानू परो काढियो[4] । तरै विजो आपरी वसीरै गाव गयो छै[5] । तिण टाणै[6] महाराजा रायसिंघजी वीकानेररा सोरठनू जावता सु सीरोही निजीक आया[7] । तरै राव सुरताण सामो जाय मिळियो । रावरो राजा घणो आदर कियो[8] । पछै देवडो विजोही घणो साथ लेनै महाराज रायसिघजीसू आय मिळियो । घणोही लालच दिखायो, पिण राजा विजानू कबूल न कियो[9] । राव सुरताणसू वात कीवी । आधी धरती पातसाहरै कीधी । आधी धरती रावरी कीधी, नै विजो काढणरी कवूल राखी[10]। पछै महाराज रायसिंघ विजानू परो काढियो । आधी धरती पातसाहरै कीवी[11] । तिण माहे राव मदनो पातावत असवार ५०० दे वाव कन्है राखियो नै आप सोरठ गया[12] । तिको आधो वंट पातसाहरै कियो, तरै राजा रायसिघ दरगाहनू लिखियो कियो—"जु राव सुरताण सीरोहीरो धणी, तिणनू इण भात ग्रासिया[13] विजै दवायो हुतो सु राव

1 'माथापडिया लीजै छै' मुहावरा है—यहा पूरे वाक्यका अर्थ है—विजय और राव सुरतानके परस्पर शत्रुता यहा तक वढ गई कि एक-दूसरे का सिर काट लेनेकी ताकमे लगे रहते है। 2 उस समय विजयके दो भाई लूणा और माना, जो वडे वीर राजपूत थे और पहले रावसे जुदा थे सो विजयके विरुद्ध होकर रावसे आकर मिल गये। 3 'चेळो भारी होणो' मुहावरा है। शब्दार्थ है—ताकडीका पलडा भारी होना लाक्षणिक अर्थ है—पक्षका समर्थ होना। वाक्यार्थ रावका पक्ष दिनप्रतिदिन समर्थ वनता गया। 4 निकाल दिया । 5 तव विजय अपनी जागीरीके गावमे चला गया है। 6 उस समय। 7 सौराष्ट्रको जाते हुए सिरोहीके नजदीक आये। 8 'रावरो राजा घणो आदर कियो ।' यह वाक्य अशुद्ध लिखा गया प्रतीत होता है। होना चाहिये था—'राजारो राव घणो आदर कियो ।' आदर-भाजन अतिथि होता है न कि आतिथ्यकर्त्ता। 9 किन्तु महाराजा रायसिंहने विजयको सिरोहीका राव वनाया जाना स्वीकार नही किया। 10 और विजयको देशसे निकाल देनेकी शर्त मान्य रखी। 11 सिरोही राज्यकी आधी भूमि वादशाहके अधीन रखनेका निश्चय किया। 12 उसमे पाताके पुत्र राठोड मदनको ५०० सवार देकर वावके पास रखा और (रायसिंह) स्वय सौराष्ट्रको चले गये। वाव, एक गाव है जो मारवाड और सिरोहीकी सीमाओके निकट उत्तर गुजरातमे है। 13 ग्रास—एक प्रकारकी जागीरी है जो वँटमे गुजारेके लिये अथवा भोजन आदिके खर्चेके लिये दी जाती है और उसका भोगने वाला ग्रासिया कहलाता है।

सुरताण मोनू आय मिळियो । आधी सीरोही देणी कबूल की, तरै म्हे रावरो ऊपर कियो[1] । विजै हरराजोतनू परो काढियो, नै असवार ५०० सू म्है, म्हारो लोक आधो मुलक सीरोहीरो पातसाही खालसै कियो छै[2], तठै थाणो राखियो छै। हजरतरै दाय आवै जिण जागीर-दारनू दीजै, भावै करोडी भेजीजै[3] । राव हुकमी-चाकर छै[4] ।"

तिण समै दीवाण-बगसी सीरोहीरा आधरी तजवीज करै छै[5], सु सीसोदियो जगमाल, उदैसिंघ राणारो बेटो दरगाह[6] गयो छै । सु ओ राव मानसिघरी बेटी परणियो हुतो, सु उठारो भोमियो छै[7] । इण मुनसबमे सीरोहीरो आध मागियो[8] । दीवाण-बगसीये पातसाह अकबरसू मालम कीवी[9] । तरै पातसाहजी कह्यो—"राणारो बेटो छै, लायक छै, दो । तरै तालिको लिख दियो[10] । जगमाल तालीको ले आयो । तरै राव साम्हो आय मिळियो । विजो देवडो पिण दरगाह गयो हुतो सु विजानू किणही सीरोही दी नही, तरै विजो पिण जगमाल साथै आयो । धरती तो राव सुरताण आधी जगमालनू दी, नै पाटरा-घरा[11] माहे राव सुरताण रहै छै, नै बीजा घरा[12] माहे सीसोदिया जगमाल आय रह्यो छै । सु राव मानसिंघरी बेटी जगमालरी बैर[13] तिका कहै—"म्हारै बापरा घर, तिका माहे म्हा थका दूजा क्यू रहै[14] ?" घरा-पाटरी दिसा अणवणत हीज छै[15] । तिण समै राव सुरताण एकण दिन कठीके[16] गयो हुतो, वासै[17] जगमाल, विजो दाव[18] करनै घरा ऊपर गया । सोळ की सागो, आसियो, दूदो, खगार,

1 तव रावकी सहायता की । 2 और ५०० सवारोके साथ मैने और मेरे मनुष्योने आधे सिरोही देशको वादशाही खालसेमे कर लिया है । 3 हजरतकी इच्छा हो उस जागीर-दारको देदें और चाहे अपना करोडी भेजदें (करोडी = कर उगाहनेवाला अध्यक्ष) । 4 राव आपका आज्ञाकारी सेवक है । 5 उस समय दीवान और वक्सी सिरोहीके आधे भागको वाँटनेकी तजवीज कर रहे हैं । 6 वादशाही दरवारमे । 7 यह राव मानसिंहकी वेटीको व्याहा था अत वह वहाका जानकार है । 8 इसने मनसवके साथ सिरोहीका आधा भाग मागा । 9 दीवान और वक्सी लोगोने वादशाह अकवरसे निवेदन किया । 10 तव अधिकार-पत्र लिख दिया । 11 राजाके रहनेके महल । 12 दूसरे घरोमे । 13 पत्नी । 14 मेरे वापके घर, जिनमे हमारे होते हुए दूसरा कोई क्यो रहे ? 15 पट्टघरो (मुख्य प्रासाद) के सवबमे अनवन चल ही रही है । 16 कही । 17 पीछेसे । 18 अवसर देख करके, ताक लगा कर ।

रावरा चाकर सुरताणरै घरां माहे हुता, तिणै घर झालिया[1], वेढ की[2], घर हाथ नाया[3]। पछै खिसाण[4] हुय फेर जगमाल विजो साथै ले दरगाह गयो। उठै जाय पुकार की। पछै पातसाह जगमालरी भीर[5] राव रायसिंघ चन्द्रसेनोत, कोळीसिंघ दातीवाडारो धणी, के[6] तुरक मदत दे विदा कियो। जगमाल फोज ले सीरोही आयो। राव सुरताण सीरोही छोड दी। भाखररी खंभ झाली[7]। जगमाल आय सीरोही मोहल[8] वैठो।

कितराहेक[9] दिन हुवा तरै जगमाल जाणियो—सैहर[10] तो लियो, हमैं चढने रावनू आवूरी तळक ही छोडावू[11]। सु जगमाल असवार हुवो। राव पिण आण मुकांम कोस २ वाकी छोड कियो[12]। सु जगमालरै कटकै[13] विचारियो—"जु राव सुरताणरै वसीरा रजपूतारा गाव छै तिण ऊपर फोज १ मेलीजै[14], ज्यू रजपूत जुदा-जुदा बिखर जाय। पछै सुरताणनू कूट मारिस्या[15]।" तरै देवडै विजै हरराजोतनू रा' खीवो माडणोत, रा' राम रतनसियोत, के तुरक भीतरोट ऊपर विदा करणरो विचार कियो[16]। तरै देवडै विजै, जगमाल रायसिंघनू कह्यो—"मोनू थासू अळगो करस्यो तो राव था ऊपर आवसी[17]।" तरै राठोडै ठाकुरै कह्यो—"जिण गाव कूकडो न हुवै तठै पिण रात विहावै छै[18]।" आ वात कही तरै विजो भीतरोटरी तरफ गयो। वासै राव सुरताण देवडा समरानू खबर दीवी—"विजो भीतरोटनू साथ ले गयो।" तरै राव सुरताणनू देवडै समरै कह्यो—

---

1 जिन्होने घर पकड लिये। घरोसे नही निकलनेके निश्चय पर दृढ रहे। 2 लडाई की। 3 घर हाथ नही आये। 4 लज्जित होकर। 5 सहायतार्थ। 6 कई। 7 पहाडकी गालको पकडा। पहाडकी गालमे शरण ली। खभ = दो पहाडोके वीचका सँकडा और ढालू गुप्त स्थान। 8 महल। 9 कितनेक। 10 शहर। 11 अब चढाई करके रावको आवूकी तलहटी भी छुडवादू। 12 रावने भी दो कोश शेष छोड कर अपना मुकाम किया। 13 सेनाने। 14 जिसके ऊपर सेनाकी एक टुकडी भेजी जाय। 15 पीछे सुरतानको मार देगे। 16 कई तुर्कोको भीतरोट पर भेजनेका विचार किया। 17 मुझको तुम्हारेसे अलग कर देंगे तो राव तुम्हारे ऊपर चढ आयेगा। 18जिस गावमे मुर्गा नही होता है वहा भी रात वीत कर दिन निकलता है। व्यग्योक्ति कहावत है। भावार्थ यह है कि—तुम्हारे विना भी हम अपनी रक्षा कर सकते हैं।

"हमै ढील न कीजै[1] ।" गाव दताणी सीसोदियो जगमाल, राव रायसिंघरो डेरो छै, तिण ऊपर राव सुरताण नगारो देनै आयो[2] । इणांरै खबर काई[3] नही । कोस १ तथा २ रो वीच[4] छै । अै जाणै राव विजो भीतरोटनू गयो छै तठी जाय छै[5] । समत १६४० रा काती सुद ११ नै राव सुरताण इणा ऊपर आयो[6] । वेढ हुई[7] । इतरो साथ[8]— सीसोदियो जगमाल, राव रायसिंघ, कोळीसिंघ तीनै सरदार काम आया—

1 राव रायसिंघ चद्रसेणोत ।
1 सीसोदियो जगमाल उदैसिंघोत ।
1 कोळीसिंघ, दातीवाडारो धणी ।
1 राव गोपाळदास किसनदासोत गागावत ।
1 राव सादूळ महेसोत कूपावत ।
1 राव पूरणमल माडणोत कूपावत ।
1 राव लूणकरण सुरताणोत गागावत ।
1 राव केसोदास ईसरदासोत ।
1 चहुवाण सेखो झाझणोत ।
1 पडिहार गोरो राघावत ।
1 पडिहार भाण अभाउत ।
1 देवो ऊदावत ।
1 भा नेतसी ।
1 भा जैमल ।
1 बारहठ ईसर ।
1 मागळियो किसनो ।
1 धाधू खेतसी ।

---

1 अब देर नही कीजिये । 2 राव सुरतान अपनी चढाईका नगारा बजाता हुआ आया । 3 कुछ भी । 4 अतर । 5 ये जानते हैं कि राव विजय भीतरोटको गया है इसलिये यह भी उधर जा रहा हैं । 6 राव सुरतान इनके ऊपर चढ आया । 7 लडाई हुई । 8 इतने मनुष्य ।

१ सेलहथ[1] वालो ।
मु॥ राजसी राघावत ।
१ भाटी कान आवावत ।
१ मांगळियो गोपाळ भोजउत ।
१ रा॥ खीवो रायसलोत ।
१ ईदो ।

तठा पछै[2] वळै[3] देवडो विजो हरराजोत दरगाह पुकारू[4] गयो नै मोटे राजानू जोधपुर हुवो[5] तरै[6] इणारो पिण दावो हुतो[7] नै पातसाह जामवेग नै मोटा राजानू सीरोही ऊपर विदा किया । पछै सीरोही ऊपर आया[8] । धरती विगाडी[9] ।

देवडो पतो सांवतसियोत ।
तोगो सूरावत ।
सूर नरसिंघोत ।
चीवो जेतो खीवावत । चूक कर मारिया[10] ।

राठोड वैरसल प्रथीराजोत पेट मार मुवो[11] । तिण समै देवडो विजो नै जामवेग मोटा राजाथी[12] जुदी फोज ले दौडिया हुता[13] । तठै देवडो विजो राव सुरताण मारियो[14] नै समत १६६७रा आसोज वद ६ राव सुरताण काळ प्रापत हुवो[15] ।

राव राजसिंघ सुरताणरो[16] । राव सुरताण काळ कियो तरै टीके वैठो[17] । भोळो सो ठाकुर हुवो[18] । एक वार राव सुरताणरो दूजो वेटो सूरसिंघ ग्रास-वेध कियो थो[19] । सूरसिंघरी भीड[20] देवडो भैरवदास,

---

1 शेलधारी । 2 जिसके वाद । 3 फिर । 4 पुकारू वन कर गया । 5 राव मालदेवके पुत्र मोटा-राजा उदयसिंहको जव जोधपुर प्राप्त हुआ । 6 तव । 7 इनकी (विजाकी) भी यह माग थी । 8 सिरोही पर चढ कर आये । 9 सिरोहीकी धरती (देश) का नाश किया । 10 दगा करके मार दिया । 11 पृथ्वीराजका पुत्र राठौर वैरसल पेटमे कटारी मार कर मर गया । 12 से । 13 दौडे थे । 14 जहा पर राव सुरतानने देवडा विजाको मार डाला । 15 राव सुरतान मर गया । 16 सुरतानका पुत्र । 17 राव सुरतान मर गया तव गद्दी पर वैठा । 18 यह ठाकुर भोला सा था । 19 एक वार राव सुरतानके दूसरे पुत्र सूरसिंहने राजद्रोह किया था । 20 सहायता ।

समरावत, डूगरोत सारा[1] हुवा। रावरी भीड देवडो प्रथीराज सूजावत हुवो। वेढ हुई। राव राजसिघ वेढ जीती। सूरै वेढ हारी।

तठा पछै कितरेक[2] दिनै राव राजसिंघ नै देवडै प्रथीराज सूजावतसू अणवरणत[3] हुई। प्रथीराज ग्रास-वेध विजै वाळो माडियो[4]। प्रथीराजरा बेटा-भतीजा आग खाय ऊठिया[5]। इणरै डीलारी निपट जोड[6]। रजपूत निपट भला उण काठारा वास राखिया[7]। एक वार राव राजसिंघ नै देवडा प्रथीराजनू राणै करन समझावणनू[8] उदैपुर तेडिया[9]। पछै अै उटै गया। राणै कहाव-कथीना[10] किया मु देवडो प्रथीराज, राम, रायसिघ, नाहरखान, चादो—एकण भातरा आदमी[11]। राणासू बुराई करा[12], इसडी आगवण मन माहे धरै[13]। सु राणारा आदमी वीच फिरिया[14]। तिणा[15] राणानू वात समझाई। कह्यो–"इण परधानगी माहे सवाद को नही[16]।" तरै राणा ही गई कीवी[17]। इणानू सीख दीवी[18]। राव नै प्रथीराज पाछा सीरोही आया। माहोमाह यू हीज वहै छै[19]। देवडो प्रथीराज जोरावर थको वहै छै[20]। राव राजसिंघ देवडो भैरवदास समरावतनू डूगरोतनू सहल सो पटो दे इणरै हीज आटै राखियो हुतो[21]। सु राव राजसिंघ महादेव गया हुता। देवडो भैरव समरावत वांसै[22] रह्यो हुतो। अै सासता घात देखता हुता[23]। पछै देवडै प्रथीराज बेटा भतीजानू समझाय राखिया हुता। इणा वासे रेहनै भैरवनू मारियो। राव

---

1 सब। 2 कितनेक। 3 अनबन। 4 जिस प्रकारकी वगावत विजयने की थी, उसी प्रकारकी वगावत पृथ्वीराजने करनी प्रारभ की। 5 पृथ्वीराजके बेटे-भतीजे क्रोध से तिलमिला उठे। 6 इसके कुटुब वालोके बडे अच्छे जोड। 7 उन्होने उस ओरकी वस्तीकी रक्षा की। 8 समझानेके लिये। 9 बुलाये। 10 कहना-सुनना। 11 एक प्रकारकी प्रकृति वाले मनुष्य, खरे मनुष्य। 12 रानासे बिगाड करें। 13 ऐसी आट मनमे रखते हैं। 14 अत रानाके आदमी बीच-बचाव करते रहे। 15 जिन्होने रानाको वास्तविकतासे अवगत किया। 16 इस सन्धि-प्रयासकी प्रधानता करनेमे कोई फल नही है। 17 तब रानाने भी बात छोड दी। 18 इनको रवाना किया। 19 परस्पर यो ही चलता है। 20 देवडा पृथ्वीराज जोरावर (सिरजोर) होकर चल रहा है। 21 थोडासा पट्टा देकर इसीलिये इसे रखा था। 22 पीछे। 23 ये निरतर घात ताक रहे थे।

सांभळ रह्या[1] । गई कीवी[2] । भैरवगा पटारो गाव पाडीव राव रामा भैरवोतनू दियो । तठा पछै वरस अेक प्रथीराज, रांम, रायसिंघ, नाहरखांन, चांदो घात देखता हुता । एक दिन रावनू[3] मारणनू[4] गया । सीसोदियो परवतसिंघ ऊपर गयो । देवडो रामो ऊपर गयो । राव आदमियां थोडासू हीज वैठो हुतो । अै माहे गया । रावनू मारियो । सीसोदिया परवतसिंघनू मारणनू घणो ही कियो[5], पिण दिन ऊभा, घात लागी नहीं[6] । सोर हुवो । राव अखैराज वरस २ रो हुतो सु धाय कोटडी माहे ले पैठी[7], ऊपर गूदडा दिया[8] । प्रथीराजरै साथ घणोई सोझियो[9] । अखैराज प्रतापवळी सु उणरै हाथ लागो नही[10] । तितरै रावरो साथ भेळो हुवो[11] । सीसोदियो परवतसिंघ, देवडो रांमो अौर साथ खगार भेळो हुवो[12] । इणानू रावळा-घरां मांहे घेरिया[13] । गोळियां, सरारी मार पडण लागी[14] । इणा अखैराजरी खवर की, कठै छै[15] ? तरै राज-लोग खबर पोहचाई[16]—"अजेस कुसळ छै, फलाणी कोटडी माहे छै[17] । इणारो साथ मुहडै वैठो छै[18] । वडा-वडानू पाणी पियांनै पोहर २ हुवा छै[19] । कोटडीरी फलाणी वाजू निराळी छै[20] । उठीनू सिलावट तेडायनै अखैराजनू काढ लो[21] ।" पछै सीसोदियो परवतसिंघ, देवडै रांमै सिलावट तेडाय हळवै-हळवै[22] भीत खोलायनै[23] अखैराजनै काढ लियो । इणारो वळ वधियो[24] । इणा सोर कियो—"धीरा ! हरामखोरां ! अखैराज माहरै हाथ आयो छै[25] ।" तरै इणारो वळ घटियो । रात पडी । च्यारू तरफथी

---

1 राव सुन करके रह गये । 2 हुई, नही हुई करदी । 3 को । 4 के लिये । 5 सिसोदिया पर्वतसिंहको मारनेके लिये वहुत प्रयत्न किया । 6 लेकिन दिन था इसलिये कोई घात नही लगी । 7 घुस गई । 8 ऊपर विस्तरे डाल दिये । 9 तलाश किया । 10 अखैराज भाग्यशाली सो उनके हाथ नही लगा । 11 इतनेमे रावका सैनिक समाज इकट्ठा हुवा । 12 देवडा रामा और दूसरा साथ खगारसे मिले । 13 इनको राज-महलोमे घेर लिया । 14 गोलियें और वाणोकी मार पडने लगी । 15 कहाँ है ? 16 तव रानियोने सदेश भेजा । 17 अभी तक तो कुशल-पूर्वक है, अमुक कोठरीमे है । 18 इनका सैनिक-समाज द्वार पर वैठा हुआ है । 19 वडे-वडोको पानी पिये दो पहर वीत गई है । 20 कोठरीकी अमुक वाजू एकान्तमे है । 21 उस ओर सिलावटको वुलाकर अखैराजको निकाल लो । 22 धीरे-धीरे । 23 दीवारको तुडवा कर । 24 इनका वल वढ गया । 25 अखैराज हमारे हाथ आ गया है ।

रावरै चाकरै मार दी[1]। देवड़ै प्रथीराज दीठो[2], रातरा अठै रहां तो मारिया जावां[3]। तद इणारै भला-भला रजपूत हुता तिकै आगै हुवा[4]। केई पाछै हुवा, के दोनू बाजुवां हुवा[5]। गरट करनै हुडी कीवी[6]। इणानू ले नीसरिया[7]। वासै साथ रावरो लूबियो[8]। तिणसू पाछा वळ-वळ रजपूते वेढ की[9]। काम आवता गया। घणो साथ मरता सिरदार कुसळै आया। डेरै आय घोडै चढ नीसरिया। कितराहेक साथसू पालडी आया। वासै सीसोदियो परबतसिंघ, देवडो रामो, चीबो दूदो, करमसी, साह तेजपाळ भेळा हुय राव अखैराजनू समत १६७५ टीको दियो। पछै पाखती[10] चीतोडरै धणिये, ईडर राव कल्याणमल वडो ठाकुर थो तिणै वात सुणी। सिगळां राव अखैराजरो ऊपर राखियो[11]। प्रथीराजनै गाव गया पछै परबतसिंघ देवडै रामै, चीबै दूदै, करमसी, साह तेजपाळ घणो बळ बांधियो[12]। प्रथीराजनू ठेल देस माहेथी काढियो[13]। प्रथीराज देवळारै परणियो हुतो, सु देवळा धारै, मानै इणानू चेखळा-भाखर माहे बाकी ठोड थी तिका दीनी[14]। प्रथीराज माणसा सूधो उठै जाय रह्यो[15]। बेटो चादो आबाव दिसा जाय रह्यो[16]। धरतीनू दौड-धाव घणी ही कीवी[17]। कितराहेक गाव विभोगा किया[18]। चादै दाण सीरोही लीजै तिणसू आधो लियो[19]। पिण अै हरामखोर था सु दिन-दिन गळता गया[20]। दौडणरी तकसीर काई न की[21]। पछै रायसिंघ भतीज गाव १ मारण

---

1 रावके अनुचरोने चारो ओरसे मार मारी। 2 देखा। 3 रातको यहा रहे तो मारे जाय। 4 तब इनके जो अच्छे-अच्छे राजपूत पासमे थे वे आगे हुए। 5 कई पीछे हुए और कई दोनो बाजू हुए। 6 अपना-अपना समूह बना करके जल्दी-जल्दी चले। 7 इनको ले निकले। 8 रावका साथ पीछे लगा। 9 राजपूतोने जिससे पीछे लौट-लौट कर लडाई की। 10 पास। 11 सबने राव अखैराजकी सहायता की। 12 बहुत जोर पकड लिया। 13 पृथ्वीराजको धक्के मारकर देशमे से निकाल दिया। 14 पृथ्वीराज देवलोके यहा व्याहा था सो देवल धारे और मानेने चेखला पहाडमे जो बाकी जगह थी वह उनको रहनेके लिये दी। 15 पृथ्वीराज अपने मनुष्यो सहित वहा जाकर रहा। 16 बेटा चादा आबावकी ओर जाकर रहा। 17 धरतीके लिये दौड-धूप बहुत ही की। 18 कितनेही गावोको कर-प्राप्त नही हो सकें वैसा बना दिया। 19 सिरोहीमे जितना कर लिया जाता था, चादाने उससे आधा लिया। 20 किन्तु ये हरामखोर थे इसलिए दिन-दिन निर्वंश होते गये। 21 दोडनेकी कोई तजवीज नही की।

गयो हुतो तठै माराणो[1] । पछै देवडो राजसी, जीवो–देवराजरा वेटा डूगरोत अठाथी[2] कपट करनै प्रथीराज कनै गया । प्रथीराज इणारो वेसास कियो[3] । पछै इणां रातरा प्रथीराजनू मार सीरोही आया । देवडा प्रथीराजनू डूगरोते मारियो तठा पछै[4] और वेटा तो सोह[5] मर गया, केई गळ गया[6] । पछै सारो मुद्दो चादा ऊपर मडियो[7] । चादो वडो आखाडसिध[8] रजपूत हुवो । चादारै प्रवाडै पार को नही[9]। सीरोही माहे तिको रजपूत को नही जिको चादा आगै च्यार वार भागो न छै[10] । चादै दाण लियो[11] । सीरोहीरा गाव १२०रो विभोगो लियो[12]। समत १७११रै टांणै[13] चादो सीरोहीरै गाव नीवाज वसियो । राव अखैराजरो साथ सारो[14] समत १७१३ रै काती वद १४ रै दिन नीवाज ऊपर सीसोदियो परवतसिघ, देवडो रामो, चीवो करमसी, खवास केसर सारी सीरोही ले आया । चादै वेढ कीवी । पोहर २ वेढ हुई । चादै वेढ जीती । रावरै साथरा पग छूटा[15] । रावरै साथरा आदमी ५० काम आया । माणस १०० घायल हुआ । देवडो राघोदास जोगावत लाखावत सारी मदाररो धणी[16] हुतो सु काम आयो । समत १७२१ माहे राव अखैराजसू कवर उदैसिघ डूगरोते[17] मिळ स।रै[18] रजपुते[19] मामलो कियो[20] । पछै देवडै रामै भैरवोत, सीसोदियो साहिवखान पचे मिळ वळै[21] रावनू कैद माहेसू काढियो । पछै राव वेटा उदैभांणनू वेटा सूधो[22] मारियो । तठा पछै देवड़ा अमरानू पटो देनै राव मनायो[23] । पटो देनै धरती माहे आणियो[24] । गावा पटारी विगत[25]—

---

1 पीछे भतीज रायसिंघ एक गाव लूटने गया था वहा मारा गया । 2 यहासे । 3 पृथ्वीराजने इनका विश्वास किया । 4 जिसके वाद । 5 सव । 6 कई निर्वंश हो गये । 7 पीछे सव भार चादे ऊपर रहा । 8 रणकुशल । 9 चादाके युद्ध-पराक्रमोका कोई अत नही । 10 सिरोहीमे ऐसा राजपूत कोई नही जो चादाके आगे चार वार भागा न हो । 11 चादेने कर प्राप्त किया । 12 सिरोहीके १२० विभोगे गावोका कर लिया । 13 समय । 14 सव । 15 रावके सैनिक मोरचा छोड कर पीछे हटने लगे । 16 दारमदारका धनी । 17 डूगरोतने । 18 सव । 19 राजपूतोने । 20 गडवड किया । 21 पुन । 22 सहित । 23 जिसके वाद देवडा अमराको पट्टा देकर राव मनवाया । 24 पट्टा देकर देशमे ले आये । 25 पट्टाके गावोकी सूची ।

| | | |
|---|---|---|
| १ पालडी । | १ जैतवाडो । | १ देदपुर । |
| १ मकरोडो । | १ बापला । | १ पीथापुर । |
| १ टोकला । | १ मेडो । | १ गिरवर । |
| १ मूडथळ । | १ काळधरी । | १ मूसावळ । |
| १ धनेरी । | १ ग्रावळ । | |

१ देलवाडो–विभोगो । लेतो सु नही ले । दाण लेतो सु लेसी[1] ।

राव लाखारो पेट[2]—

सोभो । सहसमल । लाखो ।

२ ऊदो लखारो । टीकै[3] न हुवो ।

३ रिणधीर ।

४ भाण ।

५ सुरताण ।

६ राव राजसिघ । सीसोदणीरो ।

७ राव अखैराज । वीरपुरीरो ।

८ उदैसिंघ ।

९ उदैभाण ।

६ सूर सुरताणरो । जोधपुर वसियो[4] । भाद्राजण गाव २५ सू पटै । संमत १६७५ मुवो ।

७ सबळो ।

८ गरीबदास ।

४ सूजो, रिणधीररो । देवड़ै विजै रावत सेखावत कनै मरायो[5] ।

५ देवडो प्रथीराज । सीरोहीनू वडो ग्रासियो[6] हुवो । राव राजसिंघनू समत १६७५ मारियो । समत १६८१ प्रथीराजनू देवडै जीवै मारियो ।

५ देवडो नाहरखान ।

---

1 देलवाडा भूमि-कर रहित । पहले लिया जाता था किन्तु अब नही लिया जाता । चुगी ली जाती थी वह अबभी ली जायगी । 2 वश । 3 ऊदा लाखाका पुत्र । गद्दी नही बैठा । 4 जोधपुर जा रहा । 5 सूजा रिणधीरका पुत्र । इसको देवडा विजयने रावल सेखावतसे मरवाया । 6 (उपद्रव करने वाला) जागीरदार ।

६ देवडो चादो ।

७ अमरो ।

७ कमो ।

६ जैसिघ ।

६ वाघ ।

६ करन ।

५ स्यामदास सूजारो ।

६ रायसिंघ ।

७ भोपत ।

६ राम ।

४ प्रताप रिणधीररो ।

५ तेजो प्रतापरो ।

६ मेघराज । तिणनू राव अखैराज चूक कर मारियो[1] ।

७ नाटो ।

७ भाखरसो ।

७ डूगरसी ।

७ नरहरदास ।

७ कान ।

५ गोयंददास प्रतापरो । देवडो सूजानू विजै देवडै मारियो तद काम आयो ।

६ सागो वडवज । नीवाज वसतो[2] । वडो राहवेधी[3] रजपूत थो ।

७ रामसिघनू राव अखैराज चूक करने मारियो समत १७०५ ।

८ करमसी ।

८ अमरो ।

५ सलखो प्रतापरो ।

६ भारमल

७ गागो ।

८ भीव ।

---

1 धोखा देकर मारा । 2 रहता था । 3 दूरदर्शी । रणानुभवी ।

५ किसनदास ।

६ खीवो ।

६ सिवो ।

६ जोगो ।

७ कान ।

७ राघोदास ।

७ मानसिघ ।

२ राव जगमाल लाखारो ।

३ मेहाजळ जगमालरो ।

४ राव कलो मेहाजळरो । एक वार सीरोही राणै उदैसिघ ऊपर कर बैसाणियो[1] । पछै डूगरोतासू विरस[2] हुवो । पछै राव सुरताणसू वेढ हुई । भागो । जोधपुर वसियो । संमत १६४६ मोटो राजा[3] भाद्राजण[4] पटै दी स० १६६१ काळ कियो ।

५ आसकरण कलारो । जोधपुर वास । नवसरो पटै ।

६ दलपत ।

५ पतो राव कलारो । राणारै काम आयो ।

कला पतारा बेटा—

६ हरीदास । जोधपुर वास । भाद्राजण पटै ।

७ भावसिघ ।

७ भगवानदास ।

७ ईसरदास ।

६ गोवरधन । सीधले[5] मारियो ।

७ अमरसिघ ।

४ द्वारकादास मेहाजळरो । संमत १६८० जोधपुर वास । नवसरा पटै ।

---

1 एक वार राणा उदयसिंहने सहायता करके कलाको सिरोहीकी गद्दी बिठाया । 2 अनवन । 3 उदयसिंह । 4 भाद्राजुन ठिकाना । 5 सींधल-राठोडोने मारा ।

५ केसोदास ।

४ पचाइण मेहाजळरो ।

५ लखमण ।

४ जैतो मेहाजळरो ।

५ कान ।

६ केसरीसिंघ ।

५ करन ।

४ परवतसिंघ मेहाजळरो ।

५ मूजो ।

६ लूणो ।

३ राव अखैराज जगमालरो ।

४ राव दूदो ।

५ राव मानसिंघ ।

४ राव रायसिंघ अखैराजरो ।

५ राव उदैसिंघ ।

३ रतनसी जगमालरो ।

४ गोपाळदास ।

५ नरहरदास । राव अखैराज चूक कर मारियो ।

५ हरीदास ।

२ हमीर लखारो । राव जगमाल[1] आध वटायो हुतो । पछै जगमालसू विरस हुवो । पछै राव जगमाल मारियो[2] संमत १६७४ भाद्रवा सुदि ६ ।

कंवर गजसिंघ[3] जाळोर फतै करी । भाटी गोपाळदास आसावत भाटी दयाळदास जाळोर थाणै राखिया, तिणसू[4] राव राजसिंघ वात की "देवडो प्रथीराज काढ दो तो गाव १४ थानू दा[5] ।" तरै या कवरजीसू मालम कियो[6] । वात कवूल की । भाटी दयाळदास साथ ले

1 जगमालने आधे राज्यका वट करवाया था । 2 राव जगमालने हमीरको मार डाला । 3 जोधपुरके महाराजा सूरसिंहके पुत्र गजसिंहने जालोर मुसलमानोसे विजय किया था । 4 जिनसे । 5 देवडा पृथ्वीराजको निकाल दो तो १४ गाव तुमको दें । 6 तव इन्होने कॅवरजीसे निवेदन किया ।

मदत गयो । प्रथीराजनू परो काढियो । तरै गाव १४ जाळोर वासै दिया । वरस १ पेरोजी[1] ६०००, गोहू मण १३००० एक वरस आया । तठा आगै न दिया[2] ।

गावारो विगत—

१ कोरटो ।
१ नामी ।
१ मचलो ।
१ पोसाणो ।
१ वाघार ।
१ भव ।
१ नारदणो ।
१ पालडी ।
१ रहवाडो ।
१ आलोपो ।
१ वासडो ।
१ खेजडियो ।
१ अणदोर ।
१ अरटवाडो ।

## वात

सीरोहीरै देस डूगरोत देवड़ा वडा रजपूत छै । देसरी आगळ, भड-किंवाड[3] । सदा औ सीरोहीरा धणियांनू थापै-उथापै[4] ।

डूगररा पोतरा[5]—

डूगर रिणमलरो । रिणमल सलखारो । सलखो लूभारो । लूभो विजडरो ।

१ डूगर ।
२ भाभो ।
३ गजो ।
४ भीदो ।
५ आलण ।
६ तेजसी ।
७ रूदो ।

---

1 पिरोजशाही सिक्का । 2 उसके आगे नही दिया । 3 देशकी रक्षाके लिये रणक्षेत्रमे एक स्थान पर दृढ़तापूर्वक खडा रहकर शत्रुकी सेनाको आगे बढ़नेसे रोकनेमे दृढ किंवाड और उसकी आगल रूप । 4 सिरोहीके स्वामियोको सदा ये स्थापित और उत्थापित करते हैं । 5 पौत्र ।

७ नरसिंघ ।

७ केल्हण ।

७ रूदो तेजसीरो । आंक ७ ।

८ हरराज ।

९ विजो ।

९ लूणो ।

९ मानो ।

९ अजैसी ।

९ वणवीर ।

९ धनराज ।

९ जैमल ।

८ सेखो रूदारो ।

९ रावत । ९ करमो । ९ मालो । ९ रूपसी ।

विजो हरराजरो । आक ९ ।

१० भोजराज ।

११ भगवानदास ।

१० खीवराज ।

११ केसोदास । राव राजसिंघ भेळो मारांणो[1] ।

१० रामसिंघ ।

११ देवीदास ।

१० जसवत । जोधपुर वास । कुळथाणै पटै ।

११ तेजमाल । राव राजसिंघ साथै मारांणो ।

११ उगरो ।

१२ कान । जोधपुर वास ।

११ दासो ।

१२ भाखरसी ।

११ रायसिंघ ।

---

1 राव राजसिंहके साथ मारा गया ।

१२ गोयददास ।

१० अमरो ।

११ किसनदास ।

११ कान ।

११ उरजन ।

लूणो हरराजरो । वडो रजपूत । राव सुरतांण मारियो । आक ६ ।

१० महेस ।

११ भोपत ।

मानो हरराजरो । वडो रजपूत । राव सुरताण मारियो । आक ६ ।

१० सादूळ । राजसिंघ साथै माराणो ।

अजैसी । हरराजरो । आक ६ ।

१० सुरताण । जोधपुर वास । समूझो पटै ।

१० वाघ ।

११ पीथो ।

११ उदैसिंघ ।

१२ करन ।

वणवीर हरराजरो । आक ६ ।

१० चादो ।

१० रामदास ।

धनराज हरराजरो । आक ६ ।

जैमल हरराजरो । आक ६ ।

सेखो रूदारो । आक ८ ।

६ रावत सेखारो । वडो रजपूत । देवडै विजैरै वास[1] थो । देवडै सूजै[2] रिणधीरोतनू विजैरै कहै मारियो । पछै समत १६५८ जोधपुर वसियो । सिवांणरो[3] गाव देवळियाळी पटै दी । स० १६६३ काळ कियो ।

---

1 देवडा विजयके पास रहता था । 2 इसने देवडा विजयके कहनेसे देवडा सूजाको मारा था । 3 मारवाडका सिवाना नगर ।

१० पंचाइण । जोधपुर वास । खाडाळो, नीवली पटै ।

१० अचलदास । जोधपुर वास । रु० १००००) री रेखरो नवसरो पटै । समत १७०३ काविल काळ कियो[1] ।

११ जगनाथ ।

११ नरहरदास ।

देवडो जगनाथ अचलदासोत । जोधपुर वास । नवसरो पटै । संमत १७२१ चैत सुद ७ काळ कियो देसमे[2] ।

वेटांरा नाव—

१२ डूगरसी । १२ जैतसी । १२ मोहण । १२ वाघ ।

१२ ठाकुरसी ।

९ करमो सेखावत ।

वेटांरा नाव—

१० रायमल । १० सांगो । १० राजसी । १० रतनसी ।

१० भीव । देवडा प्रथीराजरी वेढ कांम आयो ।

१० हमीर ।

११ मनोहरदास ।

१० गोयददास ।

११ वीठल ।

१० जसवत ।

१० नाराणदास ।

१० सांवळ ।

९ मालो सेखारो । राव मानसिंघ देवडो हामो रतनावत मरायो तद काम आयो[3] ।

९ रूपसी सेखारो ।

देवडो नरसिंघ तेजारो । आक ७ ।

८ समरो ।

८ सूरो ।

---

1 कावुलमे मरा । 2 स्वदेश (मारवाडमे) मरा । 3 राव मानसिंहने रतनाके पुत्र देवडा हामाको मरवाया तव माला सेखावत लड कर मरा ।

८ कुभो ।

८ अरजन ।

समरो नरसिंघरो । राणा जगमाल, रायसिंघ राव सुरताण मारियो तद दताणीरी वेढ समत १६४० काती सुद ११ काम आयो[1] । वडो स्यामधरमी ।

९ भैरव ।

९ नेतसी ।

९ भाण ।

९ नगो ।

देवडो भैरव, स० १६७२ देवडो प्रथीराज मारियो[2] । आक ९ ।

१० देवडो रामो ।

१० करन ।

११ केसरीसिंघ ।

१२ माधो ।

१० अमरो भैरवरो । सूरारै काम आयो[3] ।

१० सांगो भैरवरो । जोधपुर वास । करमावस पटै ।

११ मनोहर ।

११ भीव ।

१० कमो भैरवरो ।

११ दुजणसल ।

११ हरिदास ।

११ रतनसी ।

१० महेस भैरवरो ।

९ नेतसी सवरारो । राव जैसिंघ साथै काम आयो ।

९ भाण सवरारो ।

---

1 राव सुरताणने सिसोदिया जगमाल और जोधपुरके राव रायमलको मारा था तब दताणीकी लडाईमें स० १६४० की काती सुद ११ को उनके साथ नरसिंघका पुत्र समरा भी मारा गया । 2 भैरवको देवडा पृथ्वीराजने मारा । 3 सूर समराका भाई था इसलिये उसके लिए लड कर मरा ।

१० रूपो ।

९ नगो सवरारो ।

१० आसकरण ।

११ गोयंददास ।

१२ राघोदास ।

१२ भगवानदास ।

११ जैसिंघ । ११ वाघ । ११ किमनो ।

१० पाचो नगारो ।

सूरो नरसिंघरो । वडो रजपूत । काळंधरीरी[1] वेढ राव सुरताणनै कलै हुई तद राव सुरताणरै काम आयो । आक ८ ।

९ सांव्रतसी, किसनवाई राठोडरो वेटो । समत १६४६ मोटै राजा चूक कर मारियो ।

१० करन । १० दलपत । १० कान । १० डूगरसी ।

९ कलो ।

१० मेरो ।

११ ठाकुरसी ।

११ मोहणदास ।

११ वीरमदे ।

११ धनराज ।

१० अमरो ।

१० सकतो ।

१० नारायण ।

९ तोगो सूरारो । मोटै राजा संमत १६४६ चूक कर मारियो ।

९ पतो सूरारो । मोटै राजा चूक कर मारियो ।

कुभो नरसिंघरो । आक ८ ।

---

1 कालद्री मुकाम पर राव सुरतान और कलाके युद्ध हुआ तव राव सुरतानके पक्षमे रह कर लड मरा ।

९ वरजाग ।

१० केसोदास ।

१० सावळदास ।

११ वाघ ।

९ जैमल ।

१० करन ।

१० मैगळ ।

९ खीवो ।

१० मालो । चादै मारियो ।

अरजन नरसिंघरो । आक ८ ।

९ जसवत ।

१० लाधो ।

९ सुरजन ।

१० देवराज ।

११ जीवो ।

११ राजसी ।

१२ ईसर । सलास पटै ।

११ लाधो ।

केलण तेजसीरो । आक ७ ।

८ देदो । पालडी वसतो । जिणनू देवडै हामै रतनावत मारियो ।

९ पतो ।

१० उगरो ।

सीरोहीरै देस डूगरोता उतरता चीवा भला रजपूत छै[1] । इणारो ही वडो धडो[2] छै । सदा सामधरमी वडा इतबारी छै । अैही देवडा-हीज छै । तिणा मांहे एक साख चीबारी कहावै छै ।

दूदो मेहरावत वडो, निपट भलो रजपूत, दातार हुवो । वडो आदमी थो । चीबो करमसी वडो रजपूत हुवो ।

---

1 सिरोही देशमे डूगरोतोसे उतरते हुए चीवे अच्छे राजपूत है । 2 पक्ष ।

१ कीतू ।

२ समरसी ।

३ महणसी ।

४ मालो ।

५ चीवो ।

६ सांगण ।

७ रिणसी ।

८ दलू ।

९ सोभ्रम ।

१० वेलो ।

११ सोम ।

१२ भारमल ।

१३ खीवो ।

१४ मेहरो ।

१५ दूदो ।

१६ उदैसिंघ।

सीरोहीरी पोळ अवसी भला रजपूत छै[1] । उणारै गांव आदमी ५००रो धडो छै[2] । आगै सुरताण अवसी राव मांनसिंघरी वार मांहे भलो रजपूत हुवो । अवसी ही कीतूरो वेटो । तिणरै वासला अवसी कहावै छै[3] । इधकी वात काइ नही[4] ।

1 सिरोहीके द्वार पर (रक्षक रूप) अवसी अच्छे राजपूत हैं । 2 उनके गावमे ५०० मनुष्यो का पक्ष है । 3 जिसके पीछे वाले 'अवसी' कहलाते हैं । 4 विशेषताकी वात कोई नही ।

# गीत चीवा जैतारो[1]

## आढ़ा दुरसारो कह्यो[2]

श्रीमोटै राजा, सूरै देवडारा वेटा—सावतसी, तोगो, पतो मारिया, तद काम आयो[3] ।

### गीत[4]

सोमाहर-तिलक सीचतो-सावळ,
करतो-खग दाती कहर ।
रिण रोहियो घणो राठोडै,
चीबोळ एकलवा वर ॥ १ ॥

भाजै छाळ खरडकै भाला,
पडै न पिंड देतो पसर ।
एकल जैत सलख आहेडी,
सकै न पाडै भड सिहर ॥ २ ॥

---

1 देवडा राजपूतोकी चीवा शाखाके जैताके सबधका गीत । (गीत डिंगल-काव्यका एक प्रसिद्ध छद है) । 2 आढा जातिके प्रसिद्ध चारण कवि दुरसाका कहा हुआ । 3 जोधपुरके मोटे-राजा उदयसिहने सूरा देवडाके वेटे—सावतसी, तोगा और पताको मारा तव चीवा जैता काम आया । 4 इस गीतमे सोमाके वशज चीवा जैताको दान वाले वडे वाराह और उसके शत्रुओको शिकारियोके रूपमे वर्णन किया है ।

गीतका भावार्थ—

श्रेष्ठ एकलगिड-वाराहकी भाति सोमाके वशमे तिलक रूप जैता चीवाको कई राठोडोने घेर लिया है । जैता उनमे दाती रूप अपने खडगसे शत्रुओमे कहर मचाता हुआ और भालेसे रक्त सीचता हुआ युद्ध कर रहा है ॥ १ ॥

जैता रूप एकल-सूकरके ऊपर सलखा रूप शिकारीके भाले चल रहे है और उनके वास टूट रहे है । किन्तु जैता नही गिर कर आगे ही वढ रहा है । वडे-वडे शूरवीर योद्धा उसको गिरा नही सके ॥ २ ॥

रणक्षेत्रमे आधी दूर पहुँच जाने पर ज्योही वह ललकारा गया त्योही वह अधिक भीषण रूपसे होकार करता हुआ शत्रुओ पर टूट पडा और जन-जनको अलग-अलग पहुँच गया ॥ ३ ॥

ऊपाडियै लूट आधतर,
जण - जण पूगो जुवो - जुवो ।
खीवर हा कलियो खीमावत,
होकर जाड विहाड हुवो ॥ ३ ॥

## गीत चीवा खीमां भारमलोतरो[1]

### आसिया दलारो कह्यो[2]

खीमो राव कलारो चाकर । सुरताण कलै वेढ हुई, काम आयो[3] ।

### गीत[4]

विडरी आस, विजो थियो वासै,
वाजै हाक थई विकराळ ।
चाला चालणहार न चूको,
खत्रवट खग-वाहो खेमाळ ॥ १ ॥

एकण खेम ऊपरै आयो,
सोह - आवगो डूगरा साथ ।
मिटै न घणै नरे मडाणो,
भारमलोत सरस भाराथ ॥ २ ॥

---

1 भारमलके पुत्र खीमा चीवाका गीत । 2 आसिया शाखा के चारण दलाका कहा हुआ । 3 खीमा राव कलाका चाकर । सुरतान और कलाके युद्ध हुआ तब खीमा काम आया । 4 गीतका भावार्थ—

विकराल रूपसे रणवाद्यो का शोर हो रहा है । क्षात्रधर्म पर आरूढ खड्ग चलाने वाला खीमा युद्धमे चालें चलने वालो से किसीसे नही चूका । पीछे पडे हुए वीरोकी विजयकी आशाए घबराहटमे परिणत हो गई ॥ १ ॥

तब पहाडोंमेसे निकल कर समस्त सेना खीमाके ऊपर आगई । भारमलके पुत्र वीर खीमाने उस समय जो युद्ध किया वह कई मनुष्योके हृदयोंमे अकित है,मिट नही रहा है ॥ २ ॥

## वात

थिरादरै[1] परगनै वाव, सुईगाव चहवाण छै । तिकेही राव लाखणरा पोतरा[2] ।

१ राव लाखण ।
२ बलसोही ।
३ महदराव ।
४ अणहल ।
५ महदराव
६ जीदराव ।
७ आसराव ।
८ माणकराव ।
९ आल्हण ।
१० देदो ।
११ रतनसी ।
१२ धुधल ।
१३ महियो ।
१४ भरमो ।
१५ पातो ।
१६ पूजो ।
१७ विजो ।
१८ सिवो ।
१९ रांम, रूदो भाई
२० सीहो रूदारो ।
२१ मेर ।
२२ वणवीर ।
२३ सागो, तिण[3] सागारो परवार ।
२४ पातो । वावरो धणी[4] ।
२५ कलो ।
२६ राणो भोजराज ।
२७ पंचाइण । सुईगाव[5] ।
२८ हीगोल ।
२९ राजसी ।

## वात

समत १७१७ रा भाद्रवारै मास माहे मु० नैणसी गुजरात श्रीजीरी हजूर गयो[6] । आसोज माहे पाछो आयो, तरै देवडा अमरा चदावतरो प्रधान वाघेलो रामसिघनू अमरै नैणसी कनै मेलियो हुतो[7] । ओ[8] जाळोर आयो तरै सीरोहीरी हकीकत पूछी । उण कही[9]–

1 थराद, वाव और सुईगाव आदि उत्तर गुजरातके गावोके नाम हैं । 2 वे ही राव लाखनके पोते हैं । 3 उस । 4 पाता वावका स्वामी । 5 पचायण सूईगाँवमे । 6 मुहणोत नैणसी गुजरातको महाराजा श्री जसवन्तसिहके दरबार (सेवा) मे गया । 7 वाघेला रामसिघको अमराने नैणसीके पास भेजा था । 8 यह । 9 उसने कहा ।

"सीरोही जाळोर गाव बरावर लागै छै। दाण रावरै घणो आवतो तद रु० ५००००) तथा ६००००) आवतो[1]। इणा दिना तो घाट आवै छै[2]। सीरोहीरो आध चदा, अमरारै लीजै छै। विभोगैरा गाव १०० तथा १२५ छै[3]।"

प्र० सीरोहीरी फिरसत मु० सुदरदास जाळोर थका इण भात लिख मेली हुती[4]।

गावारी विगत[5]—

१६ रोहाई-भीतरोटरा कहावै
२३ भीतरोटरो पथग कहावै।
४० वाहगोटरो पथग।
४८ साठ-मडाहड।
७२ मगरारा गाव तथा झोररा गाव।
१२ आबू ऊपर।
६ श्रीमहादेवजी सारणेसरजारा गाव।
७७ सासण, चारणा-वाभणारा।
३० तीसरा वागडिया देवडारो उतन।
२४ सोळ कियारो उतन।

सीरोहीरा गावारी तफसील[6]—

१६ गांव रोहाई-भीनरोटरा कहावै छै[7]—

१ वाळधो।
१ लोदरी।
१ सीहणवाडो।
१ तेलपुरो।
१ वीरवाड़ो।
१ उदरा।
१ सीवेर।
१ झाडोली।

---

1 रावके ज्यादा कर आता तो वह ५००००) तथा ६००००) तक आता था। 2 इन दिनोमे तो कम आता है। 3 विभोगे कर वाले १०० तथा १२५ गाव है। 4 सिरोहीके परगनोकी सूची मुहता सुदरदासने जब वह जालोरमे था, इस प्रकार लिख भेजी थी। 5 गाँवोकी सूची। 6 सिरोहीके गाँवोकी तफसील (ब्योरा)। 7 सिरोहीके ये १६ गाँव रोहाई-भीतरोट (रोही-भीतरोट) पट्टीके कहे जाते हैं।

१ पिडरवाडो, परबतसिंघरो ।
१ वीराळियो, सासण भाटारो, सहसमलरो[1] ।
१ आभारी बाभणारी, सासण चीवा रामसिंघ[2] ।
१ चाचरडी ।
१ नदियो ।
१ काछोली ।
१ नीतोडो, वीरपुरा, सूजानू ।
१ लोटाणो ।
१ भाहरू ।
१ धनारी ।
१ खाखरवाडो ।

२३ भीतरोटरो पथग कहावै छै[3]—

८ सागवाडो ।
१ रोहीडो, खालसारो ।
१ वासो । खालसै, विभोगै[4] ।
१ वाटेरो । रामानू ।
१ मुदरडो ।
१ भीमाणो । चीवा करमसीनू ।
१ सिणवाडो ।
१ आबथळो ।
१ तडूगी ।
१ भाहरजो ।
१ चूनाणी ।
१ फिरसूळी ।
१ मानपुरो ।
१ सतपुरो ।
१ गिरवर ।
१ मूडथळो ।
१ उड ।
१ कैर ।
१ माडवाड़ो ।
१ घाणत ।
१ मोकरडो ।
१ चनार ।

४० बाहरोटरो पथग[5]—

१ सीधणोतो ।
१ सुरताणपुर ।
१ मोडो ।
१ मेलागरी ।
१ पाचडो ।
१ सिणवाडो ।
१ सीरोडी ।
१ पसाणा ।

---

1 विरोलिया गाँव, भाटोका शासन, सहसमलका । (शासन = दानमे दी हुई कर-मुक्त भूमि या गाँव) 2 आभारी गाँव चीवा रामसिहका, ब्राह्मणोके शासनमे । 3 सिरोहीके ये २३ गाँव 'भीतरोट-रो-पथग' कहलाते है । 4 वासा गाँव कर-मुक्त और खालसेका । 5 'बाहरोटरो पथग' मे ४० गाव है ।

१ पोसतरा ।
१ टाकरो ।
१ उडवायिडो ।
१ हमीरपुर ।
१ पालडी ।
१ मालागांव ।
१ डमाणी ।
१ धाधपुर ।
१ हणाद्रो ।
१ डाक ।
१ थळी ।
१ नीलेर ।
१ सोहलवाडो ।
१ रिवद्र ।
१ राणकवाडो ।
१ लाडेलो ।
१ चापोल ।
१ व्रमांण ।
१ मकावल ।
१ नीबोडो ।
१ करहुटी ।
१ जोतपुर ।
१ धीवली ।
१ दताणी ।
१ मारेल ।
१ कपासियो ।
१ भाटांणी ।
१ साडूडो ।
१ पेथापुर ।
१ सेरुवो ।
१ नीबूडो ।
१ मकवाल ।

४८ साठरो पथग, मुदो इणा गावां माहे[1]—

१ माडाहड़ो ।
१ वड़ोदो ।
१ रोहुवो ।
१ जीरावल ।
१ देदापुर ।
१ गूडसवाडो ।
१ सोळसभा ।
१ वाचेल ।
१ वडवज ।
१ रायपुरियो ।
१ हणवंतियो ।
१ वांट ।
१ जैतवाडो ।
१ रीवी ।
१ आलवाडो ।
१ खीमत ।
१ वाचडोल ।
१ बूराल ।
१ भाटरांम ।
१ धनियावाडो ।

---

1 'साठरो पथग' मे ये मुख्य ४८ गाँव है ।

१ सूहडलो ।
१ भाडोतर ।
१ वाघोर ।
१ झात ।
१ मवडी, भाटारी ।
१ अटाळ, भाटारी ।
१ पासूवाळा ।
१ आरखी ।
१ भाडली ।
१ सातरवाडो ।
१ भीलडामो ।
१ सातसेण ।
१ भीलडो न्हानो ।
१ झावठो ।
१ कूजावाडो ।
१ जावाळ ।
१ गीगोल ।
१ अटाळ, चारणारी ।
१ धनेरी ।
१ चेलावस ।
१ सोहडापुर ।
१ रोजेड ।
१ गोयदपुर ।
१ पाथावाडो ।
१ टमटमो ।
१ पीथोली ।
१ गूडसवाडो ।
१ अकेली ।

७२ मगरारा तथा झोररा[1]—

१ गुहीली ।
१ खाभळ ।
१ अणधार ।
१ डेडुवा ।
१ मकावली ।
१ तीतरी ।
१ कलाधी ।
१ जसोळाव ।
१ पाडीव । रामानू ।
१ साणपुर ।
१ सकर ।
१ सीरोडी ।
१ बग ।
१ सिवरटो ।
१ महेसरी । चीबा करमसीनू ।
१ पाधोर ।
१ बूचाड़ो ।
१ बाहुल ।
१ नूहन ।
१ माडल ।
१ फागूणी ।
१ नोहर ।
१ हाळीवाडो ।
१ आखूना ।

---

1 झोरा-मगरा पट्टीके ७२ गाँव ।

१ मांडवाडा ।
१ फळवध ।
१ भूतगाव ।
१ जावाळ ।
१ देळोद्र ।
१ चरहाडो ।
१ मणोहरो ।
१ मूडेडी ।
१ आवेलो ।
१ सतापुर ।
१ चीवली ।
१ माडणी ।
१ ओडू ।
१ जामोतर ।
१ नारदरो ।
१ लोटीवाड़ो ।
१ लास ।
१ मूणावद्र ।
१ झाडोली ।
१ अणदोर ।
१ वासण ।
१ मारोली ।
१ पालडी माहेली ।
१ वाघसणो ।
१ भेवो ।
१ अरटवाडो ।
१ पोसाळियो ।
१ आळियो ।
१ मांचाळो ।
१ लिखमीवास ।
१ कोरटो ।
१ नामी ।
१ उपमणो ।
१ चीवा गाव ।
१ पालडी बाहरली ।
१ राडवरा ।
१ वडगाव ।
१ वाचडा ।
१ डीघाडी ।
१ सीरोडी द्रगडारी ।
१ आपुरी ।
१ नागाणी ।
१ डीडलोद्र ।
१ अवेळ ।
१ वाचडा वीजो ।
१ माडावाडियो ।
१ वळदुरो ।

१२ आवू ऊपरला गाव[1]—

१ अचलगढ ।
१ उतोसा ।
१ देलवाडो ।
१ हेठामाटी ।
१ सेहुरो ।
१ साळ ।

1 आवू पर्वतके ऊपर १२ गाव ।

१ ओरीसो । १ वासथान ।
१ वासुदेव । १ उमरणी ।
१ नाहरळाव । १ रिपीकेस ।

९ श्रीमहादेवजी सारणेसरजीरा गाव[1]—

१ दतारखो । १ भामरा । १ माडावाडो ।
१ इकुदरडा । १ वाचाहडा । १ कोटडो ।
१ घाणा । १ पालसी । १ सोलोई ।

३० गाव तीसरा कहीजै[2]—

१ वागडियो । देवडारो उतन[3] । जाळोररा परगना – वडगाव, गूदाउरासू काकड[4] । साचोरसू कोस १० । सूर । आउवा पांचला साचोररासू एक सीव[5] छै । देवडा आपमल गोपाळदास नरहरदासरो उतन ।
१ थावर ।
१ चीहरडा ।
१ वीचवाडो ।
१ कवरला ।
१ बूसियो ।
१ मगराउवो ।

गाव एक साखिया[6]—

१ धानेरा । १ सातवाडो ।
१ धारवा । १ नानाउओ ।
१ सामळवाडो ।

२४ गाव सीरोहीरा । सोळ कियारो उतन । ऐही वडगांव, साचोररै काकड[7]—

१ सीहो ७००) १ राजोडो
१ सिरोहणी १ जाणावाडो ।

---

1 श्री सारणेश्वर महादेवजीके ९ गाव । 2 इन तीस गावोंका समूह 'तीस-रा' कहलाते हैं । 3 निवासस्थान (जागीरी) । 4 सीमा । 5 सीमा । 6 खरीफकी फसलके गाव 'इकसाखिया' अर्थात् एक साख (फसल) वाले कहलाते है । 7 ये भी वडगाव और साचोरकी सीमा पर स्थित है ।

१ जडियो । १ रिवियो ।
१ भूकाणो । १ माटपणा ।
१ आनापुर । १ रोहुरो ।
१ गळथळ । १ बेहडो ।
१ जाहडैदेटो । १ पीगियो ।
१ मेवडो । १ दुणोद्र ।

७७ गाव सांसण–वाभण, चारणा, भाटारा[1]–

१ पेसवा । चारणारो । १ धाचरियो ।
१ भाखर । आढारो । १ वराहील ।
१ कोजडो । १ मांडवा ।
१ लखमेर । १ उड । महेसदासनू ।
१ पुनपुरी । १ जाल्हकडी ।
१ धाधपुर । १ कुळदडो ।
१ लाज । १ डूगरी ।
१ फूलसरेड । १ वाटियो ।
१ रीछडी । १ साकदडो ।
१ वाभणहेडो । १ टमटमो ।
१ मोलेसरी । १ आभारी ।
१ कूचमो । १ वीरोळी । भाटारी ।
१ सोनाणी । १ वीरोळी । वाभणारी ।
१ सोलावास । १ वासणडो ।
१ मोरवडा । १ आहिचावो ।
१ माटासण । १ देवखेत ।
१ वाभणवाड । १ हाथळ ।
१ वान्रडा । १ जसोदर ।
१ वडोद्रो । १ पेरवा ।
१ सीभोतरो । १ बूटडी ।
१ चुडियालो । १ खोगड़ी ।

1 ये ७७ गाँव ब्राह्मण, चारण और भाटोंके शासनके हैं ।

१ मीटांण ।
१ बीजवा ।
१ ग्रासावाडो ।
१ ग्रहिवावो खुरदा ।
१ जाखवर ।
१ गोवील ।
१ ग्रैवडी । भाटारी ।
१ सेसू । त्रिवाडियारी ।
१ खोडादरो ।
१ जायल ।
१ नेनरवाडो ।
१ पातवर । चारणारो ।
१ ग्रोडवाडिया । चारणारो ।
१ कासधरा । धधवाडिया ।
खीवराजनू ।
१ मोरथलो ।
१ ग्रासादस ।
१ खाणा ।
१ मालावास ।
१ माडली ।
१ जुवादरो ।
१ वासडेसो । भाटारो ।
१ धुवावस ।
१ देलाणो । भाटारो ।
१ खुराडी । भाटारी ।
१ ताडतोली । वाभणारी ।
१ खाडायत । वाभणारी ।
१ कारोली । भाटारी ।
१ गणकी । भाटारी ।
१ पाडरी । भाटारी ।
१ पालडी । रावळारी ।
१ पीपळी । रावळारो ।
१ वाढेल । वाभणारी ।
१ पालडी । रावळारी ।
१ खड़बळोदो ।
१ तिथमी ।

## वात सीरोहीरा धणियां-पाटवियांरी, ग्राबू लियांरी[1]

ग्राबू पवारारै छै, सो तो घणा दिनारो छै । राजा प्रथीराज चहुवाणरै जैत पवार बडो सावत हुवो छै[2], जिण वेढ माहे प्रथीराजनू साहवी दी[3] । गोरी झालियो[4], तद जोसी जगजोत ग्राय कह्यो– "दिल्ली छत्रभग होय तिसडो जोग छै[5] ।" तरै जैत पवार कह्यो– "ग्राज वेढरै दिन म्हारै माथै छत्र माडो[6]" । ग्रा ग्रलाइ-वलाइ मोनू

1 सिरोहीके स्वामी और उनके पाटवियोकी (राजकुमारोकी) ग्राबू पर ग्रधिकार किये जाने सवधकी वात । 2 राजा पृथ्वीराज चौहानके पास जैत पंवार वडा वीर सामत हुग्रा है । 3 जिसने युद्धमे पृथ्वीराजको राज्य-वैभवसे सम्पन्न किया । 4 शहावुद्दीन गौरीको पकडा । 5 दिल्ली राज्यका छत्रभग हो ऐसा योग वन रहा है । 6 ग्राजके युद्धके दिन छत्र मेरे पर रख दो ।

प्रथीराजरी लागो[1] ।" पछै जेत पवार काम आयो, तिणरा पोतरा[2] आवू छै । रावळ कान्हडदे तिण दिन जाळोर धणी छै । तिण समै देवडा विजडरा वेटा–जसवत, समरो, लूणो, लूभो, लखो, तेजसी सरणुवारा भाखर सीरोहीरीमा[3] छै, तिणारी गड़ास्ध[4] आय रह्या छै । इणारै पग-ठाम काय न छै[5] । भाई पाचे ही आलोच करै छै[6]– "आपै तो सपूत छा । ज्यू त्यू कर पेट भरा छा, पिण काइक ठोड छोरवानू खाटीजै[7] । सु अै आवू लेणरो विचार करै छै[8] । तितरै[9] चारण १ पवारारो इणा तीरै[10] आयो । तिण चारण आगै दिलगीरी करण लागा–"जु एक तो माहरै धरती नही, नै भूखा[11], नै पाचेई भायारै पाच-पाच वेटिया, त्यानू वीद जुडै नही[12] ।" तरै चारण कह्यो–"इण वातरो किसो सोच करो । अै आवू वडा पवार-रजपूत । इणानू परणावो ।" तरै इणे कह्यो–"म्हे आज भूखा, पवार आवूरा धणी । माहरै परणीजै क न परणीजै[13] ।" तरै चारण कह्यो–"हू खवर करीस[14] ।" उटै आवू पाल्हण पवार राज करै तठै चारण गयो । कह्यो–"चहुवाणारै वीदणी[15] २५ छै । पचीस पवारानू दै छै ।" तरै पंवारै कह्यो–"रूडा ! परणीजस्या[16] ।" तरै किणहेक डाहे माणस कह्यो[17]–"जु अै काळपूछिया धरती नाडूळथा लेता आवै छै[18] । इणारै ना जाइजै[19] ।" तरै पवारै कह्यो–"म्हे पहला कह्यो, हमै ना कहा नही[20] ।" नै उण चारणनै कह्यो–"उणा चहुवाणारो एक जणो भाई आवू ओळ[21] रहै तो म्हे परणीजण आवा ।" चारण आयनै चहुवाणानू कह्यो–"ओळ दो तो परणीजै ।" तरै या एकरसू[22] तो कह्यो–"ओळ

---

1 पृथ्वीराजकी यह आधि-व्याधि मुझे प्राप्त हो । 2 पोते । 3 सिरोही प्रदेश । 4 पास । 5 इनके पास रहनेको कोई जगह नही है । 6 पाचो ही भाई विचार करते है । 7 किन्तु कोई एक जगह लडकोके लिये प्राप्त की जानी चाहिये । 8 अत ये आवू लेनेका विचार करते है । 9 इतनेमे । 10 पास । 11 गरीव । 12 उनको वर नही मिलते । 13 हमारे यहा वे विवाह करें या न करें । 14 मैं इसका पता लगाऊगा । 15 चौहानोके २५ दुलहिनें(कन्याएं) है । 16 अच्छी वात है, विवाह करेंगे । 17 तव किसी एक समझदार व्यक्तिने कहा । 18 ये दुष्ट नाडोलसे धरती लेते आ रहे हैं । 19 इनके यहा नही जाना चाहिये । 20 हमने पहले स्वीकार कर लिया, अव नाही नही करें । 21 वधक रूपमे । 22 एक वार ।

किसी मेला।" पछै भाई एक बोलियो–"जु वीजू तो काहे का[1], मूवा विगर आबू नही आवै। एकै ओळ साटै आवै तो ढील मतां करो[2]।" तरै लूणै कह्यो–"हूं जाइस[3]।" तरै चारणानू कह्यो–"म्हे भूखिया नै माहरै बेटी जरूर परणावणी[4]। वे ठाकुर आज म्हानू निवळा देखै छै तो म्हे ओळ पिण देस्या[5]।" यू थाप करनै[6] लूणानू ओळ मेलियो। उठै पवार १ वडो ठाकुर नै ओ लूणो आबू रयो[7]। नै पवार २५ वीद छेडावडै साथसू आया[8]। अठै सामेळो करायनै आण जानीवासै उतारिया[9]। घणी महमानी करी। भाग, अमल, दारू गाढा सहोरा किया[10]। साहारी[11] वेळा हुई तरै इणा रजपूता २५ मोटियारा छोकरानू[12] बैरारा वागा पहराया[13]। वीदणी कर वैसाणिया[14]। पटलीरी पाखती कटारिया छानी सीक राखी[15]। कह्यो–"म्हे फेरा लेणरी कहा तरै हुसियार हुईजो। कटारिया मार पाडजो।" यू केहनै जानीवासै जाय कह्यो–"साहेरी वेळा हुई छै, वीद हालो[16]।" जानी दारूथी विकळ हुवा था, थोडासा आदमियासू परणीजण आया। डोढीरै मुहडै ऊभा रहनै कह्यो[17]–'बीजा ऊभा रहो[18]। माहे माणस छै[19]। छा भूखा, पिण माहरै ठाकुराई छै[20]। यू कहि सारा बारै राखिया। वीदानू माहे लिया[21]। चवरिया माहे बैसाणिया। हथळेवा वाभण जोडिया[22]। मोटियारै हाथ पीडा झालिया[23]। तरै वाभण

---

1 दूसरी वात तो क्या कहूँ। 2 एक ही मनुष्य-बन्धकके बदलेमे आवू आता है तो देरी नही करो। 3 मै जाऊगा। 4 हम गरीव है लेकिन दया करें हमको लडकियोका विवाह करना है। 5 वे ठाकुर आज हमको निर्बल समझते है तो हम 'ओळ' भी देंगे। 6 इस प्रकार निश्चय करके। 7 वहा एक वडा पवार ठाकुर जिसके पास यह लूणा 'ओळ' रूपमे आवू जा कर रहा। 8 और पवारोके २५ मनुष्य दुल्होके रूपमे बरातियोके साथ आये। 9 यहा साम्हेला (अगवानी) करा कर जनिवासेमे ला कर ठहरा दिये। 10 भग, अफीम, शराव आदिसे वहुत खातिरदारी की। 11 पाणिग्रहण। 12/13 जवान छोकरोको स्त्रियोके वस्त्र पहिनाये। 14 दुलहिनें वना करके विठा दिया। 15 ओढनेकी पटली घाघरेगे खोसनेकी जगहमे गुप्त रूपसे रख दी। 16 दूल्हे चलें। 17 ड्योढीके द्वार पर खडे रह कर कहा। 18 दूसरे यहा ही खडे रहे। 19 अन्दर जनाना है। 20 हम असमर्थ है किन्तु हमारे ठकुराई तो है। 21 दुल्होको अदर लिया। 22 ब्राह्मणोने पाणिग्रहण करवाया। 23 युवकोने मेहदी-पिंड वाले हाथोको पकडा।

कह्यो–'उठो ! फेरा ल्यो ।" तरै लोह कियो[1] । पचीसानू ही कूट मारिया । जानीवासै ऊपर जायनै जांनियानू कूट मारिया । जानी सोह मारिया[2] । आवू भाई लूणो थो तठै खवर मेलणी । तितरै एकण मांहेरै रजपूत कह्यो–"हू जाईस ।" तरै कह्यो–"तू क्यूकर जाईस ?" तरै कह्यो–"जाचक हुइ जाईस ।" तरै ओ रजपूत जाचक होयनै उठै गयो । ओ ठाकुर चहुवाण नै पवार वाता करता था उठै आय कह्यो–"वधाई, व्याह हुवो ।" तरै लूणो वोलियो–'व्याह हुवो ?" वळै पूछियो[3]–"व्याह हुवो ? जस किणनू हुवो[4] ?" तरै कह्यो–"जस चहुवाणांनू हुवो नै पवारारी वडी भगत हुई[5] ।" तरै चहुवांण लूणै कह्यो पंवार दलपतनू–"जु आवू माहरो छै[6] । वे मारिया[7] । जिसडो तू व्है तिसडो हू ई[8] ।" माहोमाहि दलपत नै लूणो लड मूवा । तितरै वे पिण वानू मारनै चढिया था सु आय आवू चढिया[9] । दुहाई फेरी[10]। चहुवाणै कहै छै इण तरै आवू खाटियो[11] । समत १२१६ माह वदि १, चहुवांण तेजसी विजडरो वेटो पाट वैठो[12] ।

तरै पवार केएक तो कठीही गया[13] । केएक तेजसीरै चाकर रह्या[14] । सु सिरदार पवार हुतो, तिणरो वेटो मेरो हुतो, सु आवूरी धरती माहे हीज तेजसीरो चाकर हुय रह्यो थो । तिण मेरारो वहन लजसो तेजसी परणियो हुतो[15] सु उणनू गाव ४ तथा ५ पटै दिया । सु ओ मेरो तेजसीरो साळो । तेजसी कनै आवै तरै तेजसी मेरानू पूछै "मेरा ! आवू म्हारी क थारी ?" तरै मेरो कहै–"आवू राजरी[16]।"

---

1 तव कटारियोसे वार किये । 2 समस्त वरातियोको मार दिया । 3 पुन पूछा । 4 यश किनको मिला ? (साकेतिक प्रश्न है । तात्पर्य विजय किसकी हुई ?) 5 तव कहा–यश चौहानोको मिला और पँवारोकी वडी खातिरदारी हुई अर्थात्–विजय चौहानोकी हुई और पँवार सव मारे गये । 6 आवू हमारा है । 7 वे (पँवार) मारे गये । 8 अव जैसा तू मेरेसे व्यवहार करेगा वैसा मै भी । 9 इतनेमे वे भी उनको (पँवारोको) मार कर चढे थे सो आवू आ पहुँचे । 10 अपने शासनकी घोपणा की । 11 कहा जाता है कि चौहानोने इस प्रकार आवू प्राप्त किया । 12 वि स १२१६ माघ कृ १को चौहान विजडका पुत्र तेजसी सिंहासन पर वैठा । 13 तव पँवार कई तो कही चले गये । 14 और कई तेजसीके सेवक वन कर रहे । 15 उस मेराकी वहन लजसी तेजसीको व्याही गई थी । 16 आवू आपकी ।

सु तेजसी पाचे-दसे दिन मेरानू आ वात विगर पूछिया नही रहे । सु मेरो मुहडै तो क्यू फेर कहै नही[1], पिण मनमाहे आवटै[2] । बळै घणो[3] । ऊणो जाय[4] । डील दूबळो हूतो जाय । तिण समै मेरारै काको एक आधो सु मिलणनू आयो छै । तिणरै मेरो पगा लागो । तरै उण आधै काकै मेरारै मुहडै, छाती, हाथा हाथ फेरियो । तरै उण डील दूबळो जाणियो । तरै आधै काकै मेरानू कह्यो–"मेरा ! न्याय पवारासू आबू गयो, वासै तो सारीखा भीव हुवा[5] ?" तरै मेरे कह्यो–"काका ! रजपूत तो रूडो[6] छू, पिण मोनू सासतो दगध घणो छै, तिणसू हू हेठो-हेठो जाऊ छू[7] ।" तरै काकै पूछियो–तोनू किसो दगध छै ?" तरै मेरै कह्यो–"हू जरैही तेजसी रावळ कनै जाऊ तरै मोनू कहै–"मेरा ! आबू थारो किना[8] म्हारो ?' तरै हू मुहडै तो कहू–"आबू राजरो" पिण हू मन माहे घणो आवटू । तरै काकै कह्यो–"फिट मेरा ! जायै जीवनू मरणो छै[9] । हमरकै भेळा हुय जास्या[10] । देखा, गोविद कासू करै[11] । पिण एक भलो देवडारो सिरदार कनै मोनू वैसाणे[12] नै तोनू तेजसी कहै—"मेरा ! आबू कुणरो[13] ?" तरै तू कहै[14]—"आबू म्हारो, म्हारा बापरो, म्हारा दादारो । तू ऊपरवाडारो साड पैठो[15] ।"

## कवित्त छप्पय सीरोहीरा टीकायतांरा परयावलीरो आसियो मालो कहै[16]

### कवित्त

आदि अनादि असभव आप मुद्रा ऊपाए ।
ओकार अप्पार पार प्रमही नहि पाए ॥

---

1 सो मेरा उसके मुह पर तो कुछ कहता नही । 2 किन्तु मनमे घुटता है । 3 बहुत जलता है । 4 कम होता जा रहा है । 5 मेरा ! पँवारोसे आबू गया यह न्यायकी बात है क्योकि पीछे तो तेरे जैसे भीम (भीम जैसा पराक्रमी) ही तो रहे हैं ? 6 अच्छा । 7 किन्तु मुझको निरन्तर जलन बहुत है जिससे मै दुर्बल होता जा रहा हूँ । 8 किम्वा । 9 धिक्कार मेरा ! जन्मे हुए जीवको मरना है । 10 अबकी साथ हो कर जायेंगे । 11 देखें भगवान गोविन्द क्या करते हैं । 12 बिठावे । 13 आबू किसका ? 14 तब । 15 तू उलटे मार्गका साड घुस गया । 16 परयावली गावके चारण आसिया मालाके कहे हुये सिरोहीके टीकायतोके कवित्त छप्पय ।

कालिका जग कृतो कंधरूढा कौमारी ।
कमळा चपळा कळा पळा प्रमहंस पियारी ॥
देवांण विद्या दत्तावरी देवी धनदाता वरी ।
चहुवाण वस रूपक[1] चवां[2] सारसत्त भुवनेश्वरी ॥ १

वस चहुवाण वखाण आण[3] सुरतांणां ऊपर ।
अनळकुंड[4] उतपत्त मुद्राकी चद महेसुर ॥
मार मार वित्थार वार ऊठियो विकासै ।
खुरासांणां खळभळै निहग सावच्चा नासै ॥
सवाळख सिध मागर सतर जिणे खड जीता चडी ।
त्यै वस समो नह को[5] तियग को संग्रांम न समवड़ी[6]॥ २

जेण[7] वस जिदराव जेण गोगो जगमग्गो ।
जेण वस जैतराव जेण सोमेसर जग्गो ॥
तेण[8] वंस प्रथिमल्ल साल[9] हूवो सत्राणा[10] ।
गढ चौरासी ग्रहे साभि वधै सुरताणा ॥
कैवास सूर सारखि क्रियत जास मोहल्ल न पामता ।
चौतीस लाख चतुरग दळ हुया आयससह[11] हालता[12]॥ ३

तेण डडे पंडुवां खाण त्रवमे ऊलाळै ।
माळवो मलवटै पैज[13] दक्षिणहू पाळै ॥
गूजरवै पोह[14] ग्रहे सिंध समुहो नीहट्टै ।
देतो परदक्षणा आव दिल्ली अरहट्टे ॥
अन-अन्न देस धर गिर अवर सकोडै ससार सहि ।
चहुवाण पिथमसू चापडै गज्जणवै[15] सुरताण गहि ॥ ४

गज्जनवै सुग्रहै लीध भडार पहल्ली ।
दूजै गयंद तुरग गोरिया[16] नीद-गहल्ली[17] ॥
तीजै साह महत लेय नव लाख वसावै ।

1 वर्णन, काव्य । 2 कहता हू । 3 दुहाई, घोषणा, शासन । 4 अग्निकुण्ड । 5 समान । 6 समान । 7 जिस । 8 उस । 9 शल्यरूप । 10 शत्रुओके लिए । 11 आज्ञा । 12 चलते । 13 प्रतिज्ञा । 14 गुजरातके स्वामियोको । 15 नाश करने वाला । 16 स्त्रिया । 17 निद्रावश, नीदमे मस्त ।

चौथे मारग माल भोग[1] सजुगत भरावै ।।
पचमै इड प्रथिमल्लरै एह वात मानी असुर ।
दस सहस लाद अल्लावदी पूरूवै अजमेरपुर ।। ५

प्रथीमाल परमांण वधै चहुवाण तणै[2] बळ ।
तेण वस बहन्नाल दान दीपियो दसावळ[3] ।।
बळ बाहड दे जेण जेण पडवो प्रजाळै ।
चाहडदे अस चढै वैर गजै चौवाळै ।।
अजमेर हुवा नर एतला[4] नवलक्खी उग्रह लिया ।
सीलत[5] पाण सुरताणसू कदळ[6] सुरताणी किया ।। ६

रायसिघ तिण पाट रहै सेवै तुरकाणौ ।
लाखणसी धर छाड हुवो नाडूलो राणौ ।।
सेवा कीध सकत्त वधै वरदांन वडाई ।
चीतोडगढ वधनोर हुवो चहु मान सवाई ।।
चहुवाण वस रूपक[7] वडो रावा गजन वैरडै[8] ।
वरदान आसल लीधौ वडै खुरासाणां ऊपर खडै ।। ७

तेरैह सहस तुरग सकत[9] वरदान समप्पै ।
नाडूलो नाडूल थान आसावर थप्पै ।।
पाटण ऊली प्रोळ[10] दाण चहुवाण उग्राहै ।
पच लक्ख पोकरण वरस वरसै निरबाहै ।।
मेवाड मडळ लाखो डडै पसरै पूरब ही परै ।
त्रिहु राय सीस लाखण तपै ज्यौ आरभै त्यौ करै ।। ८

श्रग लाखण सपनो[11] पाट सोही परगट्टे ।
सोहीरै महेद्रराव जेण खत्र दूणो खट्टे ।।
महेद्र वस मछरीक[12] सुवन आलण सपन्नो[13] ।
आलणरै असराव आस जिदराव उपन्नो[14] ।।

---

1 कर, मालगुजारी । 2 के । 3 दसो दिशाओमे । 4 इतने । 5 प्राप्त करता है । 6 नाश । 7 यश । 8 वैरके बदलेमे । 9 शक्ति, देवी । 10 पाटनकी मुख्य पौल पर । 11 लाखन जब स्वर्ग चला गया । 12 जोरावर । 13 सम्पन्न हुआ । 14 उत्पन्न हुआ ।

जीदराव तणै कीतू जिसा[1] जे लीधो जाळोर जुडि ।
कर त्यू समो पूजै न को त्यैस कूण पूजंत तुडि[2] ॥ ६
सिवियाणो[3] गिरसोन[4] जेण एकण दिन जीता ।
वीरनरायण वस वहै वेसास वदीता ॥
दहियावत[5] ढुढार मार संग्राम मनावै ।
कर सह वरस कटक्क पछै नाडूळ पजावै ॥
सुरताण सरसवळ सामहा आप प्राण अवरज्जिया ।
कीतू कधार मछरीक कुळ गह एवडै[6] गरज्जिया ॥ १०
विवनै कीतू वसुह सुतन ऊठिया सवाई ।
सावतसी महणसी वेध वीजाड वडाई ॥
वीजड तणै विग्राव पाच पाचेही पाडव पर[7] ।
एकैके आगाह आभ गह राखै असमर[8] ॥
जसवत समर लूणो जिसा लोहगढ लूभा लखा ।
इक एक विरद-गह[9] ऊठिया मार मार करता मुखा ॥ ११
अरवद्दह[10] परमार काह्न[11] ऐका कणियागिर[12] ।
सीह पच सद्दूणवै सहै कोटा ताकै सिर ॥
वीजडरा धर वेध[13] वसै विन लोप विचाळै ।
क्रामत[14] हेका[15] करै चक्र हेका हू चाळै ॥
मावै नही वीहै न मन पोहव[16] प्रमाण प्रगट्टिया ।
देवडा दूट[17] देसा दहण आग खाय कर ऊठिया ॥ १२
पंचवीस पमार तेड जाना तिड़ तोडै ।
थाणै गूजरखड मुगल मुडाहड मोडै ॥
लूणो सामो लोह मुवो दळ दळपत मारै ।

---

1 जैसा । 2 उसके समान कौन हो सकता है । 3 मारवाडका इतिहास-प्रसिद्ध सिवाना नगर । 4 गिरसोन = सोनगिरि = स्वर्णगिरि, जालोरके किलेका नाम । 5 दहिया राजपूतोका प्रदेश । 6 इस प्रकार । 7 समान । 8 तलवार । 9 कीर्तिमान् । 10 अर्वुद (आबू) । 11 कान्हडदे । 12 जालोरका किला कनकगिरि । 13 युद्ध । 14 पौरुष । 15 एक वार । 16 पृथ्वी । 17 प्रवल ।

तेजसीह अरबद्द सेस पीतियै वधारै ।।
पग आण धरा गिर पालटै घणू विरद आव्रत घणा ।
सुरथान गयां राखै सको[1] तपै तुग वीजड तणा ।। १३
तेजसीह पमार ऊभैचूकै[2] आवट्टै ।
दसमो आह लूभेण पुत्रते सलख प्रगट्टै ।।
सलख सूर सग्राम सलख सुरतांणा सहल्लै[3] ।
सलखतणौ रिणमाल भूझ भर दूणो झल्लै ।।
सरणियै वसै रिडमल सुहड खडाडडा खडखडै ।
चहुवाण जिकण[4] ऊपर वडै घण नरिद धायै घडै ।। १४
अरबदही रिणमाल अनैवी[5] कळका चोळै ।
सोळ किया सहाय बोल हुय भारी बोलै ।।
करै कटक अरजक्क[6] निवह देवडो निहट्टै ।
बोडो विरद पगार आव वीसर आहट्टै ।।
पळ खड चड भुवडड पिड खित[7] कारण खळ[8] खुट्टिया[9] ।
चापडै वीस चवदह चडै आरोपण आवट्टिया ।। १५
दळ बोडा देवडा सहित विकळत सघारै ।
रहै हेक रजपूत तेण रिणमल्लह मारै ।।
तेण पाट तुडताण वधै सोभ्रम्म वडाई ।
सोभ्रम्मरै सहसमल सूररै क्रन्न सवाई ।।
चहुवाण देस च्यारह चरै पग हि न हल्लै पाधरै[10] ।
अरबद्द राव बळ आपरै, जा आरभै ता करै ।। १६
कुभक्रन्न अरबद्द, लियो सरणुओ सहेतो ।
सहसमल्ल सुरताण, जाय श्रगवास[11] पहू तो[12] ।।
कर ऊपर कुतबदी, इतो क्यू वेगो आवै ।
गयो राण ओ घाट, घाट परगह पाडावै ।।
वीटेव दुरग थाणै वहै, पनरै ती पालट्टिया ।

1 सबको । 2 उसी समय, एकदम । 3 शल्य रूप लगता है । 4 जिसके । 5 अपने मतसे चलने वाला । 6 शत्रु । 7 पृथ्वी । 8 शत्रु । 9 नाश किया । 10 सीधे । 11 स्वर्गवास । 12 पहुँचा ।

मछरीक सुकर मेवाडरा, असंख सेर आहुट्टिया[1]॥ १७
पग आणै धर प्राण, मरण साहसमल मग्गै।
तेरग पाट लख धीर, मयक ऊगै जगमग्गै॥
जे वालोतो सीहू, नला आकासह नांखै।
ओवासै ऊससै, ढाण कोटानू धाखै॥
सिवपुरी वसै ग्रह सरणुवो, देसा ऊपर देखियो।
वळ सवळ महावळ वोलियो,परगह[2]आप न पेखियो[3]॥ १८
सोळ कां संग्राम, सात फेरा[4] सघारै।
गोखू वर गाहटै[5], मछर चड डूगर मारै॥
डोडियाळ काचैल, सहत डडै वालीसां।
कोळीया कडजकाढ, चाप तीसा चोवीसा॥
जिण सयल[6] तणा नद नोर जिम,जीता सेन असख जिण।
लखधीर तरणै सुरताण लग,ताप न खिम्मै[7]रोद्रतिरग॥ १९
धर खाटै[8] लखधीर, दीध जगमाल हमीरा।
विनै[9] पाट पत वेध, हुवै वेहू[10] वर वीरा॥
एक राव अरवद्द, वियो[11] सरणुवै वयट्ठो[12]।
एकाएक अगाह[13], एक एकाह अपुट्ठो[14]॥
राय भाण अनै सत नथ राय,द्रोखै आरख वेधियो।
भुय तणो ग्रास विहु भाइया, आधोआध निमधियो[15]॥ २०
दळ मेळै जगमाल, पीड हम्मीर पहारै।
विह[16] लिखियो धरवेध, ताम सहवर सघारै॥
रसतर सघण लील राज, वक लाल विवन्नो।
तेण[17] पाट तुडताण, पछै अखई उतपन्नो॥
अखैराज अरक ओहासियो,नर नरद भजेव निस।
कळकळै किरण दीपै कमळ,दस ही दिस चत्वार दिस॥ २१

---

1 भिडे। 2 सेना। 3 देखा। 4 वार, दफा। 5 नाश करता है। 6 पहाड। 7 सहन करता है। 8 प्राप्त करता है। 9 दोनो। 10 दोनो। 11 दूसरा। 12 वैठा। 13 एक एकसे आगे। 14 एक एकसे विरुद्ध। 15 वाँट लिया। 16 विधाता। 17 जिसके।

जिकै इदु फणइद कदतां लगै निकासै ।
जुध प्रवीण रढराण[1] पाण त्या दूरि पियासै ॥
जिकै छत्र गज गत्त जत्र त्या हुये अलग्गा ।
जिकै काळ लकाळ[2] लुळै लुळ पाये लग्गा ॥
पूरब पछिम उत्तर दखिण कीती रेणे खळभळै ।
अखैराज अरक ओहासियो हुय नरद हालोहळै ॥ २२
बध खान आप बळ माण मेजे[3] मिलकाणो ।
धरा राज धर धूरण, लियो चापै लोईयाणो ॥
डोडियाळकी बेल, वास गोखंभ वसावै ।
चापै तीस चौबीस, मार धर सत्र[4] मनावै ॥
पतसाह सूर दसवार पिड, जे ढढोळै गो दळा ।
अखैराज साल इळ[5] अतरै, उरह निमधै एतळा[6] ॥ २३
कोड प्रवाडा[7] करै, सरग[8] आखई[9] साप्रतो[10] ।
रायसिंघ तिण पाट, अरक वेधै ऊगतो ॥
किरण भाळ भळहळै, अब अबर[11] ओहासै ।
सपतदीप सारीख वदन उद्योत विकासै ॥
नव मेक[12] छत्र छाया निजर, वरन अठारह बिळकुळै ।
पह[13] सिंघ प्रतप्पै[14] सिवपुरी, जोत बिब[15] जिम जळहळै ॥ २४
काय[16] भोज कीकम्म[17], काय रुद्रनाग अरज्जन ।
काय रामण[18] बळराज[19], काय जुजठळ[20] अरगजन ॥
अन्नकाय[21] हरचद[22] अन्न कळजुग्ग[23] कहता ।
काय समर दाधीच काय जीवाहन जता ॥
सुजसिंघ सही सुजसिंघ सत एह न आरख[24] आवरा[25] ।
काय वात न मानै पर किणी, ऋग्ग[26] दीध जळतो करा ॥ २५

---

1 प्रतिज्ञा पालनके लिये प्राणोको न्योछावर करने वाला वीर । 2 जोरावर । 3 मिटा दिये । 4 शत्रु । 5 पृथ्वी । 6 इतने । 7 युद्ध । 8 स्वर्ग । 9 कहता है । 10 प्रत्यक्ष । 11 आकाश । 12 एक । 13 स्वामी । 14 प्रतापवान् हो रहा है । 15 सूर्य । 16 क्या तो । 17 विक्रम । 18 रावण । 19 राजा वलि । 20 युधिष्ठिर । 21 राजा कर्ण । 22 हरिश्चन्द्र । 23 कलियुग । 24 समानता । 25 दूसरोमे । 26 (१) खड्ग, (२) हाथ ।

कवित्त राव रायसिंघ सीरोहियारा, आसियो करमसी खीवसरोत कहै—

## कवित्त

जे ऊपररो तमर, मुवर वैहवार लहंतो।
जिण थू आ ऊपरी, फाड फडवक फाडंतो ॥
जिण समपै सोव्रन्न[1], जेण वदरा[2] वधावै।
जिण सोझावै हाट, जेण लासा लूसावै ॥
सुनिझरस सभार सदन, [घणा] क्रपणा तणो विरामियो[3]।
कर सुपर कीति[4]कवि करमसी, रायसिंघ विसरामियो[5]॥ १

जहा अव फळ वछस[6], तहा नीव फळ न पामस[7]।
जहां चिणी पकवांन, तहां को कसरय मानस ॥
जहा जायसू जपै, तहा आदर न पायस।
जहा उपायस[8] वोहत, तहा वोहतेरो खायस[9] ॥
ओखद दान देसी कवरा, दन[10]हीणा विदोपियै।
हय हय सरीर छूटो नही, रायसिंघ अवरोखियै ॥ २

राव राय रखपाळ[11], राव रहडण[12]रिम[13]राहा।
राव रूप रायहरा, राव वैरी पतसाहां ॥
राव रोर विड्डार, राव ससार उधारै।
राव ध्रम्म ऊधरै राव इक्कोतर तारै ॥
तरा जास पास नय कुळ तणी, सिवै भोर आचार सही।
अभिनमो क्रन्न दानेसवर, रायसिंघ विवनोम कही ॥ ३

केहिज राव राखिया, भोम निगमी[14] भ्रामता।
केहिज राव राखिया, भये खुरसांरा पुळता[15] ॥
केहिज लोभ राखिया, तणा पतसाह उदाळै।
केहिज रजकर[16] राखिया महारोर वै दुकाळै ॥

---

1 सुवर्ण। 2 सम्पत्ति, धन। 3 मृत्युको प्राप्त हुआ, मर गया। 4 कीर्ति। 5 मर गया। 6 वृक्ष। 7 प्राप्त होता है। 8 उत्पत्ति, पैदाइश। 9 खाया जाता है, खाहिश। 10 (१) दिन, (२) दान। 11 रक्षा करने वाला। 12 रोकने वाला, मारने वाला। 13 शत्रु। 14 दे दी। 15 भागते हुओको। 16 दीन, गरीब।

रिण खेत पिसण[1] केहि राखिया कह्नि काय कवि पात्र कहि।
अभिनमो क्रन्न दानेसवर, रायसिघ विवनोम कहि ।। ४

कुण चारण कुण चड, कवण वभण[2] वभेसुर।
कुण जोगी कुण जती, कवण दरवेस दिगवर ।।
कुण पडित कुण पात्र, कवण खणी[3] परदेसी।
जाचेवा जेतल नट्टनीय, भटनीय निवेसी ।।
रिण हुवौ सीस दुहिला रहै, रुळियो नह चूकै रिणा।
हिदवै[4] राव विवनै हुवै, मोटो छैहो मागणा ।। ५

क हिम[5] मेर[6] डोल है, क हिम जळहळ है सायर[7]।
क हिम चद लुक्कि है, क हिम छळहळ देवायर[8] ।।
क हिम वीस ब्रहमड, गाढ[9] छाडै हेकागळ[10]।
क हिम सपत पाताळ चळी जय हू त अणच्चळ[11] ।।
खडहडै इद्र काळ तरै[12], पडै रुद्र ब्रहमा पडै।
रूपक[13] नाम रायसिघरो, तोही जरा नह आमडै[14] ।। ६

वित्त सु मारग खरचियो, चित्त लीणौ[15] हर पाए[16]।
जिसो वेद वाचियो, तिसी परसिद्धी पाए ।।
सुरापान नही कियो, कदै परनार न रत्तो।
सयल धरम साचवै, परम दएहि सप्रत्तो[17] ।।
आखत[18] ब्रद्द[19] तुवर अधिक अपछर[20] आरत्ती करै।
सुर भुवण राव प्रवाडमल[21], जयजयकार उवच्चरै[22] ।। ७

।। इति सीरोहीरा धणिया देवडारी ख्यात सपूर्णम् ।।
लिखत वीठू पनोसीह थळिरो[23] ।। वाचै जिण सिरदारसू
जैश्रीरुघनाथजीरी बचावसी[24]।

---

1 शत्रु। 2 ब्राह्मण। 3 साधु। 4 हिन्दुस्थान। 5 (१) कभी, (२) यदि। 6 सुमेरु पर्वत। 7 सागर। 8 सूर्य, दिवाकर। 9 शक्ति। 10 एक वार। 11 पर्वत। 12 समय पा कर। 13 काव्य-कीर्ति। 14 मिटना, नाश होना। 15 लीन। 16 पांव। 17 प्राप्त हुआ। 18 कहता है। 19 विरुद्ध। 20 अप्सराएं। 21 जोरावर, प्रवाडे करने वाला वीर। 22 उच्चारण करते है। 23 सीहथलके वीठू पन्ना द्वारा लिखित। 24 जो महानुभाव इसको पढें उनको 'जयश्री रघुनाथजीकी' मालूम हो।

# अथ भायलां रजपूतांरी ख्यात लिख्यते

पवारारी पैंतीस साख, त्या माहे एक साख भायलारी। भायलारो माथासरो गाव रोहीसी मगरा नीचैवळी छै, तठै नै सिवाणचीनू[1]।

१ महारिख रिखेस्वर।

२ साचर महारिखरो।

३ उत्तमरिख।

४ पदमसी।

५ सजन भायल।

१ सजन भायल पदमसीरो, वडो रजपूत हुवो। सजनरै चापा सीधलरी बैर देवडी चापानू छोड सजनरै घरै आय पैठी[2]। वासाथी चापो आयो[3]। सजन देवडी सूता ऊपर, तरै देवडीरी चोटी नै छुरी सजनरी छाती ऊपर मेल गयो[4]। सवारे सजन वांसै चढनै आपडियो[5]। माहोमाह लड मुवा। दोनो ही अमल[6] खायनै, सजन चापानू लोह कियो, चापै सजननू लोह कियो। वेऊ मुवा[7]। देवडी वेवाहो वासै वळी[8]। सिवाणै सजनरी गिडी छै[9]। सजन, राव सातळरो दोहीतरो[10] अलावदी पातसाहसू मिळ सिवाणो लेरायो।

२ राणो रावळो सजनरो, राव सोमरो दोहीतरो[11]। तिण अलावदीननू मिळनै गढ लियो। पछै पातसाहजी सिवाणो रावळानू हीज दियो। पछै वळे पातसाह रावळानू मारियो[12]।

---

1 भायलोका मुख्य गाँव रोहीसी पहाडीकी नीचाईमे है वहा और मारवाडकी सिवानची पट्टीमे। 2 चापा सीधलीकी स्त्री चाँपाको छोड कर सजनके घरमे आ घुसी। 3 पीछेसे चापा आया। 4 रख गया। 5 प्रात सजनने उसके पीछे चढ कर उसे पकड लिया। 6 अफीम। 7 दोनो मर गये। 8 देवडी दोनोहीके पीछे जल कर सती हुई। 9 सिवानामे सजनकी गढी है। 10 दोहिता। 11 राणा रावळा सजनका वेटा और राव सोमका दोहिता। 12 जिसने अल्लाउद्दीनसे मिल कर सिवानेका गढ लिया, जिसको वादमे वादशाहने सिवाने रावळेको ही दे दिया किन्तु पीछे वादशाहने रावळेको मरवा डाला।

**नोट**—यहा सजन भायल से भायल राजपूतोकी वशावली दी गई है। नामोंके पूर्वकी सख्या, सजनके पीछेकी वशानुक्रम सख्या है।

३ सिलार रावळारो[1] ।
४ जैसिंघ सिलाररो ।
५ वीको जयसिंघरो ।
६ वीरम वीकारो ।
७ रतनो वीरमरो ।
८ भुजवळ रतनारो ।
९ साकर भुजवळरो ।
१० सादूळ साकररो । गाव मौडी पटै[2] ।
११ सावळो ।
१२ देईदास ।
११ सावतसी, सादूळरो ।
११ रायसिंघ सादूळरो ।
१० दुरगो साकररो । रेवडे काम आयो[3]।
११ जैतो ।
१२ रामसिंघ ।
१२ रायसिंघ ।
१० राव वणवीर साकररो राव चद्रसेणरै राज सोनिगरा थलूडै भूबिया तठै काम आयो[4] ।
१० वैरसल साकररो । घुवरोट ऊपर जाळोररो साथ आयो तठै काम आयो[5] ।
१० डूगरसी साकररो ।
९ कलो भुजवळरो ।
१० गोयद ।
११ ठाकुरसी ।

---

1 सिलार रावळके पुत्र । 2 सिवानेके पासका मवडी गाँव साकरके बेटे सादूलके पट्टे मे । 3 साकरका बेटा दुर्गा रतवडेकी लडाईमे काम आया । 4 साकरका बेटा राव वणवीर, राव चन्द्रसेनके राज्य-कालमे जब सोनिगरा चौहानोने थलूडे गाँव पर आक्रमण किया उसमे काम आ गया । 5 साकरका बेटा वैरसल, जालोरकी सेना घूघरोट ऊपर चढ आई तब काम आया ।

११ खीवो ।

११ रामसिंघ ।

९ दलो भुजवळरो । मौडी काम आयो ।

९ सिखरो भुजबळरो । जाळोर काम आयो ।

११ पतो सिखरारो । आसकरण उग्रसेन मारियो तठै काम आयो[1] ।

११ मानो ।

९ काधळ भुजवळरो ।

९ सूजो भुजवळरो ।

४ मालो सिलाररो । मालानू खोहराव (खोह) रै भाई मारियो[2] ।

५ अमरो मालावत । माला साथै मारियो ।

६ साहुर अमरारो ।

७ वरसिंघ । जैतमालोतांसू वेढ हुई तठै माराणो[3] ।

८ गोयंद । मादडी सीरोहीरो साथ जैतमालोता ऊपर आयो तठै काम आयो[4] ।

९ खीदो गोयदरो । जाळोररो खान घूघरोट ऊपर आयो तठै काम आयो[5] ।

१० जैसो खीदारो ।

११ कचरो जैसारो । अरजियाणै वसै[6] ।

१२ काधळ कचरारौ । अरजियाणै[7] ।

१२ रामसिंघ कचरारो । मूठली वसै[8] ।

१२ तोगो कचरारो ।

१२ पंचाइण कचरारो ।

---

1 आसकरणने उग्रसेनको मारा वहा सिखराका बेटा पत्ता भी काम आ गया । 2 माला सिलारका बेटा । मालाको खोहरा (?) के भाईने मारा । 3 वरसिंह, जैतमालोतोसे लडाई हुई वहा मारा गया । 4 गोयद, मादडीमे सिरोहीकी सेना जैतमालोतो पर चढ कर आई उसमे काम आया । 5 गोयदका बेटा खीदा, जालोरका खान घूघरोट पर चढ कर आया उस लडाईमे काम आया । 6 जैसाका बेटा कचरा अरजियाणेमे रहता है । 7 कचराका बेटा काधल अरजियाणे गावमे रहता है । 8 रामसिंह कचरेका बेटा, मूठली गावमे रहता है ।

१२ जसो कचरारो ।

१२ ठाकुर कचरारो ।

१२ मेघो कचरारो ।

११ ऊदो जैसारो ।

१२ केसो ।

११ सूजो जैसारो ।

१२ नारायण ।

१२ दूदो (देदो) ।

११ जीवो जैसारो ।

१२ रायसिंह ।

११ ईसर जैसारो ।

१० हेमराज खीदावत । गूढा ऊपर तुरक आया तठै माराणो[1] ।

९ सकतो गोयदरो ।

५ वीरम मालारो । घूघरोट माहे भाया मारियो[2] ।

६ रावत सोभो । कुडळरै पवारै घूघरोट मारियो[3] ।

७ राजधर । रावत सोभा साथ काम आयो[4] ।

८ वैणो राजधररो ।

९ रतनो वैणारो । घूघरोट पटै थी । मु० नारायणरा बेटा मारिया था तिण वैर माहे करण पीथावत मारियो । राजा भीव राणावतनू जाळोर, तद रतनो जाळोर दिसी जाइ रह्यो थो तठै करन जाय मारियो[5] ।

१० डूगरसी स० १६८० सेवटै मारियो[6] ।

---

1 खीदेका बेटा हेमराज, गुढे ऊपर तुर्क चढ कर आये तब मारा गया । 2 मालाके पुत्र वीरमको भाइयोने घूघरोट गाँवमे मार दिया । 3 रावत सोभाको कुडल गाँवके पँवारोने घूघरोट गाँवमे मारा । 4 राजधर अपने पिता सोभाके साथ काम आया । 5 वैणाका बेटा रतना, जिसके पट्टेमे घूँघरोट गाँव था । मुहणोत नारायणके बेटोको इसने मारा था, उस वैरके वदलेमे पीथाके पुत्र करणने इसको मार दिया । राजा भीम राणावतका जब जालोर पर अधिकार था,तब रतना जालोरकी ओर जा कर रह गया तो वहा जा कर करणने इसको मारा । 6 सेवटे राजपूतोने डूँगरसीको स० १६८० मे मारा ।

१० जैमल रतनावतनू मु० सुदरदास मारियो[1] ।

११ अमरो जैमलरो ।

११ दूदो जैमलरो ।

१० सिखरो रतनारो । स० १६८२ ब्रहानपुर मुवो[2] ।

१० अमरो रतनारो । तिमरणीरी मुहिममे चोरी की तद राजा गजसिंघ गरदन मरायो[3] ।

४ सूजो सिलाररो । तिणरो वैसणो गाव पीपलोण[4] ।

५ कूभो सूजारो ।

६ वीरम कूभारो । वीरम चांपा चहुवाणरी वैर सवेरी आणी तिणमे मारियो[5] ।

७ नाथो वीरमरो ।

८ राजसी नाथारो । भाया परो काढियो, तरै राणारै देसमे गयो थो तठै मारियो[6] ।

९ रामदास राजसीरो ।

१० मदो रामदासरो । गाव पीपलोण[7] ।

११ किसनो

१२ स्यामसिंघ ।

११ पतो मदारो ।

१२ जसो ।

१२ उरजन ।

११ कमो मदारो ।

१२ सिवो ।

१२ माधो ।

---

1 रतनाके पुत्र जयमलको मुहणोत सुन्दरदासने मारा । 2 रतनेका वेटा सिखरा, स० १६८२मे बुरहानपुरमे मरा । 3 रतनेका वेटा अमरा, इसने तिमरणीकी मुहिममे चोरी कर ली तव राजा गजसिंहने इसकी गर्दन कटवा कर मरवा दिया । 4 सिलारका वेटा सूजा, इसका वैंठना (जागीर) पीपलूण गाँवमे । 5 कुभाका वेटा वीरम । वीरम चापा चौहानकी विवाहित स्त्रीको ले आया जिसमे मारा गया । 6 नाथेका वेटा राजसी, भाइयोंने इसको निकाल दिया, तव राणाके देश (मेवाड) मे चला गया, वहा मारा गया । 7 रामदासका वेटा मद्दा, गाँव पीपलूणमे रहता है ।

११ मानो मदारो । मु० सुदरदास मारियो[1] ।

१२ पाचो मानारो ।

७ वीसो वीरमरो ।

८ केलण वीसारो । राव मालदेरो चाकर थो । भूडूथी पाछो छाडै नै जाळोर गयो थो । जाळोर ऊपर रावजीरी फोज आई तठै प्रोळ हाथो दे लड मुवो[2] ।

९ कमो केलणरो । माहोमाहि मारियो[3] ।

८ देवो वीसारो । बेटा ३ कमै मारिया[4] ।

९ सिवो ।

९ रायसल ।

९ वीदो ।

९ रामदास देवारो । रा० पतो नगावतरै काम आयो नाडूल[5] ।

८ करन वीसावत ।

९ सूजो करणरो । कमै मारियो[6] ।

६ भागस सकतारो ।

७ मेहो भागसरो ।

८ रांमदास मेहारो । राव चद्रसेणरा विखा मांहे गढ रह्यो । रा० दासाजीरो चाकर थो[7] ।

९ सेखो रामावत ।

१० परबत सेखारो । गैर चाकर थको । अजमेर देईदासजीरो चाकर थको कांम आयो[8] ।

---

1 मद्देका वेटा माना, मुहणोत सुदरदासने मारा । 2 वीसाका वेटा केलण । यह राव मालदेवका चाकर था । भूडूको छोड कर यह जालोर चला गया था । जालोर पर रावजीकी फौज चढ कर आई तब वहा पौलमे हाथ मार कर (जूझ कर) लड मरा । 3 केलणका वेटा कम्मा, जो परस्परकी लडाईमे मारा गया । 4 वीसाका वेटा देवा, इसके तीन वेटोको कम्माने मार दिया । 5 देवाका वेटा रामदास, नाडोलमे नागाके वेटे पत्ताके लिये काम आया । 6 करणका बेटा सूजा, जिसको कम्मेने मारा । 7 मेहाका वेटा रामदास, यह राव दासाजीका चाकर था । राव चन्द्रमेनके आपत्कालमे गढमे (रक्षक) रहा था । 8 पर्वत सेखाका वेटा, किसीका चाकर नही होते हुए भी अजमेरमे देवीदासजीका चाकर रह कर काम आया ।

११ वीरम ।

९ सतो रामावत ।

१० पीथो, मीठोडै वसै ।

९ कलो रामावत ।

१० सूरो कलावत । कल्याणदास भाखरसीयोतरै[1] ।

९ सादूळ रामावत । भाकरसी दासावतरै[2] ।

९ ऊदो रामावत । वाळक थको मुवो[3] ।

३ मारू राणा रावळरो ।

४ वैरसल मारूरो ।

५ करण वैरसलरो ।

६ त्रिभणो करणरो ।

७ पूनो त्रिभणारो ।

८ वीसो पूनारो । जाळोर काम आयो[4] ।

९ देवराज वीसारो ।

१० जैमल ।

१० तेजमाल ।

११ पूरौ ।

११ मानो ।

९ पाचो वीसारो । कल्याणदासजी साथे काम आयो[5] ।

१० वैणो ।

११ जोगोदास । ११ पीथो । ११ आसो । ११ केसो ।

९ रतनो वीसारो ।

९ धनो वीसारो ।

९ कुंभो वीसारो । घांणसेचा जूंझिया तठै काम आयो[6] ।

१० डूंगरसी ।

---

1 सूरा कल्लेका वेटा, भाखरसीके वेटे कल्याणदासके पास था। 2 सादूल रामदासका वेटा, दासाके वेटे भाखरसीके पास था। 3 रामदासका वेटा ऊदा, वचपनहीमे मर गया। 4 पूनाका वेटा वीसा, जालोरके युद्धमे काम आया। 5 वीसाका वेटा पाचा, कल्याणदासजीके साथ काम आया। 6 वीसाका वेटा कुंभा, घाणसेचा जूझ कर मरे वहाँ काम आया।

८ सिवो पूनावत । कुडळ भायले चूक कर मारियो[1] ।
८ आसो पूनारो । भायले चूक कर मारियो[2] ।
८ चापो पूनारो ।
९ साकर चापारो ।
१० नरसिघ ।
११ रामसिघ ।
७ देवो त्रिभणारो ।
७ जसो त्रिभणारो ।
८ चोहथ, कुडळ रह्यो[3] ।
४ आपमल सूरारो ।
५ वीसो आपमलरो ।
६ सावतसी वीसारो ।
७ भदो सावतसीरो ।
८ वीको भदारो ।
९ भारमल वीकावत । पाचलै ऊपर फौजा आई तठै काम आयो[4] ।
१० सूजो भारमलोत । भागवै रहै ।
११ तोगो । ११ विजो । ११ कचरो ।
१० सुरताण भारमलरो ।
११ कानो । ११ मेहरो । ११ झाझो ।
७ सेखो सावतरो ।
८ ठाकुर सेखारो । तिणनू उधरण गैहलोत मारियो[5] ।
९ वीसळ ठाकुररो । दहिया मारियो[6] ।
१० मानो वीसळरो । रावळे चाकर थो । ब्रहानपुरमे मुवो[7] ।

---

1 पूनाका बेटा सिवा, जिसको कुडलके भायलोने दगा करके मारा । 2 पूनाका बेटा आसा, जिसको भायलोने दगा करके मारा । 3 चोहथ कुडलमे जाकर रहा । 4 वीकाका बेटा भारमल, पाँचले गाँव पर फौजे चढ कर आई वहाँ मारा गया । 5 सेखाका बेटा ठाकुर, उसको उधरण गहलोतने मारा । 6 ठाकुरका बेटा वीसल, इसे दहिया राजपूतोने मारा । 7 वीसलका बेटा माना, यह रावले चाकर था और बुरहानपुरमे मरा ।

११ डूंगर मांनारो । राघोदास महेसोत मारियो भागवै[1] ।

११ दुदो मानारो ।

११ जसो ।

११ महेस ।

१० सहसमल वीसळरो ।

१० कलो वीसळरो ।

१० वीदो विसळरो ।

१० रूपो ।

८ तेजसी सेखारो ।

॥ इति भायलारी ख्यात सम्पूर्णम् । लिखतं पना ॥

++

1 मानाका वेटा डूगर, इसे महेशके वेटे राघोदासने भागवे गाँवमे मारा ।

## वात चहुवांणां सोनगरांरी राव लाखणोतरांरी[1]

१ राव लाखणनू नाडूल देवी आसापुरी तूठी[2]। नाडूलरो राज दियो। तरै देवीसू अरज की, "म्हारै घोडा नही।" तरै देवी कह्यो– "फलाणै दिन सोबतरा घोडा छूटनै आपथी आप आवसी[3]।" पछै घोडा १३००० ढळनै नाडूळ आया[4]। वासै घोडारा धणी आया; तरै देवी घोडारा रग फेरिया[5]। पछै गे देखनै पाछा फिरिया[6]।

राव लाखणरा बेटा—

२ वीसळ लाखणरो। तिणरा हाडोतीनू छै[7]।

२ आसल लाखणरो। जिण आसल कोट करायो।
आसिल समुद्र मारै पुन्य हेत तळाव करायो[8]।

२ जोजल लाखणरो। जिण जोजावर वसाई[9]।

२ जैत लाखणरो। जिण जैतकोट करायो[10]।

१ बलसोही।

३ महिंद्रराव।

४ आलण।

५ जीदराव।

६ आसराव। नाडूल सिकार रमतो हुतो सु वडो दूठ राजवी हुवो[11]। तिणनू देवी बीहाडण लागी, सु आसराव वीहै नही[12] नै बाण हिरणनू साधियो हुतो सु वाह्यो[13], तरै देवी खुसी हुई नै आसरावनू कहण लागी—"तोनू हू

---

1 राव लाखणके वशज सोनगरा चौहानोकी वात। 2 नाडोलकी देवी आशापुरी राव लाखण पर प्रसन्न हुई। 3 अमुक दिन जमैयतके घोडे छूट कर अपने आप आ जायेंगे। 4 फिर १३००० घोडे छूट कर नाडोल आ गये। 5 घोडोके मालिक पीछे आये तो देवीने घोडोके रग बदल दिये। 6 वे लोग देख कर वापिस लौट गये। 7 वीसलका बेटा लाखण, जिसके वशज हाडोतीमे है। 8 लाखणका बेटा आसल, जिसने नाडोलमे आसलकोट वनवाया और अपनी माताके पुण्यार्थ आसिलसमुद्र नामका तलाव वनवाया। 9 लाखणका बेटा जोजल, जिसने जोजावर नामका गाँव बसाया। 10 लाखणका बेटा जैत, जिसने जैतकोट वनवाया। 11 आसराव बडा जबरदस्त राजा हुआ। वह एक दिन नाडोलमे शिकार खेलता था। 12 उसको देवी डराने लगी, परतु आसराव डरे नही। 13 चलाया।

तूठी, तू जाणै सु माग[1]।" तरै आसराव देवीरो रूप देखनै जाणियो[2], "इसडी वैर व्है तो भली[3]।" तरै देवीनू कह्यो–"तू म्हारै वैर हुय घरे रहि[4]।" तरै वाचा छळ आई[5]। तरै कह्यो–"अतरी वात हू पहली कहू छू, कोई मोनू जाणसी तरै हू परी जाईस[6]" यू कहिनै देवो घरे आई। तिणरै पेट, कहै छै च्यार वेटा हुवा[7]—

७ मांणकराव। ७ मोकळ। ७ आल्हण। ७ · · हुवा।

८ तिणरो वेटो केलण हुवो ॥ ८ ॥

९ तिणरे कीतू वडो रजपूत हुवो। तद जाळोर पवार कुतपाळ धणी हुतो। नै सिवाणै पिण पवार वीरनारायण हुतो। नै कुतपाळरै प्रधान दहिया हुता। तिणरै भेद कीतू जाळोर लियो। सिवाणो ही लियो[8]।

१० समरसी रावळ हुवो।

११ अरिसीह समरसीरो, जाळोर धणी हुवो।

१२ उदैसीह अरसीरो जाळोर पाट। तिण ऊपर सवत् १२९८ माह सुदि ५ जलालदी सुरताण जाळोर ऊपर आयो हुतो सु भागो[9], तिण साखरो दूहो फूदै काचडरो कह्यो[10]—

"सुदर सर असुरह दळै, जळ पीयो वैणेह।
उदै नरयद काढियो, तस नारी नयणेह ॥ १ ॥"

१३ जसवीर उदयसीरो।

१४ करमसी जसवीररो।

१५ रावळ चाचगदे करमसीरो। चाचगदे सूधारै भाखरे देहुरो

---

1 तेरे पर मैं प्रसन्न हुई, तेरी इच्छा हो सो माग ले। 2 जाना, विचार किया। 3 ऐसी पत्नी हो तो ठीक। 4 तू मेरी पत्नी हो कर मेरे घरमे रह। 5 तब वचनवद्ध हो गई। 6 कोई मुझे पहचान लेगा तो मैं चली जाऊगी। 7 कहा जाता है कि उसके चार वेटे हुए। 8 उसके भेद वता देनेसे कीतूने जालोर और सिवाना दोनो ले लिये। 9 जिस पर स० १२९८के माघ शु० ५को सुल्तान जलालुद्दीन जालोर पर चढ कर आ गया पर हार कर भाग गया। 10 फूदे काचडका कहा हुआ उसकी साक्षीका यह दोहा है।

चावडाजीरो करायो । संमत १३१२[1] ।

१६ सावतसी रावळ चाचगदेरो ।

१६ चद्ररावळ सावतसी चाचगदेरो ।

२ राव कानडदे सावतसीरो, जाळोर धणी हुवो । दसमो साळगराम गोकळीनाथ कहाणो । समत १३६८ जाळोररै गढरोहै अलोप हुवो[2] ।

३ कॅवरागुर वीरमदे, पातसाहसू रावळ कानडदे वासै दिन ३ बाज मुवो[3] ।

२ मालदे मूछाळो सावतसीरो बेटो गढरो है । जाळोररै रावळ कानडदे बीज राखण वास्तै काढियो[4] । पछै पातसाह रावळ कानडदे वीरमदेनै मारनै गढ लियो । पछै मालदे घणा विगाड किया । फोजा वासै सिवाणै खान लागो रह्यो[5] । पछै देवी सैणी चारणी दिल्ली आई तरै मालदे ही देवी साथै दिल्ली आयो । पछै देवी सैणी विमर माहै पैठी तठै मालदे ही विमर मांहै साथै पैठो[6] । आगै बहुळी जोगणी[0] बैठी हुती तिण आपरा गळारो काठलो १ जडावरो मालदेनू दियो । पतर १ लोहीरो भर दियो[7] सु मालदे पियो नही । जाणियो लोही छै । नै ओ अमृत हुतो सु थोडो सो मुहडै लगायो थो सु मूछे लागो, तिणसू मूछ वधी, तिणथी मूछाळो मालदे कहाणो । पछै कानडदेजी हुकम दियो, तरै

---

1 रावल चाचगदेवने सूंधा पहाड पर स० १३१२मे चामुंडादेवीका मदिर बनवाया । (मारवाड राज्यके जालोर परगनेमे जसवतपुराके पहाडको सधा पहाड कहा जाता है, जिस पर पहाड काट कर यह मदिर बनवाया गया है) । 2 राव कान्हडदे स० १३६८मे जालोर गढरोहेके समय अलोप हो गया । यह दशवा सालिग्राम—गोकुलनाथ प्रसिद्ध हुआ । (कानडदे वडा वीर हुआ । प० पद्मनाभ कविने जालोर और सिवानेके इस युद्धके सबधमे 'कान्हडदे प्रबध' नामक एक प्रसिद्ध काव्यकी रचना की है) । 3 रावल कान्हडदेके बाद कुवरागुरु वीरमदे बादशाहसे तीन दिन लडाई करके मर गया । 4 मालदे मूछाळको जालोरके गढरोहे परसे कान्हडदेने अपना वश कायम रखनेके लिये अन्यत्र भेज दिया । 5 फौजोके पीछे सिवानेका खान लगा रहा । 6 फिर देवी सैणीने गुफामे प्रवेश किया वहा मालदेव भी साथमे घुस गया । 7 रक्तका पात्र १ भर कर दिया । 8 इससे 'मूछाळा मालदे' कहा जाने लगा ।

पातसाहजीसूं मिळियो । पातसाह माथै वीज पडी सु मालदे झटकासूं टाळी[1] । पछै पातसाह गढ चीतोड मालदेनू दियो । वरस ७ मालदे भोगवियो । पछै मालदे चीतोड काळ प्राप्त हुवो[2] ।

मालदेरा वेटा ३—

३ जैसो । ३ कीतपाळ । ३ वणवीर ।

४ रिणधीर[3]

५ केलण । ५ राजधर ।

६ डूंगो । ६ जैसो ।

७ कान । ७ वीसो । ७ देभो । ७ रायमल ।

७ भोज । ७ भारमल । ७ नरो । ७ नगो ।

राजधर रिणधीररो ग्राक ५, सवत १४८२ राव रिणमलसू लड मुवौ[4] ।

७ अरडकमल । ७ नाथु । ७ हरदास ।

६ खीवो राजधररो ।

६ दूदो राजधररो ।

६ दलो ।

६ भीखो ।

६ राघो ।

केलण रिणधीररो ग्राक ५ ।

६ करमचद वडो दातार हुवो । स० १४७६ राव रिणमलसू लड मुवो ।

७ सावत करमचदरो ।

७ जैसिघ करमचदरो ।

७ ससारचद ।

७ मेथो ।

---

1 वादशाहके ऊपर गिरती हुई विजलीको मालदेने तलवारके झटकेसे दूर कर दिया । 2 फिर मालदे चित्तौडमे मृत्यु प्राप्त हुआ । 3 रणधीर जैसाका वेटा । 4 रणधीरका वेटा राजधर स० १४८२मे राव रिणमलसे लड कर मर गया ।

४ राणो वणवीररो । वडो रजपूत हुवो । जिणनू कवर वीरमदे ओळ पातसाह कनै राखनै आप आयो[1] । पछै वीरमदे वादासिर[2] आयो नही तरै पातसाहरै तोगो दीवाण थो तिणनू कह्यो–"राणानू बेडी पहरावो ।" पछै राणो तोगानू दरगाहमे कटारीसू मारनै घोडे झाझै चढ कुसळै आयो[3] ।

५ लोलो राणारो । जद राव रिणमल धणले रहै तद सोनगरै नाडूल परणियो[4] । पछै सोनगरै चूक कियो । राव रिणमल बैररो वेस कर सोनगरी काढियो । पछै राव रिणमल सोनगरा १४० नाडूल मारनै कूवा माहै नाखिया[5] । पछै तिण दावै घणा सोनगरा जठै हुता तठै मारिया[6] । एक लोलो भाटियारै मूमाणै हुतो[7] । गरभसू उगरियो हुतो[8] । पछै राव रिणमलनै भाटिया वैर भागो, राव जेसळमेर परणीजण गया हुता । पछै उठै रावळ नै राव सिकार रमण गया । तठै लोलो साथै वरस १२ डावडो थको हुतो[9] । तठै नाहरसू धको हुवो । तठै और साथ सारो पाछो हुवो[10] । लोलै छोटीसी बरछी थी सु नाहरनू इण छळ वाही, दात ४ चौकैरा पाडनै गुदडीमे उकसी[11] । तरै राव रिणमल कह्यो–"ओ सोनगरो होय तिसडो छै[12] ।" तरै रावळ कह्यो–"और तो सोनगरा थे सोह[13] मारिया । ओ एक डावडो नानाणै

---

1 जिसको कुवर वीरमदे, वादशाहके पास अपने वदलेमे जामिन रख कर आप चला आया । 2 कौल ऊपर । 3 फिर राणा, तोगा दीवानको वादशाहके दरवारमे कटारीसे मार कर और झटपट अपने घोडे पर चढ सकुशल आ गया । 4 जव राव रिणमल धणलेमे रहता था तव नाडोलके सोनगरोके यहाँ विवाह किया था । 5 राव रिणमलको, उसकी पत्नी सोनगरीने स्त्रीका वेप पहना कर निकाल दिया । फिर राव रिणमलने नाडोलके १४० सोनगरोको मार कर कूएमे डाल दिया । 6 फिर इस वैरके बदलेमे वहुतसे सोनगरोको जहा वे थे वही मार दिया । 7 एक लोला भाटियोके यहा ननसालमे रह गया था । 8 उस समय गर्भमे था इसलिये वच गया । 9 वहा साथमे वारह वर्षका लडका लोला भी था । 10 वहा और साथ वाले सब पीछे हट गये । 11 लोलेके पास एक छोटी वरछी थी जिससे नाहर पर इस प्रकार प्रहार किया कि नाहरके चौकेके चारो दात उखाडती हुई गुद्दीमे पार हो गई । 12 यह सोनगरा हो ऐसा प्रतीत होता है । 13 सब ।

आधांन हुतो सु वचियो छै[1] । पछै राव जेसळमेरथा[2] विदा हुआ, तरै लोलानू रावळ कनासू मागनै साथै ले आया । पछै अठै आणनै राव जोधारी बेटी सुदर परणायनै सीधळ नीवावतरी पाली उतारनै पटै दी[3] । तदसू जोधपुररो चाकर हुवो । तठा पछै जोधपुररा धणियारै वडै वडै कामे सोनगरा आया[4] ।

६ सतो लोलारो ।

७ खीवो सतारो ।

८ रिणधीर खीवारो ।

९ अखैराज रिणधीररो । वडो दातार, वडो जूझार, वडो आखाड़सिध[5] । अखैराज सारीखा रजपूत थोडा हुसी । समत १६०० पोस माहे राव मालदे सूर पातसाहसू समेळ वेढ[6] हुई तठै काम आयो । राव मालदेरो दियो पालीरो पटो । राणा उदैसिघनू अखैराज बेटी परणाई हुती[7] । एक वार उदैसिघनू वणवीर जोर दवायो, तरै राणै उदैसिघ लिख अखै-राजनू मेलियो, कह्यो—"म्हारी मदत करजो ।" तरै अखैराज रा० कूपो मेहराजोत, भदो, कान्हो पचाइणोत, रा० जैसो भैरवदासोत और ही घणो साथ ले मारवाडरो, अखैराज उठै गयौ । पछै गाव माहोली वेढ की । वेढ अखैराज जीती । पछै उदैसिघनू कुभळमेर वैसाणियो[8] ।

सोनगरा अखैराज रिणधीरोतरो परवार—

१० मानसिंघ अखैराजरो ।

१० भांण अखैराजरो ।

१० उदैसिघ अखैराजरो ।

---

1 यह एक लडका अपनी ननसालमे गर्भमे था अत वच गया है । 2 से । 3 फिर यहा ला कर राव जोधाकी बेटी सुदरको व्याह करके सिंवल नीवावतसे पाली खोस कर उसके नाम पट्टा कर दिया । 4 जिसके वाद सोनगरे जोधपुरके राजाओंके वडे काम आये । 5 वहुत वलवान, रणक्षेत्रमे अपने स्थानसे पीछे पाँव नही देने वाला, युद्ध विशारद । 6 लडाई । 7 व्याही थी । 8 फिर उदयसिंहको कुभलमेरमे पाट विठाया ।

१० भोजराज अखैराजरो ।

१० जैमल अखैराजरो ।

१० रतनसी अखैराजरो ।

मानसिघ अखैराजरो आक १० तिणरो परवार जोधपुररै माहै हुतो[1] । राव चद्रसेणरै गढरोहै घणा हीडा किया[2] । संमत १६२१ चैत्र माहै । पछै राणैरै जाय वसियो[3] । पछै राणै प्रतापनै काम पडियो । मानसिघ समत १६३२ हळदीरी घाटी वेढ हुई तठै काम आयो[4] ।

११ जसवत मानसिघरो वडो दातार सिरदार हुवो । मोटा राजा राणाजी कनासू बुलायनै जसवतनू पाली पटै दीवी । समत १६४४ गाव २७सू पाली दीवी । पछै गाव ३० पटै दिया । स० १६६५ अहमदाबाद माहै । जसवतजी गाव देवीखेडो पालीरा पटारो थो सु मागियो थो, सु गाव धनराज मांगळियानू थो, तरै कह्यो–"डणरै वदळै देस्या ।" तरै जसवतजी छाडनै राणारै गया, उटै मुवा[5] ।

१२ वीरमदे जसवतरो ।

१३ हरीसिघ वीरमदेरो ।

१३ सावळदास ।

१२ वाघ जसवतरो ।

१३ भीव वाघरो ।

१२ माधोसिह जसवतरो ।

१३ तेजसिह । १३ विहारीदास । १३ कुसळसिह ।

१२ केसरसिह जसवतरो ।

१२ भाखरसी जसवतरो ।

१३ गोकळदास ।

---

1 था । 2 राव चन्द्रसेनके गढरोहेके समय वहुत सेवा की । 3 वसा । 4 मानसिंह सम्वत् १६३२ मे हल्दीघाटीकी लडाई हुई वहा काम आया । 5 तव जसवत छोड कर राणाके पास चला गया और वही मरा ।

१४ नाहरखान गोकळदासरो।

१५ सवळो। १५ सत्रसाळ।

१२ रामचद जसवतरो।

१२ जगनाथ जसवतोत। समत १६६७ राणाजीरैसू आयो, तरै सिणगारी गाव १२ सू वसी नै दी[1]। पछै स० १६७७ पालीरो पटौ दियौ थो। पछै स० १६६१ कँवर अमरसिंघजी साथै गयो तरै पाली उतरी[2]।

१३ दलपत जगनाथोत।

१४ प्रथीराज।

१३ भोजराज जगनाथोत।

१२ स्यामसिघ जसवतरो। सं० १६७६ जोधपुररो गुढो पटै थो। स० १६६७मे भाद्राजणरो पटो थो। वरस १ रह्यो।

१३ सुजाणसिंघ। १३ जोध। १३ करन।

१२ राजसिघ जसवतोत। स० १६६६ राणाजीरैसू आयो तरै कूडणो गाव ५सू पटै दियो[3]। स० १६७२ पालीरो पटो सूरजमल छाडियो तरै[4] दियो। पछै स० १६७७ पालीरो पटो उतारनै जगनाथनू दियो। पछै छाडिनै रायसिंघ सीसोदियारै रह्यो। पछै स० १६६२ कछवाहै मारियो।

१३ महासिघ राजसिघोत।

१३ जगतसिघ सोनेही पटै। उजेण घावे पडियो[5]। धोलपुर काम आयो।

१३ दूरजणसिघ।

१३ सुजाणसिंघ। सोनेही पटै। पूनै मोत मुवो[6]।

१० भाण अखेराजरो। राणा उदैसिघरै वास थो[7], पछै

---

1 जसवतका बेटा जगन्नाथ स० १६६७ राणाजीके पाससे मारवाड चला आया तब बारह गावोके साथ सिणगारी गाव वसीमे दिया। ( वसी = एक प्रकारकी कर-मुक्त जागीरी )। 2 कुवर अमरसिंहके साथ चले जानेके कारण पाली उतार दी गई। 3 स० १६६६ मे राणाजीके यहासे चला आया तब पाँच गाँवोके साथ कूडणा पट्टेमे दिया। 4 तब। 5 उज्जैनमे आहत हुआ। 6 पूनामे अपनी मौत मरा। 7 राणा उदयसिंहके यहा रहता था।

सहबाजखा कबो कुभळमेर ऊपर आयो, तद भाण कुभळमेर काम आयो। मोटो राजाजी भाणरी बेटी परणियो थो[1]।

११ नाराइणदास भाणोत। पेहली पातसाही चाकर थो। पछै मोटै राजाजी बुलायनें भाद्राजणरो पटो स० १६४१ दियो। पछै स १६४५ सिरोही ऊपर गया तरें नाराइणदास राव सुरताणनू खबर मेली[2], तिण वास्तै पटो छुड़ायो। पछै राणारे वसियो। खोडरो पटो दियो[3]।

१२ सावतसी नाराइणदासोत।

१३ भीव राणाजीरै काम आयो।

१३ उरजण सावतसीरो।

१३ प्रताप सावतसीरो।

१३ सुजाणसिघ सावतसीरो।

१२ सातल नारायणदासोत। स० १६८२ भाद्राजण गाव २१थी[4] पटै थो। स० १६८३ नवसररो पटो गाव १० सू दियो। स० १६८८ छाडियो।

१३ जैतसी सातलोत। सं० १६८९ जोधपुर आयो। नीवावत साथै साथ देनै देसमे मेल्हियो तठै काम आयो[5]।

१३ जैसिघ सातलोत।

१३ सूरसिंघ सातलोत।

१३ किसनसिंघ सातलोत।

१३ नाथो सातलोत।

१२ चत्रभुज नाराइणदासोत। वडो ठाकुर हुवो। पातसाही चाकर। पूरबमे जागीरी की। पखैरीगढ पटै[6]।

१३ गरीबदास चत्रभुजोत।

१२ प्रथीराज नाराइणदासोत। स० १६७८ एहनळा पटै हुतो[7]।

---

1 मोटा राजा उदयसिहने भाणकी बेटीसे विवाह किया था। 2 खबर भेजी। 3 खोड गावका पट्टा कर दिया। 4 से, के साथ। 5 नीवावतके साथ सेना दे कर देशमे भेजा था, वहा काम आ गया। 6 नारायणदासका बेटा चतुर्भुज बडा ठाकुर हुआ। बादशाही चाकर, पूर्व ( उत्तर प्रदेश ) मे जागीरी भोगी। पखैरीगढ ( खैरीगढ ? ) पट्टेमे था। 7 सं० १६७८ मे अहनला गाव पट्टेमे था।

पछै सं० १६८८ कुडणो गाव पटै हुतो ।

१३ रामसिघ ।

१२ मालदे नाराइणदासोत ।

११ केसोदास भाणोत ।

१२ माधवदास केसवदासोत । वडो रजपूत । स० १६८४ भवराणी पटै थी गाव १०[1] । पछै मु० जैमलसू पवार जैसै खानाजगी, माधोदासरो चाकर मु० जैमल मारियो, तरै उठासू छाडियो[2] । स० १७०० वळै श्रीजीरै वसियो[3] । गूदवच पटै, रेख रु० १६०००)री[4] । सं० १७१४ रा वैसाखमे उजेण काम आयो ।

१३ मुकुददासनू गलणियो पटै । रेख रु० १६०००)[5] ।

१३ हरिसिंघ ।

११ कल्याणदास भाणोत ।

१० उदैसिंघ अखैराजोत ।

११ सूरजमल स० १६५७ पालीरो पटो सकतसिंघ भेळो हुतो[6] । स० १६६५ सकतसिघ मुवो तरै देवीदास भेळी दी[7] । पछै स० १६७१ छाडियो । राणारै वसियो[8] । स० १६७३ वळै वसियो[9] । गाव ७ नवसरो पटै[10] । पछै स० १६७४ ढेछू गाव ६ सू पटै ।

१२ देवीदासनू आधी पाली हुती ।

१२ वणवीर सं० १६७७ भवरी गांव २ पटै ।

---

1 स० १६८४मे १० गावोके साथ भवराणी गाव पट्टेमें था। 2 माधोदासका चाकर पँवार जैसा जिसके साथ मुहता जैमलकी आपसी लडाई ( शत्रुता ) थी जिसमे जैमलने उसको मार दिया, तव माधोदास जागीर छोड कर चला आया। 3 स० १७००मे पुन श्री जीके ( महाराजा जसवतसिंहके ) पास आकर रहा। 4 रु० १६०००) की रेखका गूंदोज पट्टेमे दिया। 5 मुकददासको रु० १६०००) की रेखका गलणिया गाव पट्टेमे दिया। 6 सं० १६५७मे सूरजमलको सकतसिंहके शामिल पालीका पट्टा था। 7 स० १६६५मे सकतसिंह मर गया तव देवीदासके शामिल कर दी। 8 राणाके यहा आ कर रह गया। 9 स० १६७३ मे पुन यहा ( मारवाडमे ) आ कर रह गया। 10 सात गावोके साथ नवसरा गाव पट्टेमे दिया।

११ सकतसिंघ उदैसिघोत । आधी पाली सूरजमल भेळी पटै हुतो । सं० १६६२ मुवो ।

१२ मुकददास, धीगाणो सो सं० १६८५ भाद्राजणरो, दामण जाळोररो पटै[1] ।

१० भोजराज अखैराजोत रा० कूपा मैहराजोतरै वास हुतो । पछै कूपाजीरै साथै काम आयो[2] ।

११ सिंघ ।

१२ जसवत, रा० दलपत राजसिंघोतरै वास हुतो । पछै भटनेर राखियो हुतो । पछै भटनेर पातसाही फौजा घेरियो हुतो तठै काम आयो[3] ।

१० जैमल अखैराजोत । वीकानेर वास । वाप, गाव रिणी निजीक पटै[4] ।

११ अचळदास ।

१२ केसोदास जाटवै मारियो ।

१२ प्रागदास । १२ बळभद्र । १२ अनिरुध ।

१३ जूझारसिघ ।

११ सारगदे जैमलरो ।

१२ नरहरदास ।

१० रतनसी अखैराजरो ।

११ कान्ह ।

१२ राम राव, जसवत मांनसिंघोतरै वास ।

१२ अमरो कान्हावत ।

## वात सोनगरांरी

चौबोस साख चहुवाणारी । तिण माहै एक साख सोनगरा

---

1 मुकददास वडा जवरदस्त, स० १६८५ भाद्राजुन और जालोरका दामण पट्टेमे । 2 अखैराजका वेटा भोजराज, महाराजके वेटे राव कूपाके यहा रहता था और कूपाके साथ काम आया । 3 जसवत रायसिंहके वेटे राव दलपतके यहा जा कर रहाथा । पीछे उसको भटनेर रखा था । वादशाही फौजोने जव भटनेरको घेरा था तव वहा काम आया । 4 अखैराजका वेटा जैमल, जिसका निवास वीकानेर, रिणी गावके पास वाप गाँव पट्टेमे था ।

जाळोररा धणी । इणै पवारानू मारनै जाळोर लियो । रावळ कांनडदे सावतसीरो जाळोर धणी हुवो । वडो महाराजा हुवो । गोकुळीनाथ श्रीठाकुरजीरो अवतार हुवो[1] । सु अलावदी पातसाह गुजरात ऊपर आयो[2] । गुजरातरो घणो लोग कैद कियो । सोरठ मांहै देवरो पाटण छै[3] । तठै सोमइयो[4] महादेव जोतलिंग[5] थो सु उपाड़नै[6] आला[7] चावां[8] माहै वांधनै गाडै माही घातियो[9] सु महादेव ठोड़थी[10] खिसै नही, तरै पातसाह आरभरांम हठी पड़ियो[11] । पाच सौ जोड़ी वळदांरी गाडी वैलै रुखी करनै जोती[12] । महादेवरा लिग माहैथी आग भभक-भभक नीसरै छै[13] सु पाचसै सिका पांणीसू लिंगनू छांटता जाय छै[14] । वळद जूपै छै तिकै मरता जाय छै[15] । महादेव घणो ही करामात करै छै; पिण देवां ऊपरला दाणव[16], सु इतरै हठसू कोस १ रोजीना महादेव सोमइयो नीठ खिसै छै[17] । सु यू पातसाह लियां जाळोररै गांव सकराणै डेरो हुवो[18] । महादेवरै किस्तरी वात सारी कानडदेजी सुणी छै[19] ।

## वात सिंघावलोकिनी[20]

एक वांभण तापस कोई एक गंगाजीसू कावड़[21] एक गंगोदकरी आंणनै[22] सोमइयै लिंग ऊपर चाढै । यू करता उण वांभणनू कावड़ा

---

1 रावळ कानडदे श्री ठाकुरजी गोकुलनाथजीका अवतार हुआ । 2 बादशाह अल्ला-उद्दीन गुजरात पर चढ कर आया । 3 सौराष्ट्रमे देवरो पाटण शहर है । ('देवरो पाटण' अर्थात् 'देव पट्टन', सोमनाथ पट्टन, प्रभास पट्टन, शिव पट्टन, आदि नामोके साथ 'देव पट्टन' नाम भी इस नगरका विख्यात है ।) 4 सोमनाथ । 5 ज्योतिर्लिंग । 6 उठा कर । 7 गीला । 8 चमडा । 9 डाला,रखा । 10 स्थानसे । 11 तव अपने निश्चय पर दृढ बादशाहने भी हठ पकड़ ली । 12 बहलीके रूपमे वना कर पाँचसौ वैलोकी जोडियें गाडीमे जोती । 13 निकलती है । 14 अत पाचसौ सक्के शिवलिंगको पानीसे छिडकते जाते है । 15 जो वैल गाडीमे जुतते है वे मरते जाते है । 16 परतु देवोके ऊपरके दानव । 17 सो इतने हठसे भी नित्य एक कोस सोमनाथ महादेव वडी मुश्किलसे आगे खिसकते हैं । 18 सो इस प्रकार लाते हुए वादशाहका डेरा जालोर परगनेके गाव सकरानेमे हुआ । 19 कानडदेजीने-महादेवजीकी आपत्तिकी सब वात सुनी है । 20 इससे पूर्व, इससे सवधित घटी घटनाकी एक वात, सिंहावलोकन । 21 कांवर । 22 लाकर ।

चाढता वार ६ हुई, जु सोरभजीरै घाटथी गगोदक आणनै देवरै पाटण सोमइयै ऊपर चाढै[1], सु सातमी वार गगोदक कावड भरी नै आणतो हुतो[2] सु किणहेक सहर वटाउ थको[3] किणहेकरै चौतरै[4] उतरियो हुतो सु उणरी वैर[5] किणीहेक जिदासू हालती हुती[6], सु वा सासती[7] जिदारै जाती, सु उण दिन उणरो माटी[8] कठैक हाळी[9] हुतो सु घरे आयो, सु तिण दिन जिदारै मोडेरो जाणी आयो[10], तरै जिदो उणसू रीसाणो[11], उणनू नैडी नावण दै[12], तरै उण कह्यो—"आज म्हारै माटी घरे आयो, तिणहू आज मोडेरी आई[13]।" तरै जिदे कह्यो—"तोनू माटीरो इतरो[14] प्यार छै तो तू घरे जाय। थारो प्रेम थारा माटीसू कर।" तरै इण कह्यो—"मोनू थे किणही सूल आवण दो[15]।" तरै जिदै कह्यो—"थारा माटीरो माथो वाढनै मोनू आण दै तो तोनू आवण दू[16]।" तरै इण कह्यो–"मोनू क्यूहेक हथियार दो, ज्यू हू माथो वाढ लाऊ[17]।" तरै जिदारै छुरो १ मोटो छो सु जिदै दियो। इण साचाणी माटी सूतारो माथो वाढनै जिदानू आण दियो[18]। तरै जिदै माथो देखनै कह्यो—"फिट राड ! थारो काळो मुहडो, हू तो थारो मन जोवतो थो, तू राड इसडा काम करै[19] ?" तरै राडनै दुरकारी[20]। तरै पाछी आई, आयनै बाभण वारणै सूतो हुतो तिणरा लूगडा[21] माहै छुरो नाखियो, नै बांभण सूता थकारैई उठारो लोही[22] लगायो। लूगडा पडिया हुता त्या ऊपर लोहीरा छाटा नाखिया, पछै घर माहै पैस कूकवो कियो[23], जु म्हारो माटी चोर मारियो

---

1 सौरो घाटसे गगोदक ला कर देवपट्टनमे सोमनाथ पर चढावे। 2 लाता था। 3 पथिकके रूपमे। 4 चबूतरे पर। 5 पत्नी। 6 किसी एक व्यभिचारीसे अनुचित सबध था। 7 निरतर। 8 पति। 9 खेतीके काममे नौकर, हल चलाने वाला। 10 सो उस दिन जारके पास देरसे जाना हुआ। 11 तब जार उससे नाराज हो गया। 12 उसको पास नही आने दे। 13 जिससे आज देरीसे आई। 14 इतना। 15 मुझे तुम किसी प्रकार आने दो। 16 तब जिनाकारने कहा—'तेरे पतिका सिर काट कर मुझे ला कर दे तो मै तुझे आने दू'। 17 जिससे मै सिर काट कर लाऊ। 18 इसने सचमुच ही सोते हुए अपने पतिका सिर काट कर जिंदेको ला कर दे दिया। 19 राड ! तू ऐसा काम करती है ? 20 तब राडको धिक्कार करके निकाल दिया। 21 कपडे। 22 रक्त। 23 पीछे घरमे घुस कर जोरसे रोने लगी।

जाय छै। कूकवो हुवो। सको लोक हाबो सुणनै आयो[1]। रावळा चोकीदार तलार पिण आया[2]। पग जोया[3]। तरै चोकीदारै जोवतै-जोवतै ओ कावड वाळो वाभण लाधो[4]। ओ निर्चित सूतो हुतो। इणै लोहीरा छाटा दीठा[5], तरै उणनू झालियो[6]। पछै गुदडी माहै छुरी नीसरी[7]। त्या वळै गाढो झालियो[8]। तलार जाय राजानू गुदरायो[9]। इण इसडो काम कियो, कासू सझारो हुकम हुवै छै[10]? तरै राजा कह्यो—"इणरा हाथ दोनू वाढो।" उण वाभणनू न क्यू उणै पूछियो, न क्यूं इण कह्यो। चोकीदारै हाथ वाढिया[11]। ओ तो वळै वा कावड लेनै हालियो[12]। इणनू महादेव ऊपर ब्रह्मतेज चढियो[13]। मन माहै विचारण लागो, "मै इण भात सेवा की, महादेव ओ फळ दियो। हमरकै[14] देहरा माहै कावडरै मिस जाऊ। जायनै ऊपर एक भाटो नाखू[15]। पीडी भाजू[16]।" सु सोमइयारै देहुरै निजीक आयो[17]। त्या महादेव पैली पूजारानू कह्यो—"फलाणियो वाभण क्रोध भरियो आवै छै[18] थे माहि मत आवण दो।" तितरै ओ आयो[19]। उणै वरजियो[20], तरै उण वाभण महादेवरा पूजारानू कह्यो—"मोनू क्यू वरजो छो[21]?" तरै कह्यो—"महादेवजी वरजियो छै।" तरै उण कह्यो—"थे महादेवनू पूछो, इसडी सेवा करता म्हारा हाथ क्यू वढाया[22]?" तरै महादेव कहायो—"पैलै भव तू रजपूत थो[23],

---

1 सभी लोग हल्ला सुन करके आये। 2 राज्यके चौकीदार और कोतवाल भी आये। 3 खोज देखे। 4 तब चौकीदारोको खोज करते-करते यह कावर वाला ब्राह्मण मिला। 5 इन्होंने खूनके छींटे देखे। 6 तब उसको पकडा। 7 फिर उसकी गुदडीमे छुरी मिल गई। 8 उन्होंने फिर उसे मजबूत पकडा। 9 कोतवालने जा कर राजासे अर्ज की। 10 इसने ऐसा काम किया है, किस दडकी आज्ञा होती है? 11 चौकीदारोने हाथ काट लिये। 12 यह तो फिर उस कावरको ले कर चल दिया। 13 महादेव पर ब्रह्मकोप चढा। 14 इस बार। 15 पत्थर पटक दूं। 16 शिवलिंगको तोड दू। 17 सो वह सोमनाथके मदिरके निकट आया। (पद्रहवी शतीके आस पास सोमनाथ महादेवको 'सोमईया महादेव' कहा जाता था।—"ताहरा देस माहि सोमईउ असपति लीधउ जाइ", "गुजराति सोरठ सोमईआ वाहरि विसमू बीतू" दे०—कवि पद्मनाभ कृत 'कान्हडदे प्रबध' प्रथम खण्ड। 'सोमईया' शब्द 'सोमनाथ' का अपभ्रंश रूप है।) 18 अमुक ब्राह्मण क्रोधसे भरा हुआ आ रहा है। 19 इतनेमे यह आया। 20 उन्होंने उसे मदिरमे जानेसे रोका। 21 मुझे क्यो रोकते हो? 22 ऐसी सेवा करते रहने पर भी मेरे हाथ क्यो कटवाये? 23 पूर्व जन्ममे तू राजपूत था।

नै जिणरो गळो वाढियो सू ही रजपूत थो, दोनू थे गोठिया था[1]। किणीहेक दिन थे एक छाळी मारी[2]। तरै उण छाळीरा कान तै हाथसू साह्या[3] नै गळै छुरी उण दीधी। सु वा छाळी मरनै वा बैर हुई, नै ओ थारो गोठियो उणरो माटी हुवो, सु उणै वैर मागियो[4], सु उणरो गळो वाढियो, नै थू उणरा कान झालिया था सु थारा हाथ वढाया[5]। म्हारो किसो दोस ?" तोही उण बाभणरो महादेव ऊपर कोप मिटियो नही। पछै फिरनै कासी गयो। उठै सिनान गगाजीमे करनै कासी करोत लेण लागो। तरै करवतरै दैणहारै कह्यो—"कासू मागै छै[6] ?" तरै कह्यो—"अठारो मागियो लाभे छै[7] ?" तरै इण कह्यो—"मागियो लाभै छै, तो हू तिको अवतार पाऊ, जिको सोमइया महादेवरा लिगनै उपाडनै आला चाबा माहे बाधू[8]।" तरै पाखती सगळा माणस ऊभा था, तिका कह्यो[9]—"फिट ! फिट !! कासी करवत लेनै इसडो कासू मागै छै[9] ?" तरै कह्यो—"क्यू फेर विचारनै माग[10]।" तरै इणं कह्यो—"एक म्हारो आधा धडरो तिकाहूँ त्या सोमइया महादेवनू बाध्यानू छोडावै[11]। इण यू कहे करवत लीधी[12]। सु आधा धडरो अलावदी पातसाह हुवो। आधा धडरो रावळ कानडदे हुवो सोनगरो[13]।

## वात

पातसाहरो डेरो सकराणै जाळोररै गाव जाळोरसू कोस ६ हुवो। आ खबर कानडदेनू हुई, "जु महादेव सोमइयानू बाधनै पातसाह

---

1 तुम दोनो मित्र थे। 2 किसी दिन तुमने एक बकरीको मारा था। 3 पकडे रहा। 4 सो उसने अपने वैरका बदला मागा। 5 इसलिये उसका गला काटा गया और तैंने उसके कान पकडे थे, इसलिए तेरे हाथ काटे गये। 6 क्या मागता है ? 7 यहाका मागा हुआ (क्या अगले जन्ममे) मिलता है ? 8 तो मै जो जन्म पाऊ, उसमे सोमनाथ महादेवके लिगको उठा करके गीले (कच्चे) चमडेमे बाधू। 9 तब पासमे, जो सब मनुष्य खडे थे, उन्होने कहा कि काशीमे करवत ले कर ऐसा क्या मागता है ? 10 कुछ फिर विचार करके माग। 11 तब इसने कहा—"मेरे इस आधे धडके द्वारा एक ऐसा व्यक्ति उत्पन्न हो जो उस प्रकार बधे हुए महादेवको छुडा दे। 12 इसने यो कह करके करवत लेली। 13 सो उसके आधे धडका अलाउद्दीन बादशाह हुआ और आधे धडका रावळ कान्हडदे सोनगरा हुआ।

सकराणै आय उतरियो, तरै पातसाह कनै काधळ आलेचो रजपूत ४ वीजा भेळा मेलिया[1]। थे पातसाहजीनू जाय कहनै आवो–"जु अतरा हिदुस्थान मार वदकर महादेव सोमइयो वाधनै म्हारै गढ निजीक म्हारै गाव उतरिया सु भली न की[2]। मोनू रजपूत न जाणियो" तरै अ जाळोरथी चालिया, लसकर गया[3]। आगै पातसाहरै प्रधान सीहपातळो भाणेज छै, सु ई प्रधान छै[4]। तिणरै डेरै कनै डेरो कियो[5]। सीहपातळासू अ मिळिया। कानडदे कहिया तासु समाचार इण सीहपातळानू कह्या[6]। सीहपातळै कह्यो—"पातसाहजी थाहरो विगाडियो वयू न छै[7], अ सुरताण सुभियाण छै[8]। इणानू को इसडी वात कहाडै छै[9]?" तरै इणै कह्यो—"सु तो कानडदेजी जाणै। थे निचत कहो। नै काधळनू, वीजा रजपूतानू देखनै सीहपातळो घणो खुसी हुवो। पछै पातसाहजी कनै सीहपातळो गयो, कानडदे कहाडियो सु कह्यो। नै सीहपातळौ पातसाहजीनू कह्यो—"कानडदेरो रजपूत काधळ देखण सरीखो छै।" तरै पातसाहजी कह्यो–"वुलावो।" तरै सीहपातळै कह्यो—"अ ओनाड छै, कोई खून करसी[10]। कानडदे छूटी वीजानू जुहार न करै छै[11]। जै पातसाह उणरा खून माफ करै तो हजरतरी हजूर बुलाऊँ।" तरै सीहपातळै पातसाहजीरो कवल[12] लेनै काधळनू पातसाहजीरी हजूर वुलायो। हजूर आयो। एकण तरफ ऊभो राखियो[13]। तरै पातसाह कहण लागो—"कानडदे तो म्हानू सामो डाकर दिखावै छै[14], नै पातसाहनू

1 तब वादशाहके पास चार अन्य राजपूतोके साथ काधल आलेचाको भेजा। 2 आप इतने हिन्दुस्थान (हिन्दुओ) को मार कर और कैद कर, सोमनाथ महादेवको वाँध कर के मेरे गढके निकट मेरे ही गावमे आकर ठहरे, यह अच्छा नही किया। 3 तब ये जालोरसे चल कर वादशाहकी सेनाका जहा पडाव था वहा गये। 4 आगे वादशाहका भानजा सीहपातला है, जो उसका प्रधान भी है। 5 उसके डेरेके पास डेरा डाला। 6 कान्हडदेने जो समाचार कहे थे सो उन्होने सीहपातलासे कहे। 7 वादशाहने तुम्हारा विगाडा तो कुछ नही है। 8 ये सुल्तान शुभाशुभ चाहे जो करने वाले हैं। 9 इनको कोई क्या ऐसी वात कहलाता है? 10 ये वहुत ही जोरावर है, कोई खून कर देंगे। 11 कान्हडदेके अतिरिक्त किसीको जुहार नही करते है। 12 कौल, वचन। 13 खडा रखा। 14 कान्हडदे मुझे उलटा डर दिखाता है।

तलाक छै जु वीच गढ मेल[1], विगर लिया यूही आघो[2] न जाय, सु हू जातो हुतो सु कानडदे अै वात कहाडै छै तो हूं विगर जाळोर लिया हमै हू आघो न जाऊ, मोनू तलाक छै।" तितरै एक सांवळी[3] भवती-भवती पातसाह बैठो थो तठै ऊपर आई, तिणरै पातसाह आप तुकारी[4] दी सु लागो। सावळी पडण लागी, सु पातसाह पाखतीरा[5] तीरदाजानू हुकम कियो, जु पडण न पावै[6]। सु तीरदाजा कवाणा सभाई, तीर चलावणा माडिया[7], सु तीरा करनै सावळी पडण न पावै[8]। तरै काधळ बोलियो—"जु आ तीरदाजी मोनू दिखाईजै छै।" सु भैंसो १ साहुलो जिणरा सीग पूछ ताई हुवै[9], तिण ऊपर पखाल १ पाणीरी हुती सु नैडो आयो[10]। तरै काधळ भैंसारै झटकारी दी सु सीग वढ, पखाल वढनै भैंसारा दोय टूक किया[11]। तरवार धरती जाती रही। तितरै[12] आ सावळी पडी सु भैंसारा लोही माहे नै पखालरा पाणी मांहै सावळी वही गई[13]। तरै काधळ सवण विचारियो[14]—पातसाहरो कटक म्हा आगै यू वह जासी[15] तरै तीरंदाजै कवाणारी मूठ काधळ सामी करी। तरै सीहपातळो विचै आयो। कह्यो—"मै तो हजरतसू पैली अरज की थो" तरै वा तीरदाजानू मनै किया। पछै काधळ उठासू बारै आयनै जिण गाडा ऊपर महादेवजी था तठै आयो नै कह्यो—"पाणी तो विगर पियै सरै नही नै धान राज छूटा खासा[16]।" उठै आ वात कहिनै गढनू वळिया[17]। पातसाहरी हजूर अमराव ममूसाह मीर गाभरूसू, हरमरी खुटक छै नै गुरगाव्यां पगा उठाणती तीजै भाईनू आपडियो थो, सु आ घणी वात छै[18]।

---

1 छोड कर। 2 आगे, दूर। 3 चील पक्षी। 4 तीर। 5 पास वाले। 6 यह गिरने न पाये। 7 तीर चलाने शुरू किये। 8 सो तीरोके सतत चलते रहनेसे चील नीचे नही गिर रही है। 9 एक साहूला भैंसा जिसके सीग पूंछ तक होते है। 10 वह निकट आया। 11 तव काधलने तलवारसे ऐसा झटका मारा जिसने सीग और पखाल काट करके भैंसेके दो टुकडे कर दिये। 12 इतनेमे। 13 वह गई। 14 तव कांधलने शकुन विचारे। 15 वादशाहकी सेना हमारे आगे इस प्रकार वह जायगी। 16 पानी पिये विना तो चलेगा नही परतु अन्न आपके छूट जाने पर ही खाऊगा। 17 गढकी ओर लौटे। 18 वादशाहके दरवारमे मम्मूशाह और मीरगाभरू ये दो उमराव थे, जिनके साथ एक तो हरमकी नाराजगी थी, दूसरा पैरोकी जूतिया उठवाई जाती थी, और तीसरा उनके भाईको पकड रखा था, यह वडी आपत्तिजनक वात उनके लिये थी।

सु अै पचीस हजार घोडारा धणी दिलगीर थका वैठा था, सु आ वात यूं सुणी, तरै वेहू चढनै पैंडा माहे कांधळनू मिळिया[1] । कह्यो—"म्हे थांरा कामनू छां, था भेळा छां[2]।" सील कोल किया[3]। म्हे रातीवाहो देसा[4] । कह्यो—"एक तरफसू म्हे आवसा, एक तरफसू थे आजो ।" यूं कहिनै सीख कीवी[5] । कानडदेजी कनै आयनै सोह वात कही[6] । पछै वीजै दिन साथ सारोही भेळो करनै रातीवाहो दियो[7] । एक तरफसू ममूसाह नै मीरगाभरू आपरो साथ लेनै आया, नै एक तरफसू कानडदेजीरी फौज आई । रातीवाहो दियो । तठै पातसाही लोक घणो कांम आयो । पातसाह नीसरियो[8], फौज भागी । कहै छै–कानड़देजीरै साथ घणी पातसाही फौजांनू घेचिया, साथ मारता गया[9] । पातसाहनै भांजनै कानडदेजी सोमइया कनै आया[10] । महादेवजीरी पीडी हाथ घातनै उपाडिया सु तुरत उपडिया सु महादेवजीरो लिंग सकराणै थापियो[11] । ऊपर देहुरो करायो । कानडदेजी हिन्दुस्थानरी वडी मरजाद राखी[12] । ममूसाह मीरगभरू रावळ कानडदेजी कनै रह्या । ठाकुराई सारू घणो रोजगार दियो । पिण पातसाहीरा रैहणहारा सु गाया मारै, सु हिंदवारै खटावै नही[13] । तरै रावळजी कह्यो— "इणानू किणहेक वात कर सीख देणी[14], तरै क्यूहेक कह्यो— "इणांरै धारू वारू पात्रियां छै सु मागो, सु अै देसी नही, तरै अै आपै परा जासी[15] । तिण ऊपर रावळजी दोय माणस मेलिया नै

---

1 तव दोनो भाई सवार हो मार्गमे काधलसे मिले । 2 हम तुम्हारे काममे मददगार हैं, तुम्हारे शामिल है । 3 कौल वचन किये । 4 हम रात्रि-आक्रमण करेंगे । 5 इस प्रकार कह कर रवाना हुए । 6 कान्हडदेजीके पास आकर सब वात कही । 7 फिर दूसरे दिन सभी सैनिकोको इकट्ठा करके रात्रि-आक्रमण किया । 8 वादशाह भाग कर निकल गया । 9 कहा जाता है कि कान्हडदेकी सेना भागती हुई वादशाही सेनाका पीछा करती हुई मारती गई । 10वादशाही सेनाका नाश करके कान्हडदेजी सोमनाथके पास आये । 11 महादेवजीकी पिंडीको हाथ डाल करके उठाया तो वह तुरत उठ गई और उसको सकराणेमे ही स्थापित कर दिया । 12 कान्हडदेजीने हिन्दुस्थानकी मर्यादा ( प्रतिष्ठा ) रख ली । 13 परतु (गो-भक्षक मुसलमान) वादशाहतमे रहने वाले, अत गोवध करते हैं सो हिन्दुओको यह सहन नही होता । 14 इनको किसी वातके मिस यहांसे निकाल देना । 15 तव किसी एकने कहा कि इनके पास धारू और वारू नामक दो वेश्याएँ हैं, उन्हे मागी जाय, ये देंगे नही, तव अपने आप चले जायेंगे ।

पातरिया मगाई[1]। तरै या कह्यो—"महादेवजीरो देहुरो रावळीजी मडायो सु पूरो हुतो तद म्हे रावळजीनू आपै पेस करता। पिण रावळीजी म्हा कना पात्र्यां मगाई सु म्हानू सीख देवणी तेवडी[2]।" अै छाडिया। पछै राजा हमीरदे चहुवाणरै गया। तरै हमीरदे घणो आदरभाव कियो। पछै हमीरदे ऊपर इण वास्तै पातसाह अलावदीन आयो। घणा दिन गढरोहै रह्यो। पछै समत १३५२रा श्रावण वदि ५ हमीरदेजी काम आया। पछै कितरे'क दिन पातसाहजीरै पजुपायक थो सु किणी'क सूळ उठासू छाडियो[3] सु पातसाह कनैथी आयौ। सु उठै इसडो कोई नही, जु पायकपजुसू जीतै, पातसाहजीरै पायक आगै हुता, सु सोह पजु जीता[4]। तरै पातसाहजी पजुनू फरमायो—"कोई तोसू खेलै तिसडो पायक कठैही सूझै छै ?" तरै पजु अरज की—"साहिबरी वडी माड छै[5]। किणही वातरी परमेसररै घरै कमी न छै। घणा इण प्रथी ऊपर हुसी, सु मै दीठा नही। नै रावळ कानडदे चहुवाण जाळोररो धणी, तिणरो बेटो वीरमदे, मो कनाहीज सीखियो छै[6], सु मो सारीखो खेलै छै।" तरै पातसाहजी रावळ कानडदे सामा लिखिया किया[7]। बोल कौल सूवा भेजिया। "एक वार वीरमदेनू सताब[8] म्हा कनै भेज दीजो।" आदमी फुरमान ले जाळोर आया। कानडदेजी आपरा भाई बन्धु, प्रधान भेळा कर मिसलत करी[9]। सारै कह्यो—"आपै पातसाहनू रीस चाढिया छै[10]। दिल्लीस्वर ईश्वर छै, अै आरभराम[11] छै, करण मतै सु करै। आगलो आपानू खून बगसै छै[12], मया कर वीरमदेजीनू पातसाहजी तेडै छै तो मेल दीजै[13]।"

---

1 इस पर रावलजीने दो मनुष्य भेजे और वेश्याओंको मगवाया। 2 तब इन्होने कहा—महादेवजीका मदिर रावलजीने बनवाना शुरू किया सो वह जब पूरा हो जाता तब हम अपने आप रावलजीको पेश कर देते, परतु रावलजीने हमारे पाससे उन वेश्याओंको मगवा लिया अत हमको यहासे निकाल देने का इरादा कर लिया है। 3 बादशाहके पास पजू नामका एक मल्ल था जो किसी कारणवश छोड कर बादशाहके पाससे चला आया। 4 सबसे पजू जीत गया। 5 परमात्माकी बडी रचना है। 6 मेरेसे ही सीखा है। 7 तब बादशाहने रावल कान्हडदेसे पत्र-व्यवहार किया। 8 जल्दी। 9 परामर्श किया। 10 हमने बादशाहको क्रोधित किया है। 11 करता-धर्त्ता, सर्वाधिकारी। 12 वह अपने अपराधोको क्षमा करता है। 13 बादशाह कृपा करके वीरमदेवजीको बुलाता है तो भेज देना चाहिये।

तरै वीरमदेजीरो वडो सामांन करनै पातसाहजीरी हजूरनू चलायो। कितरेहेक दिने उठै जाय पोहता[1]। पातसाहजीरो मुजरो कियो। पातसाहजी वीरमदेजीनू देख बोहत राजी हुवा। दिन दस पाच आडा घातनै वीरमदेसू कहाव कियो[2]—"एक वार पजु नै थे खेलो, म्हे देखा।" तरै वीरमदे अरज कराई, "म्हारो तो यो काम न छै पिण हजरत फुरमावै छै, तो एकंत[3] हजरत हुकम करसी तठै म्हे नै पजु ख्याल दिखावस्या[4]।" पछै पातसाहजी आपरी अगरहण थी तठै ठौड सवाराई[5]। मोहलरो लोग पिण चिगारै ओळै देखण आयो[6]। पछै उठै पातसाहजी वैठनै पजु वीरमदेनू तेडिया। अै खेलिया। अै एक दोय वार तो बर वर रह्या। पातसाहजी वोहत रीझिया[7]। पजु नै वीरमदे सारीखी-सारीखी सारी विद्या जाणता। वीरमदे तो पजु कना-सूई विद्या सीखियो हुतो, पिण पंजु कांनडदेजी कना[8]छाड पातसाहजी कना[9] आयो, वासै कानड़देजी कनै करणाटरा पायक आया हुता[10], तिणा कना विद्या एक पगरै अंगूठै पाछणो[11] बधायनै उलटी कुळाछ खाइनै पाछणारी चोट निलाडनू कीजै[12], तिका विद्या वीरमदे नवी सीखियो। पाजुरै उलटी कुळाछ खेलनै पाछणारी हळवीसी लगाई[13]। वीरमदे इण घात जीतो[14]। पातसाहजी वोहत रीझिया। मोहलारो लोग रीझियो। पातसाहजीरै बेटी १ वडी कँवारी हुती सु निपट रीझाई[15]। पछै पातसाहजी पांजु वीरमदेनै डेरारी सीख दी[16]। पातसाहरी वेटी हुती खटवाटी ले पडी[17]। धान खाय न पाणी पीवै। मोहलरै लोग पूछियो[18]—"कुण वास्तै[19]?" तरै आ साहजादी कहै–

---

1 वहा जा पहुँचे। 2 पाच दस दिनके वाद वीरमदेको कहलवाया। 3 एकान्तमे। 4 खेल दिखायेंगे। 5 फिर वादशाहने जहा अपने एकान्त रहनेका स्थान था उस जगहको सजाया। 6 महलकी अत पुरिकाये भी चिकोकी ओटमे देखने आई। 7 वादशाह वहुत प्रसन्न हुआ। 8 पाससे। 9 के पास। 10 पीछेसे कान्हडदेजीके पास कर्णाटकके मल्ल आये थे। 11 उस्तुरा। 12 ललाटमे मारी जाये। 13 हलकी सी चोट मारी। 14 वीरमदे इस घात (दाव) मे जीत गया। 15 वादशाहके एक वडी वेटी क्वारी थी वह वहुत ही प्रसन्न हुई। (चौहान कुलकल्पद्रुममे इस लडकीका नाम 'सीताई' लिखा है।) 16 अपने-अपने डेरोको जानेकी आज्ञा दी। 17 प्रतिज्ञा करली। 18 अन्त पुरिकाओंने पूछा। 19 किसलिए।

"कै तो कवर वीरमदे परणू[1], नहीतर धान-पाणी नवे दाते खाऊं[2]।" तरै दिन एक तो मोहलरै लोग उणरी मा सारी हुरमा समझाई— "ओ हिंदू, तू तुरकाणी, किण भात परणावा ?" पिण उण अत हठ माडियो[3], मरण लागी । तरै मोहलरै लोग आ वात पातसाहजीसू मालम कीवी । तरै एक दोय वार पातसाहजी पिण फुरमायो—"आ वात हूणरी नही ।" साहिजादीनू दिन ३ हुवा धान खाया, पाणी पिया । तरै वळै पातसाहजीसू अरज पोहती[4]–साहिजादी मरै छै । तरै पातसाहजी वीरमदेजी वीच आदमी फेरिया । वीरमदे घणो ही उजर कियो । पण पातसाह अत हठ माडियो, तरै दीठो[5]—"कै तो[6] मरा कै वात कबूल की चाहीजै ।" तरै वीरमदे दाव कियो[7] । कह्यो– "भली वात, साहो जोवाडीनै म्हानू विदा कीजै[8] । म्है जाळोर जाय सूल सामान कर जान ले साहा ऊपर आवा, परणा[9] ।" तरै पातसाहजी कह्यो—"तू उठै जाय बैठ रहै । नही आवै तो तिण वातरा ओळ दे जा[10]।" तरै राण वणवीरोतनू ओळमे पातसाहजी कनै राखनै वीरमदे घरे जाळोर आयो । वात हुती सु रावळ कानडदेजीसू मालुम की । कानडदेजी दीठो, वात विगडी[11] । तरै कामदारानू तेडनै गढरोहारो सामान सताबसू करायो[12] । पातसाहजी राणानू पाचे दिने साते दिने तेडनै फुरमावै—"अजेस वीरमदे नही आयो ।" राणै पातसाहनू वाते लगाय लियो छै—"सामान करै छै, सु सताब आवसी ।" मास २ तथा ४ यू आघा नीसरिया[13] । पछै पातसाहजी आपरा हजूरी लोग दिनारो अवादो[14] बोलनै जाळोर मेलिया[15] । वे अठै आया । रावळ कानडदे नै कवर वीरमदेनू मिळिया । मुहडै तो

---

1 या तो कुवर वीरमदेके साथ विवाह करू । 2 नही तो अन्नजल नये दात आने पर ( नये जन्ममे ) लेऊ । 3 परतु उसने वहुत हठ किया । 4 पहुँची । 5 तव देखा । 6 या तो । 7 दाव खेला । 8 लग्न दिखा कर हमको विदा कर दें । 9 हम जालोर जा कर सव सामान और तैयारी करके लग्न ऊपर वरात ले आवें और शादी करलें । 10 यदि वापिस नही आवे तो अपने वदलेमे जामिनकी तौर पर आदमी रख कर चला जा । 11 कान्हडदेजीने देखा, वात तो विगड गई । 12 तव कामदारोको वुला कर शीघ्र ही किलेवदी का सामान तैयार करवाया । 13 इस प्रकार महीने २ तथा ४ आगे निकल गये । 14 मयाद । 15 भेजे ।

हळभळ करै, आवणरी माड का नही[1] । गढरी तैयारी हुवै छै । सु पातसाहजी वीरमदेनू तेडे मेलिया था, त्या पातसाहजीनू आय कह्यो– "वीरमदे नावे, गढ सझै छै[2] ।" तरै पातसाजी बुरो मानियो । तगा कोटवाळनू कह्यो—"जु राणानू वेडी पहरावो ।" तगै रांणानू कह्यो– "थे वेडी पहरो ।" तरै राणो तगानू मारनै कुसळ खेमै गयो[3] ।

## साखरा दूहा

काय[4] आडा पग आड, काय कर घात[5] कटारिया ।
छोगाळा छळ छाड, राणा रावत वट[6] तणो[7] ॥ १ ॥
नगो न जाणै तोल[8], मूरख मछरीका[9] तणो ।
कारण किणी'क बोल, मारै काय आपण[10] मरै ॥ २ ॥
मुख[11] पूछै सुरताण, कोलाहळ केहो[12] कटक ।
काय रीसाणो रांण, मैगळ[13] खभ मरोडिया ॥ ३ ॥

## वात

राणो कुसळ-खेमै घरे आयो । घोडो गाव भीथडै कनै मुवो[14] । पछै पातसाहजी मुदफरखान दाऊदखांननू पाच लाख घोडासू विदा किया । सु ग्रै आय गढ लागा[15]। रोज-रो-रोज ढोवो हुवै, तरै उठारी खवर ढोलरै ढमकै पातसाहजीनू आवै[16], कहै छै—वारै वरस विग्रह हुग्रो । पछै कहै छै—दहिया रजपूत २ खूनमे[17] आया था, त्यानू कानडदेजी सूळी दिराया था[18], सु वे सूळी ऊपर थका वायरासू अपूठा हुता सु सांम्हां हुवा[19] । सु रावळ कानडदेजी देखनै हंसिया ।

---

1 मुह पर खूब वातें बनाते हैं, परतु आनेकी तैयारी कुछ नही । 2 वीरमदे नही आयेगा, लडाईके लिये गढमे सामान सजाया जारहा है । 3 तव तगाको मार करके राणा कुशलक्षेममे चला गया । 4 अथवा, या तो । 5 प्रहार । 6 गर्व । 7 का । 8 रहस्य, मर्म । 9 स्वाभिमानियोंका । 10 स्वय । 11 खवर । 12 कैसा । 13 हाथी । 14 राणाका घोडा भीथडा गावके पास मर गया । 15 सो इन्होने आकर गढ घेर लिया । 16 हमेशा ही धावे होते, तव वहाकी खवर ढोल वजा कर वादशाहको पहुँचाई जाती । 17 खून करनेके अपराधमे । 18 उनको कान्हडदेजीने सूली चढवाया था । 19 सो वे सूली पर चढे हुए भी उल्टे थे सो हवासे सन्मुख हो गये ।

कह्यो—"दहिया भेळा ह्वै ज्यू जाणीजै छै[1] । गढ लिरासी[2] ।" सु वारो भाईबध दहियो रावळजीरी पाखती ऊभो हुतो[3], तिण वात आ सुणी । उणनू खटक लागी[4] । उण तुरकानू भेद दीनो । गढ सुरग पिण लागी[5] । कोट उडियो । गढ भिळियो[6] । काधळ खाडैरै मुहडै घणो पराक्रम कियो[7] । रावळ कानडदेजी अलोप हुवा[8] । कुवरागुर वीरमदेजो अतरा[9] साथसू काम आयो । पछै तुरका वीरमदेरो माथो वाढियो[10], नै दिली ले गया । पछै वा पातसाहजीरी बेटी वीरमदेरो माथो थाळी माहै घातनै[11] परणीजण लागी, सु माथो सवो हुतो सु फिरनै अपूठो हुवो[12] । तरै साहजादी पूरवजनमरी वात कही, तरै माथो अपूठो हुतो सु फिरनै सवळो हुवो[13] । तरै साहजादी फेरा खायनै वासै कहै छै सती हुई । स० १३६८ वैसाख सुदि ५ बुधवाररो गढ जाळोर तूटो । गढ तूटता साथ जिसो हुवो तिणरी हकीकत—

अतरो साथ कानडदेजीरो सवौ हुवो[14] । कानडदेजी आप अलोप हुवा—

१ काधळ देवडो ।
१ कानो ओलेचो ।
१ लिखमण सोमत ।
१ जैतो देवडो ।
१ जैतो वाघेलो ।
१ लूणकरण ।
१ मान लणवायो ।
१ उरजन विहळ ।
१ चादो विहळ ।

---

1 ऐसा जाना जाता है कि दहिये सगठित हो रहे है । 2 गढ लें । 3 पासमे खडा था । 4 उसको चुभी । 5 गढमे सुरग लगवाई गई । 6 गढ पर शत्रुओका अधिकार हो गया । 7 काधलने तलवारके सामने बहुत पराक्रम दिखाया । 8 रावल कान्हडदेजी अलोप हो गये । 9 इतने । 10 काटा । 11 रख कर । 12 माथा सन्मुख था सो उलटा हो गया । 13 सीधा हो गया । 14 वीर गतिको प्राप्त हुआ ।

१ जैंतमल ।

१ रा० सातळ ।

१ सोमचद व्यास ।

१ सलो राठोड ।

१ मलो सेपटो ।

१ झाझण भडारी ।

१ गाडण सहजपाळ ।

४ राणी जमहर पैठी[1]—

१ ऊमादे । १ कँवळदे । १ जैतळदे । १ भावळदे ।

इतरो[2] साथ कानडदेजी अलोप हुवा वासै[3] तीजै दिन वीरमदेजी साथै काम आयो—

१ कँवर वीरमदेजी ।

१ अडवाळ वीहळ ।

१ आल्हण देवडो ।

१ आल्हण सोहड ।

१ धारो सोढो ।

१ भाणो धाधळ ।

१ सीधळ पतो ।

१ झाझण परिहार ।

इतरो साथ निसर गयो[4]—

१ सेलोत लूढो ।

१ मेरो ।

१ अरसी ।

१ विजैसी ।

१ सागो सेलार ।

१ सलूणो ।

---

1 चार रानियोने चिता-प्रवेश कर जौहर किया। 2 इतना। 3 पीछे। इतना साथ निकल भागा।

१ जेसो ।

१ लखमण ।

१ लूणो दहियो ।

१ धुधळियो साहणी ।

१ पतो दहियो ।

१ वीलण सोभत ।

१ मूळू सेपटो ।

१ लालो ।

१ नरसिघ सीधळ ।

१ जगसी सीधळ ।

१ करमसी ।

१ वीको दहियो वडो स्यांमद्रोही हुवो, जिणरा भेदसू गढ जाळोररो तूटो[1] ।

इति सोनगरा जाळोररा धणियारी ख्यात वार्ता सम्पूर्ण ।
लिखत वीठू पना सीहथळरो वाचै जिण सिरदारसू
जैश्रीरुघनाथजीरी मालुम होसी ।

1 दहिया वीका वडा स्वामीद्रोही हुआ, जिसके भेद देनेसे जालोरका किला टूटा ।

# वात साचोररी

सहर तो कदीम छै[1] । घणां दिनांरो वसै छै[2] । पाधर मैदांनमे वसै छै[3] । सहर वीच कोट ईंटारो थो सु तो विचले वरसे[4] पड गयो नै दरवाजौ १ कोटरो सावतो[5] नै क्युहेक[6] भीत रावळा घरा वासै, क्युहेक दरवाजारै मुहडै थोडीसो भीत रही थी । पछै समत १६८१रै टाणै[7] महाराजा श्रीगजसिंघजीनू साचोर जागीर हुती, तद एक वार काछी कटक माणस ५००० साचोर ऊपर आया हुता[8], तद मु० जैमल जैसावतनू परगनो थो । पछै जैमलरै चाकरै वेढ कीवी[9] । कटक काछी भागौ । पछै मु० जैमल कोट फेर सवरायो । सहररो मंडाण निपट सखरो छै[10] । वडो वाजार गुजरातरी तरै कैहलवांरो छायो छै । देहुरा २ जैनरा छै । एक मु० जैमलरो करायो छै । कोट माहै कुवो १ छै, पिण पांणी नही । सहर पाणीरी कमी । कुवा रुखी वाय १ चहुवाण तेजसीरी कराई छै, तिणरो खारो पांणी[11] । घणी सहररी मंड उण ऊपर छै[12] । राव वलूनू साचोर हुई तरै कुवो १ दिखण दिसनै राव वलू खिणायो छै[13] । तिण माहै पाणी मीठो पुरसे २० नीसरियो छै[14] । उण ऊपर क्यू वाग छै[15] । तळाव घणा को नही । नाडा[16] दोय तीन छै । मास २ तथा ३ पाणी रहै । पाणीरो गावरै खेडै दुख हीज छै[17] । मुदै खारो कुवो सहरमे तेजसीरी वाय ऊपर छै तिण ऊपर तीण ६ वहै छै[18] । राव बलूरो करायो कोहर दिखण

---

1 शहर तो पुराना है । 2 वहुत समयसे वस रहा है । 3 समतल मैदानमें वसा हुआ है । 4 अभी थोडे वर्ष हुए । 5 साबित । 6 कुछ । 7 समय । 8 तव एक वार काछियोकी सेनाके ५००० मनुष्य साचोर पर चढ आये थे । 9 महता जयमलके चाकरोंने लडाई की । 10 शहरकी रचना वडी सुन्दर है । 11 वावडी एक कुएकी ओर चौहान तेजसीकी वनवाई हुई है, जिसका पानी खारा है । 12 शहरकी अधिक भीड उसी पर लगती है । 13 राव वलूको जव साचोर मिली तव उसने एक कुआ शहरसे दक्षिणकी ओर खुदवाया । 14 उसमे २० पुरुष नीचे मीठा पानी निकला है । (पुरुष=गहराईकी एक माप जो मानमे हाथ उठा कर खडे हुए मनुष्यके वरावर होती है । पुरसा ।) 15 उसके ऊपर छोटासा वाग भी लगा हुआ है । 16 छोटी तलैया । 17 गावके आसपास पानीका कष्ट ही है । 18 तेजसीकी वावडीके ऊपर, जो खारे पानीका कुआ है और जिस पर छ चरसे चलते है, वही शहरके लिए पानीका आधार है ।

दिसनूं कोस छै[1], पाणो मीठो छै। साचोरसूं कोस १ गांव लाछडी उत्तरनूं छै, तिण[2] गाव कूवो १ छै तिणरो पाणी निपट मीठो पालर[3] सारीखो छै। उठासूं वाहणा पाणी सहर आवे छै[4]। साचोररो निर-जळ देस छै। सहररी पाखती जाळ, कैर घणा[5]। परगनो डकसाखियो[6] रैत[7] पटेल, रजपूत। गाव १२६ लागै। तिण माहे गाव २८ नदी लूणी सूराचद राडधरारै काठै नीसरै, तरै इतरा गावा साचोररा माहे वहै[8]। तिण गावे गोहूं, चिणा सेवज हुवै[9], रेल आया[9]। रेल नावै तरै गावा २८ कोसीटा २०० हुवै[10]। बीजा[11] गाव सारा डक-साखिया। बाजरी, मोठ, मूग, तिल, कपास हुवै। परगना माहे भूमिया देवडा, वागडिया तिणारा गाव छै[12]। नै चोहुवाण पूरेचा गावा माहै छै[13]। सहर साचोर माहै सकना तुरक घर १५० छै[14]। सकना कहावै छै। खेत १०० सहर माहै पसाइता खावै छै[15]। खूम ३ उणारा छै १ वहलीम, १ भेरडियो, १ पायक, गाव दीठ रु० २) पावै छै[16]। गाव १२६ माथै दाम २४८०००० । साचोर सहररी वस्ती उनमान[17] घर १२४५—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७०० | महाजन ओसवाळ श्रीमाळ। | १५ | दरजी। |
| ८० | बाभण श्रीमाळी[18]। | १२ | मोची। |
| १० | रजपूत। | ४० | तेली। |
| १५० | सकना। | ३५ | सोनार। |

---

1 राव वलूका वनवाया हुआ कुआ दक्षिण दिशाकी ओर आधे कोसकी दूरी पर है। 2 उस। 3 वर्षा जल। 4 वहासे बैलगाडियो पर पानी शहरमे लाया जाता है। 5 शहरके पास जाल (पीलू) और कैरके वृक्ष बहुत है। 6 साचोर बरसाती फसलका परगना है। 7 प्रजा। 8 इनमे २८ गाव ऐसे है जिनमे लूनी नदी बहती है, जो सूराचद और राडधराके पास सीमा पार करती है। 9 इन गावोके किनारोके खेतोमे लूनी नदीके पानीकी रेल आनेसे गेहूँ और चने सेजेसे होते है। 10 और जब रेल नही आती है तब इन २८ गावोमे २०० कोसीटो द्वारा गेहूँकी फसल होती है। 11 दूसरे। 12 परगनेमे भोमियोके रूपमे देवडे और वागडिया चौहानोके गाव भी है। 13 और पूरेचा चौहान भी गावोंमे रहते है। 14 साचोर शहरमे १५० घर सकना मुसलमानोके है। 15 ये शहरमे एक सौ खेत माफीके खा रहे हैं। 16 इनके तीन मगन (अन्त्यज) वहलीम, भेरडिया और पायक है जिनको प्रति गाव रु० २) मिलते है। 17 अनुमान। 18 श्रीमाली ब्राह्मण।

२५ पीजारा ।
१५ सूत्रधार[1] ।
१२ छीपा धोवी ।
४ कूभार ।
५ रगरेज ।
१५ भोजग[2] ।
५ माळी ।
२ लोहार ।
५ गंध्रप[3] ।
३५ ढेढ ।
४० भील ।

## वात चहुवांणां साचोररा धणियांरी

चहुवाण विजैसीह आलणोत[4] सीहवाडै रहतो, नै दहियो विजैराज तद साचोर धणी थो । तिणरै भाणेज महिरावण वाघेलो छै[5], तिण[6] नै[7] विजैराज दहियै माहोमाहि जीव वुरो हुवो[8] । तरै वाघेलो विजयसीहसू मिळियो । कह्यो—"आपे साचोर ला, आधोआध हैसां[9] ।" तरै विजैसी कह्यो—"भली वात ।" पछै वाघेलै तेडियो[10] तद विजैसी सीहवाडारो चढियो गयो । उठै दहिया मारिया । ओ वाघेलो पिण मारियो । साचोर लीवी । आपरी आण फेरी[11] । समत ११४१ फागुण वदी ११ गुर थापना साचोर कीवी[12] ।

### कवित्त

धरा धूण धकचाळ[13], कीध दहिया दहवट्टे[14] ।
सवदी सवळा साल[15], प्राण मेवास पहट्टै ॥
आल्हण सुत विजयसी, वस आसराव प्रागवड ।
खाग त्याग खत्रवाट, सरण विजै पजर सोहड[16] ॥
चहुवाण राव चोरग अचळ, नरा नाह अणभगनर ।
धूमेर सेस जा लग अटळ, ताम[17] राज साचोर धर ॥ १ ॥

---

1 खाती । 2 शाकद्वीपी ब्राह्मण । 3 गन्धर्व । 4 आलणका वेटा । 5 उसका भानजा महिरावण वाघेला है । 6 उसके । 7 और । 8 आपसमे खट-पट हो गई । 9 अपने साचोर पर हमला कर उस पर अधिकार करलें, दोनोका आधा-आधा हिस्सा । 10 बुलाया । 11 अपनी दुहाई फेर दी । 12 सम्वत् ११४१ फाल्गुन कृष्ण ११ गुरुवारको साचोरमे अपने राज्यकी ( यहा स० १२४१ होना चाहिये, क्योकि विजयसिंहके पिता आल्हणका समय १३वीका पूर्वार्द्ध निश्चित है । तव स० ११४१ मे आल्हणका वेटा विजयसिंह नही हो सकता । ) 13 युद्ध । 14 नाश । 15 शल्य रूप । 16 सुभट । 17 तव तक ।

पीढियारी विगत—

१ राव लाखण ।

२ बलि ।

३ सोही ।

४ महदराव ।

५ अणहल ।

६ जीदराव ।

७ आसराव ।

८ माणकराव ।

९ आल्हण ।

१० विजैसी । साचोर ली ।

११ पदमसी ।

१२ सोभ्रम ।

१३ साल्हो सोभ्रमरो । निपट वडो रजपूत हुवो । जाळोर गढ पातसाह अलावदी घेरियो, तद काम आयो । जाळोररी पैहली प्रोळ चढता साल्हा चौकी कहीजै[1] । आगै आप पुराणा माहै सुणियो छो[2]—"सग्रामरै विखै पग सामा भरै तठै अश्वमेधरो फळ लहै[3] ।" सु वात मनमे आणनै[4] रावळ कानडदे जीवता घोडै चढनै साथळा माहै खीला पाती जडाय[5], पातसाही कटक माहै घोडो उपाड नाखियो[6] । कानडदे उमाहडै[7] मोहळ[8] बैठा देखै छै । घणो लडियो, घणो विसेख कियो[9] ।

1 जालोरके किले पर चढते हुए पहली पौलके पास बनी हुई साल्हा चौकी कही जाती है । जिस जगह पर अलाउद्दीनसे बडी बहादुरीसे लडता हुआ साल्हा काम आया था । 2 था । 3 सग्राममे अपने पाँव आगे बढाता जाय तो अश्वमेघके फलकी प्राप्ति होती है । 4 मनमे ला करके । 5 जवाओमे लोहेकी कीलें और पत्तियें जडवा करके । 6 बादशाही सेनामे अपने घोडेको डाल दिया । 7 उत्साहसे । 8 महल । 9 अत्यन्त पराक्रम दिखलाया ।

## कवित्त

अलावदी आरम्भ[1] कीध[2] सोनागर[3] ऊपर ।
हुवो समर तलहटी जुडै चहुवांण मच्छर[4] भर ।।
सकतीपुरचो साम प्रांण सुरतांण सकायो ।
गाजे[5] घड़[6] गज रूप चीत[7] आलम चमकायो ।।
राजियो राव कानड रिणह कोतक रिरथ[8] थभियो ।
वरमाळ कठ अपछर वरै साल्ह विवाणै[9] माल्हियो[10] ।। १ ।।

१३ वीकमसी ।
१४ पातो ।
१५ राव वरजाग ।
१३ हापो, तिण रै वासला सूराचद धणी[11] ।
१४ घड़सी ।
१५ सहसमल ।
१६ भोजदे ।
१७ उघरण ।
१८ वीसो ।
१९ डूगर ।
२० राणो मान
२१ रांणो भारवर ।
२१ राणो सूजो ।
२२ राणो सादूल सूजारो ।
२२ दयाळदास सूजारो ।
२३ अखो दयाळदासरो ।

राव वरजाग पातारो । पातो, वीकमसी, साल्हो सोभ्रम, पदमसी विजैसी, आक १५ राव वरजाग नै मिलकमीर वेढ हुई स० १४७८[12]

---

1 हमला । 2 किया । 3 जालोरका स्वर्णगिरि नामका किला । 4 क्रोध, गर्व । 5 नाश कर दिया । 6 सेना । 7 चित्त । 8 सूर्य । 9 विमानमे । 10 प्रस्थान किया । 11 हापा, जिसके पीछे वाले (वंशज) सूराचदके स्वामी हुए । 12 राव वरजाग और मीर-मलिकके स० १४७८ मे लडाई हुई ।

राव वरजागनू मारनै साचोर मुगलै लीवी[1] । राव वरजांग वडो ठाकुर हुवो । गढ जेसलमेर राव वरजाग परणियो[2], तद इतरो खरच लाग दापो कियो सु अजेस जेसळमेर उण चँवरीको परणीजै न छै[3] । राव वरजागरी चँवरीरी ठोड प्रगट छै[4] ।

राव वरजागरा बेटा—

१६ जैसिघदे । साचोर धणी । वरजागरो[5] ।

१६ तेजसी । साचोर धणी ।

१६ हीमाळो ।

१६ राघवदे ।

१६ राम ।

१६ आसो ।

१६ देपाळ ।

जैसिंघदे वरजागरो । साचोर धणी । राणा उदैसिंघरी मेवाड बैहन परणियो हुतो[6] । आक १६ ।

१७ नीबो ।

१७ धीरो ।

१७ जगमाल साचोर धणी । तिणनू पीथमराव तेजसीयोत मारियो[7] ।

१७ कचरो ।

१७ सूरदास ।

१७ भैरव ।

१७ रतन जैसिंघदेरो । आखडी ४९ वहैतो[8] ।

नीबो जैसिघदेरो । आक १७ ।

---

1 राव वरजागको मार कर मुगलोने साचोर लेली । 2 विवाह किया । 3 तब लाग-दापा आदिमे इतना खर्च किया कि अभी तक जैसलमेरमे उस चौरी पर ( इससे अधिक खर्च करने वाला अभी तक कोई उत्पन्न नही हो सका है ) किसीका विवाह नही किया जाता । 4 राव वरजागकी वह चौंरीकी जगह अब तक प्रसिद्ध है । 5 वरजागका बेटा । 6 जयसिंहदे, वरजागका वेटा, पुन साचोरका स्वामी हुआ । मेवाडके राणा उदयसिंहकी वहनसे विवाह किया था । 7 जगमाल साचोरका स्वामी जिसको तेजसीके वेटे पीथमरावने मारा । 8 रतन जयसिंहदेका वेटा, ४९ प्रतिज्ञाओ पर आचरण करने वाला ।

१८ राणो नींबावत । राणारै पटै राव मालदेरी दीधी समदड़ी सिवाणारी थी[1] ।

१९ महकरण रांणावत । मोटा राजाजीरो सुसरो[2]। दलपतजीरो मांमो तुरकाण माहै काम आयो ।

२० सिखरो महकरणरो । राजा श्रीगजसिंघजीरो सुसरो । मोटा राजाजीरो चाकर । खेजड़ली गाव ३ सू पटै[3] ।

महकरणरो परवार, सिखरारो परवार—

२१ रामसिंघ सिखरावत ।

२१ हरिदास सिखरावत ।

२१ दयाळदास सिखरावत ।

२२ राघोदास ।

२० देईदास महकरणोत । मोटा राजाजीरै समावळीरो चाकर[4]। समत १६४० गाव चवाडी जोधपुररी, स० १६ ॱ तातूवास ओईसारो, सं० १६ ॱ ॱ गोयदरो-वाडो दूनाडारो, समत १६ ॱ दहीपुडो जोधपुररो[5] ।

२१ कचरो देईदासरो । समत १६६३ तांतूवास पटै । समत १६७४ हूण गाव सोभतरो पटै । समत १६७७ तिमरली राम कह्यो[6] ।

२२ मुकददास ।

२२ हरिदास ।

२१ केसवदास देईदासरो । समत १६७३ दहीपुडो जोधपुररो पटै ।

२० सावतसी महकरणोत । दलपतजीरो मामो नै दलपतजीरो हीज चाकर । ठाकुराईरो धणी[7] ।

---

1 राणा, नींवाका बेटा । राणाको राव मालदेवकी दी हुई सिवाना परगनेकी समदडी पट्टेमे थी । 2 मोटा राजा उदयसिंहजीका सुसरा । 3 तीन गावोंके साथ खेजडली गाव पट्टेमे । 4 मोटा राजाजी उदयसिंहके समावली गाँवका चाकर । 5 इसे सम्वत् १६४० मे जोधपुर परगनेका चवाटी, स० १६ मे ओईसाका तातूवास, स० १६ दूनाडेका गोविंदरो-वाड़ो और सम्वत् १६ ॱ जोधपुर परगनेका दहीपुडा—पट्टेमे मिले थे । 6 स० १६७७ मे तिमरली गाँवमे मरा । 7 बडी ठकुराईका मालिक ।

२१ सादूळ सावतसीयोत । समन १६८४ गाव ६, रुपिया ४७००) नागोररा, ब्रहानपुर रावळै पटै दिया[1] । पछै छाड मोहबतखारै वसियो । पछै दखिणमे काम आयो[2] ।

२१ गोपाळदास सावतसीयोत । दोलताबाद मोहबतखारै काम आयो ।

२१ वलू सावतसीयोत । महेसदास दलपतोतरो चाकर थो । पछै समत १६८५ महेसदास मोहवतखारै वसियो[3], तरै जुदो मोहबतखारै चाकर दिखण माहै लोहडै पडियो[4] । पछै मोहबतखान मुवो[5] तद महेसदास बलू बेहू[6] पातस्याही चाकर हुवा । महेसदासनू जाळोर हुवो[7], तरै बलूनू साचोर दियो थो स० १६६६ । पछै स० १७१७ पूरबनू मुवो[8] । राव बलू सात सदी जात, चारसौ असवार मुनसब[9] थो । चौ० वेणीदास बलुओतरो मुनसव चार सदी जात सौ असवार हुवो । दूजो[10] परगनो विहानू हुवो थो । दिन थोडा जोवियो[11] । पछै सकतसिघ वेणीदासोतनू मुनसब जात अढाई सदी, तीस असवार मुनसब हुवो ।

२२ वेणीदास ।

२२ नरहरदास । स० १७१४रा जेठमे धोलपुर काम आयो ।

२३ सकतसिघ ।

२१ अचलदास सावतसीयोत । मोहबतखारै दिखणमे काम आयो ।

२२ गोयददास ।

२१ भीव सावतसीयोत । स० १६७७ जाळोररो चवरा पटै[12] । जूझारसिघ दलपतोतरै काम आयो[13] ।

---

1 सम्वत् १६८४मे महाराजा जसवतसिहने बुरहानपुरमे रु० ४७००)की आयके नागौरके ६ गाव पट्टेमे दिये थे । 2 पीछे छोड कर मोहवतखाके जाकर रहा और दक्षिणमे काम आगया । 3 मोहवतखाके जाकर रहा । 4 घायल हुआ । 5 मर गया । 6 दोनो । 7 महेशदासको जालोर मिला । 8 पूर्वमे मरा । 9 राव वलूका मनसव सातसौ जात और चारसौ सवारका था । 10 दूसरा । 11 थोडे दिन ही जीवित रहा । 12 सावतसिहका वेटा भीम, जिसको जालोर परगनेका चवरा गाव पट्टे । 13 दलपतके वेटा जूझारसिहके काम आया ।

२२ विहारो ।

२१ कलो सावतसीयोत । जूझारसिंघ दलपतोतरै काम आयो ।

२१ अजो सावतसीयोत । स० १६७५ कैरलो पालीरो पटै । पछै कनीराम दलपतोतरै वसियो सु व्रहानपुर कनीराम साथै काम आयो ।

२० रायमल महकरणोत ।

२१ भाण दलपतरै कांम आयो ।

२२ अखैराज, कनीराम दलपतोतरै कांम आयो । दिखण डेरा मांहै फौज नीसरी तठै[1] ।

२१ भाण, किसनसिंघजीरै वास थो उठै काम आयो[2] ।

२० रतनसी महकरणोत ।

२० रावत महकरणोत । स० १६४० हीरादेसर पटै । पछै वीसळू दोवी । लूणो रांणावत । रांणारो वडो वेटो वडो रजपूत हुवो[3] । आक १९ ।

२० महेस जाळोर कांम आयो ।

२१ नारण ।

२० किसनो । उग्रसेण चन्द्रसेणोत साथै कांम आयो[4] ।

२० कान्हो ।

२१ हीगोळ ।

२२ सकर हीगोळरो ।

२० रांमो लूणावत । मीच मुवो[5] ।

२१ सूजो । दलपतजीरै काम आयो ।

२२ लिखमीदास (भीव करणोतरै[6]) ।

२२ जैतसी (सवळसिंघजीरै[7]) ।

---

1 दलपतके वेटे कनीरामके अखैराज काम आया, दक्षिणमे डेरोंमे हो कर फौज निकली थी वहा पर । 2 भाण, किसनसिंहजीके यहा रहता था और वही काम आया । 3 लूणा, राणाका वडा वेटा वहुत वडा राजपूत हुआ । 4 राव चन्द्रसेनके वेटे उग्रसेनके साथ काम आया । 5 मौतसे मरा । 6 लिखमीदास भीम करणोतके यहा रहता है । 7 जैतसी सवळसिंहके यहा रहता है ।

माडण राणावत, श्राक १६ ।

२० सावळ माडणोत । स० १६५२ वालो भाद्राजणरो धना भेळो[1] । पछै स० १६६६ सुगाळियो सावळनू[2] । पछै राखाणो भाद्राजणरो दियो थो, सु समत १६७१ रावळै खिराळूरै परगनै काम श्रायो[3] ।

२१ कलो । समत १६७१ राखाणो बरकरार ।

२१ जसो ।

२१ जगनाथ ।

२२ नरसिंघदास ।

२० सूजो माडणोत । स० १६ सूजा सावळनू वालो नै नीलकठ भाद्राजणरा[4] ।

२१ पतो सूजारो । स० १६८५ सिराणो जाळोररो ।

२२ खेतसी ।

२२ नाथो ।

२० धनो माडणोत । स० १६७० मेहळी सिवाणारी पटै[5] । सं० १६८३ इद्राणो सिवाणारो[6] । पछै मुवो[7] ।

२१ तेजमाल धनारो । धनारै वदळै चाकरी करतो सु तिमरणी राम[8] कह्यो ।

२२ सुरताण ।

धीरो जैसिंघदेवोत, श्राक १७ ।

१८ वरसिंघ धीरावत । साचोर कांम श्रायो ।

१९ वीको वरसिंघरो भाचराणै सीधले मारियो[9] ।

---

1 माडणका वेटा सावल, स० १६५२ भाद्राजुनका वाला गाव धन्नेके शामिल पट्टेमे । 2 वादमे सावल को स० १६६६ मे सुगालिया गाव पट्टेमे । 3 फिर वह स० १६७१ मे खिरालू परगनेमे काम श्राया । 4 माडणका वेटा सूजा, स० १६ मे सूजा श्रौर मावल दोनो भाइयोको भाद्राजुनके वाला श्रौर नीलकठ पट्टेमे थे । 5 माडणका वेटा धन्ना, जिसके स० १६७०मे सिवानेका मेहली गाँव पट्टेमे । 6 स० १६८३मे सिवानेका इन्द्राणा गाव पट्टेमे । 7 फिर मर गया । 8 धन्नेका वेटा तेजमल, जो धन्नेके वदलेमे चाकरी करता था वह तिमरणी गावमे मरा । 9 वरसिंहका वेटा वीका, जिसे सिंधल राजपूतोने गाव भाचरणेमे मारा ।

२० हमीर वीकावत । राव चद्रसेणरो सुसरो । हरदास महेसोत मारियो[1] ।

२१ पचाइण हमीररो । सं० १६६६ वीजळी भाद्राजणरी थी[2] । उरजन चाकरी करतो[3] ।

२२ रायसिंघ स० १६ ... रोहचो जोधपुररो, सं० १६६६ रायमो भाद्राजणरो पटै केसोदास भेळो[4] । सं० १६८५ सीहरांणो भाद्राजणरो ।

हमीर वीकावतरो परवार आंक २० । पंचाइणरो परवार आक २१ ।

२२ केसोदास पंचाइणरो बालपुर मांहै राम कह्यो[5] ।

२२ उरजन पचाइणरो । स० १६८६ साहरियाणै थो[6] ।

२२ भोजराज पंचाइणरो ।

२२ वीरम हमीररो ।

२२ नारायणनू भाद्राजणरो रेवडा पटै[7] ।

२२ भाण ।

२१ देदो हमीररो ।

२२ मन्होर, भवरांणी रहै[8] ।

२१ भोपत ।

२१ जैतसी हमीररो । जैतसी नगावतनू तुरके पकडियो तठै काम आयो[9] ।

अखैराज धीरावत, आक १८—

१९ कूपो अखैराजोत ।

२० राम । भाखरसी दासावतरै काम आयो ।

२० कान्हसिंघ जैतसीयोतरै काम आयो ।

---

1 वीकेका बेटा हमीर, जो राव चद्रसेनका सुसरा था जिसे महेशके बेटे हरदासने मारा । 2 हमीरका बेटा पचायण, जिसके पट्टेमे भाद्राजुनका गाव वीजली था। 3 चाकरी पचायणका बेटा अर्जुन करता था। 4 रायसिंहको जोधपुरका रोहेचो गाव स० १६ · मे पट्टे और स० १६६९मे भाद्राजुनका रायमो गाव उसके भाई केशोदासके शामिल पट्टेमे। 5 पचायणका बेटा केशोदास वालपुरमे मरा। 6 पचायणका बेटा अर्जुन, जिसको स० १६८९मे साहरियाणो गाव पट्टेमे था। 7 नारायणको भाद्रजुनका रेवडा गाव पट्टेमे। 8 मनोहर,भवराणी गावमे रहता है। 9 हमीरका बेटा जैतसी, नागाके बेटे जैतसीको जब मुसलमानोने पकडा, वहा काम आया।

१९ गोपो अखैराजोत। जैतसी ऊदावत साथै वडी वेढ काम आयो[1]।

२० लोलो गोपावत।

२१ मानो, सुगाळियै सीधल आया तठै काम आयो[2]।

२२ आसो।

२२ करन।

२१ जोधो लोलावत।

२२ भोपत।

२१ सूरो लोलावत।

२० लाखो गोपावत। सासरै ईदारै गयो थो तठै काम आयो[3]।

भैरूदास जैसिंघदेग्रोत, आक १७—

१८ जाभण भैरूदासोत। राव मालदेरै, मेहगडो सिवाणारो[4]।

१९ पिराग जाभणोत। स० १६४० मोटै राजाजी गाव गादेरी लवेरारी पटै दी थी, इतवारी धड थो[5]।

२० अमरो पिरागरो स० १६...गादेरी वरकरार रही।

२० सकतो स० १६६८ गोपडी सिवाणारी। स० १६७२ रूदिया कूवो[6] लवेरारो। पछै छाडियो।

२० नरहरदास स० १६७० नरावस जोधपुररो पटै। पछै स० १६७१ अजमेर गोयददासजी साथै काम आयो।

२१ मनोरदास नरहरदासोत। स० १६७२ नरावस वरकरार राखियो। स० १६८१ मेहलाणो दियो। तठा पछै[7] स० १६८२ कुवर अमरसिंघजीरै वसियो[8]।

२० भगवानदास। स० १६७८ तानूवास पटै।

---

1 अखैराजका वेटा गोपा, ऊदाके वेटे जैतसीके साथ वडी लडाईमे काम आया। 2 माना, सुगालिये गावमे सीधल चढ कर आये तव काम आया। 3 गोपेका वेटा लाखा, ईदोके यहा अपनी ससुराल गया था वहा काम आया। 4 भैरोदासका वेटा जाभण राव मालदेवका चाकर, सिवानेका मेहगडा पट्टेमे। 5 प्रयाग जाभणका वेटा, जिसे मोटे राजा उदयसिंहने लवेराका गादेरी गाव पट्टेमे दिया था, विश्वासपात्र मनुष्य था। 6 लवेरे गावका रूदिया नामक कुआ। 7 जिसके वाद। 8 निवास किया।

२० अचळदास प्रागदासोत ।

१९ रामो जाभणरो । पोकरणरै गाव चद्रसेणजीरै कांम आयो, देवराजरी वेढ[1] ।

१९ कान्हो जाभणोत । मेहगडै मीच मुवो[2] ।

२० मैहरावण कान्हावत ।

२१ तिलोकसीनू वाघलप सिवांणागी ।

१९ सेखो जाभणरो ।

२० लिखमीदास सेखावत । स० १६४० वासणी हरढाणा तीरै[3] । स० १६७७ सिराणो जाळोररो ।

१७ दयाळदास । स० १६८० जाळोररो गाव पटै[4] ।

१७ डगरो लिखमीदासोत ।

१७ ऊदो, मेडतारो भानावास पटै ।

१७ विसनदास । स० १६८२ रूपावास पालीरो ऊदा भेळो[5] । स० १६८३ भानावास मेडतारो पटै ।

१९ किसनो जाभणरो । उग्रसेण चद्रसेणोत साथै माराणो[6] ।

१९ गोपाळदास । कल्याणदास रायमलोतरो चाकर । कल्याणदासजी साथै सिवाणे काम आयो[7] ।

१९ गोयंददास स० १६४२ गादेरी, करमसीसर पिराग भेळा । पछै हीरादेसर कूभा भेळो[8] ।

२० कूभो गोयदरो । स० १६६२ गुजरातमे माडवै काम आयो[9] ।

२१ भीव कूभावत[10] । स० १६७५ कोरणो भाद्राजणरो ।

---

1 जाभणका वेटा रामा देवराजकी लडाईमे पोकरणके एक गावमे राव चद्रसेनजीके काम आया । 2 मेहगटेमे मौतसे मरा । 3 शेखेका वेटा लिखमीदास जिसे स० १६४०मे हरढाणेके पासका वासणी गाव पट्टेमे था । 4 दयालदासको जालोरका एक गाव सम्वत १६८०मे पट्टे था । 5 विसनदास, जिसे पाली परगनेका रूपावास सम्वत् १६८२मे ऊदाके शामिल पट्टेमे था । 6 रावचद्रसेनके वेटे उग्रसेनके साथ मारा गया । 7 गोपालदास, रायमलके वेटे कल्याणदासके साथ सिवानेमे काम आया । 8 गोयददासको सम्वत् १६४२मे गादेरी और करमीसर दोनो गाव प्रयागके शामिल पट्टेमे । पीछे कुभेके साथ हीरादेसर मिला । 9 कुभा गोयददासका, स० १६६२मे गुजरातके माडवे गावमे काम आया । 10 भीम कुभेका लडका ।

स० १६७८ सभाडो जोधपुररो । स० १६८६ पोलावास मेडतारो । सं० १६६१ कुवर अमरसिंघजी साथै गयो ।

२० तेजमाल गोयदरो । हीरादेसर पटै ।

१९ सुरताण जाभणरो । स० १६४० हीरादेसर मास १ रह्यो[1]। पछै गादेरीथी[2] । पछै चीनडी आसोपरी थी[3] ।

१९ सादूल जाभणरो । धवेचासू वेढ हुई तठै काम आयो[4] ।

१९ खगार जांभणरो । किसनसिंघजीरै वास थो[5] ।

२० वीजो ।

१८ ऊदो भैरवदासरो ।

१९ वीरम ऊदावत । मेडतै काम आयो ।

२० नेतसी । मेडतारी वेढ स० १६१८ देईदासजी साथै काम आयो ।

२१ अचळो नेतसीरो ।

२२ तेजसी, स० १६८२ ऊदारो भाद्राजणरो थो । स० १६८५ तालियाणो जाळोररो[6] ।

नेतसी वीरमोतरो परवार आक २० । अचळो नेतसीयोतरो परवार आक २१—

२२ जगमाल ।

२२ महेस ।

२१ अमो नेतसीरो ।

२२ भोजो ।

२१ अमो नेतसीरो ।

२२ राणो स० १६७७ खीरोहरी जाळोररी । स० १६८४ अहुर जाळोररी । स० १६६० डागरा । पछै स०१६७५ जाळोररो सामूजो पटै[7] ।

---

1 जाभणके वेटे सुरताणको स० १६४०मे हीरादेसर १ मास रहा । 2 वादमे गादेरी मिली थी । 3 और फिर आसोपका चीनडी गाव पट्टेमे दिया गया । 4 जाभणका वेटा सादूल, धवेचोसे लडाई हुई वहा काम आया । 5 जाभणका वेटा खगार, किशनसिंहजीके यहा रहता था । 6 अचलेका वेटा तेजसी, जिसे भाद्राजुनका ऊदारो गाव स० १६८२मे, और स० १६८५मे जालोरका गाव तालियाणो पट्टेमे दिया गया था । 7 राणा, अखेका वेटा, जिसे स० १६७७मे जालोरका खीरोहरी गाव, स० १६८४मे जालोरका आहोर गाव, स० १६६०मे डागरा और स० १६७५मे जालोरका सामृजो गाव पट्टेमे दिया गया था ।

२२ वाघो ।

२२ रायमल ।

१६ खेतसी ऊदारो । ऊदो भैरवदासरो ।

२० जगहथ खेतसीरो ।

२१ सादूळ । समत १६७२ भूभादडो पालीरो पटै[1] ।

२२ मनोहर । समत १६८१ भूभादडो । समत १६८८ सापो सोझतरो पटै[2] ।

१८ मेघो भैरवदासरो । प्रथीराजजी साथै मेडते काम आयो ।

१६ भारवर ।

१६ वीदो ।

१८ गागो भैरवदासरो ।

१६ जीवो गागावत । मोटा राजाजीरै समावळी चाकर थो । समत १६४० दातणियो पटै । पछै माणकळाव पटै[3] ।

२० भोजराजनू माणकळाव वरकरार । पछै देवराजासू डरतो छाड गयो । पछै दलपतजीरै वसियो । उठै कांम आयो[4] ।

२० वाघो जीवारो ।

२० महेस । समत १६७४ भूतेळ भाटीव जाळोररी पटै थी[5] ।

२० ईसरदास जीवारो ।

१६ नारायणदास भैरवदासरो ।

तेजसी वरजागोत, आक १६—

१७ पीथमराव तेजसीरो । सेखा सूजावतरौ नानो । देईदासजीरो

---

1 सादूलको स० १६७२ मे पाली परगनेका भूभादडा गाव पट्टेमे था । 2 मनोहरको स० १६८१ मे भूभादडा और स० १६८८ मे सोजत परगनेका सापा गाव पट्टेमे दिया गया । 3 गागाका पुत्र जीवा, यह मोटाराजा उदयसिंहका समावली गावमे चाकर था । स० १६४०मे दातणिया और फिर माणकलाव गाव पट्टेमे थे । 4 भोजराज जीवाका वेटा जिसको माणकलाव गाव वरकरार, पीछे देवराजके वशजोके भयसे छोड कर चला गया और दलपतके यहा जा कर वसा और वही काम आया । 5 महेश जीवाका पुत्र, जिसके स० १६७४ मे जालोरके भूतेल और भाटीव गाव पट्टेमे थे ।

पिण नानो। राव सूजोजी परणिया था। चोहुवांण जगमाल जैंसिघदेओतनू मारनै साचोर लियो। जीवियो तठा सूधी साचोर प्रथीराव भोगवी[1]।

१८ वाघो प्रथीरावरो। जिण कोढणारो वाघावास वसायो। साचाररो टीको हुवो थो। पछै चहुवांण राणै नोवावत धरती सूनी की, तरै वाघो सूनी धरती छोड कोढणे आयो[2]।

१९ सिघो वाघावत।

२० वणवीर सिंघावत। मोटा राजाजीरो सुसरो।

सिंघा वाघावतरो परवार आंक १९। वणवीर सिघावतरो परवार आंक २०—

२१ सूजो वणवीररो।

२२ रामो, समत १६६३ खारडी थोभरी पटै थी। भलो रजपूत थो[3]।

२२ रायसिघ सूजावत।

भोपत।

२२ कान्हो।

२३ माधो।

२१ नारायण।

२१ देदो वणवीरोत। पटाऊ पटै थी।

२१ रायसिघ वणवीरोत।

---

1 पृथ्वीराज तेजसीका वेटा। सूजाके वेटे सेखाका यह नाना और देईदासका भी नाना। जोधपुरका राव सूजा इसके यहा व्याहा था। इसने चौहान जयसिहदेके वेटे जगमानको मार कर साचोर लिया और जहा तक जिदा रहा साचोर इसके अधिकारमे रहा। 2 पृथ्वीरावका वेटा वाघा, जिसने कोढणावाटीका वाघावास वसाया। साचोरका तिलक हुआ था। पीछे चौहान राणे नीवावतने (साचोरकी) धरतीको उजाड दिया तब वाघा सूनी धरती छोड कर कोढणे चला आया। 3 रामाके समत १६६३ थोभका खारडी गाव पट्टेमे था। अच्छा राजपूत था।

२० पतो सिंघावत । गोपाळदास ऊहडरो नानो । वेटो नही ।

२० साडो सिघावत ।

२१ भीवो साडावत ।

२१ राणो भीवावत । पानीलै राते परणियो नै सवारै वाहडमेरा आय वित लियो तरै वाहरमे काम आयो[1] ।

२० सकर सीघावत । गोपाळदास ऊहड साथै काम आयो ।

२१ रतनो मकरोत ।

२२ जैतो रतनोत । मोहवतखारै काम आयो ।

२३ चाढो माडणरै वास ।

२१ गोयंददास । पाटोधी भाटिया मारियो[2] ।

२२ जीवो, माडण ऊहडरै[3] ।

२१ आसो सकररो, माडणरै वास[4] ।

२० जोधो मिघावत । राव चद्रसेणरा गढरोहा माहै काम आयो[5]।

२१ वीसो जोधावत । गोपाळदास ऊहड साथै काम आयो ।

२२ सहसो, माडण ऊहडरै वाहर माहै काम आयो[6] ।

२३ भगवानदास ।

२२ वैरसल ।

२२ जैतसी ।

२१ सतो जोधावत, अउत[7] ।

१८ अजो प्रथीरावरो । सेखाजी देईदासजीरो मांमो । सेखोजी काम आया नै देवीदासजीनू रजपूते काढिया तरै अजो ही साथै नीसरियो । पछै चीतोड गढरोहा माहै देईदासजी काम

---

1 भीवाका वेटा राणाका, रातको पानीले गावमे विवाह हुआ और सवेरे वाहडमेरे आकर जव उसके पशुओको ले गये, तव यह उनके पीछे वाहरमे चढा और वहा काम आ गया। 2 गोयददासको पाटोदीके भाटियोने मार दिया। 3 जीवा, माडण ऊहडकी चाकरीमें। 4 शकरका वेटा आसा माडणके यहा रहा। 5 मिघाका वेटा जोधाराव चन्द्रसेनके गढरोहेमे काम आया। 6 सहसा, माडण ऊहडकी वाहरमे काम आया। 7 जोधाका वेटा सत्ता, अपुत्र रहा।

आया तठै अजो पिण काम आयो[1] ।

हीमाळो वरजागोत, आक १६—

१७ सोभो वडो रजपूत हुवो । आधी साचोर सोभारै हुती । आधी साचोर गुजरातरा पातसाहरी दो मुगल प्रेमनू हुती । पछै मुगले कोट माहै गाय मारी तिणसू उपाध हुवो, सोभै प्रेम मुगलनू मारियो[2] ।

१७ ऊदो हिमाळारो ।

१७ देवो हिमाळारो ।

१७ सागो हिमाळारो ।

चोहुवाण सोभो हीमाळावत । मुगल प्रेम गाय मारी तिण ऊपर मारियो, तिण साखरो गुण[3]—

## दूहा

छायल फूल विछाय, वीसम तो वरजांगदे ।
गैमर[4] गोरी राय, तिण[5] आमास[6] अडाविया ॥ १ ॥
इसडै[7] सै अहिनाण[8], चहुवाणो चौथे चलण[9] ।
डखडखती दीवाण, सुजडी[10] आयो सोभडो[11] ॥ २ ॥
काला काळ कलास, सरस पलासा सोभडो ।
वीकम सीहा वास, माहि मसीता[12] माडजै ॥ ३ ॥

---

1 पृथ्वीराजका वेटा अजा, यह सेखा और देईदासका मामा जब सेखा मारा गया और देईदासको राजपूतोने निकाल दिया तब अजा भी उसके साथ निकल गया, फिर चितौडके गढरोहेमे देईदास काम आया, वहा अजा भी काम आ गया। 2 शोभा बडा वीर राजपूत हुआ, आधी साचोर शोभाको मिली हुई थी और आधी गुजरातके वादशाहकी ओर से मुगल प्रेमको दी हुई थी, पीछे मुगलोने कोटके अदर गाय मार डाली, जिससे झगडा हो गया, शोभाने प्रेम मुगलको मार दिया। 3 चौहान हीमालेका वेटा शोभा, जिसने प्रेम मुगलको गाय मारने पर मार दिया था, जिसका साक्षी—काव्यमे वर्णन। 4 हाथी। 5 जिसने। 6 घर। 7 ऐसे। 8 चिन्ह, व्यवहार। 9 पांव। 10 कटारी। 11 शोभा चौहान। 12 मस्जिदोमे।

हीमाळाउत[1] हीज, सुजडी[2] साही[3] सोभडे[4] ।
ढील पहां रिमहा[5] घडी, खखळ-वखळ की खीज[6] ॥ ४ ॥

सोभडा सूअर सीत, दूछर ध्यावै ज्या दिसी ।
भीत हुवा भड भडभडै, रोद्रित कर गज रीत ॥ ५ ॥

चोळ[7] वदन चहुवांण, मिलक अढारे मारिया ।
सुजडी आयो सोभड़ो, डखडखती दीवाण ॥ ६ ॥

वणवीगोत वखाण[8], हीमाळावत मन हुवा ।
त्रिजडी[9] काढेवा तणी[10], चलण दियै चहुवाण ॥ ७ ॥

सोभडै कियो मुगाळ, मुहगौ एकण ताळमे ।
खेतल वाहण खडखड़ै, चुडखै चामरियाळ ॥ ८ ॥

लोद्रा चीलू आव, भागी सोह[11] कोई भणै[12] ।
स्रोभ्रमडा[13] स्रग सातमै[14], वावा तोरण वांध ॥ ९ ॥

॥ इति साचोरा चहुवाणारी ख्यात वारता सपूर्ण ॥

++

## वात

चहुवांणा माहे साख १ वोडारी छै । अंही[15] राव लाखणरा पोतरा[16] सोनगरा जाळोररा धणी । सीरोहीरा धणी, कीतूरा पोतरा वोडो भाखररो वेटो हुवो । तिणरा वासला बोडा कहीजै छै[17] । इणारै उतन परगनो जाळोररै सेणारो छोटो सो परगनो छै[18] । आगै

---

1 हीमालेका पुत्र शोभा । 2 कटारी । 3 धारण की । 4 शोभेने । 5 शत्रुओ । 6 क्रोध । 7 लाल । 8 प्रशसा । 9 तलवार । 10 की, लिये । 11 सव कोई, सभी । 12 कहते है । 13 शोभा । 14 सातवें स्वर्गमे । 15 ये भी । 16 पोते । 17 जिमके पीछे वाले वोडा कहलाते हैं । 18 इनका निवास जालोर परगने कोसेणा गाव जिसके पीछे एक छोटा सा परगना है ।

ग्रो सीरोही वासै थो[1] । पछै राव सुरताण भाणोत, राव कला मेहाज-लोतसू वेढ काळाधरी[2]की तद विहारी मिलकखान हेतावतनू परगना ४ जाळोर वासै[3] दिया था सु तदरा[4] जाळोर वासै पडिया तासु हमै जाळोर वासै हीज छै । परगनो सेणो जाळोरसू कोस १० सीरोही दिसा ऊगवणनू[5] सीरोहीरा गावासू काकड[6] । परगनो दुसाखो[7] छै। सहर छोटी सी भाखरीरी खाभ[8], ग्रगवारै[9] वडो मैदान । ऊनाळी निपठ घणी[10] । छोटा मोटा ढीबडा[11] ३०० हुवै । गाव १२ सेणा वासै । वोडारो ठिकाणो घणा दिनारो थो सु स० १६९९ राव महेसदास दलपतोतनू जाळोर हुई, वरस ४ महेसदास जीवियो, तठाऊ[12] बोडो कल्याणदास नाराणदासोतनू सेणो, सदा भोमिया रुखो हुतो[13] त्यौ रह्यो[14] । पछै राव महेसदास दलपतोत समत् १७०३[15] ...। पछै पातसाह रतन महेसदासोतनू दीवी । पछै राव रतन बोडा कल्याणदास नाराणदासोतनू सेणै बाहर रुखो ग्रायो[16]। कहाडियो—“म्हे ग्राघा जावा छा, थे सताब ग्रावो[17] ।” पछै कल्याण-दास थोडा हीज साथसू ग्रायो[18], तरै रतन ग्राप हाथसू बरछीरी दे कल्याणदासनू मारियो नै सेणो लियो[19] । बाकीरा नासनै सीरोहीरा देसमे गया[20] । सेणो निखालस हुवो[21] । नै ग्रागै नवघण, विजो

---

1 पहले यह सिरोही रियासतका गाव था। 2 कालदरी गाव। 3 पीछे। 4 तवसे। 5 पूर्व दिशाकी ग्रोर। 6 सीमा। 7 परगना दुफसली है। 8 शहर छोटी सी पहाडीकी ढलानमे। 9 ग्रागे। 10 रवीकी फसल ग्रधिक। 11 रहँट। 12 तवमे। 13 सदा भोमियाकी भाति था। 14 उसी प्रकार रहा। 15 प्राप्त सभी प्रतियोमे यहा कुछ ग्रश छूटा हुग्रा है जिससे यहा यह पता नही पडता कि स० १६९९से स० १७०३ तक चार वर्ष महेशदासके ग्रधिकारमे जालोर रहनेके बाद महेशदासका क्या हुग्रा ? वैसे इसके ग्रागे महेशदासके वेटे रतनको जालोर देनेका उल्लेख है, इससे यह ग्रनुमान होता है कि त्रुटित ग्रशमे महेशदासके मर जानेका उल्लेख होना चाहिए। 16 पीछे राव रतन नारायणदासके वेटे कल्याणदास बोडेके लिए वाहरके रूपमे ग्राया। 17 उसने कहलाया कि हम ग्रागे जा रहे है, तुम भी जल्दी ग्राग्रो। 18 लेकिन कल्याणदास थोडे मनुष्योको ही लेकर ग्राया। 19 ग्रौर सेणे पर ग्रधिकार कर लिया। 20 शेप भाग कर सिरोही राज्यमे चले गये। 21 सेणा गाव सर्वथा ग्रधिकारमे हो गया।

वडा अखाडसिंघ रजपूत हुवा छै[1]। नै काल्हरै दिन[2] वोडो नाराणदास वाघावत स० १६८० श्री महाराज गजसिंघजीरी वार माहै हुतो[3], वडो रजपूत हुवो। स० १६७४ कुंवर गजसिंघजी जाळोर लियो तद विहारियासू जुदो फूटनै कुंवरजीसू आय मिळियो[4]। आगै राजा श्री सूरजसिंघजी वोडा नाराणदासरी वैहन परणिया हुता। नाराणदास वडा उमरावारै दावै[5] रंहतो। सेणो रुपिया १००००)रो[6]। ठोड गाव १२[7]—

१ सेणो। १ चादण। १ भेटाळो। १ मेडो। १ वाहिरलो वास। १ माहिलो वास। १ तुड। १ देवडो। १ दही गाव। १ नागण। १ उडवाडो। १ कणावद।

वोडांरी वसावळी—

| | |
|---|---|
| १ राव लाखण। | १३ लखो। |
| २ वल। | १४ महिपाळदे। |
| ३ सोही। | १५ हाजो। |
| ४ महदराव। | १६ सावत। |
| ५ अलण। | १७ सिखरो। |
| ६ जीदराव। | १८ नवभण। |
| ७ आसराव। | २६ करमो*। |
| ८ आलण। | २० विजो। |
| ९ कीतू। | २१ वाघो। |
| १० समरसी। | २२ नाराणदास। |
| ११ भाखर। | २३ कल्याणदास। |
| ११ वोडो। | |

1 पहिले नवधण और विजा वडे वाके राजपूत हो गये हैं। 2 कलके दिन। 3 महाराज गजसिंहके समयमे था। 4 तव विहारियोंसे अलग और विरुद्ध होकर कुवरजीसे मिल गया। 5 तरह। 6 सेणा दस हजारकी आयका। 7 उसके पीछे वारह गाव हैं।

* कर्मा वडा कर्मण्य और वीर पुरुष था। अपनी अद्भुत वीरताके कारण यह 'मामाजी' वा 'मामा खेजडा'के नामसे पूजा जाता है।

और तो वोडा घणा कठै ही[1] सुणिया नही, नै एक बोडो मानो नरबदोत जाळोररै गाव बापडोतरै रहतो, बापडोतरो पटै हुतो। गाव ५ तथा ७ पटी दहियावतरी माहै–सीहराणो, खारी साधाणो, देवसीवास, आलवाडो आलासण। मानारा भाईबध रहता। माणस २००री जोड हुती[2]। असवार ४० चढता।

मानो नरबदरो, सीहो, ठाकुरसी, सूरो, मेहैवैरै गाव भाटेवै वळै बोडा रहै छै[3]।

## वात

चहुवाणारी साख माहै एक साख कापलिया कहावै छै। सु कापलो साचोररो गाव छै, तिको इणारो[4] राजथान, तिण गाव लारै कापलिया नाव[5] पडियो। आगै कुभो कापलियो वडो रजपूत हुवो छै तिणरा गाव कुभाछतरा कहीजता[6], सु धनवो, धोरीनमो कुभाछतमे मुदै छै[7]। ओ खड साचोर वासै लागै छै[8]। कुभाछत साचोर नै ईडर लगती[9]।

## वात

कुभा कापलियारै घोडी १ निपट अवल छै[10]। तिण दिन रावळ मालै पिछम नै घणी धरती खाटी छै[11], सु सको पिछमरा भोमिया रावळ मालारो अमल मानै छै[12]। कुभारी घोडी लेणरो विचार करै छै। तिण समै रावळ मालारै परधान भोओ नाई छै, तिणनू रावळ कहै छै—"आ घोडी ली चाहीजै।" तरै भोओ कहै छै—"कुभो तो पाधरिया घोडो देणरो न छै[13]" सु कुभानू तेड[14] दरबार वैसाणियो

---

1 कही। 2 वरावरकी जोडीके २०० आदमी इसके पास थे। 3 नरबदका वेटा माना, सीहा, ठाकुरसी और सूरा ये मेहवे परगनेके भाटवे गावमे रहते हैं। 4 इनका। 5 शाखा, वशका नाम। 6 जिसके गाव 'कुभाछत'के कहे जाते थे। 7 सो धनवा और धोरीनमा 'कुभाछत'मे मुख्य है। 8 यह खड साचोरके पीछे लगा है अर्थात् साचोर परगनेमे है। 9 कुभाछत खड, साचोर परगने और ईडर रियासतसे लगा हुआ है। 10 कुभा कापलियेके घोडी १ अत्यत सुन्दर थी। 11 उन दिनोंमे रावल मालदेने पश्चिममे वहुत धरती (प्रदेश) प्राप्त की है। 12 सो पश्चिमके सभी भोमिये रावल मालदेका शासन मानते है। 13 कुभा सीधे रास्ते घोडी देने वाला नही है। 14 सो कुभाको बुला कर।

छै[1] । आदमी ५०० चीधड़ सिलह पैहर सांमा वैठा छै[2] । आदमी ५०० तोबची जामकिया लगाय ऊभा रह्या छै[3] । नै मालै इण वेळा माहै घोडीरै वास्तै भोमिआ भोवा नाईनू परधानगी वीच मेलियो[4] । भोवै कह्यो—"रावळजी थारी[5] घोडी मांगै छै।" भोवै मूडै कह्यो तठा पैहली[6] कुभो तरवाररी मूठ हाथ दे वेगो[7] ऊठियो । रावळरो पिण साथ मूठे हाथ दे ऊठियो, नै कुभे भोवानू कह्यो—"म्हारी घोड़ी रावळनू[8] देनै[9] पछै म्हारो पलाण[10] रावळरी मा ऊपर मांडू, किना[11] थारी मा ऊपर माडू ?" इण आछटनै[12] तरवार काढी[13] । सोर हुवो । कुभारै माथैरा केस ऊभा हुवा[14] । मुहडो रातो-चोळ हुवो[15] । तरै[16] रावळनू किणहीक जायने कह्यो—"कुभानू मारो तो छो[17], पिण एक वार रजपूतनू सूरत चढी छै[18], मुहडो देखण लायक छै ।" तरै रावळ वाहिर आयो, कुभानू दीठो[19], राजी हुवा, उवारलियो[20]। कह्यो—"जैतमाळरी वेटी पतीनू वीद चाहीजतो हुतो सु जुडियो[21] ।" पछै पती कुभा कांपलियानू परणाई । तिणरै पेटरा वेटा २ हुवा । खेतो, भोजो । वडा रजपूत हुवा । तठा पैहली[22] राव जैतमालनू राव जगमाल मालावत मारियो थो सु जैतमालरो माल वैह्चीजतो थो सु हैंसा ५ किया[23] । तीन तो तीना वेटारा किया । एक हैंसो पतीरो कियो, नै हैंसो १ मालरो कियो नै उजाळो वछैरो अै जुदा किया था[24], कह्यो—"ओ हैसो नै उजाळो वछेरो जैतमालरो वैर लेसी तिको लेसी[25] ।" तरै ओ हैंसो पती लियो । कह्यौ—

---

1 दरवारमे वैठा दिया है। 2 पाचसौ आदमी सिलहवस्तर पहन कर सामने वैठे हैं। 3 और पाचसौ तोपची जामगिये (पलीते) लगा कर खडे हैं। 4 और मालेने इस समय भोमिया भावै नाईको उसकी प्रधानगीकी हैसियतसे घोडी लेनेके लिये भेजा। 5 तुम्हारी। 6 जिसके पहले। 7 झटपट। 8 को। 9 दे कर। 10 जीन। 11 अथवा। 12 झपट कर। 13 निकाली। 14 खडे हो गये। 15 मुँह लाल हो गया। 16 तव। 17 कुभाको मारते तो हो। 18 परतु राजपूतको जो पौरुष चढा है, उसे एक वार। 19 कुभेको देखा। 20 वलैया ली, वलि गया। 21 जैतमालकी वेटीको दूल्हेकी आवश्यकता थी सो मिल गया। 22 इसके पहले। 23 मालका वँटवारा होता था उसके पाच भाग किये। 24 एक भाग मालका और उजाला नामके वछेरेका अलग किया गया था। 25 यह हिस्सा और उजाला वछेरा, जैतमाल मारा गया, उस वैरका जो वदला लेगा उसको मिलेगा।

"वैर म्हारा वेटा खेतो भोजो लेसी[1] ।" पछै खेते भोजे घणा धूकळ[2] जगमालसू किया । जगमालरा दो भाई मारिया, खेढो वानर जगमालरै थो तिणरा[3] सात वेटा मारिया ।

इति श्री कापलिया चहुवाणारी वात सपूर्ण ।

++

## वात खीचियांरी

ग्रै ही चहुवाण राव लाखणरा पोतरा ।

पीढियारी विगत—

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | राव लाखण । | ५ | ग्रणहल । |
| २ | वल । | ६ | जीदराव । |
| ३ | सोही । | ७ | ग्रासराव । |
| ४ | महदराव । | ८ | माणकराव । |

### वात

माणकरा व ग्रासरावरो वेटो तिणसू[4] वाप खुसी हुवो, तरै एकरण[5] दिन ग्रासराव माणकरावनू कह्यो—"तू ऊगा-ग्राथवता[6] बीच फिर ग्रावै तितरी[7] धरती म्हे तोनू देवा । तरै मांणकराव दिन ऊगता समो चढियो सु दिन ग्राथमियो तितरै फिर ग्रायो[8] । इतरी धरती सभररो चढियो, तैरी विगत[9]—नागोररी पटी, ८४ सारी ही, भदाण इण दीठी[10], तरै गढ कोटनू ठौड ग्रठै विचारी नै ग्राथवणनू[11] जायल कानी[12] माणकराव नीसरियो,[13] तरै उठै ग्वार[14] उतरिया था[15] नै ग्रो[16] पिण[17] सारा दिनरो फिरतो भूखो हुवो हुतो उठै कर

---

1 वैरका वदला मेरे वेटे खेता ग्रौर भोजा लेंगे । 2 उपद्रव । 3 उसके । 4 जिससे । 5 एक । 6 सूर्य उदय हो कर ग्रस्त होवे । 7 उतनी । 8 तव माणकराव दिन उगनेके साथ ही चढा सो दिन ग्रस्त हुग्रा तव तक फिर कर लौट ग्राया । 9 साभरसे चढ कर इतनी धरतीमे फिर कर ग्राया, जिसका विवरण । 10 देखी । 11 पश्चिमकी ग्रोर । 12 तरफ । 13 निकला । 14 ग्वारिये लोग । (एक स्थायी ग्रावास-रहित जाति, जो गायोंसे घी ग्रादि वना कर वेचनेका काम करती है ।) 15 डेरे डाले हुए थे । 16 यह । 17 भी ।

नीसरियो,[1] तरै ग्वारै मनवार कीवी,[2] तरै मांणकराव कह्यो—"क्यू रांधो अन्न हाजर हुवै तो ल्यावो[3]" सु ग्वारारै चावळ मूगारी खीचडी तयार थी सु वाटका एकण माहै घात ल्याया[4]। माणकराव चढियै हीज खाधी[5]। आथणरो वाप तीरै आयो[6] तरै वाप माणकरावनू कह्यो—"कितरीहेक धरती फिर आयो[7] ?" तरै इण वात माड कही[8]। तरै वाप पूछियो—"कठैही गढनू ठौड विचारी छै[9] ?" तरै इण भदाणरी ठौड दाखवी[10]। तरै वाप कह्यो—"तै सारा दिनमे कठै ही क्यू खाधो[11] ?" तरै माणकराव ग्वारारी खीचडी खाधी हुती तिकी वात कही[12]—"जु जायल कनै हू आय नीसरियो, तठै ग्वार पडिया था,[13] त्यानू म्हे कह्यो[14]—"क्यू रांधो धान हुवै तो ल्यावो। तरै ग्वारा चावळ मूगारी खीचडी धोवो भरनै[15] ऊठ चढियानू हीज दीवी, सु मै खाधी[16]" तरै वाप कह्यो—"यू तै खीचडी खाधी तो थाहरी नख खीचीरी दी नै वा धरती दी,[17] नै कह्यो—"वेऊ ठोडा भदाणै, जाहल कोट कराय, वेऊ राजथांन कर[18]।" तरै माणकराव वेऊ ठोड़ा कोट कराया नै वेऊ राजथान किया।

माणकराव, अजैराव, चद्रराव, लखणराव, गोयदराव, सागमराव, प्रथीराजरो सावत गूदळराव।

राजा प्रथीराज चहुवाणरी वैर[19] सुहवदे जोईयाणी रूसणै[20] वापरै घरै हुती। तिणनू[21] खाटूरी भाखरी[22] उणरै[23] बाप माळियो[24]

---

1 भूखा-थका उधर होकर निकला। 2 तब ग्वारियोने मनुहार की। 3 कोई रंधा हुआ अन्न तैयार हो तो ले आओ। 4 सो एक कटोरेमे डाल कर लाये। 5 माणकरावने ऊट पर चढे हुए ही खाई। 6 सन्ध्याको वापके पास आया। 7 कितनी धरतीमे फिर आया। 8 तब इसने सब हकीकत कही। 9 कही गढ बनवानेकी जगहका भी सोचा है ? 10 तब इसने भदाणकी जगह दिखाई ( जिक्र किया )। 11 तूने दिन भरमे कही कुछ खाया ? 12 तब माणकरावने ग्वारियोकी खिचडी खाई थी वह वात कही। 13 वहा ग्वारिये डेरे डाले पडे थे। 14 उनको मैने कहा। 15 दोनो हाथोके सम्पुटको भर करके। 16 ऊँट पर चढे हुएको ही दी और मैने खा ली। 17 इस प्रकार तूने खिचडी खायी तो तुम्हारी शाखा 'खीची' प्रदान की गई और वह धरती भी तुम्हे दे दी गई। 18 भदाणे और जायल दोनो स्थानोमे कोट बनवा कर दोनोको राजधानी बना लो। 19 पत्नी। 20 नाराजीमे। 21 उसको। 22 पहाडी। 23 उसके। 24 महल।

करायो । इसो[1] ऊचो करायो, जिणरो दीयो अजमेर दीसै[2] । तिणसू गूदळराव हालतो माडियो सु इसडी सुरग एक वणाई, जिकाहू उणरै गावथी सुहवदेरै माळियै छानो आवै[3] सु प्रथीराजरी वैर अजैदे दहियाणी अजमेर थका अटकळी[4], किणी भात उण दीवासू, कोइक मरद आवै छै, सु तिका वात प्रथीराज आगै कही, तरै प्रथीराज चोकीरो घोडो थो तिके चढनै उडायो,[5] नै अजाणजकरो[6] सुहवदेरै माळियारी दोढी गयो । घोडो परो छोडनै । तरै प्रोळियै दोड खबर आगै दीवी । वासाथी[7] प्रथीराज उतर आयो, सु गूदळराव तो सुरग माहै हुय गयो । प्रथीराज आय ढोलियै सूतो[8] । परभात हुवो, सु गूदळरावरै पगारो जोडो उठै र्‌ह्यो सु प्रथीराज दीठो[9] नै बीजा पण माळियारा सभाव अटकळिया[10] तरै सुहवदेनू प्रथीराज कह्यो–"ओ जूतो किणरो छै ? अठै कुण मरद आवै छै ?" तरै सुहवदे वेळा दोय च्यार तो टाळाटोळारी कही, तरै प्रथीराजरी भूठी आख देखी,[11] तरै सूधो कह्यो[12]– 'अठै गूदळराव खीची आवै छै" तरै प्रथीराज आपरै वरै फिर आयो, नै सवारै चामडराय दाहिमो खीचिया ऊपर जायल फौज दे विदा कियो[13] तरै उठाथी गूदळराव नीसरियो सु माळवै गयो । उठै डोडिया रजपूत रहता, तिणारै गढ १२ हुता[14] तिकै गूदळराव इणारा वेटा पोतरा मारनै लिया । मऊ, मैदानो, गागूरूण, बालाभेट, सारगपुर, गूगोर, बार, वडोद, खाताखेडी, रामगढ, चाचरणी ।

जायल राजथान कियो सु गोरारा पोतरा[15] खीचीवाडै गया ।

---

1 इतना । 2 जिसका दीपक अजमेरमे दिखाई दे । 3 जिससे गूदलरावका अनुचित सवध हो गया सो एक सुरग ऐसी बनवाई जिससे वह उसके गावसे सुहवदेके महलमे गुप्त रूपसे आवे । 4 अजमेर होते हुए ही अनुमान कर लिया । 5 तब पृथ्वीराजने चौकीके घोडे पर चढ कर उसे उडाया । 6 अचानक । 7 पीछेसे । 8 पृथ्वीराज आकर पलग पर सो गया । 9 गूंदलरावके पांवोके जूते वहां रह गये सो पृथ्वीराजने देखे । 10 और महलके दूसरे लक्षणोसे भी अनुमान लगाया । 11 जब पृथ्वीराजकी बदली हुई आख देखी । 12 तब उसने सीधासा उत्तर दे दिया । 13 और दूसरे दिन चामुडराय दाहिमाको फौज देकर खीचियाके ऊपर जायलको रवाना किया । 14 जिनके १२ गढ थे । 15 गोराके पोते ।

भदाणो राजथान राव गालणरो हुवो । जिण[1] नागोर गीदाणी तळाव करायो । तिण साखरो दूहो[2] —

"गीदा हुता भदाणिया, तूगै जायलवाळ ।"

## कवित्त

खड पूगळ खळभळै,[3] कोट मरवटा टळक्कै ।
देरावर डिगमगै, लसै वरि हा हा सकै[4] ॥
लुद्रवो थरथरै,[5] छेलपुर नह संगट्टै ।
भुटा अनै भाटिया सास नीवट्ट नीवट्टै ॥
वीकमपुर वसै न वारही, धूजै धर पाटण पडै ।
गीदो रोद्र भदाणियो धाए सामेई धडै[6] ॥१॥

## वात

कहै छै गीदारै पच्छिमनू चौरासी गढ हुता, तिणरै बेटो माहगराव हुवो, तिणरो दूहो—

आखडिया रतनाळिया, मूछ अवद्दा फेर ।
जिण भय कापै गज्जणो, आ गीदाणी केर ॥१॥

तिण गूदलरावरा पोतरा खीचीवाडै निपट बडा रजपूत हुवा । तिणां माहै[7] धारू आनळोत वडो दातार, वडो जूभार हुवो । आनानू साखलै सीहड वडो रजपूत जाण पागळी[8] बेटी परणाई हुती । पण कहै छै, पछै आनै तिणनू सुहागण की[9] । तिणरै पेट धारू वडो दातार, वडो जूभार, ससार सिरोमण रजपूत हुवो ।

## वात

खीची आनो दुकाळ माहै डोडारै परणियो थो[10] । सु सासरै जाणनै डोडवाडै जातो थो[11] सु परगना कोटारै गाव सूरसेन गूढा

---

1 जिसने । 2 जिसकी साक्षीका दोहा । 3 खलवली मचती है । 4 डरते है । 5 कापता है । 6 सेनाके सामने दौडता है । 7 उनमे । 8 लूली । 9 पीछे आनाने उसको सौभाग्य दिया (मानित किया) । 10 खीची आना दुकालमे डोडोके यहाँ व्याहा था । 11 ससुराल जानेके लिए डोडवाडे जा रहा था ।

सूधा[1] जाय डेरो कियो छै । सु आनारी वहू साखलीनू आधांन[2] छै । सु दसमा ऊपर दिन जाय छै[3] । आनो तिण समै निपट वेखरच छे[4] । सूल सामान मामूर कू न छै[5], सु उठै धारूरी मा कस्टी रातरी, तरै डेरो डाडो साथे, मामूर क्यू न छै[6] । तरै पाखती[7] एक पुराणो वडो देहुरो[8] छै, तठै साखलीनू ओळै राखी[9] । उठै धारू जागो[10] । तरै पीढी एकी ऊपर राखियो[11] तठै सापरो विल १ छै, तिण माहेसू साप १ नीसरनै[12] पीढी दोळी[13] परदिखणा[14] देनै मोहर १, सोनो तोळा पाच भररी मेल गयो,[15] सु धारूरी मा सारो विरतत[16] देखै छै, नै पछै मोहर उरी ली,[17] नै सवारै आनै माहै आयनै वैरनू कह्यो[18]– "कूच करा पिण खाणानू सारा गुढारा लोगरै कनै क्यू न छै ." तरै बेर कह्यो–"आज तो मोसौ चालियो जाय नही, नै मोहर वा आनानू साखली दीवी, कह्यो–'आज तो खरच इणारो करो ।" तरै आनो खुसी हुवो, जाणियो–"साखली आ मोहर आप कनै[19] किणही सूल[20] वेळा-कु-वेळानू[21] कठैक छानो[22] राखी हुती, सु आज गुढारा लोगनू लाघण[23] पडती जाणनै मोनू दी छै ।" पछै दूजै[24] दिन पिण साप उणहीज भात पीढी दोळी परदिखणा देनै मोहर मेल गयो । साखली आनानू दिन ५ तथा ७ इण भात साप मोहर मेल जाय, धारूरी मा मोहर उरी लेनै आनानू दै । तरै आनारै मनमे इचरज[25] आयो– "म्हारी बैर सासती मोनू मोहर कठाथी दै छै[26] ?" तरै आठमै दिन वैरनू आनै मोहररी वात पूछी, तरै बैर वात माडनै सोह[27] कही; नै कह्यो–"आज थे पिण उण वेळा आयनै तमासो देखो ।" तरै आनो

---

1 निकट । 2 गर्भ । 3 दसवें महीनेके ऊपर दिन निकल रहे है । 4 आनाके पास उस समय खर्च करनेको कुछ भी नही है । 5 खाने-पीने आदिका सामान कुछ भी नही है । 6 सो वहाँ धारूकी माँको रातमे प्रसव-पीडा हुई तो वहाँ डेरे-डाडे आदिका कुछ भी साधन नही है । 7 पासमे । 8 मन्दिर । 9 वहा साखलीको ओटमे रखा । 10 वहा धारूने जन्म लिया । 11 तव सद्यजात शिशुको एक मचिया पर रखा । 12 निकल कर । 13 चारो ओर । 14 प्रदक्षिणा । 15 रख गया । 16 वृत्तान्त । 17 ले ली । 18 और दूसरे दिन आनाने अदर आ कर अपनी स्त्रीको कहा । 19 पास । 20 किसी प्रकार । 21 समय-कुसमय । 22 गुप्त । 23 लघन । 24 दूसरे । 25 अचरज । 26 मेरी पत्नी निरतर मुहर कहासे ला कर मुझे देती है ? 27 सव ।

पिण उण वेळा[1] आयो सु ओ साप आयो सु परदिखणा दे मोहर १ मेलनै जावण लागो, तरै आनै सापनूं पूछियो–"तूं कुण छै[2] ? नै तूं इण डावडारी[3] इतरी इतरी[4] रिख्या[5] करै छै, सु तोनै इण कुण सनमध छै[6] ?" तरै साप माणसरी[7] भाखा[8] बोलियो, कह्यो–'आगै इण देस राजा हूंन वडो महाराज हुवो छै, तिको जीव थारै पेट बेटो हुय आयो छै,[9] नै उण राजा हूननै मो मित्रताई हुती, सु मोनूं तीस चरू[10] मोहरारा भरिया सूंपिया[11] छै सु इण देहुरै माहै म्हारा विल कनै इण ठोड छै। म्हे इतरा[12] दिन रखवाळी कीवी। हमै चरू ऐ थाहरा बेटारा छै[13]। थे इण ठोड खिणनै उरा ल्यो[14] नै थे इण ठोडथा[15] कठै ही[16] आघा-पाछा मत जावो। आ धरती थाहरै बेटा-पोतारै सारी हाथ आवसी[17]। अठै हीज[18] कोट करावो।' तरै सापरै वचनथी[19] आंनो अठै रह्यो नै डोडासूं आप जाय मिळनै[20] कह्यो–"थे कहो तो म्हे अठे हीज रहा[21]। तरै डोडे कह्यो–"भली वात।" पछै आनै उठै कोट करायो। धारू मोटो हुवो, तद धरतीरा धणी डोड हुता। तरै धारू मामा कनै गयो। चाकरी करण लागो। डोडे सपूत देख भाणेज माथै[22] सारी दरबाररी, दीवाणरी मदार[23] राखी। पातसाहरी चाकरी डोडारै वदळै धारू करण लागौ। डोड दिन-दिन गळता गया[24]। खीची दिन-दिन वधता गया[25]। वडी ठाकुराई हुई। पातसाह अकबररी पातसाही ताउ[26] तो निपट जोर साहिबी[27] थी। अकबर पातसाह खीचीवाडा ऊपर कछवाहा मानसिंह भगवतदासोतनूं कुंवरपदै[28] फौज दे मेलियो हुतो,[29] तद मानसिंघ खीची रायसल वेढ

---

1 उस समय। 2 तू कौन है ? 3 लडकेकी। 4 इतनी-इतनी। 5 रक्षा। 6 सो तुझसे उसका क्या सबध है ? 7 मनुष्य। 8 भाषा। 9 वह जीव तेरे (और तेरी स्त्रीके) पेट पुत्र होकर आया है। 10 चरू, देग। 11 सौंपे है। 12 इतने। 13 अब ये चरू तुम्हारे बेटेके हैं। 14 तुम इस जगहको खोद कर ले लो। 15 से। 16 कही भी। 17 यह सब धरती तुम्हारे बेटे-पोतोके हाथ आयेगी। 18 यहा ही। 19 से। 20 मिल करके। 21 तुम कहा तो हम यहा ही रहे। 22 के ऊपर। 23 आधार। 24 घटते गये, निर्वश होते गये। 25 बढते गये। 26 तक। 27 हुकूमत। 28 कुवरपदकी अवस्थामे, कुमारावस्थामे। 29 भेजा था।

हुई । मानसिंघ वेढ जीती । रायसल वेढ हारी । राव प्रथीराज हर-राजोत रायसलरो चाकर, राव देवीदास सूजावतरो पोतरो[1] काम आयो । तठा पछै[2] वळै[3] एक वार राव प्रथीराज कल्याणमलोत बीका-नेरियानू[4] पातसाहजी गढ गागुरण दी थी, तद पिण[5] वेढ १ हुई । तिकी[6] राव प्रथीराज जीती । खीची हारिया । पछै पातसाह जहांगीर खीचियासू जोर लागो[7] । मऊ राव रतननू इनाममे दीवी, कह्यो– "मार ल्यो[8] ।" पछै राव रतन जोर मऊसू खीचियासू राह हुय लागो[9] । थाणा ४ असवार २००० मऊरा देसमे राखिया । गाव रजपूतानू बाट दिया[10] । राव गोयददास उग्रसेनोत, राव कान रायमलोत राठोडा सिरदारानू राखिया । पछै राव रतनरा साथ रैनै खीचिया मामला[11] ठौड-ठौड घणा हुवा । खीचियासू धरती छूटण हाली[12] । राजा सालवाहन पिण राव रतनरै साथ मारियो[13] । दिन-दिन खीची टूटता गया[14] । हाडारो जमाव हूतो गयो । हाडै खीची मारनै धरती भोग घाती[15] । मुदौ मऊ ऊपर[16] सु मऊनू गाव १४०० लागै । गाव ७०० अगवारै तिकै चौडै, गाव ७०० पछवाडै तिणा झाड पाहाड घणा[17] ।

राव गोपाळ मऊ, मैदानरो धणी,[18] वडो रजपूत हुवो, पात-साही चाकरी करतो । खीचियासू और ठोड तो गई । घणा दिन हुवा चाचरणी तो वारसा कईक पैहली खीची वाघरी मा, वैर सीधळ हुती तिका जीन साज पैहर-पैहरनै पातसाही फौजासू केई लडाई लडी[19] ।

---

1 पौत्र । 2 जिसके बाद । 3 फिर । 4 बीकानेर वालेको । 5 तब भी । 6 जिसको । 7 विवश करने लगा, हमला करने लगा । 8 मार करके अधिकार कर लो । 9 पीछे राव रतन मऊके खीचियोसे राहु होकर पीछे लगा, लडाई करने लगा । 10 बांट दिये । 11 लडाइया । 12 खीचियोसे धरती छूटनेको चली । 13 राव रतनके साथने राजा सालिवाहनको भी मार दिया । 14 दिन-दिन खीची कमजोर होते गये । 15 हाडोने खीचियोको मार करके धरतीको अपने अधिकारमे कर लिया । 16 मुख्य आधार मऊके ऊपर । 17 गाव ७०० आगेके चौडे-मैदानके और ७०० गाव पीछेके जिनमे वृक्ष और पहाड बहुत । 18 राव गोपाल मऊ और मैदानका स्वामी । 19 कई वर्षोसे और बहुत समय पहलेसे चाचरणी गाव वाघकी मा, सीधल स्त्री के (सीधलियाणीके) अधिकारमे था, जिसने शस्त्र धारण करके बादशाही सेनासे कई लडाइया लडी ।

कई फौजा मुगलारी, हाडारी मारी[1] । पछै सीथळ गोपाळदे मूई,[2] तठा पछै[3] नवसेरीखान चाचरणी लीवी ।

॥ इति सपूर्ण ॥

1 मुगलो और हाडोकी कई फौजोका नाश किया । 2 जब सीथल गोपालदेवी मर गई । 3 जिसके बाद ।

# वात अणहलवाड़ा पाटणरी

वनराज वडो रजपूत हुओ। तिको एक नवो सहर वसावणरी मन धरै छै। इण पाटणरी ठोड एक कोई गवाळियो अणहल नामै स्याणो आदमी हुतो[1]। तिण एक तमासो दीठो हुतो[2]। एकण गाडर वासै नाहर दोडियो[3]। गाडर आगै नाठी[4]। इण पाटणरी ठोड गाडर आई तरै नाहरसू सामी माड ऊभी रही[5]। तिका वात अणहल दीठी हुती। तिको वनराज धरती देखतो फिरै छै, तरै अणहल ग्वाळियो आय वनराज चावडानू मिळियो। कह्यो–"हू थानू सहर वसावणनू इसडी[6] ठोड एक वताऊ, जिको वडो अजीत खैडो हुवै,[7] पिण थे बोल दो[8]। क्यू सहर माहै म्हारो नाव आणो[9]।" तरै वनराज बोल-कौल दिया[10] तरै अणहल गाडरनै नाहर वाळी वात कही। तरै हमै[11] पाटण वसै छै, आ ठोड चावडा वनराजनू दिखाई। वनराज ठोड देख बोहत राजी हुवो नै 'अणहलवाडो पाटण' सेहररो नाव दियो[12]। समत ६०१रा वैसाख सुद ३ रोहिणी नक्षत्र मध्यान्ह विजय मोहरत पाटणरा कोटरी राग भरी[13]। आगै कोई गुजराती लोक भील मलेछ रैहता, सु सारा दूर किया। आबूरी तळहटीरो लोग नवो आण[14] वसायो। वडो सहर वनराज चावोडै वसायो। अणहलवाडा पाटणरी जन्मपत्रिका लिख्यते[15]।

---

1 इस पाटनकी जगह अणहल नामका एक ग्वाला सयाना आदमी रहता था। 2 उसने एक तमाशा (अद्भुत बात) देखा था। 3 एक भेडके पीछे नाहर दौडा। 4 भेड आगे भगी। 5 तब नाहरसे सामना करनेको खडी रही। 6 ऐसी। 7 वह गाव अजीत होगा। 8 परतु तुम वचन दो। 9 शहरके नामकरणमे कुछ मेरा नाम भी रखो। 10 तव वनराजने वचन दिया। 11 इस समय। 12 और 'अणहिलवाडा पाटन' शहरका नाम रखा। 13 सम्वत् ६०१के वैशाख शुक्ल ३ रोहिणी नक्षत्र, मध्यान्ह समय विजय मुहूर्तमे पाटनके कोटका खात-मुहूर्त किया। 14 लाकर। 15 अणहिलवाडा पाटनकी जन्मपत्रिका (इस प्रकार) लिखी जाती है।

अणहलवाडा पाटणनू गाव ४५९ लागै छै। तिणमे[1] तपो गांव ५२ सीधपुर छै, रु० २५०००) उपजतारी ठोड। नै पाटण तो आगै वडी ठोड हुती, रुपिया लाख ७०००००) री पैदास हुती। समत १६८२ तथा १६८३ ताउ उपजतां[2]। समत १६८७ पछै पाटण तूटी। कोळिया मारा गाव सूना किया[3]। हमैं रुपिया २०००००) नीठ उपजै छै[4]। पाटण चाओडा भोगवी तिणरी विगत[5]—

| वरस। | मास। | आसामी। |
|---|---|---|
| ६० वरस | ६ मास | वनराज चाओडै भोगवी। |
| १० वरस | | जोगराज भोगवी। |
| ३ वरस | | राजादित भोगवी। |
| ११ वरस | | वरसिंघ भोगवी। |
| ३९ वरस | | खेमराज भोगवी। |
| २७ वरस | | चूडराव भोगवी। |
| १९ वरस | | गूडराज भोगवी। |
| २९ वरस | | भोवडराज भोगवी। |

## कवित्त

साठ वरस वनराज, वरस दस जोगराव भण।
राजादित त्रिण[6] वरस, वरस इगियारा सिंघ मुण ॥
खीमराज चाळीस, वरस इक ऊण[7] मुणीजै[8]।
चुडराव सतवीस, वरस भोगवी भणीजै ॥
उगणीस वरस गुडराज कहि, उगणतीस भोवड भुह।
चामडराज अणहलनयर, कीध वरस सौ छीनवह[9] ॥१॥

---

1 जिनमे। 2 सम्वत् १६८२ तथा १६८३ तक यह उपज होती थी। 3 कोली लोगोने पाटनके सब गावोको सूना कर दिया। 4 अब रुपये दो लाख मुश्किलसे पैदा होते हैं। 5 चावडोने पाटन भोगी उसका विवरण। 6 तीन। 7 एक वर्ष कम। 8 कहा जाता है। 9 एक सौ छियानवे वर्ष राज्य किया।

३३ कवरपाळ ।

३ वोळो मूळदेव लोहडो[1] ।

६४ भीमदे मूळराजरो लोहडो भाई[2] ।

सोळकियांरी पीढी—

१ आद नारायण ।
२ जुगाद ब्रह्मा ।
३ ब्रह्मरिप ।
४ धोमरिप ।
५ चाच ।
६ वाळग ।
७ मुकर ।
८ अरजन्न ।
९ अजैपाळ ।
१० देपाळ ।
११ राज ।
१२ मूळराज ।

तठा पछै वाघेलैं धरती लीवी । सोळकी वाघेला आगैं जातां एक[3] । वाघेला सोळकिया भिळै[4] । पाटण वाघेला भोगवी तिण साखरो कवित्त—

गूजर धर भोगवी वरस वीसळ अट्ठारह ।
अजैदेव इकतीस कोट पाटण उद्धारह ॥
वीरमदे तेतीस वरस वाघेलां मडण ।
वीस वरस लहु करण विढै वैरिया विहडण[5] ॥
देवराज प्रतापियो चत्र[6] वरस वदा[7] साख वसावळी ।
वाघेल राज अणहल नगर वरस सत्त-छव आगळी[8] ॥१॥

वाघेलारै पाटण इतरा वरस रही—

१८ राव वीसळदे ।

३१ अरजनदे ।

३३ वीरमदे ।

२० करन गैहलो ।

४ देवराज ।

---

1 मूलदेव छोटा जो वहरा था । 2 भीमदेव मूलराजका छोटा भाई । 3 आगे जाते सोलकी और वाघेले एक हो जाते है । 4 वाघेले सोलकियोंमे मिल जाते हैं । 5 दुश्मनोका नाश करनेके लिये अपने राज्यकालके वीस वर्ष तक करण लडाइया लडता रहा । 6 चार । 7 कहता हू । 8 सौ आगे छ वर्ष, १०६, एक सौ छ वर्ष ।

# वात सोळंकियां पाटण आयांरी

राज, वीज सोळकी बेहू[1] भाई तोडारा धणी, सु यारो[2] बाप मुवो,[3] तरै वीजा[4] दुमात भाई था तिकै राजरा धणी हुआ, नै या बेहू भायानू धरती मांहीथी परा काढिया[5]। सु थोडासा साथ सामांनसू तोडाथी नीसरिया,[6] सु कठैक[7] आय रह्या। सु वडो भाई वीज तिको जनम आधो नै राज देखतो सु वाळक। सु कितरैहेक[8] दिने कठैक धरती नजीक रह्या। वासला भाया[9] खबर न ली, तरै या विचार दीठो,[10] "अठै रह्यां क्यू नही, द्वारकाजीरी जात जावा"[11] तद द्वारकाजीरी जात चालिया सु कितरैहेक दिनै[12] पाटण आय उत-रिया। सु पाटण चावोडा राज करै छै। सु रावळी[13] वडी घोडी थी तिका चरवादार तळाव सपडावण[14] वास्तै ले आयो। यारो[15] तळावरी पाळ[16] डेरो छै। वैठा छै। नै पांडव[17] घोडिया चढिया आवै छै, सु वीज कह्यो–"घोडी नीली भला पग मडै[18] छै। वाखाण[19] करण लागो। तरै घोडी पाडवं यारै सामो जोयो,[20] आधो छै नै घोड़ियारा रग की[21] जाणै ? तितरै घोडी सुसती पडी[22]। तरै पाडव ताजणो वाह्यो[23] तरै वीज पाडवनू गाळ दीवी, कह्यो–"फिट रे,दारिया-गोला ! लाखरी वछैरीरी आख फोडी[24]। तरै पाडव कह्यो–"दारियो आधो कासू कहै[25] ?" पाडव घोडी ठाण ले गयो[26]। नै राते घोडी ठांण दियो,[27] वछेरो घोडी काणो जायो[28]। उणै जायनै आपरा

---

1 दोनो। 2 इनका। 3 मरा। 4 दूसरे। 5 और इन दोनो भाइयोको अपनी धरतीमेसे निकाल दिया। 6 तोडासे निकले। 7 कही। 8 कितनेक। 9 पिछले भाइयोने। 10 तव इन्होने विचार करके देखा। 11 चले। 12 कितनेक दिनो वाद। 13 राजाकी। 14 नहलानेके। 15 इनका। 16 पाल, ऊचा किनारा। 17 सईस। 18 नीली घोडीकी चाल अच्छी है। 19 प्रशसा। 20 तव घोडीके सईसोने इनकी ओर देखा। 21 क्या जाने ? 22 इतनेमे घोडी धीमी हो गई। 23 तव सईसने चावुक मारा। 24 तव वीजने सईसको गाली दी, कहा—'फिट रे दारीके गोले ! एक लाखकी वछेरीकी आख फोड दी !' ( दारी = वेटी )। 25 यह अधा हमे दारिया क्यो कहता है ? 26 सईस घोडीको ठान (तवेले) ले गया। 27 और रातको घोडीने वच्चा दे दिया ('घोडी ठाण देणो' मारवाडीका एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है–घोडी का वच्चा देना)। 28 घोडीने काने वछेरेको जन्म दिया।

ठाकुर चावडानू जणायो[1] । वात कही–"इसडा[2] आदमी दो भाई, नै च्यार-पाच आदमी साथै छै । तळाव उतरिया छै[3] । या घोडीरी वात माड[4] कही । तद[5] पाटणरै धणी चावडै खबर कराई । कह्यो–"इसडा अकलवत अठै रहे तो राखीजै[6] । पछै पाटणरो धणी आप चढ तळाव उणारै[7] डेरै आयो, मिळिया, पूछियो–"कहो, थे कुण छो ? कठै रहो[8] ?" तरै वीज आपरी वात माडनै कही[9]–"म्हे सोळकी तोडारा धणीरा बेटा, म्हारो दूजो दुमात भाई राज बैठो[10] । म्हानू धरती माहैसू परा काढिया[11] । सु कितराहेक दिन तो म्हे उठै रह्या[12] । सु हू तो आखै जखम छू,[13] नै म्हारो भाई नान्हो थो, तिको उठैहीज रह्यौ[14] । हमै वीज कह्यो–"राज पिण मोटो हुवो, किणीकरै वास रहस्या[15] । हमार तो द्वारकाजीरी जात जावा छा[16] ।" पछै पाटणरै धणी चावडै वीज, राजरो घणो आदर कियो, विनाही जाणनै कह्यो–"राज म्हारै परणीजो,[17]" तरै वीज कह्यो–"हू तो आखै जखम परणीजू नही,[18] नै म्हारा भाई राजनू परणावो ।" तरै राज परणियो[19] । इणानू[20] चावोडै घणो माल, घणा गाव पटै दे राखिया । कितरैहेक दिनै चावोडीरै पेट मूळराज बेटो हुवो,[21] तरै राजनू वीज कह्यो–"आपै[22] द्वारकाजीरी जात[23] जावता वीचमे अठै रह्या, सु हमै चालो, द्वारकाजीरी जात तो कर आवा ।" सु पाटणसू राज, वीज बेहू चालिया । चावोडीनै मूळराजनू पाटण राखनै[24] चालिया । सु जाडैचै लाखै आ वात घोडी नै बछेरावाळी साभळी छै,[25] सु सामा आदमी मेलनै देखणरै वास्तै

---

1 उन्होने जा करके अपने चावडे ठाकुरको सूचित किया । 2 इस प्रकारके । 3 तालाव पर ठहरे हुए है। 4 इन्होने घोडीके सवधकी सविस्तार बात कही । 5 तव । 6 ऐसे बुद्धिमान यहा रहे तो रखना चाहिये । 7 उनके । 8 कहो, तुम कौन हो ? कहा रहते हो ? 9 तव वीजने अपनी वात विस्तारसे कही । 10 हमारा दूसरा दुमात भाई राज्यकी गद्दी पर बैठ गया । 11 हमको देशमेसे निकाल दिया । 12 सो कितनेही दिन हम वही रहे । 13 सो मै तो आखोसे अधा हूँ । 14 और मेरा भाई छोटा था, इसलिये वही रहा । 15 किसीके यहा जाकर रहेगे । 16 अभी तो द्वारकाजीकी यात्राको जा रहे है । 17 विना जाँच किये ही कहा, आप हमारे यहा विवाह कर लें । 18 मैं तो आखोसे अधा, विवाह नही करू ँ । 19 तव राजका विवाह हुआ । 20 इनको । 21 कितनेही दिन बाद चावडीके पेटसे मूलराज उत्पन्न हुआ । 22 अपन । 23 यात्रा । 24 रख कर । 25 सुनी है ।

तेडाया[1] । नजीक आया, तरै साम्हो आय घणो आदर कर तेड लेजायनै, लाखै आपरी वैहन राजनू परणाई[2] । अठै राखिया । लाखारी पूरी साहिवी, सु लाखो नै राज साळो वहनोई आठ पोहर भेळा रहै,[3] नै वीज वाहिर रहै आपरा रजपूता भेळो । सु राज वीजरी खवर ही ले नही । तरै एक दिन वीज राजनू कहाडियो[4]–"थे साळो वहनोई एक हुय रह्या, म्हारी खवर ही ल्यो नही, सु म्हे अठै रहा नही, म्हे पाटण जावस्या, मूळराजनू खोळै वैसाणस्या[5] । चावोडी थाळी पुरससी सु जीमस्यां नै उठै जाय वैस रेहस्या[6] ।" सु राज तो लाखारी वडो साहिवी सु छोडी नही नै उठैहीज लाखा तीरै रह्यो, नै वीज पाटण आयो, मूळराज कनै रहै छै । राज लाखा भेळो रहै छै, सु लाखै घणोहीज सुख दियो । राजरै जाडैचीरै पेट राखायच वेटो हुवो[7] ।

साळै वहनैईरै घणो सुख छै, सु एक दिन चोपड रमता छा,[8] सु राजरा हाथसू गोट मारता चिर[9] फाट उछळी सु लाखारै निलाड[10] लागी, सु थोडो सो लोही[11] आयो लाखाजीरै । तरै मन माहै गैस आई लाखानू, सु कनै भळको[12] पडियो थो तिको झालनै[13] लाखै सोळकी राजनू चूक लियो,[14] सु राजरै थणगै लाग गयो[15] । सु वातकरता[16] राज सोळकीरो हंसराजा उड़ गयो[17] । लाखै घणो पछतावो कियो । जाणियो, परमेसर ! आ किसी उपाध की[18] । मोनू किसी कुवुध आई[19] । हूणहारसू जोर को नही[20] । पछै आ वात लाखैरी वैहन जाड़ैची साभळी,[21] तरै वळणनू तयार हुई[22] । लाखो कहण लागो–"वेहनेई म्हारै हाथ मुंवो[23] । आ वेहन वासै वळै,[24] भाणेज

---

1 वुलाये । 2 लाखेने अपनी वहनका राजके साथ विवाह किया । 3 आठो पहर शामिल रहते हैं । 4 कहलाया । 5 मूलराजको गोदमे विठायेंगे । 6 चावडी थाली परोसेगी सो जीमेंगे और वही जाकर वैठ रहेंगे । 7 राजको जाड़ेचीके पेटसे राखाइच नामका पुत्र हुआ । 8 थे । 9 खपची, फटनका टुकडा । 10 ललाट । 11 खून । 12 वर्छी । 13 पकड कर । 14 मार दिया, घुसेड दिया । 15 सो राजकी छातीमे लग गया । 16 तुरन्त । 17 प्राण उड गया । 18 जाना, हे परमेश्वर ! यह कौनसी उपाधि मैंने कर ली । 19 मुझे कौनसी कुमति आ गई । 20 होनहारसे कोई जोर नहीं । 21 सुनी । 22 तव सती हो जानेको तैयार हुई । 23 वहनोई मेरे हाथसे मरा । 24 यह वहिन उसके पीछे जले ( सती हो जाये । )

नान्हो,[1] इणारो दुख कर मरै तो इतरी हत्या मोसू साखवी न जाय[2] ।" तरै लाखो पेट मारणनू तयार हुवो, वडो अनरथ हूण लागो[3] । तरै लाखारै घर माहै कारणीक माणस था,[4] तिका जाडेचीनू घणो हठ कर वळतीनू राखी[5] । पिण जाडेची कहै–" थे म्हारो कुस्वा-रथ करो छौ[6] ।" पिण माडा राखी[7] । तरै लाखानू जाडेची कहा-डियो[8]–"तै म्हारो धणी मारियो नै मोनू बळण न दे छै, तो तू मोनू मुहडो मत दिखावै[9] ।" लाखे वात कबूल कीवी । तिण पापरा लाखै घणा दान-पुन्य किया,[10] घणा सूस-नेम लिया नै लाखो घणो दुख करै छै[11] । उण ओळजरो लियो लाखो भाणेजनू कदेही छाती ऊपर थी अळगो करै न छै[12] । सारी साहिबीरी मदार राखायच ऊपर छै[13] । कोई राखायचरो हुकम लोपै न छै ।

++

## वात पाटण चावोड़ांथी सोलंकियांरै आवै जिणरी[14]

पाटण चावोडो चावडराज धणी हुतो सु मुवो । तिणरै च्यार बेटा, लायक सारीखै माथै[15] । च्याराई भाया आटी करी, अहडस हुई[16] । तरै वीच माणसै फिरनै कह्यो[17]–"सिघासण, छत्र वीच

---

1 भानजा छोटा है । 2 इनका दुख करके यह मर जाय तो इतनी हत्याए मेरेसे सहन नही हो सकती । 3 तव लाखा पेटमे कटारी मार कर मरनेको तैयार हुआ, बडा अनर्थ होने लगा । 4,5 तव लाखाके घरमे जो विवेकशील मनुष्य थे उन्होने जाडेचीको सती होनेसे हठात् रोका । 6 परतु जाडेची कहती है कि (मुझे सती होनेसे रोक कर) तुम मेरा अनिष्ट कर रहे हो । 7 परतु वलात् रोक दिया । 8 कहलाया । 9 तूने मेरे पतिको मार दिया और अव मुझे उसके पीछे सती भी नही होने देता है, तो तू मुझे अपना मुह मत दिखा । 10 उस पापके प्रायश्चित्त रूपमे लाखेने वहुतसे दान-पुन्य किये । 11 और कई शपथ और नियम पालन करनेका निश्चय किया और लाखा वहुत अनुताप करता है । 12 इस विरह-विरसको ले कर लाखा कभी अपने भानजेको अपनी छातीसे दूर नही करता है । 13 सारी हुकूमतका दारोमदार राखाइच ऊपर है । 14 पाटनका शासन चावडोंसे छूट कर सोलकियोके अधिकारमे आ जाना है, उस घटनाकी वात । 15 उमर-लायक और समान प्रकृतिके । 16 चारो भाइयोने हठ किया और परस्पर टटा हो गया । 17 तव मनुष्योने वीचमे पड कर कहा ।

मेलो[1] । च्यारे ही भाई सिघासणरी पाखती वैसो[2] । कामदार परधान काम चलावसी । हासल आवसी सु च्यारै भाई वाट लेसी[3] । रजपूत च्यारानू आय जुहार करसी[4] ।" तरै आ वात च्याराई कवूल कीवी । कितरा इक दिन इण भात काम चालै छै । सोळकी वीज अठै आयो । वीजरो भाई राज चावोडारै परणियो थो । तिणरै पेट मूळराज वेटो हुवो थो सु चावडारो भाणेज छै[5] । नै राज तो लाखाजी कनै[6] रह्यो नै राजरो वेटो पाटण छै । तठै वीज आधो आय रह्यो छै । सु चावडा च्यारूंई तीजे-पोहररा[7] नदी सासता झूलण[8] जाय तरै[9] कहै–"सिघासण, गादी, छत्ररी रखवाळीनू किणनू राखसा[10] । आपानू तो पोहर दो पोहर उठै लागसी[11] ।" तरै च्यारै भाया चावडा विचारनै कह्यो–"अठै वासै भाणेज मूळराजनू राखो[12] । ओ गादी वैस वासलो काम-काज चलावसी[13] ।" सु इण भात मूळराजनू वासै गादी वैसाण जाय । आप आवै तरै गादी उरी लेवै[14] । सु मूळराज वळ-वळ आवटै[15] । तरै वीज एक दिन आधै-आधै आपरा भतीजा मूळराजरी छाती हाथ फेरनै कह्यो–"वेटा ! इतरो दूवळो कुण वास्तै[16] ?" तरै मूळराज गादी वैसाण उठावणरी वात सारी काकानू कही । तरै वीज कह्यो–"आज तोनू वासै राखै तरै तू मत रहे[17] ।" चावडा कहसी, कुण वास्तै ? तरै तू कहै, "म्हारो हाल-हुकम को मानै नही,[18] तो हू इण गादी वैसनै कासू करा[19] ?" तरै चावडा वेअकल हुता सु कामदारा-परधाना सारानू तेडनै कह्यो[20]–"मूळराज कहे सु किया करजो ।"

---

1 सिहासन और छत्र बीचमे रख दिये जाय । 2 चारो ही भाई सिहासनके पास बैठ जाओ । 3 मालगुजारी आयेगी वह चारो भाई बाँट लेंगे । 4 राजपूत (ठाकुर लोग) चारोको आकर जुहार करेंगे । 5 जिसकी स्त्रीकी कोखमे मूलराज नामका बेटा हुआ था जो चावडोका भानजा है । 6 पास । 7 तीसरे पहर । 8 निरतर नहानेको जावे । 9 तब । 10 किसको रखेंगे । 11 आनेको तो पहर दो पहर उवर लग जायगी । 12 यहा पीछे अपने भानजे मूलराजको रख दो । 13 यह गद्दी पर बैठ कर पीछेका काम-काज चलायेगा । 14 ये आवे तब उससे गद्दी ले लेते है । 15 इससे मूलराज (अपमानकी ज्वालामे) जल कर दुखी होता है । 16 बेटा ! इतना दुर्बल क्यो ? 17 आज तुझको (गद्दी पर बैठनेके लिए) पीछे रखें तो तू मत रहना । 18 मेरी आज्ञा कोई मानता नही । 19 तो मैं इस गद्दी पर बैठ करके क्या करू ? 20 चावडे मूर्ख थे इसलिये उन्होंने अपने कामदार-प्रधान इत्यादि सबको बुलवा कर कहा ।

तठा पछै मूळराजरो हाल-हुकम हालण लागो[1] । नै चावोडारी जाण-हार,[2] सु दिन घडी ४ चढतैरा[3] वागा, वावडिया, तळाव सैल जाय[4] सु रात घडी ४ गया पाछा घरे आवै । नेजे मीर वाळी वात माड रही छै[5] । राजरी को खबर लै नही[6] । कामदार रजपूत सारा चावडाथी आखता[7] हुय रह्या छै । मूळराजरो हाल-हुकम हुवो । सु मूळराज वडो राहवेधी छै[8] । बीज काको आधो बलाय-रा-बधरगा छै[9] सु चावडारो माल ऊधमनै[10] सारा रजपूत, कामदार, खवास, पासवान, महाजन लोग सारा आपरा कर राखिया छै[11] । साराारो दिल हाथ लियो[12] । हमै धरती लेणरो विचार बीज नै मूळराज करै छै[13] । सु मूळराजरी मा छानी कठैहेक रहनै वात सुणती हुती,[14] सु किणही सूल उणारा पग वाजिया[15] । तरै काके बीज कह्यो–"मूळराज, देख ! अै किणरा पग वाजिया[16] ।" तरै मूळराज वासै दोडियो[17] । आगै देखै तो आपरी मा छै, तिका मूळराजनै देखनै कहण लागी–"तू नै थारो काको म्हारा भायानू मारणरो विचार करो सु कुण वास्तै ? इणा थासू कासू बुरो कियो[18] ?" तरै मूळराज मानू कह्यो–"थानू काकोजी तेडै छै[19] ।" आ नीचे पावडिया उतरण लागी,[20] तरै इण दिठो[21]–"आलोच बारै फूटसी, धरती हाथ नही आवै[22] । तरै माथै माहै झटकारी दी,[23] माथो तूट पडियो । काका कनै पाछो आयो । काके बीज पूछियो–

---

1 जिसके वाद मूलराजकी आज्ञा चलने लगी । 2 और चावडोकी जाने वाली (चावडोका शासन जानेका सयोग) । 3 चार घडी दिन चढते ही । 4,5 वागो, वावडियो और तालावो पर सैर करनेको चले जायें जो चार घडी रात वीत जाने पर घर पर लौटते हैं, मीर नेजेके समान अपना आचरण बना रखा है । 6 राज्यकी कोई खबर नही लेता । 7 क्रोधित, नाराज । 8 मूलराज वडा दूरदर्शी है । 9 उसका अधा चाचा वीज गजबका चतुर है, खूब चालाक है । 10 खर्च करके । 11 अपने बना लिये हैं । 12 सबके दिल अपने हाथमे ले लिये । 13 अब वीज और मूलराज पाटनकी धरती अपने अधिकारमे ले लेनेकी सोच रहे है । 14 सो मूलराजकी माँ कही छिपी रह कर वात सुनती थी । 15 सो किसी प्रकार उसके पाँवोकी आहट हो गई । 16 यह किसके पाँवोकी आहट हुई ? 17 तब मूलराज पीछे दौडा । 18 इन्होने तुम्हारा क्या बुरा किया ? 19 तुमको काकाजी बुलाते हैं । 20 यह सीढियोमे नीचे उतरने लगी । 21 तब इसने देखा । 22 मत्रणा वाहिर फूट जायेगी तो फिर यह धरती हाथ नही आवेगी । 23 तब उसके सिरमे तलवारका झटका मार दिया ।

"कुण हुतो[1] ?" तरै मूळराज कह्यो–"म्हारी मा हुती[2] ।" तरै वीज कह्यो–"मारणी हुती[3] । तै जाण दी, बुरी कीवी ।" तरै मूळराज कह्यो–"जांण न दी छै, मारी छै ।" तरै वीज कह्यो–"वडो कांम कियो[4] । हू थारी अकल-समझसू वोहत राजी छू । तू सही पाटणरो धणी हुईस[5] । थारी वडी साहवी हुसी[6] ।" पछै मूळराजरी मानू खाडावूज करनै[7] वीजै दिन रजपूत आप वळू किया था सु सारा भेळा करनै चावड़ा झूलता था तठै ऊपर गयो[8] । सारा कूट मारिया[9] । पाटण मूळराज ली । वीज सवणी हुतो,[10] कह्यो–"इतरी पीढी आपणा घरसू पाटणरो राज नही जाय[11] ।"

++

## वात एक जाड़ेचा लाखानूं सोलंकी मूलराज मारियांरी[12]

मूळराज पाटण धणी छै । मूळराजरो भाई राखाइच लाखा जाडेचारो भाणेज लाखा कनै कैलाहकोट रहै छै[13] । सु लाखो जाड़ेचो सूतो पाछली रातरो जागै,[14] सवळी धाह दे रोवै[15] । लाखारै साहिवीरी मदार सारी भांणेज राखाइच सोळंकी ऊपर छै[16] ।

एक दिन राखाइच लाखा फूलाणी मांमानू कह्यो–"थे पाछली रातरी धाह दे सासता रोवो छो सु थानू इतरो कासू दुख छै[17] ?"

---

1 कौन था । 2 मेरी मा थी । 3 मार देनी थी । 4 वहुत अच्छा काम किया । 5 तू निश्चयपूर्वक पाटनका स्वामी होगा । 6 तेरी वडी हुकूमत होगी । 7,8 फिर मूलराजकी माको खड्डेमे दूर करके, दूसरे दिन जिन राजपूतोंको अपने पक्षमे कर लिया था उन सवको इकट्ठा करके जहा चावडे नहा रहे थे, वहा उन पर चढ कर चला गया । 9 सवको मार दिया । 10 वीज शकुनी था । 11 इतनी पीढियो तक अपने घरसे पाटनका राज्य नही जायेगा । 12 जाडेचा लाखाको सोलकी मूलराजने मार दिया उस घटनाकी एक वात । 13 मूलराजका भाई राखाइच जाडेचा लाखाका भानजा, लाखाके पास कोलाहकोटमे रहता है (कच्छ-कलावरमे 'राखाइच'का नाम 'लाखाइत' और 'कैलाहकोट'का नाम 'केराकोट' लिखा है । 'कपिलकोट'से विगड कर 'केराकोट' हो जाना वताया गया है । 14 लाखा जाडेचा सोता हुआ पिछली रातको जाग जाता है । 15 जोरसे चिल्ला कर रोता है । 16 लाखाकी हुकूमतका सारा दारोमदार अपने भानजे राखाइच सोलकी पर है । 17 तुम पिछली रातको वडे जोरसे निरतर रोते हो सो तुमको इतना क्या दुःख है ?

लाखे पाछो जबाब तो राखाइचनूं वयूं दियो नहीं नै आपरो[1] नावरा खास मलाह था तिणनूं कह्यो–"रावारो[2] भाणेज राखाइचनूं नाव बेसाणनै फलाणे बिट मेलनै थे नाव तुरत ल्यावजो उगै[3] ।" पछै राखाइचनूं तेडनै[4] कह्यो–"थे नाव बैसनै एक वार समदररो तमासो देख आवो ।" तरै नाव बसनै राखाइच दरियावरो तमासो देखण गयो । मलाहे लाखे ठोड बताई तठै उतारनै मलाह राखाइचनूं बिण पूछिया नाव उरी ले आया[5] । राखाइच उण बिट ऊपर गयो । आगै देखै तो डाडी एक माणस आवणरी छै,[6] तिण डाडी राखाइच चालियो जाय छै । आगे देखै तो वडी मोहलायत छै,[7] तिण माहिसूं अपछरा पाच-सात साम्ही भाणेज ! भाणेज ! करती आवै छै[8] । राखाइच देख हैरान हुओ । इण पूछियो–"थे कुण छो[9] ? ऐ मोहल किणरा छै[10] ?" तरै उणै अपछराऐ कह्यो–" ऐ मोहल लाखाजीरा छै । म्हे लाखा-जीरी बैरा छा[11] ।" नै एकण ढोलिया ऊपर मरद पोढियो छै, तिको दिखायो[12] । कह्यो–" आ लाखाजीरी देह छै ।" तरै राखाइच अपछ-रावानूं पूछियो–"लाखाजी धाह कुण वास्तै दे छै[13] ?" तरै उण कह्यो–"लाखोजी पोढै छै तरै लाखाजीरो जीव अठै आवै छै । इण देहमें प्रवेस करनै म्हासूं हसै-रमै छै । पछै जागै छै तरै जीव उठै आवै छै, तिण वास्तै[14] धाह दे छै ।" तरै राखाइच दीठो–"आ वात मन छे ।" तरै राखाइच अपछरावानूं पूछियो–"ऐ तो लाखाजीरो मोहल सु तो वात जाणी, पिण ऊपर ऐ बीजा मोहल दीसै तिके किणरा छै[15] ?" तरै अपछराऐ कह्यो–"हमार तो ऐ किणहीरा न छै,[16] नै वापरै वेर

---

1 अपनी । 2, 3 कल सवेरे भानजे राखाइचको नावमे बैठा कर अमुक टापू पर छोड करके तुम नावको तुरत वापिस ले आना । 4 बुला कर । 5 राखाइचको विना पूछे नाव ले आये । 6 आगे देखता है तो मनुष्योके आनेकी एक पगडडी दिखाई दी । 7 आगे बडा महल दिखाई देता है । 8 जिसमेसे पाच-सात अप्सराएँ भानजा ! भानजा ! बोलती हुई सामने आ रही हैं । 9 तुम कौन हो ? 10 ये महल किसके है ? 11 हम लाखाजीकी स्त्रिया हैं । 12 और एक पलग पर मनुष्य सोया हुआ है, उसको दिखाया । 13 लाखाजी इतने जोरसे क्यो रोते है ? 14 इसलिये । 15 किन्तु ऊपर ये दूसरे महल दिखाई देते है वे किसके है ? 16 अभी तो ये किसीके नही है ।

सांमरै काम, धणीरा मुहडा आगै बाज मरै सु औ मोहल पावै[1] ।" पछै रातै राखाइच उठै रह्यो, नीद आई, सवारै लाखा कनै जागियो[2] । तठा पछै राखाइच उण लोक जाणरी मनमे धारी[3], नै लाखारै पाटहडो महुवो थो उण चढनै पाटख मूळराज कनै गयो[4] । भाईनू राखाइच लाखारी सारी ठाकुराईरो भेद वतायो । मूळराजनू कह्यो–"हमार[5] दीवाळी छै । सारा साथनू लाखेजी सीख दी छै[6] । कदै वैर वाळणरी मनमे छै तो फलाणी तेरीख वेगा आवजो[7] ।" राखाइच कहनै पाछो आयो । वासै मूळराज सवळो कटक करनै लाखोजीरो आठ कोट हुतो तठै ऊपर आयो[8] । नै लाखो पायगा आयनै उण घोडा ऊपर हाथ फेरियो, रज लागी आई[9] । तरै लाखै कह्यो–" आ तो रज अणहलवाडा-पाटणरी छै । इण घोडै कुण चढ कठी गयो हुतो[10]? तरै पाडव कह्यो–"राखाइच चढ गयो हुतो ।" तितरै राखाइच पिण मुजरै आयौ[11] । लाखोजी देख मुळकिया[12] । कह्यो–"भाणेज ! भवावळा हुआ[13]?" राखाइच वात कबूल की । तितरै खवर आई, कह्यो–"कटक आयो ।" तरै राखाइच लाखाजीरै मुहडै आगै सामरै काम वापरै वैर बाज मुवो, नै लाखोजी पिण काम आया नै राखाइच उण लोकनै प्राप्त हुवो ।

**

---

1 और अपने वापके वैरका वदला लेनेके लिये, स्वामीके कामके लिये स्वामीके सन्मुख लड कर मरे वह इन महलोको पावे । 2 प्रात काल लाखाके पास जागा । 3 जिसके वाद राखाइचने उस लोकमे जानेका मनमें निश्चय किया । 4 और लाखाके पास जो जवान महुवा घोडा था उस पर चढ करके मूलराजके पास गया । 5 अभी । 6 सभी मनुष्योको लाखाजीने छुट्टी दी है । 7 जो कभी वैर लेनेका वदला लेनेकी मनमे हो तो अमुक तारीख पर जल्दी आ जाना । 8 पीछे मूलराज जवरदस्त कटक तैयार करके लाखाजीका वनवाया हुआ आठ-कोट था, उस पर चढ कर आया । (सौराष्ट्रमे जाम लाखाने भादर नदीके किनारेके पहाडी प्रदेशमे सात किले (कोट) वनवाये थे और इस आठवे कोटका नाम उसने 'आठ कोट' रखा था, जो अव 'आठ कोटके' नामसे पसिद्ध है । आठ कोट, राज कोटसे ३० मील दूर अग्निकोणमे वसा हुआ है । 9 हाथमे रज लग आई । 10 इस घोडे पर कौन चढ कर कहा गया था ? 11 इतनेमे राखाइच भी मुजरा करनेको आया । 12 लाखाजी देख कर मुस्कराये । 13 भानजे ! धोखा विचार लिया ?

# वात रुद्रमालो प्रासाद सिद्धराव करायो तिणरी[1]

राजा सिद्धराव रातै सुवै तरै सुहणा माहै देखै प्रिथीरो रूप धारनै राजा कनै आवै[2] । कहै–"एक मोनू ग्रहणो सखरो दीजै[3] । राजा सासतो सुपनो देखै, तरै पडिता सुपन-पाठीकानू पूछियो[4]– "प्रिथी वैररो रूप धार ग्रहणो मागै छै, सु कासू कीजै[5] ?" तरै पडित कह्यो–"प्रथीरो ग्रहणो प्रासाद छै। राज प्रासाद करावो।" तरै राजारै मनमे आई–"जु एक इसडो[6] देहुरो कराऊ जिसडो[7] म्रत्युलोक माहै अचभो हुवै।" सु हमै देस-देसरा सूत्रधार तेडीजे छै। कारीगर देहुरारी जिनस माड दिखावै छै,[8] पिण राजारै मन काय तरह दाय नावै छै[9] । तिण समै खाफरो चोर नै काळो चोर नावजादीक छै[10] । तिकै दीवाळीरै दिन जूवै रमिया, तरै खाफरै तो राजा जैसिघदेरो चढणरो पाटहडो घोडो कोडीधज आडियो[11] नै काळै काइक बीजी वस्त आडी छै[12] । काळो सीरोही तीरै आगै उभरणी सहर छै, तठै रहै छै,[13] सु काळो जीतो, खाफरो हारियो, तरै कह्यो–"घोडो कोडी- धज आण दे[14] ।" तरै खाफरै कह्यो–"आवती दीवाळी उरी आण देईस[15] ।" तरै खाफरो पाटण गयो, मजूररो रूप करनै। घोडा कोडीधजरै ठाण द्रोवरी पोट ले जायनै सैधो हुवो[16] । पछै द्रोवरी पोट फिटी करनै ढाणियो हुय रह्यो[17] । घणी खिजमत करै,[18] इण माहै घणी कळा[19] । राजा सदा कोडीधजरै ठाण आवै, सु इणसू

---

1 सिद्धरावने रुद्रमहालय प्रासाद करवाया जिसकी वात। 2,3 राजा सिद्धराव रातमे जब सोता है तो स्वप्नमे देखता है कि पृथ्वी स्त्रीका रूप धर कर राजाके पास आती है और कहती है कि एक मुझे अच्छा गहना दिया जाय। 4 तब पडितो और स्वप्न-पाठकोसे पूछा। 5 सो क्या करना चाहिये ? 6 ऐसा। 7 जैसा। 8 शिल्पी लोग देहरेका चित्र ( मॉडल ) बना कर दिखाते है। 9 परतु राजाको वे किसी प्रकार पसन्द नही आते हैं। 10 उस समय खाफरा चोर और काला चोर प्रसिद्ध है। 11 दाव पर लगाया। 12 और कालेने किसी दूसरी वस्तुको दाँव पर लगाया है। 13 वहाँ रहता है। 14 ला कर दे। 15 आने वाली दिवाली पर ला कर दे दूगा। 16 परिचित हुआ। 17 पीछे दूबकी पोट लाना छोड करके घोडेकी ठान साफ करनेकी नोकरी पर रहा। 18 सेवा करे। 19 इसमे कला बहुत।

खुसी हुयनै घोडा कोडीधजरो खाफरानू पाडव कियो[1] । मु खाफरो घणी खीजमत करै । राजा कोडीधजरै ठाण सदा घडी दोय बैसे[2] सु राजा देहुरारी वात सदा करै । "कोई उसडो[3] कारीगर जुडै[4] तो देहुरो कराऊ" । पिण कारीगर जुडै नही । सु आ[5] वात खाफरो सदा सुणै । दीवाळी निजीक आई तरै खाफरो रात घडी ४ गई घोडानू छोड नै कोट कुदाय नै ले नाठो[6] । नै राजानू परभात खबर हुई, पाडव घोडो ले नाठो । तरै राजारो साथ कहण लागो "वाहर चढा[7] ।" तरै राजा कह्यो "उणनू कुण आपडै[8] ? वासै को मत चढो[9] ।" सु वाहर तो को वासै चढियो नही[10] । नै खाफरो रात पोहर १ पाछली थकी आवू निजीक उठै उतरियो,[11] । जाणियो "हू तो कुसळै पड़ियो[12] । अठै घडी १ वैसा ।" यिऊ ही उतर बैठो । तितरै[13] धरती फाटण लागी । तरै इण जाणियो "ओ कासू ह्वे छै[14]?" सु धरती माहिथी देहुरो १ नीसरै छै, सु पैहली तो देहुरारा तीन ईंडा[15] सोनारा नीसरिया,[16] पछै सिखर नीसरियो । पछै मंडप धडाबध[17] नीसरियो । तठै घणा देवी-देवता आइ नाटक माडियो, सु खाफरो पिण जाइ एकै गोख मांहै जाय वैठो । रात घड़ी २ पाछली हुती, तरै नाटक पूरो हूण लागो । तरै देवता उपरम करण लागा[18] सु खाफरो माहे बैठो सु देहुरो खिसै नही[19] । तरै देवता कहण लागा—"जोवो[20] को माणस छै ।" तरै जोवै तो खाफरो लाधो । तरै देवताए खाफरानू पूछियो—"तू कुण छै ?" तरै खाफरै आपरी वात माडनै कही । देवतानू देहुरारी वात पूछी—"जु ओ देहुरो वळै अठै कदै नीसरै छै[21]?" तरै देवताए कह्यो—"दीवाळीरी रातरै दिन वरस एक माहै नीसरै छै । एक आज

---

1 मईस वना दिया । 2 बैठता है । 3 वैसा । 4 प्राप्त हो । 5 यह । 6 भाग गया । 7 पीछा करें । 8 उसको कौन पहुँचे ? 9 पीछे कोई मत चढो । 10 इसलिये पीछे वाहर तो कोई नही चढा । 11 और खाफरा एक पहर पिछली रात रहते आवूके पास जा कर उतरा । 12 विचार किया कि मैं तो कुशलपूर्वक निकल आया । 13 इतनेमे । 14 यह क्या हो रहा है ? 15 कलश । 16 निकले । 17 सम्पूर्ण । 18 तव देवता लोग देहरेको पृथ्वीमे प्रवेश कराके अदृश्य करने लगे । 19 देहरा खिसकता नही । 20 देखो । 21 यह देहरा पुन यहा कब निकला करता है ?

नीसरियो हुतो नै सवारै परसू वळे नीसरसी[1] ।" तरै खाफरो देहुरारी गोखैथी परो उठियो[2] । देहुरो परो उपरमियो[3] । खाफरै कोडीधज चढनै पाटणनू पाछा उडाया[4] । मनमे जाणियो—"मै सिधराव जैसिंघदेरो लूण वरस दिन खाधो छै,[5] नै सिधरावरै देहुरारी वोहत चाह छै, ओ देहुरो हू सिधरावनू देखाऊ, ज्यू राजा इसडो[6] देहुरो करावै, राजारो प्रथी माहे अमर नाम रहे ।" सु खाफरो दिन घडी ४ चढता पाछौ पाटण आयो । घोडो ठाण बाधनै सिधरावरै मुजरै आयो । राजा वात पूछी—"कुण कामनू गयो हुतो[7] ? पाछो किण विध आयो ?" तरै पैहली तो कोडोधज हरियारी[8] वात माड राजानू कही । पछै देहुरारी वात कही—"मै जाणियो रावळै[9] देहुरो करावणरी मनमे चाहि घणी छै । मै रावळो लूण घणो खाधो हुतो[10] । मै आज रातै एक आवूरै कना इसडो देहुरो दीठो[11] । आज वळै देहुरो नीसरसी । जाणियो,[12] राजानू देहुरो दिखाऊ । राज उसडो[13] देहुरो करावै, रावळो अमर नाम रहै ।" तरै[14] राजा वात मानी । तिणहीज[15] घडी खाफरो नै सिधराव दोनू घोडै चढनै उण ठौड आबूरी तळहटी गया । घोडो अळगो बाधनै उण ठौड जायनै बैठा । वा वेळा हुई,[16] तरै धरती फाटण लागी, देहुरो नीसरण लागो । तरै खाफरो सिधराव सूतो थो सु जगायो । राजानू देहुरो नीसरतो दिखायो । तितरै[17] देवी-देवता केई आया । आखाडो माडियो । राजानै खाफरो बेऊ[18] झाडासू[19] नजीक घोडो बाध नै देहुरारै गोखै माहै जाय बैठा । सारो तमासो दीठो । रात घडी ४ पाछली रही, तरै देहुरो देवता उपरमण लागा । राजा नै खाफरो देहुरारा गोखै माही वैस रह्या । देवताए

---

1 निकलेगा । 2 तव खाफरा देहरेके गवाक्षसे उठ कर चला गया । 3 देहरा लोप हो गया । 4 खाफरा कोडीध्वज घोडे पर चढ कर उसे वापिस पाटणकी ओर उडा दिया । 5 मैने वर्ष-दिनो तक सिद्धराव जैसिंहदेका नमक खाया है । 6 ऐसा । 7 किस कामके लिये गया था । 8 हर कर ले जाने की । 9 आपको । 10 मैने श्रीमान्का वहुत नमक खाया था । 11 देखा । 12 विचार किया । 13 वैसा । 14 तब । 15 उसी समय । 16 वह समय हुआ । 17 इतने मे । 18 दोनो । 19 वृक्षोसे ।

दीठो[1]–"रात तो हमैं काई नही,[2] देहुरो उपरमैं नही, मु कुण वास्तै[3]?" तरै मारै मिळनै कह्यो–"च्यारूं तरफ देहुरारी देखो, कोई कठैई माणस तो छै नही ?" आगै देखे तो गोखडारै माहै आदमी दोय वैठा, तरै पाछै देवताए जायनें इन्द्रनू कह्यो–"एक आदमी काल वाळो नै एक को वळै[4] आदमी देहुरारा गोखा माहै वैठा छै। म्हे तो ऊणानू कह्यो,[5] थे परा जावो,[6] वे जाय नही। "तरै इन्द्र आप राजा खाफरा कनै आयो। इणानू पूछियो–"थे कुण छो ?" तरै राजा आपरो नाव कह्यो। तरै इन्द्र देवता कह्यो–"रात गळी, थे परा ऊठो,[7] ज्यू म्हे देहुरो ले जावा[8]।" तरै राजा कह्यो–"म्हारै इसडो देहुरो करावणो छै, मोनू इसडा देहुरारो करणहार वतावसो तरै अठाथी हू उठीस[9]।" तरै देवताए सिधरावनू गोळी ७ दीनी। कह्यो–"औ गोळी ऊपरा-ऊपर चाढसी तिको थांनू इसडो देहुरो कर देसी[10]। "तरै राजा नै खाफरा गोळी लेनै देहुराथी परा ऊठिया। देहरो नै देवता कवळासिया[11]। राजा नै खाफरो पाछा पाटण आया। सिधराव खाफरानू सिरपाव कोडीधज देनै विदा कियो। नै सिधराव कारीगरानू देस-देस तेडा मेलिया[12]। देस-देसरा कारीगर आय भेळा हुवा। राजा वा कारीगरा आगै गोळी मेली,[13] मु किणही कारीगरसू गोळी ऊपर गोळी चढै नही। राजा मासतो मोहरत थापै, आपरै मन कोई कारीगर मानै नही। तरै मोहरत आघा ठेले मु[14] आ वात मारी त्रिथीमे ही हुई रही छै। मु एक कारीगर हुतो,[15] मु वाप वेटो दोय हुता[16]। मो वे ही चालणरो विचार करण लागा। तरै वाप वेटानू कह्यो–"वाट वाढो[17]।" तरै वेटो हथोडो टाकी

---

1 देवता लोगोने देखा। 2 रात तो अब शेष है नही। 3 सो किस लिये। 4 एक कोई और। 5 हमने तो उनको कहा। 6 तुम चले जाओ। 7 रात वीत गई है, तुम यहासे उठ कर चले जाओ। 8 जिससे हम देहरेको ले जावे। 9 मुझे ऐसे देहरेका करने वाला बताओगे तव मै यहासे उठूंगा। 10 इन गोलियोको एक के ऊपर जो चढा देगा वह तुमको ऐसा देहरा बना देगा। 11 देहरा और देवता लोग अतर्धान हो गये। 12 और सिद्धरावने शिल्पियोको बुलानेके लिये देश-देशोमे बुलावे भेजे। 13 राजाने उन कारीगरोके आगे उन गोलियोको रखा। 14 तव मुहूर्तको और आगे खिसकावे। 15 था। 16 थे। 17 मार्ग काटो।

ले पैंडो वाढै । सु बाप कह्यो–"वेटो परणियो नही[1] ।" तरै यू करता बाप-बेटानू तीनै ठोडै परणायो[2] सु वेटो उण वातमे क्यू समझै नही । तरै चोथी वेळा[3] वळै[4] बेटानू परणायो । सु वहू वत्तीस लक्षणी हुती । सु माटीनू[5] बैर[6] पूछियो–"थानू चार वेळा क्यू परणाया ?" तरै माटी कह्यो–"म्हारै बाप मोनू कह्यो–वाट वाढो ।" तरै वहू कह्यो–"वाटरी थानू[7] सुसरोजी कहै तरै तू यू कहै–देहुरो आपै इण भात करस्या, इण भात माडस्या । यू वात करजो ।" नै उण वहू कह्यो–"राजा वे गोळी आगै मेलसी,"[8] तरै उण वहू सात वीटी दी, कह्यो–"गोळी ऊपर वीटी मेलनै बीजी गोळी चाढजो[9] ।" पछै कारीगर राजा कनै आया । पछै सिधराव उण आगै गोळी ७ वे आण मेली[10] । औ वीच वीटी देतो गयो । साते ही गोळी वीटी वीच दिया ऊपरा-ऊपर चढो । सिधराव कारीगरनू पूछियो–"अै वीटी कासू[11] ?" तरै कारीगर कह्यो–"अै वीच थर हुसी[12] ।" तरै राजारै जमै-खातरी हुई[13] । उणं कारीगरा देहुरो तयार कियो । वरस १६ देहुरो करता लागा । कई हजारा कारीगर लागना ।

समत १७१५रा वैसाख माहै महाराजा श्री जसवतसिघजीनू गुजरातरो सूबो हुवो । समत १७१७रा भादवा माहै मु० नैणसीनू हजूर बुलायो,[14] तरै भादवा वदि ७ मु० नैणसीरो सिधपुर डेरो हुवो । सु सिधपुर भलो सहर छै । सिधराव आपरै नाव नवो वसायो नै पूरबसू बाभण उदीच वेदिया १००० तेडायनै[15] गांव ५००सू सिधपुर दियो । गाव ५०० सीहोररा दिया, सेत्रूजा कनै[16] दिया ।

रुद्रमाळो वडो प्रासाद करायो हुतो, सु पातसाह अलावदी पाडियो[17] । तोही[18] कितरोएक प्रासाद अजेस छै[19] । गाव आगै

---

1 वेटा विवाह किया हुआ नही । 2 तब इस प्रकार करते हुए वापने वेटेका तीन स्थानोमे विवाह किया । 3 वार, दफा । 4 पुन । 5 पति । 6 पत्नी । 7 तुमको । 8 रखेगा । 9 गोलीके ऊपर छल्ला रख कर दूसरी गोली चढा देना । 10 लाकर रखी । 11 ये छल्ले किस लिये ? 12 ये बीचमे तह होगे । 13 तव राजाको तसल्ली हुई । 14 मुहता नैणसीको महाराजाने वुलवाया । 15 बुला कर । 16 पास । 17 जिसको वादशाह अलाउद्दीनने गिरवाया । 18 तव भी । 19 अब भी स्थित है ।

उगवणनू फळसै सरस्वती नदी छै[1] । तिण ऊपर प्राची माधवरो देहुरो करायो हुतो । घाट बंधायो हुतो । सु देहुरो तो मुगळे पाडियो नै घाट बधायो हुतो सु अजेस छै। तठै सको[2] सिनान करै छै । घाट ऊपर वगळो १ किणही तुरक करायो छै । सिधपुर पाटणथा कोस १२ छै । सिधपुर हमै पाटण वांसै छै[3] । सिधपुररै तफै गाव ५२ लागै छै[4] । घर २००० वाणियारा छै । घर १०० ओसवाळांरा छै । वीजा डीसावाळ पोरवाड छै[5] । घर ७०० वाभण[6] वसै छै । वीजा मुसलमान वोहरा १००० वसै छै । रुपिया २५००० उपजतारी ठोड छै[7] । सिधपुरथी कोस ११ विदसरोवर वडो तीरथ छै[8] । सरस्वती नदी छै । पूजा साठियारी धरती छै । तठै भाखरा माहै कोटेस्वर महादेव छै[9] । तठै एक आवारो व्रच्छ छै[10] । तिणरी जड़ा माहिसू प्रगट हुवा, तठै आबावरा भाखरारो पाणी आवै छै[11] ।

कवित सिधराव जैसिंघदेरा देहुरारा, लल्ल भाटरा कह्या[12]—

थर सो चवदह माळ[13] थभ सत-सहस निरतर ।
सौ-अढार[14] पूतळी जडी हीरा माणक वर ।।
तीस-सहस धजडड[15] कणै[16] साव्रन्त[17] निहाळै ।
सत्तर-सौ गय[18] तुरी[19] लल्लगुण रुद्र सभाळै ।।
एतला[20] पेख[21] अचिरज हुवै, रोमचै सुर नर स्रवै[22]।
सु प्रासाद कीध जैसिंघ ते, टगमग चाहै चक्कवै[23] ।।१।।
दिस गयद गड़ीयडै सीह खिण-खिण गुजारै ।
कणै कळस झळहळै मड ऊडड सभारै ।।

---

1 गाँवके आगे पूर्व दिशा द्वार पर सरस्वती नदी है। 2 सब कोई। 3 सिद्धपुर अब पाटनके अधिकारमे है। 4 सिद्धपुरके नीचे ५२ गाँव लगते है। 5 दूसरे डीसावाल पोरवाड वनिये है। 6 ब्राह्मण। 7 रुपये २५०००की आमदनीका स्थान है। 8 सिद्धपुरसे ग्यारह कोस पर बिन्दु सरोवर बडा तीर्थ है। 9 जहा पहाडोमे कोटेश्वर महादेव है। 10 वृक्ष। 11 जहा अबाजीके पहाडोका पानी आता है। 12 लल्ल भाट रचित सिद्धराव जयसिहदेवके रुद्रमाल देहरेके कवित्त। 13 चौदह मजिल। 14 अठारह सौ। 15 ध्वजा-दड। 16 सोनेके। 17 लता, फूलपत्तोंसे युक्त। 18 हाथी। 19 घोडे। 20 इतने। 21 देख कर। 22 सब ही। 23 चक्रवर्ती राजा भी एकटक देखना चाहते हैं।

नाचै रग पूतळी इक गावै द्रक वावै[1] ।
तिण पर सुर उछ्ळग सख सबदह उळावै ।।
पेखवै सुरनर सयल पर धमधमत सुर उच्छळग ।
तिण कारण सिद्ध नरेंद्र सुण व्रखभ तेणथी गो डरग[2] ।।२।।
सरग[3] यद्र[4] सल[5] हीयै राव पायाळै[6] वासग[7] ।
मात लोक[8]नू राव कहा हव ओपम कासग[9] ।।
हेम सेत मझार न को हिव[10] अत्थ[11] न रावह ।
इत्थ चवत्थो[12] राव हुवत जपियै सरावह ।।
त्रिण राव त्रिणेही भवणपति, सिद्ध लल्ल इम उच्चरै ।
इत्थ चवत्थो राव हुवै, तो दिव जळतो कर धरै ।।३।।
उदर दर खण मरै,[13] पैस भोगवै भुयगह ।
हळ वहि मरै वहिल्ल,[14] हरी जव चरै तुरगह ।।
सूब[15] धन सचइ मरै, वीर विद्रवै विवह पर ।
पडित पढ गुण मरै, मूढ भूचैं राया हर ।।
सूजाण राय गूजर धणी, करा वीनती कन्न सुग्र[16] ।
हम पढा गुणह पावै अवर, कहा परख जैसिंघ तुग्र ।।४।।
वीस तीस चाळीस साठि सित्तर सितहत्तर ।
भट्ट आण समप्पिया, सिद्ध केकाण[17] विवह पर ।।
वीस ढाल दस ढोल तीस नेजा इक डडह ।
छत्र ढाळत गैघटा[18] दिद्ध जैसिंघ नरदह ।।
मारियो दळद्र[19] दस लक्ख दे, इम उपाय अकुश कियो ।
हडहडै भट्ट ताहरै[20] हस्यो सिद्धराव एतो दियो ।।५।।

---

1 नेत्र चलाती है। 2 जिससे डर गया। 3 स्वर्ग। 4 इन्द्र। 5 शल्य रूप। 6 पातालमे। 7 वासुकी। 8 मृत्युलोक। 9 किससे। 10 अब। 11 धन। 12 चौथा। 13 चूहा बेचारा बिलको खोद कर मरता है। 14 बैल। 15 कृपण। 16 पुत्र। 17 घोडा। 18 हाथियोकी घटा। 19 दारिद्रय। 20 तब।

वि०—इस एकादश रुद्र महालयके सबधमे कहा जाता है कि इसका मुख्य मडप इतना विशाल था कि इसमे १६०० स्तम्भ थे और इस पर चौदह करोड सुवर्ण मुद्राये खर्च हुई थी। इसका अनुपम शिल्प, विशालता और स्थापत्य-कौशल अब भी उसके खडहरोमे देखा जाता है। इस रुद्र महालयको गुजरातके महाराजा मूलराज सोलकीने बनवाना प्रारभ किया था जो उसके प्रसिद्ध पौत्र सिद्धराज सोलकीके समयमे सम्पूर्ण हुआ था। इस विख्यात महालयके ११ खडोमे ११ ज्योतिर्लिंग स्थापित थे।

# वात सोळंकियां खैराड़ांरी

जाजपुर राम कुंभा खैराडारो वैसणो[1]। फूलियाथी[2] कोस १२, माडलगढथी कोस ११। गाव ६५, दाम ४१०१९५, रुपिया १०४७५४॥)५[3]। १ मांडलगढ नदराय वालणोत सोळकियांरो उतन। अै महारांणारा चाकर। जिण[4] वरस अकवर पातसाह रिणथंभोर लेनै आघो[5] डेरो चित्तोड दिसा[6] कियो, तद सोळकियै भांनीदास, वलूहुळ वाहिजथा गढ छोड छानै नास गया[7]। गढ पातसाह लियो। मांडलगढ़ वडी ठोड, गढ ऊपर पाणी घणो। आगै सोळकियांरै गढ ऊपर वडी वस्ती हुती। घणा महाजन गढ ऊपर वसता। ज्यांनरा देहरा घणा गढ ऊपर छै[8]। समत १७११ पातसाह जहागीर चीतोड़रो गढ पडायो। परगना ४ राणारा लिया। तिणांमे[9] ओ[10] गढ लेनै रावळ रूपसिंघ भारमलोतनू दियो। पछै रूपसिघ आपरी वस्ती सूधो गढ ऊपर जाय वसियो हुतो। समत १७१४रा जेठमे रूपसिंघ काम आयो। गढ छूटो।

१ भांनीदास।
२ वलू भांनीदासरो। २ वणवीर।
३ नदो।
४ साहिवखांन।
५ राव मनोहर।
४ साईदास।
५ मनोहर।

१ सांकरगढ़ माडलगढसू कोस १२।
१ केकडी सोळकिया भूणगोतारो उतन।
१ रामगढ जाजपुरसू कोस १२।

---

1 जहाजपुरमे रामकुभा खैराडेका निवास-स्थान। 2 फूलियासे। 3 ६५ गांव जिनकी रेख दाम ४१०१९५ अर्थात् रु० १०४७५४॥)५ थे। 4 जिस। 5 आगे, दूर। 6 ओर। 7 पीछेकी ओरसे गुप्त रूपसे गढ़को छोड कर भाग गये। 8 गढ ऊपर जैनोंके वहुत मदिर हैं। 9 जिनमे। 10 यह।

माडलगढसू अै सहर इतरा कोस छै[1]—

| | |
|---|---|
| १७ चीतोड । | २८ वधनोर । |
| ४५ अजमेर । | १८ वेघम । |
| १७ भैंसरोड । | ११ जाजपुर । |
| २२ बूंदी । | |

१ तोडो नागरचाळरो । ओ सोळकियारो आद उतन छै[2]। सोळकी जिकै जठै छै तिकै सारा तोडारा ऊठिया गया छै[3]। तोडो निपट वडी ठोड । तोडारा धणी राव कहावता । अै सोळकी वाल्हणोत[4]।

१ तोडडी सोळकिया महिलगोतारो उतन[5]। मालपुरो तोडडीरा परगनारो गाव माल पवार वसायो । नवो सहर कदोम सोळकियारी ठाकुराई । तोडडी राव सुलताण इणा महिलगोता माहै[6]।

सोळकियारै पीढियारी विगत—

| | |
|---|---|
| १ आद नारायण | २ कमळ । |
| ३ ब्रह्मा । | ४ धोमरिख । |
| ५ चाच । | ६ वाळग । |
| ७ सुकर । | ८ अरजन । |
| ९ अर्जैंपाळ । | १० देपाळ । |
| ११ राज । | १२ मूळराज । |
| १३ द्रोणगिर । | १४ वल्लभराज । |
| १५ भीम । | १६ करन । |
| १७ सिधराव । | १८ ईतपाळ । |
| १९ कीतपाळ । | २० वाळप । |
| २१ वोहड । | २२ सागो । |

1 माडलगढसे ये शहर इतने कोस है। 2 यह सोलकियोका आदि निवास-स्थान है। 3 सोलकी जहा भी है वे सभी तोडासे उठ कर गये है। 4 ये वाल्हणोत सोलकी कहलाते है। 5 महिलगोता सोलकियोका निवास-स्थान तोडडी गाँव है। 6 तोडडीका राव सुरताण इन महिलगोता सोलकियोमेसे है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| २३ | गोयदराज । | २४ | कानड । |
| २५ | महिलूरै उतन तोडो[1] | २६ | दुरजणसाळ । |
| २७ | हरराज । | २८ | राव सुरताण । |
| २९ | ऊदो । | ३० | वैरो । |
| ३१ | ईसरदास | ३२ | राव दळपत । |
| ३३ | राव अणदो । | ३४ | राव स्यामसिंघ तोडडी उतन । |
| ३५ | राव महासिंघ । | | |

## वात

राव सुरतांण हरराजरो, तोडडी छोडनै राणा रायमल कनै चीतोड आयो, तरै राणै वधनोर गढ दरोवस्त पटै दियो। पछै राणा रायमलरो टीकाइत वेटो प्रथीराज उडणो राव सुरताणरी बेटी तारादे परणियो[2]। प्रथीराज रायमल जीवता विस हुवो, पछै मुवो[3]। पछै मुदायत राणै रायमल जैमलनू कियो,[4] तिको राव सुरताणनू जोर कुमया करै[5]। इणै तो घणी ही हळभळ की,[6] पिण जैमल मानै नही, पग पडियो आवै[7]। तरै जैमल कटक करनै वधनोर ऊपर आयो। राव सुरताण आपरा उचाळा भरनै नीसरियो,[8] नै साखलो रतनो रावरै साळो पिण हुतो, परधान पिण हुतो, इणनू पैहली जैमल कनै मेलियो हुतो, सु इण तो घणी ही मीठी वात कही[9]। जैमल कहै–"थारी वैहननू तो वचियांरा घोडारी पूछ वधाईस[10]। "तरै इणही कू कह्यो[11]। जैमल जोर माहै मावै नही। वधनोर आयो। गाव तो, आगै आया तिणै कह्यो, सूनो छै[12]। इतरै रात पडी[13]। सारै वडे ठाकुरे कह्यो–

---

1 महिलूका निवासस्थान तोडा। 2 तारादेसे विवाह किया। 3 पृथ्वीराजको रायमलके जीते जी विष दे दिया गया था, जिससे वह मर गया। 4 बाद मे राणा रायमलने अपना उत्तराधिकारी जयमलको बनाया। 5 जो राव सुरतान पर बहुत ही अवकृपा रखता है। 6 इसने बहुत ही खुशामद की। 7 क्रोधमे पाव पछाडता है। 8 राव सुरतानने वहामे उचाला कर दिया (सपरिवार वहामे निकल गया)। 9 सो इसने तो बहुत ही खुशामद की। 10 तेरी बहिनको तो बचियोके घोडोकी पूछसे बधवाऊगा। 11 तब इसने भी कुछ कहा। 12 जो लोग आगे आये थे उन्होने कहा कि गाव तो सूना पडा है। 13 इतनेमे रात पड गई।

"डेरा करो, सवारै गाडारो घस लेस्या, वासै जास्या[1] ।" जैमल घणो कस माहै कहै[2]--"मुसाला घणी करो, मुसाला हाथिया ऊपर झालनै चढो, वासै गाडारै खडो[3] ।" पग गाडारा लेनै मुसालारै चानणै आप घुडवैहल बैसनै वासै खडिया,[4] सु गाडानू गाव अटाळी, वधनोरसू कोस ७, तठै जाय पोहता[5] । फोज नजीक आई । तठै राव सुरताणरी बेर[6] साखली कह्यो--"रतना भाई ! दीसै छै, वध पडीजसी[7] । राणै कही थी सु हूती दीसै छै[8] ।" तरै रतनै कह्यो--"चीतोडरो धणी आरभराम छै[9] । करण मतै सु करै ।" आ वात कहिनै साखलै रतनै एकल असवार कटक सामा खडिया,[10] अमल कियो,[11] घोडारो तग लियो, आधरै-आधरै आइ फोज मेवाडरी भेळो हुवो[12] । रात आधी ऊपर गई छै । जैमल आकडसादा नै सथाणै वीच आवतो हुतो, घुडवैहल वैठो । मेवाडरा वीर सारा ऊघता जाता छा । साखलो रतनो मुसालारै चानणै घुडवैहल नजीक आयनै घोडो तातो करनै जैमलनू बोलायो, कह्यो--"राज ! सांखलो रतनो मुजरो करै छै ।" घोडो खुरी करनै जैमलरी छाती माहै बरछीरी दी सु पैलै कानै नीसरी[13] । वरछी एक दोय वळै वाही[14] । जैमल समार हुवो[15] । काम सीधो[16] । पछै राणारै साथ साखला रतनानू पण मारियो ।

---

1 सभी वडे ठाकुरोने कहा—यही डेरे लगा दो, सवेरे गाडियो समूह लेकर पीछे जायेंगे । 2 जयमल अधिक क्रोधमे कहता है । 3 बहुतसी मशालें तैयार करो, मशालें पकड कर हाथियो पर चढो और गाडोके पीछे चलाओ । 4 पीछे चलाये । 5 जहा जाकर उन्हे पहुचे । 6 स्त्री । 7 रतना भाई ! दिखता है कि वधनमे पड जायेंगे । 8 राजाने कहा था सो ही होती दिखती है । 9 चित्तोडका स्वामी जो चाहे सो करनेमे समर्थ है । 10 रतना अकेला ही सवार होकर सेनाके सामने गया । 11 अफीम लिया । 12 सावधानीसे धीरे-धीरे आकर मेवाडकी सेनामे आ मिला । 13 घोडेको पिछले पावो पर खडा करके जयमलकी छातीमे वरछी ऐसी जोरसे मारी कि पीठकी ओर निकल गई । 14 एक दो वार वरछीके और कर दिये । 15 जयमल समाप्त हुआ । 16 काम सिद्ध हुआ ।

गीत साखरो[1]—

चढ साखला जुड पाड जैमल, प्राण पौरस दाख ।
रावरै दळ तुहीज रूपक, रूप रतना राख[2] ॥१॥

## वात

जैमल रतनो वेऊ[3] काम आया । फोज उठाथी पाछी वळी[4] । जैमलनू दाग आकडसादै सथाणै वीच हुवो[5]। वधनोररै देस मेर गूजर सदा वसता । हमैं जाट ही वधनोररा गावा माहै छै, सु कहै छै–"म्हे राव सुरताणरी वसीरा[6] छा ।"

## वात सोलंकी नाथावतरी

मूळ ग्रै तोडारै सोळकिया मिळै । पछै इणारै भाई वटै नैणवाय आई, सु भाजावत नैणवाय मुदायत[7] धणी हुता । तिणांनू नाथावता माहै राघोदास सादूळोत वडो रजपूत राहवेधी[8] हुवो, सु भोजावतानू धकाय काढिया[9] । भोमिया वट आप लियो । तठा पछै राघोदासरै वेटो नाहरखान भलो रजपूत हुवो । तिणनू राव रतन वूदीरो रु० ६००००)रो पटो दियो । इणारी वसी वूदीरै हूगोरी सूहतै हुती[10]। नाथावतारी वूदीरी ग्रोळ वडी तरवार राव रतन काळ कियो,[11] तरै सो नाहरखान राघवदासोत पातसाह जिहागीररै चाकर हुवो । नैणवाय जागीरमे पाई । हमै नाहरखानरो वेटो मूर छै सु नैणवाय वसै छै[12] । नाहरखानरा कराया मोहळ,[13] वाग छै। कितरी ही जमी

---

1 साक्षीका (यशका) छद । 2 हे सासला रतना ! तूने जयमल पर चढ करके अद्भुत वल-पौरुष दिखाया और उसे मार गिराया । राव सुरतानकी सेनामे तू वडा यशधारी हुआ और वीरगतिको प्राप्त कर कीर्तिमान् हुआ । (इस छदके प्रथम पादका पाठान्तर एक अन्य प्रतिमे—'ममवड साखला जैमल्ल' है) । 3 दोनो । 4 फौज वहासे पीछी लौट गई । 5 जयमलका दाहसस्कार आकडसादा और सथाणा गावोके वीचमे हुआ । 6 करमुक्त जागीरी । 7 मुख्य । 8 दूरदर्शी । 9 भोजाके वशजोको मार भगाया । 10 इनकी वसी (जागीरी) वूदी राज्यके हूगोरी-सूहतेमे थी । 11 राव रतन मर गया । 12 अव नाहरखानका वेटा सूरसिंह नैणवायमे रहता है । 13 महल ।

पातसाहजीरी दीवी पावं छै। रु० १) टको १ भूमिया वंटरो सारै परगनैमे पावै छै[1]।

## वात सोल्ंकी रांणारै वास देसूरीरा धणियांरी[2]

सोळकियासू पाटण छूटी, तरै भोजो देपावत सीरोहीरे गाव लास मुणावद वसियो[3]। तिण[4] नै[5] सीरोहीरै धणी राव लाखै माहोमाही अदावद[6] हुई। पछै वेढ हुई[7]। भोजो वेळा ५ तथा सात वेढ जीती। राव लाखो हारियो। पछै राव लाखै ईडररो धणी मदत तेडियो[8]। ईडररै धणी हकीकत राव लाखानू पूछी–"थे भोजा आगै वेढ वेळा ५ तथा ७ हारी सु कासू विचार छै[9] ?" तरै राव लाखै कह्यो–"वेढ भालारी सूअर करनै इण भात दौडे सु माहरै साथरा पग छूट जाय।" तरै ईडररै धणी कह्यो–"हिमरकै आपै ही खेडारी बाघण करस्या[10]।" पछै राव सीरोहीरो नै ईडररो भेळा हुय लास ऊपर आया। इण वेढ सोळकी भोजनू मारियो[11]। पछै इणासू लास छूटी। पछै अै मेवाड आया। कुभळमेर कनै गाडा छोडनै राणै रायमलरै मुजरै गया। तिण दिन[12] देसूरी मादडेचा चहवाण रहता, सु राणारा गैरहुकमी हुवा हालता[13]। पछै राणै रायमल कँवर प्रथीराज इणानू आ ठोड दिखाई, पछै इणेसो रायमल सावतसी एक वार तो उजर कियो,[14] अै माहरै सगा छै[15]। पछै राणै कह्यो–"माहरै दूजी ठोड देणनू काई नही[16]।" पछै इणै वात कबूल को[17]। पछै मादडेचा आलणरा आदमी १४० सु कूट-मारनै इणै आ धरती लीवी[18]।

---

1 सारे परगनेमे एक रुपये पीछे एक टका भूमिया भागका मिलता है। 2 मेवाडके राणाके यहा सोलकियोका देसूरीके जागीरदार वन कर रहनेकी वात। 3 तव देपाका वेटा भोजा सिरोही राज्यके गाव लास-मूणावदमे आकर रहा। 4 उसके। 5 और। 6 शत्रुता। 7 फिर लडाई हुई। 8 फिर राव लाखाने ईडरके स्वामीको मददके लिये वुलाया। 9 सो क्या वात है ? 10 इस वार अपन भी इसी प्रकार लडाई करेंगे। 11 इस लडाईमे सोलकीने भोजको मार दिया। 12 उन दिनोंमे। 13 सो राणाकी अवज्ञा करते रहते थे। 14 आपत्ति की। 15 ये हमारे सवधी हैं। 16 हमारे पास दूसरी जगह देनेको कोई नही है। 17 पीछे इन्होने उस वातको स्वीकार कर लिया। 18 पीछे मादडेचा आलणके आदमी १४० जिनको मार-कूट कर इन्होने इस धरतीको ले लिया।

१ भोजो देपावत ।

२ त्रभवणो ।

३ पातो ।

४ रायमल ।

५ सावतसी ।

६ देवराज ।

७ वीरमदे ।

८ जसवत ।

९ दलपत ।

गांव १४० देसूरीरो पटो कहीजै, तिणमे अै वडेरी ठोड[1]—

१२ गाव आगरियारा ।

१२ गाव वासरोटरा ।

१२ गाव धामणियारा ।

१२ गाव सेवत्रीरा ।

१२ गाव देसूरीरा ।

१२ गाव ढोलाणारा ।

८ गाव गोढवाडरा ।

१ आंनो । १ करनवास । १ वांसडो । १ माडपुरो ।

१ केसूली । १ गाथी । १ गोढलो । १ चावडेरो ।

इति सोळंकियारी ख्यातवार्त्ता सपूर्ण ।

लिखत वीठू पनो सीहथळरो ।

---

1 देसूरीके पट्टेमे १४० गाव, जिनमे वडे ठिकाने ये हैं ।

# अथ कछवाहांरी ख्यात लिख्यते ।

## वात राजा प्रथीराजरी

प्रथीराज वडो हर-भगत हुवो । द्वारकाजीरी जात[1] जाग्ग लागो । मजल[2] एक दोय गयो, तरै श्रीठाकुर साम्हा आया, प्रथीराजनू फुरमायो–"म्है जात मानी, तू पाछो वळ,[3] तू अठै थको घणी बदगी करै छै, सु हू जातसू इधकी मानू छू[4] ।" तरै राजा कह्यो–"हू रावळा[5] हुकमसू पाछो वळीस,[6] पण लोक आ वात मानसी नही ।" तरै श्रीठाकुर हुकम कियो–"थारै मन मानै सो माग ।" तरै प्रथीराज अरज की–"म्हारा खवा चक्र ह्वै पडै,[7] नै अठै महादेवरो देहरो छै तठै गोमती समुद्ररो सगम ह्वै[8] ज्यू सारा जात्री सिनान करै ।" तरै प्रथीराजरा खवा चक्र पडिया, महादेवरै देहरै गोमती समुद्ररो सगम हुवो । आ वात सारै हिंदुस्थान साभळी । तरै राणै सागै सुणी, तरै राणै जाणियो–"इसो[9] हरभगत राजा छै तिणरो किणी सूल दरसण पाऊ, वडी वात ह्वै[10] ।" तरै विचार कियो–"जु वेटी परणाऊ तो प्रथीराज अठै आवै[11] ।" तरै राणै प्रथीराजनू नाळेर मेलियो[12] । पछै राजा परग्णीजणनू आयो,[13] सु राजा प्रथीराज ठाकुररी मानसी सेवा करतो हुतो, नै राणा सागारो बेटो तेडणनू आयो,[14] सु ओ वासाथी बोलियो,[15] सु राजा सोनैरै कटोरै मन माहै श्रीठाकुरनू सिखरण आरोगावतो छो,[16] सु कवर वासाथी बोलियो, राजा फिर पाछो दीठो,[17] कटोरो सिखरण भरियो राजारा हाथ माहैसू छिटक पडियो । दुनी सोह[18] देख हैरान हुई, राणै आ वात सुणी, राणो आप पगे लागो, सु राजा वडो हरभगत हुवो ।

---

1 यात्रा । 2 मजिल । 3 तू पीछा लौट जा । 4 तू यहा रहते हुये भी वहुत वदगी करता है जिसे मैं यात्रासे भी अधिक मानता हू । 5 आपका । 6 लौटूंगा । 7 मेरे कधो पर चक्रोके चिन्ह हो जायँ । 8 हो जाय । 9 ऐसा । 10 जिसका किसी प्रकार दर्शन पा लू तो वडी वात हो । 11 जो मैं अपनी कन्या व्याह दूं तो पृथ्वीराज यहा आ जावे । 12 भेजा । 13 पीछे राजा विवाह करनेको आया । 14 बुलानेको आया । 15 सो यह पीठकी ओरसे बोला । 16 सो राजा श्री ठाकुरजीको सोनेके कटोरेमे सिखरनका भोग लगवा रहा था । 17 राजाने पीछेकी ओर फिर कर देखा । 18 सब ।

चवदै-चाळ ढूंढाहड कहीजै, तिणरो मेळ गांव १४४०[1]

३६० आंबेर।

३६० अमरसर।

३६० आटसू।

१५० दोसा।

५० मोजावाद, नीवाई, लवाइण।

पीढी कछवाहारी, भाट राजपाण उदैहीरै मंडाई तिणरी नकल छै[2]।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | आद श्री नारायण। | १८ | धुधमार। |
| २ | कमळ। | १९ | इद्रस्रवा। |
| ३ | ब्रह्मा। | २० | हरजस। |
| ४ | मरीच। | २१ | कुभ। |
| ५ | कस्यप। | २२ | सासतव। |
| ६ | सूर्य। | २३ | अक्रतासु। |
| ७ | मनु। | २४ | पासेनजित[4]। |
| ८ | इक्ष्वाकु। | २५ | जोवनारथ। |
| ९ | ससाद। | २६ | मानधाता। |
| १० | काकुस्त[3]। | २७ | परुपत। |
| ११ | अनेना। | २८ | तूदसत[5]। |
| १२ | प्रथु। | २९ | सुधानैव। |
| १३ | वेणराजा। | ३० | त्रिधानव। |
| १४ | चद। | ३१ | त्रियारोन। |
| १५ | जोवनार्थ। | ३२ | त्रिसाख। |
| १६ | सखासु। | ३३ | राजा हरिस्चद्र। |
| १७ | ब्रहदथ। | ३४ | रोहितास। |

1 चौदह सौ चालीस गावोका समूह 'चवदै-चाळ ढूढाहड' कहा जाता है, ('चवदै-चाळ' चौदह सौ चालीसका अपभ्रंश प्रतीत होता है)। 2 निम्नोक्त कछवाहोकी पीढिया उदहीके भाट राजपाणने लिखवाई उसकी नकल है। 3 काकुत्स्थ। ४ प्रसेनजित। ५ एक प्रतिमे 'वृहमत' लिखा है।

३५ हरित ।
३६ चाच ।
३७ विजैराय ।
३८ रुणकराय ।
३९ विक्रसाज ।
४० सुवाहु ।
४१ सगर ।
४२ असमज ।
४३ असमान[1] ।
४४ दलीप ।
४५ भगीरथ ।
४६ नाभगराय ।
४७ अवरीप ।
४८ सधदीप ।
४९ आयोतास ।
५० पाणराज ।
५१ सुदर्थराज ।
५२ अगराज ।
५३ आसमकराज ।
५४ पहपलकराज ।
५५ सदरथराज ।
५६ इवार ।
५७ वीवर ।
५८ विस्वसेन ।
५९ पटग[2] ।
६० दीर्घवाहु ।
६१ रघु ।
६२ प्रथसवा[3] ।
६३ अज ।
६४ दसरथ ।
६५ श्री रामचंद्रजी ।
६६ कुस ।
६७ अतिरथ ।
६८ निषगराइ ।
६९ नाल ।
७० नलनाभ ।
७१ पडरिष्य ।
७२ प्रछेमधन्वा[4] ।
७३ देवानीक ।
७४ अहिनाग ।
७५ सुधन्व ।
७६ सलराज ।
७७ धर्मादि ।
७८ आनभराय ।
७९ परियत्रराइ ।
८० वालरथ ।
८१ वज्रधाम ।
८२ सुनगराय ।
८३ व्रद्रीत ।
८४ हरणनाभ[5] ।
८५ धुवसध ।
८६ सुदर्सन ।
८७ अग्नवरण ।
८८ सिवगराय

1 अनुमान । 2 पट्नाग । 3 पृथुश्रवा । 4 प्रमेनधन्वा । 5 हिरण्यनाभ ।

८९ मुस्तराज[1]।
९० अमरषण[2]।
९१ सहसमान।
९२ विश्व।
९३ व्रयदर्थ[3]।
९४ उरक्रिय।
९५ वछवधराज।
९६ प्रतविंव।
९७ भान।
९८ सहदेव।
९९ व्रहदा।
१०० भूभान।
१०१ प्रतीक।
१०२ प्रतक प्रवेस।
१०३ मनदेव।
१०४ छत्रराज।
१०५ ......।
१०६ अतरिस्य।
१०७ भूपभीच।
१०८ आमत्र।
१०९ वेहाद्रभाज
११० वरदी।
१११ क्रतागराज।
११२ रांणजराय।
११३ सजोसराय।
११४ चतुरग।
११५ समपू।
११६ सुवोन।
११७ लालरंग।
११८ प्रासेनजीत।
११९ क्षुदकराय[4]।
१२० सोमेस।
१२१ नल, नळवरगढ करायो।
१२२ ढोलो[5]।
१२३ लखमन।
१२४ वज्रधाम, ग्वाळेरगढ करायो।
१२५ मागळराय।
१२६ क्रतराय।
१२७ मूळदेव।
१२८ पदमपाळ।
१२९ सूर्यपाळ।
१३० महीपाळ।
१३१ अमीपाळ।
१३२ नीतपाळ।
१३३ श्रीपाळ।
१३४ अनतपाळ।
१३५ धनकपाळ।
१३६ क्रमपाळ।
१३७ सिसपाळ।
१३८ वलिपाळ।
१३९ सूरपाळ।
१४० नरपाळ।

---

1, 2. एक अन्य प्रतिमे 'सुरतराज' लिखा है। एक और दूसरी प्रतिमे मुस्तराज और अमर्पणके बीचमे 'सिधराज' नाम अधिक लिखा हुआ है। 3 वृहद्रथ। 4 क्षुद्रकराय। 5 'ढोला-मारवण' नामक प्रसिद्ध प्रेम-कथाका नायक।

१४१ गधपाळ । १५५ नरदेव ।
१४२ हरपाळ । १५६ जानरदेव ।
१४३ राजपाळ । १५७ पंजुन सामत ।
१४४ भीमपाळ । १५८ मलयसी ।
१४५ सूर्यपाळ । १५९ वीजळ ।
१४६ इद्रपाळ । १६० राजदेव ।
१४७ वस्तपाळ । १६१ कल्याण ।
१४८ मुक्तपाळ । १६२ राजकुळ ।
१४९ रेवकाहीन । १६३ जवणसी ।
१५० ईससिह । १६४ उदैकरण ।
१५१ सोढदेव । १६५ नरसिंघ ।
१५२ दूलहदेव, भाणेज तुवरनू ग्वाळेर दियो[1] ।
१५३ हणुमान । १६६ वणवीर ।
१५४ काकिलदेव, आबेर वसायो[2] । १६७ उधरण ।
१६८ चद्रसेण ।

१६९ प्रथीराज चद्रसेणोत, बालबाई बीकानेरी घरे हुई तिणरा बेटा[3]—

१७० राजा भारमल । १७० जगमालरा खगारोत नारायसोवाळा
१७० राजा पूरणमल । १७० सागो ।
१७० बलिभद्र । १७० चत्रभुज ।
१७० गोपाळदासरा नाथावत कहीजै । १७० भीखो ।
१७० पचाइण । १७० साईदास ।
१७० सैंहसो ।

१७० भीवसी, राजा दो मासरे हुवो तिणरा बेटा[4]—

१७१ राजा रतनसी । १७१ राजा आसकरण ।

---

1 दूलहदेवने अपने तुवरको ग्वालियर दे दिया । 2 काकिलदेवने आमेर वसाया । 3 चद्रसेनके पुत्र पृथ्वीराजकी पत्नी बालबाई बीकानेरीकी कोखसे उत्पन्न पुत्र । 4 भीवसी, केवल दो मास तक राजा रह सका, उसके पुत्र ।

१७० राजा भारमल प्रथीराजरो,[1] तिणरा[2] बेटा—

१७१ राजा भगवतदास । १७१ सुदर ।
१७१ राजा भगवानदास। १७१ प्रथीदीप।
१७१ भोपत । १७१ रूपचद ।
१७१ लल्हैदी । १७१ परसराम ।
१७१ सादूळ । १७१ राजा जगनाथ ।

१७१ राजा भगवतदास राजा भारमलरो, तिणरा बेटा—

१७२ राजा मानसिघ । १७२ चद्रसेण ।
१७२ माधोसिंघ । १७२ हरदास ।
१७२ सूरसिंघ । १७२ वनमाळीदास ।
१७२ प्रतापसिंघ । १७२ भीव ।
१७२ कान्ह ।

१७२ राजा मानसिंघरा[3] बेटा—

१७३ जगतसिघ । १७३ भावसिंघ ।
१७३ सकतसिघ । १७३ हिमतसिघ ।
१७३ सबळसिघ । १७३ कल्याणसिंघ ।
१७३ दुरजणसिघ । १७३ स्यामसिंघ ।

१७३ कवर जगतसिघरा बेटा—

१७४ महासिंघ । १७४ जूझारसिघ ।
१७४ ततारसिंघ ।

१७४ महासिघरो[4] बेटो—

१७५ राजा जयसिंघ ।

१७६ रामसिघ । १७६ कीरतसिंघ ।

कछवाहारी पीढी[5]

कछवाहा सूरजवसी कहीजै, त्यारी विगत[6]—

१ आदि । २ अनाद ।

---

1 पृथ्वीराजका पुत्र। 2 जिसके। 3 के। 4 का। 5 कछवाहोकी वशावली (यह दूसरी वशावली है)। 6 कछवाहे सूर्यवशी कहे जाते हैं, उनका वश-विवरण।

३ चाद ।
४ कवळ[1]
५ ब्रह्मा ।
६ मरीच ।
७ कस्यप ।
८ कासिब[2] ।
९ सूरज ।
१० रुघसू रुघवसी कहीजै[3]
११ रघोस ।
१२ धरमोस ।
१३ त्रसिंघ ।
१४ राजा हरिचद ।
१५ रोहितास ।
१६ राजा सिवराज ।
१७ सतोष ।
१८ राजा रवदत ।
१९ राजा कलमप ।
२० धुधमार, चकवै[4] ।
२१ राजा सगर ।
२२ असमज ।
२३ भागीरथ ।
२४ कउकुस्त[5] ।
२५ दिलीप, दिल्ली वसाई[6]
२६ सिवधान[7] ।
२७ केवाध ।
२८ अज, अजोध्या वसाई[8] ।
२९ अजैपाळ, चकवै[9] ।
३० राजा दसरथ ।
३१ श्री रामचद्रजी ।
३२ कुसथी कछवाहा हुवा[10] ।
३३ बुधसेन ।
३४ चद्रसेन चाटसू वसाई[11] ।
३५ श्रीवछ ।
३६ सूर ।
३७ वीरचरित ।
३८ अजैबध ।
३९ उग्रसेन ।
४० सूरसेन ।
४१ हरनाम ।
४२ हरजस ।
४३ द्रढहास ।
४४ प्रसेनजित ।
४५ सुसिध ।
४६ अमरतेज ।
४७ दीरघबाहु ।
४८ विवसान[12] ।
४९ विवसत[13] ।
५० रोरक[14] ।
५१ रजमाई ।
५२ जसमाई ।

---

1 कमल । 2 काश्यप । 3 रघुसे रघुवशी कहे जाते हैं । 4 धधुमार चक्रवर्ती राजा । 5 काकुत्स्थ । 6 दिलीपने दिल्ली बसाई । 7 शिवधन । 8 अजने अयोध्या बसाई । 9 अजयपाल चक्रवर्ती राजा । 10 कुशसे कछवाहा हुए । 11 चद्रसेनने चाटसू बसाई । 12 विवस्वान । 13 विवस्वत । 14 रुरुक ।

५३ गौतम ।
५४ नळराजा, नळवर वसायो[1] ।
५५ ढोलो नळरो[2] ।
५६ लछमरण ।
५७ वजरदीप[3] ।
५८ मागळ, मागळोर वसायो[4] ।
५९ सुमित्र ।
६० मुधिब्रह्मा ।
६१ राजा कहनी ।
६२ देवानी ।
६३ राजा उसै ।
६४ सोढ ।
६५ दुलराज ।
६६ काकिल ।
६७ राजा हणु, आम्बेर[5] ।
६८ जोजड ।
६९ राजा पुजन ।

कछवाहारी विगत—

१४ राजा हरचद, राजा त्रसिघरो[6] । हरचदरै राणी तारादे हुई, कवर रोहितास हुवो. जिण रोहितासगढ करायो[7] ।

३१ श्री रामचद्रजी, राजा दसरथजीरै[8] । रामचद्रजीरै लव नै कुस हुआ[9] । तिण लव लाहोर वसायो[10] । कुसरा कछवाहा हुआ[11] ।

५५ राजा ढोलो नळ राजारो, जिण गढ ग्वाळेर वसायो[12] । ग्वाळेर ऊपर गोलीराव तळाव करायो । जिण ढोलारै वैर १ मारवणी हुई, वभ राजारी वेटी हुई[13] । १ पवार भोजारी वेटी हुई[14] ।

५९ राजा सुमित्र मागळरो, जिण ग्वाळेर राज कियो । ग्वाळेर गढ करायो । गोलीराव तळाव गढ ऊपर करायो[15]

६४ राजा सोढ उसै राजारो । नळवर छोड ढूढाड माहे आय वसियो[16] ।

---

1 नल राजाने नलवर वसाया । 2 ढोला नलका पुत्र । 3 वज्रदीप । 4 मागलने मागलोद वमाया । 5 राजा हणु आमेर आ गया । 6 राजा त्रिसिंघका पुत्र । 7 जिसने रोहिताश्वगढ वनवाया । 8 राजा दशरथके पुत्र । 9 रामचन्द्रजीके पुत्र लव और कुश हुए । 10 उस लवने लाहोर वसाया । 11 कुशके वशज कछवाहा कहलाये । 12 राजा ढोला नल राजाका पुत्र जिसने ग्वालियर वसाया । (ग्वालियर ढोलाके पहले वसा हुआ था ) 13 उस ढोलाकी एक पत्नी वभ राजाकी (?) पुत्री मारवणी थी । 14 एक दूसरी पत्नी पवार राजा भोजकी पुत्री (मालवणी) थी । 15 गोलीराव नामका तालाव गढ पर करवाया । ( पीढी स० ५५ मे ढोलाके द्वारा गोलीराव तालाव वनवानेके उल्लेखसे यह विरुद्ध है ) । 16 नलवर छोड कर ढूटाडमे आकर वस गया ।

६६ राजा काकिल । काकिलरै बेटा ४—

१ हणूत, आंबेर आयो ।
१ अलधरो, तिणरा मेड-कछवाहा कहीजै[1] ।
१ रालणरा रालणोत कहीजै[2] ।
१ देलण, तिणरा लाहरका कहीजै[3] ।

७० राजा मलैसी, जिण मलैसीरै राणी मेलणदे खीचण, अनळ खीचीरी बेटी[4] । जिण पीहरसू खाथडिया-प्रोहित गुर आणिया[5] । पैहली गागावत था सो दूर किया[6] । मलैसीरै बेटा ४ हुवा—

१ वीजळदे, आंबेर पाटवी[7] ।
१ वालोजी, जिण खेत्रपाळ जीतो । सात तवा वेधिया[8] ।
१ जैतल, जिण आपरा मासरी वोटी काट तिणसू आपरै साहिव ऊपर बैठी ग्रीधण उडाई[9] ।
१ भीवड नै लाखणसी बेऊ[10] पुजनरा, त्यारा परधानका-कछवाहा कहीजै[11] ।

७२ राजादे वीजळदेरो तिणरा बेटा ।

१ राजा कल्याणदे आंबेर ठाकुर ।
१ भोजराज नै दलो, त्यारा लवाणका-कछवाहा कहीजै[12] ।
१ रामेस्वर, तिणरा राणावत-कछवाहा कहीजै[13] ।
१ सोहो, तिणरा सीहाणी कहीजै[14] ।

---

1 अलधराके वशज मेड-कछवाहा कहे जाते है । 2 रालणके वशज रालणोत कहे जाते है । 3 देलणके वशज लाहरका कहे जाते है । 3 राजा मलैसीके मेलणदे खीचण रानी जो अनल खीचीकी बेटी । 5 जो अपने पीहरसे खाथडिया-पुरोहित गुरुओको साथ ले आई । 6 इसके पहले गागावत गुरु थे जिनको दूर कर दिया । 7 वीजलदे आमेरका पाटवी राजकुमार । 8 वालोजी जिसने क्षेत्रपालको जीता और लोहेके सात तवोको एक तीरसे वेध दिया था । 9 जैतल जिसने अपने घायल स्वामीके ऊपर बैठी हुई गिद्धनीको उडानेके लिये अपने मासके टुकडे डाले और उसको वहासे उडाया । 10 दोनो । 11 जिनके वशज प्रधानका-कछवाहे कहे जाते है । 12 जिनके वशज लवाणका-कछवाहे कहे जाते है । 13 जिसके वशज राणावत-कछवाहे कहे जाते है । 14 जिसके वशज सीहाणी कहे जाते है ।

७३ कल्याणदे राजादेरो, तिणरा वेटा—

१ राजा कुतल ग्रावेर धणी ।

१ रावत ग्रखैराज, तिणरा धीरावत-कछवाहा कहीजै[1] ।

१ रावळ जसराजरा हीज पोतरा कहीजै ।

७४ राजा कुतलरा वेटा—

१ हमीर, जिणरा हमीर-पोता कहीजै[2] ।

१ भडसी, तिणरा भाखरोत-कीतावत[3] ।

१ ग्रालणसी, तिणरा जोगी-कछवाहा कहीजै[4] ।

७५ राजा जुणसीरा वेटा—

१ राजा उदेकरण, ग्रावेर ठाकुर ।

१ कूभो, तिणरा कूभांणी ।

७६ राजा उदैकरणरा वेटा—

१ राजा नरसिघ, ग्रावेर टीको ।

१ वालो, तिणरा सेखावत

१ वरमिघ, तिणरा नरुका ।

१ सिवब्रह्म, तिणरा नीदडका कछवाहा[5] ।

७८ राजा वणवीर नरसिघरो,[6] तिको ग्रावेर टीको । तिणरा राजा-वत नै वणवीर-पोता कहीजै ।

कछवाहारी वसावळीरी विगत—

श्री रामचद्रजीरै कुस हुवो, तिण कुससू कछवाहा कहाणा[7] । राजा सोढल नळवर छोड ढूढाड ग्रायो, तिणसू वसावळी[8] ।

१ राजा सोढल ।

२ दूलहराव सोढलरो ।

---

1 जिसके वगज धीरावत-कछवाहे कहे जाते है। 2 जिसके वगज हमीर पोता कहलाते हैं। 3 जिसके वगज भाखरोत कीतावत। 4 जिसके वगज जोगी-कछवाहा कहलाते हैं। 5 जिसके वगज नीदडका-कछवाहा। 6 राजा वणवीर नरसिंहका वेटा। 7 उस कुशके कछवाहा कहे गये। 8 उससे वशावली लिखी जा रही है।

३ राजा काकिल आबेर वसायो ।

४ राजा हणू आबेर हुवो ।

५ जानडदे हणूरो ।

६ राजा पुजन चो० प्रथीराजरै सामत[1] ।

७ राजा मलैसी पुजनरो । आवेर टीको हुवो[2] । बेटा ३२ मलैसीरै हुवा छै । पुजनरा भीवड लाखण हुवा, त्यारा[3] कछवाहा परधानका कहीजै ।

८ वीजळदे मलैसीरो ।

९ राजादे वीजळदेरो ।

१० राजा कीलणदे राजादेरो । आवेर टीको हुवो ।

१० हेक[4] भोजराज राजादेरो । तिणरा[5] लवाणा-रा-गढ-रा-कछवाहा कहीजै ।

१० हेक सोमेस्वर, तिणरा रांणावत कहीजै ।

११ राजा कुतल कीलणदेरो । आवेर ठाकुर हुवो ।

११ हेक रावत अखैराज, तिणरा धीरावत-कछवाहा कहीजै ।

११ हेक जरसी रावळ, तिणरा जसरा-पोता कहीजै ।

१२ राजा जुणसी कुतलरो । आवेर ठाकुर हुवो ।

१२ हेक हमीरदे, तिणरा हमीर-पोता-कछवाहा ।

१२ हेक भडसी, तिणरा भाखरोत नै कोतावत ।

१२ हेक आलणसी, तिणरा जोगी-कछवाहा कहीजै ।

१३ राजा उदैकरण जुणसीरो । आवेर टीकायत ।

१३ हेक कुभो, तिणरा कुभाणी ।

१३ हेक बालो, तिणरा सेखावत ।

१३ हेक वरसिघ, तिणरा नरूका ।

१३ हेक सिवब्रह्मा, तिणरा नीदडका-कछवाहा कहीजै ।

---

1 राजा पुजन चौहान पृथ्वीराजका सामत । 2 आमेरमे तिलक हुआ । 3 जिनके । 4 एक । 5 जिसके ।

१४ राजा उदैकरणरो नरसिंघ आंबेर टीको। तिणरा राजावत कछवाहा।

१५ राजा वणवीर नरसिंघरो। वासला[1] वणवीर-पोता कहीजै।

१६ राजा उद्धरण।

१७ राजा चद्रसेण उद्धरणरो। आंबेर टीकाइत।

१८ राजा प्रथीराज चद्रसेणरो।

१९ राजा भारमल, प्रथीराजरो। आंबेर वडो रजपूत हुवो।

२० राजा भगवानदास भारमलरो। आंबेर टीकाई[2]। वडो ठाकुर हुवो। अकवर पातसाह घणी मया[3] करी। राव मालदेजी बेटी दुरगावती बाई परणाई थी।

२१ राजा मानसिंघ महाराजा हुवो। पूरवरो सूवो अकवर पातसाह दियो थो। राव चद्रसेणरी बेटी आसकवर बाई परणाई थी। समत १६०७ पोह वद १३रो जनम। समत १६७१ दखणमे काळ प्राप्त हुवो।

२२ कवर जगतसिंघ मानसिंघरो। अकवर पातसाह नागोर दियो थो। राणी कनकावती बाई राव रतनसी कनकावतीरो बेटीरो बेटो, कवर थको हीज मुवो[4]।

२३ राजा महासिंघ जगतसिंघरो। घोसा पटै हुतो[5]। मोटा राजाजीरी बेटी रुखमावती बाई परणाई हुती,[6] सु साथै बळी[7]। समत १६७३ दिखण बालापुर थाणै[8]।

२४ राजा जैसिंघजी, भावसिंघ पछै आंबेर पायो। समत १६७८, सीसोदिया महाराणा उदैसिंघरो दोहितो। समत १६६८रा असाढ वद १रो जनम। समत १६७९ राजा श्री सूरसिंघजीरी बेटी म्रघावती बाई परणाई हुती[9]।

---

1 पीछे वाले वंशज। 2 टीकायत, गद्दीका अधिकारी। 3 कृपा। 4 कुमारावस्थामे ही मर गया। 5 था। 6 थी। 7 महासिंहके मरने पर साथमे जल कर सती हुई। 8 सम्वत् १६७३मे दक्षिणमे बालापुरके थानेमे। 9 सम्वत् १६७९मे राजा सूरसिंहकी बेटी मृगावती बाई ब्याही थी।

२५ कवर रामसिघ ।

२५ कीरतसिघ ।

२३ जूझारसिघ जगतसिघोत[1] ।

२४ सगरामसिघ ।

२४ अनूपसिघ जूझारसिघरो । बुलाकी साहजादो गैवी ऊठियो थो पूरवमे, उण कनै थो[2] । हमै राजा जैसिघरै छै[3] ।

२४ प्रथीराज जूझारसिघरो ।

२४ किसनसिघ जूझारसिघरो ।

२२ सकतसिघ राजा मानसिघरो ।

२२ सबळसिघ राजा मानसिघरो ।- पूरव माहै भठीरी वेढ कांम आयो[4] । राव चद्रसेणजीरी वेटी रायकंवर वाई परणाई थी सु साथै बळी[5] ।

२२ दुरजनसिघ राजा मानसिघरो । पूरवमे भठीरी वेढ काम आयो ।

२३ परसोतमसिघ, राजा भावसिघ भेळो रहतो सु राम कह्यो[6] ।

२६ जैकिसनसिघ ।

२४ रामचदर, राजा बाहदर साथै काम आयो ।

२४ भारथसिघ ।

२४ सिवसिघ ।

२२ राजा भावसिघ राजा मांनसिघरो । आबेर टीको । राजा मानसिघ पछै भावसिघ टीको पायो[7] । वडो महाराजा हुवो । राणी गोडरो वेटो । जहागीर पातसाहरी वार माहै वडो मयावत चाकर हुवो[8] । समत १६३३रा आसोज वदी ३रो जनम । समत १६७८रा पोह वद ६ व्रहानपुर काळ प्राप्त

---

1 जूझारसिंह जगतसिंहका वेटा । 2 पूर्वकी ओर बुलाकी शहजादा अचानक उठ खडा हुआ था, अनूपसिंह उसके पास था । 3 अब राजा जैसिंहके पास रहता है । 4 पूर्वमे भट्टीकी लडाईमे काम आया । 5 जो साथमे जल कर सती हुई । 6 पुरुषोत्तमसिंह राजा भावसिंहके साथ रहता था, सो वही मर गया । 7 राजा मानसिंहके वाद भावसिंहको राज्य मिला । 8 भावसिंह जहागीर वादशाहके समय वडा कृपा-पात्र सेवक हुआ ।

हुवो[1] । राजा सूरजसिंघरी वेटी आसकंवर वाई परणाई मु सायै वळी । वेटो नही । वेटी १ सूरजदे हुई मु राजा जैसिंघजी संमत १६७६ राजा गजसिंघजीनू[2] परणाई । पछै समत १६६४रा जेठमे राजा गजसिंघजी काळ कियो तद साथै वळी[3] ।

२२ हिमतसिंघ राजा मानसिंघरो ।

२२ स्यामसिंघ राजा मानसिंघरो ।

२२ कल्याणसिंघ राजा मानसिंघरो ।

२३ उग्रसिंघ ।

२१ कान्ह राजा भगवंतदासरो ।

२१ माधोसिंह राजा भगवंतदासरो । अकबर पातसाहरो अजमेर मालपुरो पटै थो । आवेररी मोहलारी प्रोळ ऊपरला झरोखाथी पडियो तरै मुवो[4] ।

२२ सुजाणसिंघ ।

२३ हिंदुसिंघ ।

२२ छत्रसिंघ माधोसिंघरो भाणगढ पटै थो । समत १६८६रै आसाढ माहै खानजिहा पठाणरी वेढ लोहै पडियो,[5] पछै वळै किणही उपाडियो[6] । पछै वळै पातसाहरै चाकर थो । पछै राम कह्यो[7] ।

२३ पेमसिंघ छत्रसिंघरो । खानजिहारी वेढ काम आयो ।

२४ सूरतसिंघ ।

२४ मोहकमसिंघ ।

२३ आंणदसिंघ छत्रसिंघ साथै काम आयो ।

२३ उग्रसेन छत्रसिंघरो ।

२३ अजवसिंघ छत्रसिंघरो ।

२३ तेजसिंघ माधोसिंघरो ।

---

1 मर गया । 2 को । 3 राजा गजसिंहजी मरे तव साथमे जल कर सती हुई । 4 आमेरकी महलोकी पोलके ऊपरके झरोखेसे गिर कर मरा । 5 पठान खानजहांकी लडाईमे घायल हुआ । 6 तव किसीने वहासे उसको उठा लिया । 7 फिर मर गया ।

२१ सूरसिंघ राजा भगवतदासरो । वडो रजपूत हुवो । सीकरीरो कोट अकबर पातसाह करायो तद[1] सूरसिंघरो डेरो कोटरी नीव आई तठै हुतो,[2] सु डेरो सूरसिंघ न उठावै तरै[3] पातसाह कोट वाको कियो, पिण सूरसिंघनू क्यूही न कह्यो[4] । वडो आखाडसिध[5] रजपूत हुवो । पातसाह अकबररै वडो चाकर हुवो । मोटै राजारी बेटी जसोदाबाई परणाई थी, जैतसिंघरी बैहन[6] सु साथै बळी ।

कवर सूरसिंघ भगवानदासोत सादमै सुलतांन वेढ स्याळकोट हुई,[7] जका[8] स्याळकोट, नगरकोट नै अटक वीच छै । उण ठोडसू गुजरात[9] पण नैडी[10] छै । सादमो-सुलतान पातसाह हुमाऊरो पोतो छै[11]; हदायलरो भतीज छै[12] । लसकरी कै कमरारो बेटो छै,[13] तिणसू वेढ हुई[14] । सूरसिंघ सादमतनू मारियो, नै सूरसिंघ कुसळै गयो[15] ।

२२ चादसिंघ सूरसिंघरो ।

२३ अगरसिंघ ।

२३ अचळसिंघ ।

२४ मनरूपसिंघ ।

२४ गजसिंघ ।

२३ ग्यानसिंघ ।

२१ प्रतापसिंघ राजा भगवानदासरो ।

२१ बलिराम राजा भगवतदासरो ।

२० राजा जगननाथ भारमलरो । वडो महाराजा हुवो । गढ रिणथभोर, तोडो और ही घणा परगना जागीरमे था । तोडै

---

1 उस समय । 2 वहा था । 3 तब । 4 परतु सूरसिंहको कुछ भी नही कहा । 5 युद्ध-विशारद । 6 वहिन । 7 शादमा-सुलतानसे स्यालकोटमे लडाई हुई । 8 वह । 9 गुजरात, पजाबका एक प्रान्त । 10 निकट । 11 शादमा-सुलतान बादशाह हुमायूंका पोता है । 12 हिंदालका भतीजा है । 13 लसकरी ( असकरी ) कामराका बेटा है । 14 जिससे लडाई हुई । 15 सूरसिंहने शादमाको मार दिया और कुशलपूर्वक निकल गया ।

राजथान[1] । समत १६०९रा पोस वदी ९रो जनम । समत १६६५ माडळ थाणो थो तठै राम कह्यो[2] । माडळरा तळाव ऊपर छत्री छै ।

२१ जगरूप कंवर जगनाथरो । कवर थको हीज दिखणमे अकवर पातसाहरै संमत १६५६ काम आयो[3] । वेटो कोई नही । वेटी १ थी सु राजा गजसिघजीनू समत १६६२ तोडै परणाई कल्याणदेजी ।

२१ करमचंद राजा जगननाथरो । टीको हुवो । वडो दातार हुवो । सु राजा जगननाथ पछै वरसा ४ सोह जागीर रही[4] । पछै मिलकापुर थाणै राम कह्यो[5] ।

२२ अभैकरन ।

२१ जसो राजा जगनाथरो ।

२१ वीजळ राजा जगनाथरो, पातसाही चाकर । वांकी वेग मोहवतखारो रिणथभोररा सूवा ऊपर थो । पाछो साहिजादो खुरम फिरियो,[6] तरै साहिजादारै हुकमसू गोपाळदास आइ[7] रिणथभोररी तळैटी तलक[8] दखल कियो । वाकी वेग गढ चढ गयो । पाछो साहिजादो नीसरियो[9] नै गोपाळदास गोड ही जांण लागो । पाछो वाकी वेग उतरियो,[10] पाछो कियो । पछै रातै गोपाळदास रातीवाहो दियो,[11] तठै वाकी वेग नै वीजळजी काम आया ।

२१ मनरूप राज जगनाथरो, भीवरो तोडो पटै थो ।

२१ गोपाळसिघ पातसाही चाकर, तोडो पटै ।

२२ सुजाणसिघ ।

२३ केसरीसिंघ ।

---

1 राजधानी । 2 वहा मरा । 3 कुवरपदे ही स० १६५६मे दक्षिणमे अकवर वादशाहके काम आ गया । 4 राजा जगन्नाथके मरनेके वाद चार वर्ष तक सव जागीर उसके पास रही । 5 फिर मलिकापुर थानेमे मर गया । 6 पाछो फिरियो = वागी हुआ । 7 आकर । 8 तक । 9 लौट कर चला गया । 10 फिर वाकी वेग गढसे उतरा । 11 फिर गोपालदासने रात्रि-आक्रमण किया ।

२३ हरिसिघ ।

२१ बालोजी राजा जगनाथरो ।

२१ बलकरण राजा जगनाथरो । रावळे रह्यो थो । मेड़तारी रेया पटै ।

२० भोपत राजा भारमलरो । अकबर पातसाह गुजरात गयो नै मुदफर पातसाह वेढ की तठै मुदडा आगै काम आयो[1] ।

२० सलेहजी राजा भारमलरो । वडो रजपूत हुवो । पैहली रामदास ऊदावतरै सलेहदीजीरै बालार थो,[2] पाछो पातसाही चाकर हुवो ।

२० सादूळ राजा भारमलरो ।

२० सुदरदास राजा भारमलरो ।

२० भगवानदास राजा भारमलरो ।

२१ मोहणदास भगवानदासरो ।

२१ अखैराज भगवानदासरो ।

२२ अभैरांम जागीरी ऊपर मुगल १ मारियो, तिण ऊपर जहांगीर पातसाह अवखास[3] माहै रोकियो । कह्यो–"वेडी पहर" तरै लोह कर मुवो[4] ।

२२ स्यामराम अखैराजरो । अभैराम साथै कांम आयो ।

२२ हिरदैरांम अखैराजरो ।

२३ जगराम, पातसाही चाकर । लवाइए पटै । पैसोररै थाणै[5] ।

२३ रामसिंघ, उदैहीरै गाव वाघोर रैहतो[6] ।

२२ विजैराम अखैराजरो ।

१६ भीवराज प्रथीराजरो । रावजी वीकानेरिया लूणकरणजीरो दोहितो[7] ।

---

1 बादशाह अकबर गुजरात गया और मुदफ्फर बादशाहने लडाई की उसमे अकबरके सन्मुख काम आ गया । 2 पहले रामदास ऊदावत और सलेहदीके परस्पर संबंध था । 3 दरबार-इ-आमखास । 4 तब तलवार चला कर मर गया । 5 जगराम बादशाही चाकर, लवाणा जागीरमे और पेशावरके थाने पर रहता था । 6 उदैही परगनेके वाघोर गांवमे रहता था । 7 बीकानेरके राव नूणकरणजीका दोहिता ।

२० रतनसी भीवराजरो । रतनसीनू राजा आसकरण मारियो ।
२१ विक्रमादीत
२१ करण ।
२० राजा आसकरण भीवराजरो । ग्वाळेर राजधानी । नळवर पटै । श्री ठाकुरारा महाभगत वैष्णव[1] । राव मालदेवजीरी बेटी इद्रावती वाई परणाई थी । पछै आसकरणजीरी बेटी मोटा राजाजी परणिया, तिणरै पेटरो राजा सूरसिघजी[2] ।
२१ राजा राजसिघ आसकरणरो नळवर राजा हुवो । मोटा राजाजीरी बेटी राईकवरबाई परणाई थी, समत १६७१ दिखणमे राम कह्यो[3] ।
२२ राजा रामदास राजसिघरो नळवर पटै । राजा श्री सूरसिघजी अजमेरमे पातसाह जहागीरनू हाथी पेश करनै नळवरनै राजाईरो टीको देरायो[4] । समत १६६१ राम कह्यो ।
२३ अमरसिघ रामदासरो । नळवर राज टीकै बैठो थो । सकतसिघ मोटा राजाजीरो दोहितरो बाळक थका मुवो तरै नळवर उतरियो[5] ।
२४ जगतसिघ अमरसिघोत ।
२२ कल्याणदास राजसिघरो । दिखण जायनै तुरक हुवो[6] ।
२२ किसनसिघ राजसिघरो । राईकवर वाईरा पेटरो[7] ।
२१ जैतसिघ राजा आसकरणरो ।
२२ मुकददास जैतसिघरो । रावळै कुडकीरो पटो[8] ।
२१ गोरधन राजा आसकरणरो । राव चद्रसेणरी बेटी कवळावती वाई परणाई थी ।

---

1 श्री ठाकुरजीका (श्रीकृष्णका) परम वैष्णव भक्त । 2 फिर आसकरणकी वेटीको मोटा राजा उदयसिहजी व्याहे जिसके उदरसे सूरसिहजी उत्पन्न हुए । 3 सम्वत् १६७१मे मृत्यु हो गई । 4 राजा सूरसिहजीने वादशाह जहागीरको अजमेरमे हाथी नजर करके नरवरके स्वामियोको राजाकी उपाधि दिलवाई । 5 मोटा राजाजीका दोहिता शक्तसिह बचपनमे ही मर गया तव नरवरका राज उतर गया । 6 दक्षिणमे जाकर मुसलमान हो गया । 7 रायकुवरीवाईके उदरसे उत्पन्न । 8 मारवाड राज्यका कुडकी गाव पट्टेमे था ।

२२ हिरदैनारायण । रावळा गाव ४, मेडतारो गाव गागरडो दियो थो[1] ।
२१ सकतसिघ राजा आसकरणरो ।
२२ गोविददास ।
२३ भावसिंग ।
१९ सुरताण राजा प्रथीराजरो ।
२० तिलोकदास । दसमतखानसू विढ मुवो[2] ।
२१ केसोदास मीच मुवो ।
२२ सिघ ।
२० सुदरदास सुरताणरो ।
२१ नरसिघदास ।
२० वाघ सुरताणोत ।
२१ उग्रसेण ।
२० मोहणदास सुरताणोत ।
२० सकतसिघ सुरताणोत ।
२१ सहदेव सकतावत ।
२१ देवसिंघ, वीठळदास गोडरै कांम आयो, रजा वाहदर साथै[3] ।
२२ सुजाणसिंघ, राजा वीठळदासरै चाकर ।
१९ जगमाल राजा प्रथीराजरो ।
२० खगार जगमालोत । जिण खगाररा खगारोत-कछवाहा नराइणारा धणी छै[4] ।
२१ नराइणदास खगारोतनू अकवर पातसाह नराइणो पटै उतन कर दियो[5]।
२२ दुरजणसाल नराइणदासरो ।

---

1 मारवाड राज्यकी ओरसे मेडताका गागरडा गाव और चार गाव और दिये गये थे। 2 दसमतखासे लड कर मरा। 3 देवीसिंह रजा बहादुरके साथ विट्ठलदास गौडके काम आया। 4 जगमालका बेटा खगार, जिसके वशज खगारोत कछवाहे नराणाके स्वामी हैं। 5 खगारके बेटे नारायणदासको बादशाह अकबरने नराणा पट्टे और वतन कर दिया।

२३ चद्रभाण दुरजणसालरो। काम आयो[1] ।
२४ प्रतापसिंघ ।
२१ सत्रसाळ नराइणदासोत ।
२३ कुसळसिघ ।
२२ गिरधरदास नराणदासोत ।
२३ करण ।
२३ रतन ।
२३ विहारीदास ।
२१ मनोहरदास खगारोत ।
२२ जैतसिंघ ।
२३ कल्याणसिंघ ।
२२ भोजराज । नराइणो पटै । वाघ काम आयां पछै वडो समझवार सिरदार हुवो[2] ।
२३ गोपीनाथ ।
२३ सूरसिंघ ।
२३ हरिसिघ ।
२२ प्रतापसिघ मनोहरदासोत ।
२३ विहारीदास ।
२३ सवळसिंघ ।
२३ अजबसिंघ ।
२२ रतन ।
२१ हमीर खंगारोत ।
२२ सूरसिंघ किसनसिंघ साथै काम आयो ।
२३ तेजसिंघ ।
२२ रतन हमीरोत ।
२३ केसरीसिघ ।
२२ राजसिंघ हमीरोत ।
२३ मोहकमसिंघ ।
२२ सकतसिंघ हमीरोत ।
२३ आसकरण ।
२२ किसनसिंघ हमीरोत ।
२१ राघोदास खगारोत ।
२२ नरसिंघदास ।
२१ वाघ खगारोत पातसाही चाकर । बेटो नही सु भोजराज गोद थो । समत १६८६ दक्षिण खांनजहारी वेढ काम आयो । कछवाहा छत्रसिंघ साथै[3] ।
२१ वैरसल खगाररो । महमदमुराद नराइणा ऊपर आयो तरै काम आयो[4] ।

---

1 युद्धमें काम आया । 2 वाघके मारे जानेके वाद भोजराज वडा समझदार सरदार हुआ । 3 खगारका वेटा वाघ वादशाही चाकर । इसके कोई वेटा नहीं, इसलिये भोजराजको गोद लिया था । स० १६८६मे दक्षिणमे खानजहाकी लडाईमे कछवाहा छत्रसिंहके साथ काम आया । 4 मुहम्मद मुराद नराणे पर चढ कर आया तव काम आया ।

२२ केसरीसिघ वैरसलोत, नाथावतारी वेढ काम आयो[1]।

२१ सुजाणसिघ।

२२ दलपत।

२२ विजैराम, काम आयो साभरर किरोडीसू वेढ हुई तठै[2]।

२३ हरराम काम आयो केसरीसिघ भेळो[3]।

२१ उदैसिघ खगारोतरै छोरू नही[4]।

२१ अमरो खगारोत।

२२ उग्रसेन।

२२ जगनाथ, स्यामसिघ करमसेणोतरै काम आयो[5]।

२१ किसनसिंघ खगारोत।

२२ सबळसिघ, राजा रायसिंघजीरै काम आयो[6]।

२३ स्यामसिघ।

२२ हरराम।

२१ राजसिंघ खगारोत।

२२ बळराम मालपुरै काम आयो।

२१ भाखरसी खगारोत, भलो डील हुवो। रावळै मेडतारी भोवाळ पटै[7]।

२१ जसकरण।

२२ सादूळ।

२३ रुघनाथसिघ।

२२ बद्रीदास राजा जैसिंघरो चाकर।

२३ माधोसिंघ रावळै रह्यो थो।

२२ द्वारकादास।

२३ अजबसिघ, रावळै थो[8]।

२३ सूरसिघ रावळै थो[9]। राव हरिसिघ साथै काम आयो।

२१ केसोदास खगारोत।

२२ कल्याणसिंघ राजा वीठळदासरै रह्यो थो[10]।

२१ सावळदास खगारोत। बेटो नही।

२० जैसो जगमालोत।

२१ केसोदास।

२२ मनरूप।

---

1 नाथावतोंकी लडाईमे मारा गया। 4 साभरके किरोडीसे लडाई हुई उसमे मारा गया। 3 केसरीसिंहके साथ हरराम भी काम आया। 4 उदयसिंह खगारोतके कोई पुत्र नही। 5 जगन्नाथ करमसेनके बेटे श्यामसिंहके लिये काम आया। 6 सबलसिंह राजा रायसिंहजीके लिये काम आया। 7 भाखरसी खगारोत बडा जबरदस्त हुआ। जोधपुर महाराजाकी ओरसे मेडतेका भोवाल गाव पट्टेमे था। 8 अजबसिंह जोधपुर महाराजाके यहा नौकर था। 9 सूरसिंह जोधपुरके महाराजाके यहा नौकर था। 10 कल्याणसिंह राजा विठ्ठलदासके यहा रहा था।

२१ वलू ।

१६ बलिभद्र वाकडो, राजा प्रथीराजरो[1] ।

२० अचळदास वळभद्रोत ।

२१ मोहणदास ।

२१ गिरधर अचळदासरो ।

२० दुरजणसाळ बळभद्रोत ।

२१ केसरीसिंघ ।

२१ स्यांमदास ।

२० गोयददास बळभद्रोत ।

२० दयाळदास वळभद्रोत ।

२० स्यामदास ।

२० वेणीदास ।

१६ सागो राजा प्रथीराजरो । लदावण माहै चारण कानै मारियो । अऊत हुवो[2] ।

१६ पचाइण राजा प्रथीराजरो । खान हबीवसू खोह लडाई हुई तठै कांम आयो[3] ।

२० किसनदास झरहर काम आयो[4] ।

२१ कल्याणदास ।

२२ कान्ह ।

२२ जैराम ।

२१ भारथी ।

२२ गिरधर ।

२२ रामसिघ । रामसिघरै छोरू नही[5] ३ ।

२० नरहरदास पचाइणरो ।

२१ छीतरदास ।

२२ व्रिदावनदास ।

२३ किसोरदास ।

२४ फतैसिघ ।

२४ आणदसिघ ।

२३ फरसराम व्रिदावनरो ।

२४ अजबसिघ ।

२४ अभैराम ।

२४ जूझारसिघ ।

२४ सिवराम ।

२४ किसनसिघ ।

२४ सुरतसिघ, ६ फरसराम ।

२३ सबळसिंघ व्रिदावनदासरो ।

२४ मोहकमसिंघ ।

२३ सुदरदास व्रिदावनदासरो ।

२४ किसनसिघ ।

२४ रामचद ३ ।

२३ सकतसिघ व्रिदावनरो ।

२४ अजबसिघ ५ व्रिदावनरो ।

---

1 वलभद्र वाकडा राजा पृथ्वीराजका वेटा । 2 लदाणमे चारण कान्हाने उसे मार दिया, अपुत्र रहा । 3 खान हवीवसे खोहमे लडाई हुई वहा काम आया । 4 किसनदास झरहरकी लडाईमे मारा गया । 5 रामसिंहके कोई पुत्र नहीं ।

२२ नरसिंघदास छीतरदासरो अऊत[1] ।
२२ माधोदास छीतरदासरो ।
२२ हरनाथ ।
२२ गिरधर ।
२१ बळकरण नरहरदास-जीरो ।
२२ मुकददास ।
२३ चत्रभुज ।
२३ वेणीदास ।
२२ वसीदास ।
२३ रामसाह ।
२३ रामचद ।
२३ अनूपराम ।
२२ गोविंददास ।
२३ उदैराम ३ ।
२१ मोहणदास नरहर-दासरो । काम आयो ।
२१ जसकरण नरहरदासरो काम आयो ४ ।
२० वीठळदास पचाइणोत ।
२१ वाघजी, राजा मानसिंघ कवर सबळसिंघनूं पकडियो तठै काम आयो[2] ।
२२ हरराम ।
२२ बुधसिंघ काम आयो ।
२० रामचद ।
२१ राघोदास वीठळदासरो ।
२० हिरदैराम ।
२३ स्यामसिंघ राजारो चाकर ।
२३ जैकिसन राजारो चाकर ।
२१ उदैसिंघ वीठळदासरो ।
२० सुजाणसिंघ ।
२३ बलू ।
२३ गजसिंघ ।
२३ सुरतसिंघ ।
२२ फरसराम उदैसिंघोत राम कह्यो[3] ।
२३ बुधराम ।
२३ पेमसिंघ ।
२३ अजवसिंघ ।
२० जगनाथ उदैसिंघोत । राजारै चाकर ।
२० सिवराम उदैसिंघोत ।
२० विजैराम उदैसिंघोत । राजारै चाकर ५ ।
२१ हरिदास वीठळदासरो ।
२० गोयददास ।
२३ मथुरादास । राजारै चाकर ।

---

1 छीतरदासका पुत्र नरसिंहदास अपुत्र रहा । 2 राजा मानसिंहने कुवर सबलसिंहको पकड़ा वहा वाघजी मारा गया । 3 उदयसिंहका बेटा परसराम मर गया ।

२३ गोकळदास । राजारै चाकर ।
२३ कनकसिंघ ।
२२ भोजराज । उदैहीरी नादोती वसतो[1] ।
२३ भारमल ।
२३ फतैसिंघ ।
२३ केसरीसिंघ ।
२३ देवीसिंघ ।
२३ सबळसिंघ ।
२३ सूरसिंघ ६ ।
२१ स्यामदास वीठळदासोत । कटहड काम आयो[2] ।
२२ लाडखान स्यामदासोत । वसी उदैही । रावळै चाकर[3] ।
२३ कुसळसिंघ ।
२४ हिमतसिंघ ।
२४ हिंदूसिंघ ।
२३ किसनसिंघ।
२३ अजबसिंघ ।
२३ अनोपसिंघ ४।
२१ सादूळ वीठळदासोत । वडो दातार हुवो ।
२२ सुदरदास ।
२३ जैतसिंघ ।
२३ अनूपसिंघ
२२ दयाळदास ।
२३ जोधसिंघ ।
२३ फतेसिंघ ।
२२ कानडदास ।
२३ राजसिंघ।
२३ गुमानसिंघ ३,६।
२० नाराइणदास पचाइ-णोत ।
२१ सुदरदास ।
२२ किसनसिंघ फतैसिघरो चाकर।
२२ रांमचद ।
२२ कुसळसिंघ ३ ।
२१ मुरारदास ।
२२ चतुरसिंघ । राजा जैसि-घरो चाकर २ ।
२२ सांवळदास पचाइणोत ।
२० किसनदास पचाइण भेळो कांम आयो खोहमे[4] ।
१९ गोपाळदास राजा प्रथी-राजरो ।
२२ सुरजन वाकडो कहाणो ।
२१ जसूत, मुवो[5] ।
२२ देवीसिंघ ।

---

1 उदैही परगनेके नादोती गावमे रहता था । 2 कटहडकी लडाईमे मारा गया । 3 उदैहीकी जागीरी और जोधपुर महाराजाके यहा चाकर । 4 किशनदास पचाइणके साथ खोहमे मारा गया । 5 मर गया ।

२१ रामसाह, मोत मुवो[1] ।
२२ किसोरसिंघ ।
२० वैरसल गोपाळरो ।
२२ देवकरण गोपाळरो । दिवाण कहीजतो[2] ।
२१ सावळदास देवकरणरो ।
२२ हिरदैनारायण ।
२२ केसरीसिंघ ।
२३ मोहकमसिंघ ।
२१ सिंघ देवकरणरो ।
२० नाथो गोपाळदासरो, जिणरा[3] नाथावत कछवाहा कहीजै ।
२१ विहारीदास नाथावत । वडो डील[4] । राजा भावसिंघरैसूं छाडनै मोहबतखानरै वसियो[5]। वडो दोलतबद थो[6] । पाछो पातसाही चाकर हुवो ।
२२ गजसिंघ । गोडा मारियो[7] ।
२२ अजबसिंघ दिक्षणियां मारियो, मोहबतखान कनै जातानूं[8] ।

२१ जसूत नाथावत राजा भावसिंघरै[9] । पछै राजा जैसिंघरो चाकर ।
२२ जुधसिंघ ।
२३ बळभद्र। रावळे चाकर थो[10] ।
२२ छाताळ ।
२३ जगभाण । कावल मुवो[11] ।
२१ रामसाह नाथावत । राजा जैसिंघरो चाकर ।
२२ कुसळसिंघ ।
२३ दुरजणसिंघ ।
२२ सुजाणसिंघ ।
२१ मनोहरदास नाथावत ।
२२ अभैराम ।
२३ अनूपसिंघ ।
२२ इद्रजीत ।
२३ मोहनराम ।
२२ अखैराज ।
२३ मधुवनदास ।
२२ मदनसिंघ राजारै चाकर।
२३ जगतसिंघ ।
२२ मुथरादास । राजरै चाकर, पछै पातसाहरै ।

---

1 रामशाह अपनी मौत मरा । 2 दीवान कहलाता था । 3 जिसके वंशज । 4 बडा जबरदस्त । 5 राजा भावसिंहको छोड कर मोहबतखाके यहा रहा । 6 बडा मालदार था । 7 गौडोने मार दिया । 8 मोहबतखाके पास जाते हुएको । 9 नाथाका बेटा जसवत राजा भावसिंहके यहा नौकर । 10 जोधपुर महाराजाके यहा नौकर था । 11 काबुलमे मरा ।

खंधार राम कह्यो[1] ।
२३ पहलादसिघ ६ ।
२१ केसोदास नाथावत ।
२२ सुदरदास ।
२३ किसनसिंघ ।
२१ द्वारकादास नाथारो ।
२१ सामदास नाथावत ।
पूरबमे काम आयो ७ ।
१६ चत्रभुज प्रथीराजोत ।
२० कीरतसिघ पठांणा मारियो[2] ।
२१ केसोदास कीरतसिघरो ।
२२ किसनसिंघ राजा जैसिंघरो चाकर । पठाण घोडारी सोवत[3] ले सांगानेर उतरिया था[4] त्यारा[5] घोडा कीरतसिंघरा वैर माहै खोस लिया । पछै पठाण जाय पुकारिया । तरै पातसाहजीरा हुकमसू राजा जैसिघजी चढ नै किसनसिघनू मारियो समत १६७६ ।
२२ गजसिघ केसोदासोत ।
संमत १६८६ रावळै वसियो थो[6] । पटो रुपिया १७०००)रो दियो थो । पाछो समत १६६५ छाड राजारै गयो[7] ।
२२ प्रतापसिघ राजारै चाकर ।
२३ सूरसिघ ३ ।
२० जूझारसिंघ चत्रभुजोत ।
२१ हिमतसिघ । इणनू[8] मोहबतखान लदाणो दियो थो । पाछो रावळै[9] रह्यो तरै पटो रुपिया १५०००)रो दियो थो । पछै सदोरै थकै वाहिरमी रीतरै छोडायो[10] । पछै समत १७०० वळै उदैही राखियो थो[11] ।
२२ फतैसिघ ।
२२ सकतसिघ २ ।
१६ कल्याणदास प्रथीराजरो ।
२० करमसी कल्याणदासरो ।

---

1 खधारमे मरा । 2 कीर्तिसिंहको पठानोने मार दिया । 3 झुड । 4 ठहरे थे । 5 उनके । 6 जोधपुर महाराजाके यहा नौकर रहा था । 7 फिर सम्वत् १६९५मे छोड कर राजाके (जयपुरके) यहा चला गया । 8 इसको । 9 जोधपुर महाराजाके । 10 पीछे जबरदस्ती छोडाया गया । 11 स० १७००मे पुन उदैहीमे रख दिया था ।

२१ खडगसेन। राजा जैसिघरो चाकर।

२१ सुदरदासनू विहारिया मारियो[1]।

२० मोहणदास कल्याणदासरो।

२० रायसिघ कल्याणदासरो।

२१ जोध।

२१ जगनाथ।

२० कान्ह कल्याणदासरो४।

१९ रूपसी वैरागी राजा प्रथीराजरो। अकबर पातसाहरो चाकर। परबतसर जागीरमे पायो थो।

२० जैमल रूपसियोत[2]। अकबर पातसाह फतैपुर दियो। समत १६४० जैमल असमाधियो[3] थो तरै मुथराजी जाय राम कह्यो[4]। वडो परम भगत थो। मोटा राजाजीरी वेटी दमेती बाई परणाई थी[5]।

२१ उदैसिघ जैमलरो। साखलारो भाणेज।

२२ राघोदास उदैसिघरो।

२२ कचरो उदैसिघरो। राठोड वाघ प्रथीराजोत मारियो[6]।

२० रामचद रूपसीरो।

२१ हरराम मीच मुवो[7]।

२१ गोकळदास।

२१ द्वारकादास।

२१ बलू। सेखावते मारियो[8] ४।

२० तिलोकसी रूपसीरो। मोटा राजाजी वेटी किसनावती बाई परणाई थी। तिलोकसी मुवो तरै साथै बळी[9]।

२० वैरसल रूपसीरो। वडगूजरारो भाणेज[10]।

२० चतुरसिघ रूपसीरो। मा मैणी थी[11]।

२० भोजराज रूपसीरो। करमा खवासरो[12] ७।

---

1 सुदरदासको विहारी पठानोने मारा। 2 रूपसीका पुत्र। 3 मरणासन्न हुआ। 4 तव मथुराजीमे जाकर मरा। 5 मोटा राजाजीकी (उदयसिंहकी) वेटी दमयन्तीवाई व्याही थी। 6 पृथ्वीराजके वेटे राठौड वाघने मारा। 7 हरराम अपनी मौत मरा। 8 शेखावतोने मार दिया। 9 तिलोकसी मरा तव साथमे जली। 10 वडगूजरो का भानजा। 11 रूपसीके वेटे चतुरसिंहकी मा मीणा जातिकी स्त्री थी। 12 करमा खवासके पेटका।

रूपसी वैरागीरा ।
१९ पूरणमल प्रथीराजरो ।
२० छीतर पूरणमलरो ।
२१ उदैसिंघ ।
२० सूजो पूरणमलरो ।
२१ किसनदास ।
२१ वेणीदास ।
२२ उदैकरण ।
२१ माधोदास २, ३ ।
१८ कूभो राजा चदरो । प्रथीराजरो भाई । वैसणो गाव मोहारि[1] ।
१९ उदैसिंघ कूभारो ।
२० राजमल उदैसिघरो ।
२१ वेणीदास रायमलरो ।
२१ जसवत ।
२१ डूगरसी ।
२२ गोपाळदास ३ ।
२० राम उदैसिघरो ।
२१ लूणो रामरो ।
२२ सादूळ ।
१८ नरो राजा चदरो । प्रथीराजरो भाई ।
१९ छीतर नरारो ।
२० थानसिघ ।

२१ खगार । राजा चद उधरणरो । उधरण वणवीररो ।
१७ कछवाहो वणवीर । जिण वणवीररा वणवीरोत-कछवाहा कहीजै[2]। इणारो परवार घणो छै, पिण माडियो न छै[3] । वणवीर उधरणरो ।
१८ भैरू । राजा मानसिघरै हाथियारो फोजदार थो।
१९ केसवदास भैरवरो ।
२० केसरीसिघ ।
२० जसवत केसवदासरो ।
२० अचळदास केसवदासरो।
१४ वालो राजा उदैकरणरो, तिणरा[4] सेखावत ।
१४ वरसिघ उदैकरणरो । जिणरा[5] नरूका-कछवाहा कहीजै ।
१५ मेहराज वरसिघरो ।
१६ नरू मेहराजरो । जिणसू[6] नरूका कहीजै ।
१७ दासो नरूरो ।

---

1 गाव मोहारीमे निवासस्थान । 2 जिस वनवीरके वशज वणवीरोत-कछवाहा कहे जाते है । 3 इनका परिवार वहुत वडा है, परतु यहा नही लिखा गया है । 4 जिसके । 5 जिसके वशज । 6 जिसके नाममे ।

१८ चानणदास दासारो ।
१९ सैहसो चानणदासरो ।
निवाई ठाकुर हुवो ।
२० कान्ह सैहसारो ।
२१ केसोदास वडे डील थो[1] । मोहबतखा लालसोट पटै दी थी ।
२२ उग्रसेन केसोदासरो । वडो रजपूत थो । मोहबतखारै वास थो । पछै रावळै वसियो[2] । रेयारो पटो दियो थो । रायपुररो पटो थो । मोहबतखान लालसोट पटै दी थी । मीच मुवो[3] ।
२३ रुघनाथसिघ ।
२२ सूरजमल केसोदासरो ।
२२ तेजसी केसोदासरो ।
२१ माधोदास कानरो ।
निवाई पटै ।
२१ सकतसिघ ।
२२ दीपसिघ ।
२४ रूपचद ।
२० राम सहसमलरो । वणहटो रामरो वसायो[4] ।
राजा जगनाथरो चाकर ।
२१ राघोदास रामरो ।
अटक ऊपर खानाजगी मोहबतखानरै चाकरासू हुई तठै मारियो[5] ।
२२ राजसिघ राघोदासरो ।
मोहबतखारै वास थो[6] ।
२२ रूप राघोदासरै टीकाइत[7] । वणहटो मोहबतखान दियो थो ।
२१ वीठळदास रामरो ।
बेटो नही ।
२१ विसनदास रामरो ।
२२ राजसिघ ।
२१ प्रतापमल रामरो ।
२० गोपाळदास सहसमलरो ।
२० वेणीदास सहसमलरो ।
२० देईदास सहसमलरो ।
२० वीरमदे सहसमलरो ।
२० दुरगदास सहसमलरो ।
२० दूदो सहसमलरो ८ ।
सहसमल चानणरो ।
१८ करमचद दासारो ।
मोजावाद धणी । तिणनू राजा सागै प्रथीराजरै

---

1 केसोदास जबरदस्त और मोटे शरीरका था । 2 फिर जोधपुर महाराजाके यहा रहा । 3 अपनी मृत्युसे मरा । 4 रामके वणहटो गावको आबाद किया । 5 अटक ऊपर मोहबतखाके नौकरोसे लडाई हुई वहा मारा गया । 6 मोहबतखाके यहा रहता था । 7 रूप राघोदासका उत्तराधिकारी ।

मारियो[1]।
१९ सिघ करमचदरो।
२० जैतसी सिघरो।
२१ चद्रभाण जैतसीरो। पनवाड धणी। रावळै समत १६६८ वसियो थो[2]। राहिण पटै। पछै पातसाही चाकर हुवो। राजा गजसिघजी परणिया छा[3]। नरूकी केसरदे साथै वळी[4]।
२१ इद्रभाण जैतसीरो। रावर ठाकर।
२१ हरराज जैतसीरो। राव केसोदास मारियो।
२१ उदैभाण जैतसीरो।
२० वेणीदास सिघरो।
२० नाथो सिघरो ३।
१९ प्रथीराज करमचदरो।
२० भीव प्रथीराजरो। वडो दातार हुवो।
१८ चानण दासेरो।
१९ अलखो जादणरो।
२० दलपत अलखारो। राजा जैसिंघजीरो चाकर।
२० कीरतखा अलखारो।
१८ रतन दासेरो।
१९ सागो रतनरो।
२० कचरो सागारो। मीच मुवो[5]।
२१ मालदे कचरारो।
२२ सुरजन मालदेरो।
२३ रायकवर।
२३ रामकवर।
२३ चत्रसाळ।
२३ दूदो ४। सुरजनरा।
२२ सादूळ मालदेरो।
२३ कान्हो सादूळरो।
२३ जैतसिह।
२३ हरिसिंह।
२२ प्रतापसिघ मालदेरो।
२३ जगरूप।
२२ रायसिघ मालदेरो।
२३ करण।
२३ अचळदास।
२२ चत्रभुज मालदेरो।
२३ गोपीनाथ।
२२ माधोसिघ मालदेरो।
२२ केसोदास मालदेरो। पूरवमे भाटीरी वेढ

---

1 जिसको पृथ्वीराजके पुत्र राजा सागाने मारा। 2 स० १६६८मे महाराजा जोधपुरके यहा रहा। 3।4 इसकी बेटी केसरदेवी नरूकीके साथ राजा गजसिंहजीका विवाह हुआ था, जो गजसिंहजीके साथ जल कर सती हुई। 5 मृत्युसे मरा (किसी युद्धमे नही मरा)।

काम आयो[1] ७ ।
मालदे कचरावतरा ।
२१ फरसराम कचरावतरै बेटा १२ ।
२२ राघोदास फरसरामरो ।
२३ पीथो ।
२३ गिरधर ।
२३ स्यामसिंघ ।
२३ कान्ह ।
२२ वाघ फरसरामरो ।
२३ मोहणदास । रावळै वास थो[2] ।
२४ नरहरदास ।
२३ जगनाथ ।
२३ किसनसिघ वाघवत । पवारे मारियो[3] ३ ।
२२ भगवानदास फरसरामरो ।
२२ जसवत फरसरामरो ।
२३ हरिजस ।
२३ राजसिंघ ।
२३ किसनसिघ ।
२२ वलिरामजी फरसरामोत ।
२३ नाथो ।
२३ उदैकरण फरसरामोत ।
२३ गोविददास ।
२३ गोवरधनदास ।
२३ लूणो ।
२२ हरिदास फरसरामरो ।
२३ जैतसिंघ ।
२३ वीठळदास ।
२२ रामचद फरसरामरो । पवारारी वेढ काम आयो[4] ।
२३ गोपीनाथ ।
२३ पूरो ।
२२ उदैभाण फरसरामरो ।
२२ नरसिंघदास फरसरामरो ।
२३ दूदो १२ ।
२१ रुद्रकवर । रावत किसनसिघजीरो साळो । किसनसिंघजी साथै काम आयो[5] ।
२२ सूरसिघ रुद्ररो ।
२२ कुभकरण रुद्ररो ।
२२ मनोहरदास रुद्ररो ।
२३ राजसिंघ ।
२३ हरकरण ४ ।
२१ भोपत कचरावत । किसनसिघजीरै वास

1 पूर्वमे भट्टीकी लड़ाईमे काम आया । 2 मोहनदास जोधपुर महाराजाके यहा नौकर था । 3 वाघाका वेटा किशनसिंह जिसे पवारोने मारा । 4 पवारोकी लडाईमे मारा गया । 5 रुद्रकुमार रावत किशनसिंहजीका साला जो उन्हीके साथ मारा गया ।

थो सु किसनसिंहजी साथै काम आयो[1]।

२२ देईदास भोपतरो। रा॥ जगमाल भारमल साथै कांम आयो[2]।

२३ सूजो देईदासरो।

२३ उग्रसेण।

२२ मुकददास भोपतरो।

२३ राजसिंघ।

२३ किसनसिंघ २,४ कचरा सागावतरा।

१६ सेखो रतनारो।

२० मदनसिंघ सेखारो।

२१ लूणकरण मदनसिंघरो।

२२ अचळदास लूणकरणरो।

२३ राजसिंघ। राजा जैसिघरै वास। कवर रामसिंघ कनै रह्यो[3]।

२२ केसरीसिंघ लूणकरणरो। राजा जैसिंघरै वडगूजरारी वेढ काम आयो[4] २।

२१ जसवत मदनसिंघरो। राजारैसू छाड रावळै वसियो समत १६८६[5]।

२२ हरराम जसवतरो। रावळै चाकर थो[6]।

२३ हिमतसिंघ।

२३ कुसळसिंघ।

२२ रूपसी जसवतरो २।

२० भावसिंघ सेखारो। जगनाथ गोयददासोत मारियो[7] २। रतने दासावतरा।

१८ जैमल दासेरो। निपट वडो रजपूत हुवो। मरणरै दिन घणो विसेष कियो[8]।

१६ वलू जैमलरो।

२० रामदास।

२० वीठळदास।

२१ विसनदास।

१६ लाडखान जैमलरो।

२० गोपाळदास महारोठ काम आयो।

१६ रायकवर।

---

1 कचराका वेटा भोपत किशनसिंहजीके यहा रहता था, अत किशनसिंहजीके साथ मारा गया। 2 भोपतका वेटा देवीदास जगमाल भारमलोतके साथ मारा गया। 3 राजसिंह राजा जयसिंहके यहा नौकर, कुवर रामसिंहके पास रहा। 4 राजा जयसिंह और वडगूजरोकी लडाईमे मारा गया। 5 स० १६८६मे राजा जयसिंहके यहासे छोड कर जोधपुर महाराजाके यहा रहा। 6 जोधपुर महाराजाके यहा चाकर था। 7 गोविंददासके वेटे जगन्नाथने मारा। 8 दासाका पुत्र जयमल वहुत वडा राजपूत हुआ। मरनेके दिन वहुत विशेषताएँ प्रगट की।

२० चत्रभुज ।
२१ मनोहरदास ।
१८ पूरणमल दासारो ।
१८ रायमल दासारो ।
१९ रामचद्र ।
२० वळभद्र ।
२१ गोविददास वळभद्रोत । ईसरदास कूपावतरो दोहितो । रावळै वास थो । रेवाडीरा गाव पटै[1] ।
२२ जोगीदास ।
१८ कपूरचद दासारो ।
१९ रूपसी ।
१९ वैरसी ।
१७ लालो नरूरो । लालो राव कहाणो[2] ।
१८ ऊदो लालारो ।
१९ लाडखान ऊदारो ।
२० फतैसिघ लाडखानरो । तिणनू राजा जैसिघ वेटो कर गोद लियो थो[3] ।
२१ राव कल्याणमल फतैसिघरो । राजा जैसिघरै वेटा वरोवर थो । कामा पहाडीरो सूवो थो[4] ।
२२ रिणसिघ ।
२२ आणदसिघ ।
२२ अजवसिघ ।
१४ वालोजी राजा उदैकरणरो । जिणरी ओलादरा सेखावत-कछवाहा कहीजै । सेखावतारो वतन अमरसर वैसणो[5] ।
१५ मोकल वालैरो, जिणनू पीर व्रहान चिसती निवाजस की, जिणरो तकियो मनोहरपुर गाव ताळै छै, डूगरी ऊपर[6] ।
१६ सेखो मोकलरो, जिणसू सेखावत कहाणा । अमरसर सेखैजी वसायो । अमरसर अमरै अहीररी ढाणी थी, जात खासोदो । सिखरगढ

1 वलभद्रका वेटा गोविददास, ईश्वरदास कूपावतका दोहिता जो जोधपुर महाराजाके यहा नौकर था और जिसे रेवाडीके गाव पट्टेमे मिले हुए थे। 2 लाला राव कहलाया। 3 लाडखानके वेटे फतहसिंहको वेटा मान कर गोद लिया था। 4 राजा जयसिंह इसे अपने वेटोके वरावर मानता था। कामा पहाडीका सूवेदार था। 5 उदयकर्णका पुत्र वालोजी जिसकी औलाद वाले शेखावत-कछवाहा कहे जाते है। शेखावतोका निवासस्थान अमरसर। 6 मोकल वालेका पुत्र जिस पर शेख पीर बुरहान चिश्तीने कृपा की (और पुत्र दिया) जिसका तकिया मनोहरपुरके निकट पहाडी पर वना हुआ है।

राव सेखै वसायो[1] ।
१७ रायमल सेखावत ।
१८ सूजो रायमल्लरो ।
१९ राव लूणकरण सूजारो । राव मालदेरी वेटी हसवाई परणाई थी[2] ।
२० राव मनोहर, जिण मनोहरपुर वसायो । हमा वाईरो वेटो[3] ।
२१ प्रथीचद मनोहररो ।
२२ किसनचद ।
२३ जैतसिघ ।
२३ मोहकमसिंघ ।
२२ प्रेमचद ।
२३ इंद्रचद ।
२३ कुसळचद ।
२१ रायचद मनोहररो । वठास काम आयो[4] ।
२२ तिलोकचद ।
२१ प्रिथीचद कांगुडै काम आयो । राजा विक्रमायत साथै[5] ।
२१ प्रतापचद ।
२० किसनदास राव लूणकरणरो ।
२० दूलैराव लूणकरणरो ।
२० ईसरदास लूणकरणरो । सवळसिघजीरो सुसरो । समत १६७३ राम कह्यो व्रहानपुरमे[6] ।
२१ गोकळदास खवासरोथो[7] ।
२० सावळदास लूणकरणरो ।
२१ रूपसी ।
२० नरसिघदास लूणकरणरो ।
२१ उग्रसेण नरसिघदासरो ।
२२ महासिघ उग्रसेणरो । राजा जैसिघरै वास ।
२३ मानसिघ ।
२३ रतन ।
२३ अणदसिंघ ।
२३ दीपसिघ ।
२२ रामसिघ उग्रसेणरो । राजा जैसिघरै वास थो । पछै रावळै चाकर थो । रुपिया २५०००)

---

1 मोकलका वेटा शेखा जिससे शेखावत कहलाये । शेखाजी अमरपुरमे आकर रहे । अमरसर इसके पहले खामोदा जातिके अहीर अमरेकी ढाणी थी । राव शेखेने शिखरगढ वसाया । 2 राव मालदेवकी वेटी हमावाई व्याही थी । 3 हमावाईका वेटा राव मनोहर जिसने मनोहरपुर वसाया । 4 वठासमे मारा गया । 5 राजा विक्रमादित्यके साथ पृथ्वीचद कांगडेमे मारा गया । 6 लूणकर्णका वेटा ईश्वरदास, सबलसिंहका ससुरा । सं० १६७३मे वुरहानपुरमे मरा । 7 गोकुलदास खवाससे (गोलीसे) उत्पन्न हुआ था ।

पटो. रेवाडीरा गाव
दियो[1] ।
२३ चद्रभाण ।
२३ अजबसिघ ।
२३ रुघनाथसिघ उग्रसेणरो ।
२२ मेहकरण । रावळै वास
थो । एक बार उदैहीरो
पीपळाईसू रुपिया
१२०००) पटो हुतो[2] ।
२३ मोहनराम ।
२३ सबळसिघ ।
२३ कुसळसिघ ।
२३ किसनसिघ ।
२२ जैतसिघ अग्रसेणरो ।
२३ हरिसिघ ।
२३ नराइणदास ।
२२ विहारीदास उग्रसेणरो ।
२३ केसरीसिघ ।
२३ सकतसिह ।
२२ गोविददास उग्रसेणोत ।
२३ सूरसिघ ।
२३ मुकददास ।
२२ कल्याणदास उग्रसेणोत ।
निरवाणारी लडाईमे
काम आयो[3]
२३ हरनाथ ।
२२ किसनसिघ, कल्याणदास
साथै काम आयो ।
२२ कान्हीदास ।
२१ बळभद्र नरसिघदासरो ।
२१ हरराम ।
२१ द्वारकादास नरसिघदास
रो । ३ नरसिघदास,
कल्याणदास करणोत ।
२० भगवानदास लूणकर-
णोत ।
२१ अचळदास ।
२२ सकतसिघ ।
२३ रूपसिघ रावळै चाकर ।
१९ रायसल सूजारो । वाघा
सूजावतरो दोहितो ।
अकबर पातसाहरै राय-
सल दरवारी कही-
जतो । खडेला-रैवासो पटै
थो । खडेलो निरवाणा
कना रायसल लियो[4] ।
मूळ खडेलो तुवर खड-
गलरो वसायो[5] ।

---

1 उग्रसेनका वेटा रामसिंह, पहले राजा जयसिंहके यहा था, वादमे जोधपुर महाराजाका चाकर हो गया । रेवाडीके रु० २५०००)के गाव पट्टेमे दिये गये थे । 2 मेहकर्ण जोधपुर महाराजाके यहा नोकर था । इसे एक वार उदैहीका रु० १२०००)की रेखका पीपलाई गाँवका पट्टा दिया गया था । 3 उग्रसेनका वेटा कल्याणदास निरवानाकी लडाईमे मारा गया । 4 रमायलने निरवानोके पाससे खडेला लिया । 5 मूलमे खडेला तुवर खडगलका वसाया हुआ है ।

२० लाडखान रायसलरो ।

२१ माधो लाडखानरो । तिणनू सल्हेदी राजावत मारियो । माहरोठ माहै[1] ।

२२ हिदूसिघ माधारो ।

२२ सूरो माधारो । रा।। इद्रभाण मारियो ।

२३ ग्रजवसिघ ।

२१ कल्याणदास लाडखानरो। तिणनू भोजराज रायसलोत मारियो । समत १६५३ । वेटो नही[2] ।

२१ केसो लाडखानरो । केसानू नाई मारियो । नाईरी वैरसू हालतो[3] ।

२२ भगवानदास ।

२१ ग्रासकरण लाडखानरो ।

२२ कल्याणसिघ ।

२२ चतुरसिघ ।

२२ प्रेमसिघ ।

२२ नाथो ।

२२ दिलराम ।

२१ सुदरदास लाडखानरो ।

२२ पैहळाद ।

२२ चतुरसिघ ।

२२ रतन ।

२१ जोधो लाडखांनरो ।

२१ केसरीसिघ लाडखानरो ।

२२ जैसिघ ।

२१ जगो लाडखानरो ।

२० गिरधरदास रायसलोत खडेलै टीको । राठोड वीठळदास जैमलोतरो दोहितो । समत १६८० व्रहानपुरमे सैदासू खानाजगी हुई तरै सैदा मारियो । पछै सैदानू ही परवेज साहिजादै मोहबतखारै गरदन मारिया[4] ।

२१ राजा द्वारकादास गिरधरदासरो । खडेलै टीको । खानजिहारी पैहली वेढ लोहडै पडियो

---

1 जिसको मलहदी राजावतने मारोठमे मारा । 2 जिसको रायसलके वेटे भोजराजने स० १६५३मे मारा उसके कोई वेटा नही । 3 लाडखाका वेटा केसा, इसको एक नाईने मार दिया । नाईकी स्त्रीसे उसकी वदचलनी थी । 4 रायसलका वेटा गिरधरदास । खडेलेका टीका हुग्रा । यह जयमलके वेटे राठौड विट्ठलदासका दोहिता था । स० १६८०मे सैयदोसे लडाई हुई तव सैयदोने इसको मार दिया । वादमे शहजादे पर्वेजने मोहवतखाकी शत्रुतामे सैयदोको भी मार दिया ।

थो पाछो खानजिहा मारियो तद काम आयो[1]।
२१ हरिसिह गिरधररो।
२२ राजा वरसिघदे द्वारकादासरो। भारमलोतारो भांणेज। कवर श्री प्रथीसिघजीरो नानो[2]।
२३ पुरसबहादर।
२३ मोहकमसिघ।
२३ स्यामसिघ।
२३ दौलतसिघ।
२३ अमरसिघ। रावळै चाकर रुपिया ३०००)पटो[3]।
२३ जगदेव।
२३ अजसिघ।
२३ भोपतसिघ।
२३ अनूपसिघ सूरसिघरो।
२१ सल्हैदी गिरधररो। राठोड कान्ह रायसलोतरो दोहितो[4]।
२२ हरदेव।
२२ सावळदास।
२१ विजैसिघ गिरधररो।
२२ हरभाण।
२२ उधरसिघ।
२२ अरजनसिघ।
२१ किसनसिघ गिरधररो।
२२ जैसिघ पातसाही चाकर।
२२ अखैसिघ पातसाही चाकर।
२२ महासिघ।
२१ गोपाळदास गिरधररो।
२१ गोरधन गिरधररो।
२१ सूरसिघ गिरधररो।
२२ अनूपसिघ।
२० भोजराज रायसलरो।
२१ तोडरमल भोजराजरो। वडो कपाळीक। उदैपुर खडेला कनै रहै। पातसाही चाकरी छूटी। नाक बैठ गो छो[5]।
२२ हरनाथसिघ तोडरमलोत।
२२ परसोतमसिघ। रावळै चाकर। रेवाडीरो गाव

---

1 गिरधरदासका बेटा राजा द्वारकादास। खडेले टीका हुआ। खानजहाकी पहली लडाईमे घायल हुआ था और फिर खानजहा मारा गया जब यह भी काम आ गया। 2 द्वारकादासका बेटा राजा वरसिंहदेव, भारमलोतोका भानजा और कुवर पृथ्वीसिंहका नाना था। 3 अमरसिंह जोधपुर महाराजाका चाकर, रु० ३०००)का पट्टा। 4 गिरधरका बेटा सलहदी रायसलके बेटे राठौड कान्हका दोहिता था। 5 भोजराजका बेटा तोडरमल बडा कापालिक था। खडेलेके पास उदयपुरमे रहता था। बादशाही चाकरी छूट गई। नाक बैठ गया था।

खोहरी वसी थी[1] ।

२२ परसोतमरा बेटा–

२३ हरिसिंघ ।

२३ प्रथीसिंघ ।

२३ स्यामसिंघ ।

२३ हिमतसिंघ ।

२३ भींवसिंघ ।

२३ जूझारसिंघ ।

२१ केसरीसिंघ भोजराजरो ।

२१ रुघनाथ भोजराजरो ।

२२ चांदसिंघ । रावळै चाकर ।

२० परसराम रायसलोत । वड्गूजरारो दोहितो ।

२१ वीठळदास ।

२२ अभैराम ।

२१ मुरताणसिंघ ।

२२ विजैराम ।

२१ सवळसिंघ फरसरामरो ।

२२ हरनाथ ।

२२ रुघनाथ ।

२३ सुजाणसिंघ ।

२३ गजसिंघ हरनाथोत ।

२३ चंद्रभाण ।

२१ तिलोकसी फरसरांमरो ।

२२ जैतसिंघ द्वारकादासरै काम आयो ।

२२ हरिसिंघ ।

२३ महासिंघ ।

२२ सूरसिंघ ।

२१ वळिराम फरसरामरो ।

२१ मदनसिंघ फरसरामरो ।

२१ चतुरसिंघ ।

२२ सूरसिंघ ६। फरसरांमरा।

२० तिरमणराय रायसलरो। राजा सूरसिंघजी संमत १६६८ खडेलै तिरमणरै परणिया था सु सेखावत साथै वळी[2] ।

२१ गोगाराम ।

२२ स्यामराम ।

२२ रतन ।

२२ कल्याणसिंघ ।

२२ तुळछीदास ।

२१ वद्री तिरमणोत ।

२१ उदैकरण खवासरो ४ ।

२० ताजखान रायसलरो । वडगूजरांरो दोहितो ।

२१ पिरागदास। रावळै चाकर थो। मेडतारो डाहो थो[3] ।

---

1 पुरुषोत्तमसिंह जोधपुर महाराजाका चाकर, रेवाडीका खोह गाव वसीमे था । 2 रायसलका बेटा तिरमणराय । राजा सूरसिंहजी स० १६६८मे खडेलेमे तिरमणके यहां व्याहे थे । सूरसिंहजीके मरणोपरात शेखावत रानी साथमे जल कर सती हुई । 3 प्रयागदास जोधपुर महाराजाके यहा चाकर था, मेड़ते परगनेका डाहा गाव पट्टेमे था ।

२१ किरतसिंघ ताजखानरो ।
२२ किसनसिंघ ।
२३ विजैसिंघ ।
२१ मुगटसिंग ताजखानरो । टबो थो ३ ।
२० हरराम रायसलरो । निरवाणारो दोहितो ।
२१ हिरदैराम ।
२२ चद्रभाण ।
२२ जैभाण ।
२२ हरभाण ।
२२ उदेभाण । रावळै रह्यो थो । रेवाडीरा गाव पटै[1] ।
२२ इद्रभाण ।
२२ अमरभाण ।
२१ चतुरसिंघ हररामोत ।
२१ फतैसिंघ हररामोत ।
२२ दुरजनसिंघ ।
२२ अमरसिंघ ।
२२ अजसिंघ।
२२ अनोपसिंघ ।
२२ भावसिंघ ।
२२ अचळसिंघ ।
२२ नरसिंघदास ।
२२ प्रथीराज ।

२१ राजसिंघ हररामोत ।
२२ कल्याणसिंघ ।
२२ महासिंघ ।
२१ सग्रामसिंघ हररामोत ।
२२ रामसिंघ ।
२२ सामसिंघ ।
२२ मोहकमसिंघ ।
२० विहारीदास रायसलरो । निरवाणारो दोहितो । मारोठ काम आयो[2] ।
२० बाबूराम रायसलरो । जाटणीरा पेटरो । मारोठ काम आयो । रायसलजी साहपुरो पटै दियो थो डीडवाणैरी मदद की । बळभद्र नारणदासोत आयो तद मारियो । मा स्वाळखरी जाटणी थी[3] ।
२० दयाळदास रायसलरो ।
२० वीरभाण रायसलरो । गोडारो दोहितो ।
२० कुसळसिंघ रायसलरो । सोनगरारो भाणेज ।
२१ करमसेन ।

---

1 उदयभाण जोधपुर महाराजाके यहा नौकर रहा था, रेवाडीके गाव पट्टेमे थे। 2 विहारीदास रायसलका बेटा, निरवानोका दोहिता, मारोठमे मारा गया। 3 बाबूराम रायसलका बेटा, जाटनीके पेटका था। मारोठमे काम आया। रायसलने डीडवानेकी मदद की तब शाहपुरा पट्टेमे दिया था। इसकी मा स्वालखकी (नागार परगनाकी) जाटनी थी।

२१ नरसिंघदास ।
२१ उगरसेन १२ ।
१९ गोपाळ सूजारो ।
२० माधोदास ।
२० ततारखान ।
२० साईदास ।
२० गोकळदास
२० स्यामदास ।
२१ सवळसिंघ ।
२० हरदास ।
२१ मोहणदास ५ ।
१९ गोपाळ सूजावत ।
१९ भैरू सूजारो ।
२० नरहरदास ।
२१ नाहरखान ।
२१ किसनसिंघ ।
२१ मुकददास ।
२१ हरिसिंघ ।
२१ जगनाथ ।
२१ जसवत ।
२१ वळू ।
२१ रुघनाथ २१...९ ।
२० कवरसाळ भैरूंरो ।
२१ चत्रभुज ।
२२ गरीवदास ।
२२ सुदरदास ।
२० सांगो भैरूरो ।
२१ जैतसिंघ । मोहवत-खांनरी वेढ काम आयो[1] ।
२१ सल्हैदी सागारो ।
२० भारमल भैरूरो ।
२१ खीवकरण मोहवतखारै वास थो[2] ।
१९ चादो सूजारो ।
२० ततारखान गिरधरजी साथै काम आयो[3] ।
२१ मुकंददास ततारखांनरो ।
२१ फतैसिंघ ।
१८ सहसमल रायमलरो ।
१९ करमसी सहसमलरो ।
२० दुरजणसाळ राजा गज-सिंघजीरै नानो । राणी सोभागदेजीनूं अकवर पातसाह वेटी कर व्याह कियो । समत १६६४[4]।
२० रांमचद करमसीरो । अकबर पातसाह दिखण मेलियो[5] उठै[6] खान-खानो लडाई न करै छै। दिखणियानूं[7] जाय

1 जैतसिंह मोहवतखाकी लडाईमे काम आया । 2 खीवकर्ण मोहवतखाके यहा रहता था । 3 तातारखा गिरधरजीके साथ मारा गया । 4 दुर्जनमाल राजा गजसिंहजीका नाना । स० १६६४मे रानी सौभाग्यदेवीका वादशाह अकवरने अपनी वेटी वना कर विवाह किया था । 5 भेजा । 6 वहा । 7 दक्षिणियोको ।

नवावनूं कही लडाईनूं चढ आवै । पछै आयनै नवावनूं कही लेजायनै दिखणियासूं सैज सी[1] लडाई कराई नै आप पैहला-हीज उपाडनै फोज माहे नाखिया[2] सु काम आयो ।

## गीत रांमचंद करमसीरारो[3]

असमर[4] भुज धूण वधै लग[5] अवर ।
खत्रिया-गुर[6] जूझार खरै ।
रूठै दिखण तणै[7] सिर रामै ।
हमल हलाया सिखर-हरै[8] ॥१

आठवाट[9] कर थाट[10] एकठा ।
भुज पतसाही भार भलै ।
अैहमद नगर वीद धर ऊपर ।
कछवाहै चाळवी[11] कलै ॥२

२१ धरमचद । मीच्र मुवो ।
१८ तेजसी रायमलरो ।
१९ सकतसिघ तेजसीरो ।
१९ मानसिघ तेजसीरो ।
२० नारणदास मानसिघरो ।
२१ वळभद्र नारणदासोत । दिखण पातसाहजीरै काम आयो । खान-जिहारी वेढ छत्रसिघ भेळो[12] ।
२२ कनीदास ।
२२ गोपीनाथ ।
२२ रतन ।
२२ सूरसिंघ ।
२२ किसोरसिंघ ।
२१ दीपचद नारणदासरो ।
२१ नरसिघदास मानसिघरो ।
१९ रामसिघ तेजसीरो । मोटा राजाजीरो सुसरो जैतसिघजीरो नानो ३ ।
१८ जगमाल रायमलरो ।
१९ भीव जगमालरो ।

---

1 मामूली । 2 और उसने पहले अपने घोडोको उठा कर सेनामे डाल दिया । 3 करमसीके वेटे रामचदका गीत । 4 तलवार । 5 तक । 6 क्षत्रिय-श्रेष्ठ । 7 के । 8 शिखरके वशजने । 9 सहार, नाश । 10 समूह । 11 शस्त्र चलाया । 12 नारायणदासका वेटा बलभद्र, दक्षिणमे खानजहाकी लडाईमे छत्रसिंहके साथ बादशाहके काम आया ।

२० दूदो भीवरो ।
१८ सीहो रायमलरो ।
१८ सुरताण रायमलरो ६ ।
१७ दुरगो सेखारो ।
१८ मानसिघ दुरगावत ।
१९ सूरसिघ मानसिघोत ।
२० नारणदास ।
२१ अलखां । द्वारकादासरै समै खडेलै साहबीरी मदार छै[1] ।
२२ जगनाथ रावळै चाकर ।
२२ दूदो ।
२२ दळपत ।
२२ वळभद्र ।
२१ केसोदास नारणदासरो । गिरधरजी साथै कांम आयो ।
२२ भगवानदास ।
२१ मोहणदास । महारोठ काम आयो ।
२२ दीपचद ।
१७ रतनसी सेखारो ।
१८ अखैराज रतनसीरो ।
१९ कान्ह अखैराजरो ।
२० दयाळदास ।
२१ स्यामदास ।
१९ कलो अखैराजरो ।
२० दळपत पातसाही चाकर ।
२१ रामसिघ ।
२१ सामसिघ ।
२१ सुदरसण ।
१७ अभो सेखारो ।
१८ साईदास अभारो ।
१९ लूणो साईदासरो ।
२० नाथो लूणारो ।
२१ मनोहरदास ।
२१ जसो ।
२१ राघोदास ।
२१ भोपत ।
२१ हरराम ।
२१ दयाळ ।
२१ वीको ।
२१ सीधो ।
२१ जसो नाथावत ।
२२ चद्रभाण ।
२१ सीधो नाथारो ।
२२ वीठळदास ।
२३ उदैभाण । पातसाही चाकर ।
२२ कल्याणदास ।
२३ विहारी ।
२३ जैतसी ।
२३ वेणीदास ।
२२ सुदरदास ।

---

1 द्वारकादासके समयमे खडेलेकी साहिबीका मदार अलखा पर है ।

२३ राघोदास ।
२२ स्यामदास ।
२३ अजवसिंघ ।
२२ सादूळ ।
२३ प्रेमसिघ ।
२० पैरोज ।
२१ सूरसिंघ ।
२१ दळपत ।
२१ उदैसिंघ ।
२० सिंघ ।
२० ठाकुरसी ।
२१ किसनसिंघ ।
२१ डूगरसी ।
२२ कुंभकरण ।
२२ चद्रभाण ।
२२ विजैराम ।
२१ केसरीसिंघ ।
२१ गिरधर ।
२२ गरीवदास ।
२२ जूझार ।
२१ दरियाखान ।
२२ वाहदर ।
१७ कूभो सेखारो ।
१८ रामचद ।
१९ राघोदास ।
२० माधोदास राघोदासरो । गवळै जगडवासरो पटो छो[1] ।
२० भोपत राघोदासोत ।
२१ रामसिंघ ।
२१ सुजांणसिंघ ।
१८ जैमल कूभारो ।
१९ ईसरदास जैमलोत । पातसाही चाकर ।
२० वीरभाण ।
२१ सवळसिंघ ।
२१ सामदास ।
२१ गरीवदास ।
२० सुरजन काम आयो ।
२१ प्रेमसिंघ ।
२० माधोसिंघ । काम आयो ।
२१ गजसिंघ ।
२१ मानसिंघ ।
२० प्रथीराज । नाहर मारियो कटारी ३ वाही[2] ।
२१ खीवकरण ।
२१ महासिंघ ।
२० भोपत ।
२१ सावतसिघ ।
२४ जैतसी कूभारो ।
१७ भारमल सेखारो ।
१९ वाघ भारमलरो ।

---

1 राघोदासके पुत्र माधोदासको जोधपुर महाराजाकी ओरसे जगडवास गावका पट्टा था । 2 पृथ्वीराजने तीन वार कटारी मार करके नाहरको मारा ।

१६ भगवानदासनू चाकर मारियो[1] ।
२० माधोसिंघ ।
१६ गिरधरदास । राजा गिरधर साथै काम आयो ।
१७ अचळो सेखारो ।
१८ रूपसी ।
१६ कलो ।
२० दुरजणसाळ ।
२० वलू ।
२१ रामसिघ ।
२२ राजसिंघ ।
२२ जूझारसिघ ।
१८ करमचद अचळारो ।
१६ पीथो ।
२० गोविददास ।
२१ गोपाळ ।
२१ महासिंघ ।
१५ खैंराज खरहथ वालारा, जिणरा पोता करणावत कछवाहा कहीजै । अठै थोडा माडिया छै । पण करणावत आदमी २०० छै । करणावत मनोहरपुर परधान हुता[2] ।
१६ भीव ।
१७ गोयद ।
१८ रामसिघ ।
१६ भगवतदास ।
२० सूजो ।
२१ विजैराम ।
२१ मानसिंघ ।
२१ मोहनराम ।
२० चतुरसिंघ भगवतरो ।
२१ हिमतसिंघ ।
२० वळभद्र ।
२० हरिदास ।
१४ कछवाहो सिवब्रह्म राजा उदैकरणरो । जिणरा नीदडका-कछवाहा कहीजै । अठै माडिया नही । आबेर चाकर छै[3] ४ ।
१३ राजा उदैकरण जुणसीरो ।
१३ कछवाहो कूभो जुणसीरो । जिणरा कूभाणी-

---

1 भगवानदासको उसके चाकरने मार दिया । 2 खैंराज खरहथ वालाका, जिसके पोते करणावत-कछवाहा कहे जाते है, ये मनोहरपुरके प्रधान थे, यहा थोडे ही लिखे है, परतु इनके २०० आदमी है । 3 राजा उदयकर्णका बेटा कछवाहा शिवब्रह्म, जिसके वशज नीदडका-कछवाहा कहे जाते है, ये आमेरमे चाकर है, यहा उन्हें नही लिखा है ।

कछवाहा कहीजै[1] ।
कूभो उदैकरणरो भाई ।
कूभाणियारी वडी पीठ
छै[2] । आबेर चाकर छै।
··· महेसदास पीथारो ।
··· किसनसिंघ । राजा
जैसिंघरै बटा कीरत-
सिंघ कनै रहतो । समत
१७०८ काबिल मीच
मुवो[3] ।
१२ जुणसी कुतळरो ।
१२ हमीर कुतळरो। जिणरा
हमीर-पोता-कछवाहा
कहीजै, सु हमीरदेरा
पोतरा घणा डील छै ।
आबेर चाकर छै । केई
नरायणै चाकर छै[4] ।
··· पतो ।
··· स्यामसिंघ पतारो ।
राजा जैसिंघरो चाकर ।
··· रामसिंघ पतारो ।
१२ भडसी राजा कुतळरो
जिणरा भाखरोत-कछ-
वाहा कहीजै । भडसी-
पोता[5] ।
··· वेणीदास ।
··· साहिबखान वेणीदासरो।
भलो रजपूत हुवो ।
पैहली आसपखारै थो[6]।
पछै पातसाही चाकर
हुवो ।
··· किसनसिंघ साहिब-
खानरो । राजा अनुरुध
गोडरो चाकर[7] ।
१२ कछवाहो भडसी
कुतळरो । तिणरा
कीतावत-कछवाहा
कहीजै[8] ।
१२ आलणसी राजा
कुतळरो जिणरा जोगी-
कछवाहा कहीजै[9] ।
इणारी[10] ठाकुराई
पैहली जोवनेर हुती ।
हमै तो जोवनेर जोगियासू

---

1 जुणसीका पुत्र कछवाहा कूभा जिसके वशज कूभाणी-कछवाहे कहे जाते है। 2 कूभाणियोकी वडी प्रतिष्ठा है। 3 किशनसिंह राजा जयसिंहके बेटे कीर्तिसिंहके पास रहता था, स० १७०८ मे काबुलमे अपनी मौत मरा। 4 कुतलका बेटा हमीर, जिसके वशज हमीर-पोता कछवाहे कहे जाते हैं, हमीरदेवके पोतो आदिका वडा कुटुम्ब है, कई आमेरमे और कई नराणेमे चाकर हैं। 5 जिसके वशज भाखरोत-कछवाहे या भडसी-पोता कहे जाते हैं। 6 पहले आसफखाके यहा नौकर था। 7 राजा अनिरुद्ध गौडका चाकर। 8 जिसके कीतावत-कछवाहे कहे जाते है। 9 जिसके जोगी-कछवाहे कहे जाते है। 10 इनकी।

छूटो[1]। केई आंवेर नरा-
यणैं चाकर छै[2] ।
.. रामदास वणवीररो ।
राजा जैसिंघरै वास[3] ।
... थानसिंघ खाडेरावरो ।
राजा जैसिंघरै वास ।
११ कुतळ कीलणदेरो ।
११ रावत खैराज कीलण-
देगे । तिणरा[4] धीरा-
वत कछवाहा कहीजै ।
१२ मालक रावत खैराजरो।
१३ धीरो मालकरो।
जिणरा[5] धीरावत
कहावै[6] ।
१४ नापो धीगरो ।
१५ खान नापारो ।
१६ चांद खानरो ।
१७ ऊदो चांदरो ।
१८ रामदास ऊदारो ।
दरबारी ।
१९ दिनमिणदास ।
१९ सुदरदास ।
१९ दलपत ।
१९ नारायण ।
१८ रामदास दरबारी ऊदा-
वत पैहलो सल्हैदीरो
वालार[7] थो । पछै पात-
साह अकबररो बोहत
निवाजसरो चाकर हुवो[8]।
अरजबेगी हुवो[9] । वडो
दातार हुवो । पछै अक-
बर पातसाह फोत हुवा
पछै[10] जहागीर वगसरै
थाणै राखियो थो, उठै
राम कह्यो[11] । जहां-
गीर बोहत कुमया की[12]।
अकबर-पातसाह गुज-
रात ली तद डणगारसूं
गुजरात गयो । तद
सागानेर कोटवाळ
थो,[13] तठै खिजमत की
तद मुजरो हुवो[14] ।
११ जरसी राव कीलण-
देरो[15]। जिणरा जसरा-
कछवाहा कहीजै । पूरब
माहै छै । जसरा

---

1 अब तो जोवनेर जोगी-कछवाहोंमे छूट गया । 2 कई आमेर और नराणेमे चाकर है । 3 राजा जयसिंहके यहां रहता है । 4 उसके । 5 जिसके । 6 कहलाते हैं । 7 नौकर । 8 पीछे बादशाह अकबरका बहुत कृपापात्र चाकर हुआ । 9 अर्ज गुजराने वाला (अर्ज वेगी) पदाधिकारी नियत हुआ । 10 फौत होनेके बाद । 11 मर गया । 12 जहांगीरने बहुत अवकृपा की । 13 तब वह सागानेरका कोटवाल था । 14 वहां पर (गुजरातमें बादशाह अकबरकी) अच्छी सेवा की तब उसका वही मुजरा हुआ था । 15 जरसी राव कील्हणदेवका बेटा ।

पोता[1] ३ ।

१० कीलणदे राजदेवोत ।

१० भोजराज राजदेरो । जिणरा पोतरा लवाणारा-गढरा-कछवाहा कहीजै[2] ।

... केसोदास राजा जैसिघरै वास[3] ।

८ बालो मलैसीरो । सात तवा अलावदी पातसाह आगै फोडिया । मोहीलारै परणियो तठै खेत्रपाळ कूट काढियो तरै गैल छूटी[4] ।

७ मलैसी पुजनरावरो । मलैसीरै ३२ बेटा हुवा ।

७ भीवडनै लाखण पुजनरो । जिणरा पोतरा कछवाहा-परधानका कहीजै[5] ।

४ राजा हणू काकिलरो ।

४ कछवाहो अळधरो राजा काकिलरो[6] । जिणरा पोता तिके कछवाहा-मेडका-कुडळका कहीजै[7] । मनोहरपुर चाकर चीधड छै । मेडका-कुडळका अमरसर गाव १२ हुता । दाम १२०००० । हमै अै गाव वैराट वांसै लगाया ।

४ कछवाहो रालण राजा काकिलरो जिणरा पोता रालणोत कछवाहा कहीजै । मनोहरपुर चाकर चीधड छै ।

४ कछवाहो देलण राजा काकिलरो । जिणरा पोता लहर-कछवाहा कहीजै । कैहेक कछवाहा गगा जमना वीच अतरवेध माहै छै । सालेर मालेर गाव २० माहै कछवाहा भूमिया असवार ४०० छै । घणा दिनारा उठै जाय रह्या छै ।

इति कछवाहारी ख्यात वार्ता सपूर्णम ।

दसकत वीठू पनैरा छै । शुभ भवतु ।

---

1 जिसके वशज जसरा-कछवाहे अथवा जसरा-पोता कहे जाते हैं, पूर्वमे है । 2 जिसके पोते लवाणागढरा-कछवाहे कहे जाते हैं । 3 केशवदास राजा जयसिंहके यहा रहता था । 4 वाला मलैसीका वेटा, इसने एक साथ लोहेके सात तवे एक ही तीरसे अलाउद्दीनके सामने फोड कर दिखाये थे, मोहिलोके यहा व्याहा था, वहा पर क्षेत्रपालको मार भगाया, तव सबका पीछा छूटा । 5 जिसके पोते प्रधानका-कछवाहे कहे जाते हैं । 6 कछवाहा अलधरा राजा काकिलका वेटा । 7 जिसके पोते कुडलका-कछवाहे अथवा मेडका-कछवाहे कहे जाते है ।

# वात एक गोहिलां खेड़रा धणियांरी

खेड[1] गोहिलारी वडी ठाकुराई थी। राजा मोखरो धणी छै। तिणरै वेटी वूट पदमणी थी[2]। तिणरी वात खुरासाणरै पातसाह सांभळी[3] तरै तिण ऊपर घोडा लाख तीन विदा किया। तिकै चढ खेड आया। तुरके खेड सहर घेरियो[4]। गोहिल पिण[5] तद जोर[6] था। दिन ४ सारीखी वेढ हुई। पछै गोहिलै जमहर[7] करनै मैदान आय वेढ हुई, तळाव वहवनसररै आगोर[8] तठै घणा गोहिल काम आया, घणा तुरक काम आया, नै घोडा पाछा गया। फौज आवता पैहली वहवन कठैही[9] गयो थो सु ऊबरियो,[10] वूट पिण ऊवरी[11]। राजा मोखरो काम आयो। पछै मोखरारो वेटो वहवन टीकै वैठो। साथ घणो काम आयो। ठाकुराई निवळी पडो[12]। तरै वाहडमेररै धणिया गोहिल दवाया[13]। गाव नाकोडै गढ पवारै कियो[14]। धरती लेणरो विचार कियो तरै वहवन मडोवर हसपाळ पडिहार धणी थो, तिणनू कहाडियो[15]–"म्हा कना[16] पवार धरती ले छै। कै तो म्हारी ऊपर करो नही तरै पछै थानूही लागसी[17]।" तरै पडिहारै कह्यो–"थारै[18] वेटी पदमणी वूट छै, तिका परणावो तो था सामल हुवा।" तरै इणा आपरै गम देखनै[19] वूट परणावणी कवूल की। वूट तो वरजियो भाईनू[20] पण इणै वात मानी नही। तरै पडिहार हसपाळ चढ खेड आयो। तिण समै पवारै गाया लीवी।

---

1 खेड मारवाडके मालानी प्रान्तमे लूनी नदीके किनारे वालोतरासे पाच मील पश्चिममे है। राठौड सीहा और आसथानने सर्वप्रथम यही अपना राज्य कायम किया था। अब खेड खडहरोके रूपमे रह गया है। 2 राजा मोखरा वहाका स्वामी है, उसके वूट नामकी एक वेटी जो पद्मिनी थी। 3 सुनी। 4 तुर्कोने खेड शहरको घेर लिया। 5 भी। 6 शक्तिशाली। 7 जौहर। 8 तालावके पासकी वह भूमि जिसका पानी तालावमे आता है। 9 कही भी। 10 वच गया। 11 वूट भी वच गई। 12 राज्य निर्वल पड गया। 13 तव वाडमेरके स्वामियोने गोहिलोको दवाया। 14 नाकोडामे पँवारोंने गढ वनवाया। 15 उमको कहलवाया। 16 हमारे पाससे। 17 या तो हमारी सहायता करो नही तो ये पीछे तुमको भी सतायेंगे। 18 तुम्हारे। 19 तव इन्होंने अपनी परिस्थितिका विचार करके। 20 वूटने तो भाईको मना किया।

तरै पडिहार गोहिल भेळा हुय वाहर चढिया,[1] सु गाव नाकोडै आपडिया[2]। गाया तो कोट पोहती। हसपाळ घोडो नाखियो सु प्रोळरा किवाड भागा[3]। तठै[4] पवार माणस[5] ४०० काम आया। माणस ३०० गोहिल पडिहार काम आया। हसपाळरो माथो तूट पडियो। हसपाळ माथो पडियै पछै धड गाया ले वळियो[6]। गाया खेड आणी[7]। पणहारिया कह्यो–"देखो माथा विण धड आवै छै[8]।" तठै हसपाळ पडियो[9]। पछै पडिहार परणण आया[10], फेरा २ लिया, तरै बूट बोली–"गोहिल थासू छूटा[11]।" पडिहारै कह्यो–"छूटा।" तरै इण बूट कह्यो–"मै तो थानू वरजियो थो[12] पण थे मानियो नही। हमै गोहिलासू खेड जाज्यो[13]। पडिहारासू मडोवर जाज्यो[14]।" इणा दोनाहीनू बूट श्राप देनै उड गई। उडतीनू बूटरै माटी हाथ घातियो सु एक लूगडो बूटरो हाथ आयो नै बूट उड गई[15]।

## वात

गोहिला कना[16] खेड राठोडा ली, तरै[17] गोहिल खेड छाड नै[18] एक वार कोटडारै देस बरियाहेडै गया। पछै उठाथी धाधळै मारे नै परा काढिया,[19] तरै कितराहेक[20] दिन सीतडहाई जेसळमेरथी कोस १२ छै तठै जाय रह्या। पछै उठैही[21] राठोडा आगै रह न सकै। तरै जेसळमेररो धणी गोहिलारै परणियो हुतो सु अै रावळ कनै

---

1 तब पडिहार और गोहिल दोनोने शामिल होकर पीछा किया। 2 सो गाव नाकोडामे उनको पकड लिया। 3 हसपालने अपना घोडा ऐसा डाला सो पोलके किंवाड टूट गये। 4 वहा। 5 मनुष्य। 6 हसपालका सिर कट कर पड जानेके बाद उसका धड गायोको लेकर लौटा। 7 गायोको खेडमे ले आया। 8 देखो, बिना सिरके धड आ रहा है। 9 (पनिहारिनोके ऐसा कहते ही घोडे परसे) हसपाल (का धड) वहाँ गिर गया। 10 फिर पडिहार विवाह करनेको आये। 11 तब बूट बोली, गोहिल तुमसे ऋणमुक्त हुए। 12 मैंने तो तुम्हे पहले मना कर दिया था। 13 अब गोहिलोसे खेड छूट जाय। 14 पडिहारोंसे मडोर छूट जाय। 15 उडती हुई को बूटके पतिने हाथ डाला सो बूटका एक वस्त्र उसके हाथ आया परन्तु बूट तो उड गई। 16 से, पाससे। 17 तब। 18 छोड कर। 19 पीछे वहासे भी धाधलोने मार कर निकाल दिया। 20 कितनेक। 21 वहा भी।

गया[1]। नरै रावळ इणानूं केई दिन जेसंळमेररा गढ ऊपर राखिया। तिको दिखण दिस गढमे ओ अजेस गोहिल टोळो कहावै छै[2]। तठा पछै कितरैहेक दिने अै सोरठनूं गया[3]। सेत्रूजासूं कोस ४ सीहोर गाव छै, तटै जाय रह्या छै[4]। रावळ कहाडै छै[5]। भला रजपूत भूमिया छै। गाव ४०० माहै इणारो भोमियाचारारो ग्रास लागै छै[6]। सेत्रूजो पिण गोहिलारै छै[7]। पालीताणै सिवो गोहिल छै, तिको जात करण आवै छै। तिणां कनै क्यूंही लेनै पछै सेत्रूजै सिघनूं चढण दे छै[8]। विरद इणानूं चारण भाट मारवारो दे छै[9]।

ग्रासरी विगत[10]—

सोरठरै देस एक ठोडा सीहोर, सेत्रूजासूं कोस ४ छै तठै रावळ अखैराज, धोधरै परगनै इणारो ग्रास[11] लागै।

एक ठोड लाठी, गाव ३६० मे ग्रास लागै। लोलियाणो, अरजियाणो धोवुकाथी कोस १७।

सोरठ माहै देवके-पाटण सोमईयो महादेव वडो जोतलिग हुतो,[12] तिको समत १३०० अलावदी पातसाह जाय उपाडियो,[13] तठै गोहिल हमीर, अरजन भीवरा बेटा काम आया, वडो नाव कियो[14]। तिणा साथै वेगडो भील पिण काम आयो[15]।

++

---

1 सो ये रावलके पास गये। 2 गढके अदर दक्षिण दिशाका वह स्थान अब भी गोहिल-टोला कहलाता है। 3 जिसके कितनेक दिनो बाद ये सोरठको चले गये। 4 वहा जाकर रहे है। 5 रावल कहलाता है। 6 चारसौ गावोमे उनका भूमिचारा ग्रास (कर) लगता है। 7 शत्रुजय भी गोहिलोके अधिकारमे है। 8 पालीताना शिवा गोहिलके अधिकारमे है, वह वहा जो यात्रा करनेको आते हैं उनसे कुछ कर लेकर फिर यात्री-सघको शत्रुजय पर्वत पर चढने देता है। 9 ( सोरठमे जाने पर भी ) चारण और भाट लोग उनको मारुओका (मारवाडियोका) ही विरुद देते हैं। 10 ग्रासका विवरण। 11 एक कर। 12 सौराष्ट्रमे देवपाटन स्थानमे सोमनाथ महादेव एक ज्योतिर्लिग था। 13 जिसको अलाउद्दीन बादशाह सम्वत् १३०० मे जाकर उखाड लाया। 14 वहा पर भीमके बेटे गोहिल हमीर और अर्जुन काम आये, वडा नाम किया। 15 उनके साथमे वेगडा भील भी काम आया।

# अथ पंवारांरी उतपत

आबू अनळकुड वसिष्ट रिखेस्वर दैतारै वधरै वास्ते च्यार जात रजपूत उपाया[1]—

१ पवार ।
२ चहुवाण ।
३ पडिहार ।
४ सोळकी ।

पवारारी पीढी—

१ पवार ।
२ परूरव ।
३ किलग ।
४ इद्र ।
५ गध्रपसेन ।
६ राजा विक्रमादित ।
६ भरथरी ।
७ वीकमचित्र ।
८ सालवाहन ।
६ स्रतनख ।
१० गोदभ ।
११ गोपिड ।
१२ महिपिंड ।
१३ राजा कारतन ।
१४ सहस राजा ।
१५ राजा सिंघळसेन ।
१६ भोज धाररो धणी ।
१७ राजा बध ।
१८ राजा उदैचद ।

राजा उदैचदरा बेटा, आक १८ ।

१९ राजा रिणधवळ ।
१९ आल आबू धणी ।
१९ पाल आबू धणी । तिणरी औलादरा उमर जाळौररै देश छै[2] ।
१९ माधवदे सिद्धरावरै परणियो हुतो[3] । पछै पाटण आयो ।
　तिणरा बेटा—
२० सूर । २० सावळ ।
१९ जगदेव सिद्धरावरो चाकर, जिण कंकाळीनै माथो दियो[4] ।

---

1 आबूमे ऋषीश्वर वशिष्ठने दैत्योका वध करनेके लिये अग्निकुडसे चार जातिके राजपूतोको उत्पन्न किया । 2 पाल आबूका स्वामी, इसकी औलादके जालोर प्रदेशके ऊमर गावमे हैं । 3 थी । 4 जगदेव सिद्धरावका चाकर, जिसने ककालीको अपना सिर काट कर दे दिया था ।

जगदेवरो परवार, आक १९

२० डाभ रिष। तिणरा पोतरा आगरै नजीक पंवार[1]।

२० गूगा। जगदेव माथो दियां पछै बेटा हुआ तिकै[2]।

२० कावा। रामसेण तथा द्वारका कानी[3]।

२० गैहलडो। कहै छै पैहली गैहलडारी ठाकुराई खारी-खावड हुती[4]।

डाभ रिषरी औलाद, आक २०

२१ धोम रिष[5]।

२२ धरमदेव राजा, किराडू-धणी।

२३ धाधू।

२२ धरणी वराह, किराडू धणी।

२३ वाहड। तिणरै घरै अपछरा थी[6]। अपछरारै पेटरो।

२४ सोढो।

२४ साखलो।

२२ उपळराई किराडू छोड ओसिया वसियो। सचिवाय प्रसन हुइ माल वतायो। ओसियामे देहरो करायो[7]।

## वात पंवारांरी

सोढा, साखला पवारै मिळै[8]। पेहली इणारो दादो धरणीवराह, वाहडमेर जूनो किराडू कहीजै, तिणरो धणी हुतो[9]। तिणरै नवै कोट मारवाडरा हुता[10]। तिणरै बेटो वाहड हुवो। तिणसू[11] आ धरती छूटी। एक वार वाहड रायधणपुर कनै[12] गाव भाभमो तठै जाय रह्यो। पछै वाहडरो बेटो सोढो तो सूमरा कनै गयो, तिणनू

1 डाभ ऋषि जिनके पोते आगराके पासमे रहने वाले पँवार है। 2,3,4 जगदेवके सिर देनेके बाद जो बेटे हुए उनमे एक गूगा, दूसरा कावा, जिसके वशज रामसेन तथा द्वारकाकी ओर है और गैहलडो, जिसके वशजोके सबधमे कहा जाता है कि पहिले इनकी ठकुराई खारी-खावडमे थी। 5 धोम ऋषि। 6 वाहड जिनके घरमे अप्सरा थी और उसके पेटसे सोढा और साखला हुए। 7 उपलराय किराडूको छोड कर ओसियामे जा बसा, सचिवाय माताने प्रसन्न होकर उसे धन बताया और उसने ओसियामे मदिर बनवाया। 8 सोढा और साखला दोनो शाखाये पँवारोमे मिलती है। 9 पहले इनका दादा धरणीवराह, जो अब जूना बाडमेर और किराडू कहा जाता है, उसका स्वामी था। 10 जिसके अधिकारमे मारवाडके नौ ही कोट थे। 11 उससे। 12 पास।

सूमरा रातो कोट दियो, ऊमरकोटसू कोस १४ । नै तठा पछे[1] सोढा हमीरनू जाम तमाइची ऊमरकोट दियो । वाघ मारवाड माहे पडिहारा कनै आयो । वाघोरियै वसियो ।

पीढियारी विगत—

१ गध्रपसेन ।
२ अजैपाळ ।
३ अजैसी ।
४ बधाइत ।
५ बध ।
६ धरणीवराह ।
७ वाहड, तिणरै घरै अपछरा हुती । तिणरै पेट वेटा २—
८ सोढो, ८ साखलो वाघ ।

वाघ पवार, तिणरी औलादरा साखला हुवा[2] । तिण साखलारी दोय ठाकुराई सारीखी हुई । तिणरी विगत—

वाघ पवार छहोटण, बाहडमेर छोडनै वाघोरियै आड रह्यो । पडिहार गैचदरै घरै भुवा सुदर हुती, तिण परसग आयो । वाघोरियारो भाखर[3] दिखायो । इणरी भुवा खरच दै । पछै गैचदनू रजपूते भखायो,[4] कह्यो–"तिणरी इसी दछा दीसै छै,[5] थानू मार धरती औ लेसी[6] ।" तरै गैचद इण ऊपर फौज मेली । वाघनू मारियो । घणा साखला मारिया । मुहतो सुगणो ऊबरियो[7] । वैरसी वाघावत पेट हुतो,[8] सु मुहतो सुगणो इणरी मानू लेनै अजमेर गयो । उठै गया पछै वैरसी वेगोहो जायो[9] । मोटो हुवो । अजमेर धणी था तिणनू मु॥ सुगणो वैरसीनू लेजाय मिळियो । घणा दिन चाकरी की । पछै मुजरो हुवो तरै कह्यो–"जाणै सो माग[10] ।" तरै इण कह्यो– "म्हारो बाप गैचद विना खून[11] मारियो छै, तिणरी ऊपर करो[12], फौज दो । तरै फौज उणै[13] दी । तरै वैरसी माताजीरी इछना मनमे

---

1 जिसके बाद । 2 साखला-वाघ, जिसकी औलादके साखले हुए । 3 पहाड । 4 वहकाया । 5 इसकी ऐसी हालत दीखती है । 6 तुमको मार करके तुम्हारी धरती ये ले लेंगे । 7 बच गया । 8 वाघाका बेटा वैरसी उस समय गर्भमे था । 9 वहा जानेके बाद जल्दी ही वैरसीका जन्म हो गया । 10 तेरी इच्छा हो सो माग । 11 अपराध । 12 उसके लिये सहायता करो । 13 उसने ।

करी[1]—"म्हारै बापरो वैर वळै,[2] । गैचद हाथ आवै तो हू कँवळ-पूजा करनै श्री सचियायजीनू माथो चढाऊ ।" पछै सचियायजी आय सुपनैमे हुकम दियो. वासै[3] हाथ दिया नै कह्यो—"काळै वागै, काळी टोपी, वैहलरै[4] काळी खोळी, काळा बळद जोतरिया,[5] जिदारै[6] रूप किया साम्हा मिळसी । ओ गैचद छै, तू मत चूकै, कूट मारै ।" पछै वैरसी मूधियाड ऊपर फौज लेनै दोडियो । साम्हा उण रूप आयो, सु गैचद मारियो । पछै ओसिया जात आयौ[7] । आप एकत देहुरो जडनै कँवळपूजा करणी माडी[8]। तरै[9] देवीजी हाथ भालियो,[10] कह्यो—"म्हे थारी सेवा-पूजासौ[11] राजी हुवा, तोनै माथो बगसियो, तू सोनारो माथो कर चाढ ।" आपरै हाथरो सख वैरसीनू दियो, कह्यो—"ओ सख वजायनै साखलो कहाय[12] ।"

पछै वैरसी आय रूणवाय वसियो । मूधियाडरो कोट पडिहारारो उपाडनै साखलै रूणकोट करायो[13] ।

पीढियारी विगत—

१ साखलो वैरसी वाघरो ।
२ राणो राजपाळ ।
३ छोहिल राजपाळरो ।
३ महिपाळ राजपाळरो । तिणरै वासला[14] जागळवा ।
३ तेजपाळ राजपाळरो । तिणरै वेटा—
४ भोहो । जिण भोहारै वेटा—
५ उदग वडो रजपूत हुवो । राजा प्रथ्वीराज चहुवांणरा चाकर सावतामे[15] हुवो । मेडतो पटै हुतो ।
५ देवराज भोहारो ।

---

1 तव वैरसीने अपने मनमे सचियाय माताजीका ध्यान करके अपनी इच्छा प्रकट की । 2 मेरे वापका वैर निकले । 3 पीछे । 4 वहलके । 5 काले वैल जुते हुए । 6 जिन्नका । 7 वादमे ओसियाकी यात्रा करनेको आया । 8 मदिरको वद करके एकान्तमे कमल पूजा करनी शुरू की । 9 तव । 10 पकडा । 11 से । 12 यह शख वजा और साखला प्रसिद्ध हो । 13 पडिहारोके अधीनस्थ मूंधियाड गावका कोट गिरवा कर साखलोने उससे रूणवायमे रूणकोट वनवाया । 14 पिछले वशज । 15 सामतोमे ।

साखलो छोहिल राजपाळोत । तिणरै वासला रूणेचा[1] श्राक ३ ।

४ पालणसी छोहिलरो ।　　　　पातसाह आयो थो,[2]
५ मेहदो ।　　　　तिणसू[3] लडाई हुई ।
६ हसपाळ ।　　　　पातसाह भागो । नगारा
७ सोढल ।　　　　नीसाण पडाय लिया[4] ।
८ वीरम ।　　　　तिणसू साखला नादेत-
९ चाचग ऊपर माडवरो　　　　नीसाणोत कहावै छै[5] ।

साखला चाचग वीरमोतरो परवार, श्राक ९ ।

१० राणो सीहड चाचगोत[6] । निपट वडो रजपूत हूवो । तिणरै पगळी बेटी हुई । तिणरै पेट धारू आनळोत वडो रजपूत हुवो[7] ।

कवित्त सीहडरो मेरसू मामलो[8] कियो तिण साखरो[9]—

काणजो कोपियो, लूस, अमणेर लियतो ।
दुजडा[10]हथो दुभाळ,[11]रोस रोहिसै रत्तो ॥
वाळ जाळ बोरबौ भरम पहाडा भग्गो ।
मचकोडै मेवडो, वळै वधनोर विलग्गो ॥
वधनोर गाज[12]आडोवळो, तोडै जडा तिलायली ।
साखलै राण सुजडा[13]हथै, भाजी[14]सीहड भायली ॥

सीहडरा बेटा—

११ सालो सीहडरो ।
११ वछो सीहडरो ।
११ हसो ।
११ जैतकरण ।
११ लूणकरण ।
११ रतनसी ।
११ सुरजन ।
११ देवराज ।

---

1 जिसके पीछे वाले रूणेचा कहलाते है । 2 चाचगके ऊपर माडवका बादशाह चढ कर आया था । 3 जिससे । 4 नगारे और निशान खोस लिये । 5 इसलिये साखले नादेत-नीसाणेत कहलाते है । 6 राणा सीहड चाचगका पुत्र । 7 जिसकी कोखसे आनलका पुत्र धारू वडा राजपूत हुआ । 8 युद्ध । 9 उसकी साक्षीका । 10 कटारे । 11 वडा वीर । 12 नाश करके । 13 कटारें । 14 तोड दी ।

११ कूभो ।
११ नाल्हो ।

११ विजो ।
११ माडण ।

साले सीहडोतरो परवार, आक ११ ।

१२ ऊधो सालारो, तिणरो परवार पीपाड[1] ।
१३ मोटल ।
१४ भाण ।
१५ अखो ।
१६ सातल ।
१७ लखमण ।
१८ मानो ।
१९ हदो । रा।। प्रथीराजरै परधान ।
२० वलू ।
२१ वैरसल ।

१२ भोजराज सालारो । तिणरै वासला खीवसरी तरफ[2] ।
१३ जैतसी राणो ।
१४ राणो माडो जैतसीरो ।
१५ राणो वीरनरसिंघ ।
१६ तेजसी ।
१७ रायपाळ ।
१८ अखो ।
१९ वीरमदे ।
२० कूभो, हरदास महेसदासोतरै चाकर । भलो रजपूत थो ।
२१ गोवरधन ।

साखलो वछू सीहडोत, आक ११ ।

१२ देलो ।
१३ चूडराव ।
१४ मेहो ।
१५ काधळ ।
१६ जोधो ।
१४ सोम चूडावत ।
१५ अमरसी सोमावत । घणी आखडी वहतो[3]।

१६ भीव ।
१७ वैरो ।
१८ खीदो ।
१९ हमीर ।
१९ करमसी ।
१९ नगराज ।
१७ कलो ।
१८ वीदो ।

---

1 सालाका पुत्र ऊदा, इसका परिवार पीपाडमे है । 2 सालाका पुत्र भोजराज, इसके वशज खीवसरकी ओर है । 3 सोमाका पुत्र अमरसी, यह वहुत नियमोका पालन कर अपना जीवन व्यतीत करता था ।

१९ मैंदो, राणा उदैसिवरै चाकर थो, गाव ८४ । ताणो सोळकी मलावाळो जागीरमे दियो थो[1] ।

२१ डूगरसी ।

२१ तेजसीरा बेटा मेवाड ।

२२ दयाळदास । रु० १००००)रो पटो पावै ।

२२ राजसी । रु १००००)रो पटो पावै । वडो इतबारी राणै जगतसिघजीरै हुवो[2] ।

राणो मोकल राणा राजपाळरै परणियो थो । तिणरो दोहितो राणो कूभो हुवो नै डणारो दादो सांखलो करमसी वडो हर-भगत हुवो[3] । सु मेवाड इण परसग अै सांखला नै धधवाडिया चारण साखलांरा उठै गया सु तिण दिनरा छै[4] ।

साखला सीहड रूणेचारा पोतरा ढूढाड कछवाहारै चाकर,[5] आक १० ।

११ उदग ।

१२ गजैसी ।

१३ मेहो ।

१४ पूरो ।

१५ बळकरन पूरारो । वडो रजपूत हुवो । राजा मानसिघरै चाकर थो । राजा मानसिघरै नागोर हुई तद गाव ८४सू रूण पटै दी थी ।

१६ सावळदास बळकरनरो ।

१७ मनोहरदास । राजा गजसिघजीरै जोधपुर वास वसियो[6] ।

१८ स्यामसिघ मनोहरदासरो ।

साखलो रतन सीहडोतरा रूणेचा जोधपुर चाकर,[7] आक ११ ।

---

1 सोलकी मल्लेवाला ताणा गाव भी जागीरमे दिया गया था । 2 राणा जगतसिंहके पास बडा विश्वासपात्र था । 3 राणा मोकल राजपालके यहा व्याहा था, इसका दोहिता राणा कुंभा हुआ और इनका दादा साखला करमसी बडा हरिभक्त हुआ । 4 इस प्रसगसे ये साखले और इन साखलोके धधवाडिया चारण मेवाडमे चले गये, उस दिनसे वे वहा हैं । 5 सांखला सीहड रूणेचाके पोते ढूढाडमे कछवाहोंके चाकर है । 6 मनोहरदास, जोधपुरमे राजा गजसिंहजीके यहा जाकर वस गया । 7 सीहड रूणेचाका बेटा साखला रतन जोधपुरमे चाकर है ।

१२ महृदसी ।
१३ आसल ।
१४ जगो ।
१५ वापो ।
१६ नरसिघ ।
१७ गागो ।
१८ रतनो ।
१९ करण ।
२० ऊदो ।
२१ सुदर ।
१८ खीदो वैरारो । वैरो, भीव, अमर, सोमो, चूडराव, देल्हो, वछु रांगा सीहडरो । पाछलै पानै वसावळी छै[1] ।
१९ हमीर खीदावत ।
२० सावळदास हमीरोत ।
२१ आसो सावळदासोत ।
२२ रामसिंघ आसावत ।
२३ कूभो । २३ गोरधन ।
२४ कचरो ।
२२ रूपसी आसावत ।
२३ मनोहर ।
२४ सादूळ ।
२३ दूदो ।
२४ राजसी ।
२३ कल्याणदास ।
२२ सूजो । आसावत । रा॥ उदैसिंघ गोपाळदासोतरै वास । उजेण काम आयो ।
२० दुरगो हमीररो ।
२१ नरहरदास दुरगावत ।
२३ गिरधर ।
२४ गोकळ । २४ आसो । २४ माधो ।
२३ चतुरभुज ।
२४ करन ।
२३ सुदरदास ।
२१ सुरतांण दुरगावत ।
२२ खीवसी । गोपाळदासरै वास । मेरियोवास पटै[2]।
२३ खेतसी ।
२० भानीदास हमीररो ।
२१ नारणदास । तोसीणो पटै।
२२ कल्याणदास । रा॥ गिरधरदास साथै काम आयो ।
२३ जगनाथ । २३ जगमाल । २३ कमो । २३ कचरो ।

---

1 इनकी वंशावली पिछले पन्नेमे है । 2 खीवसीका निवास गोपालदासके यहां और मेरियोवास गांव पट्टेमे ।

## सांखला जांगलवा

१ वैरसी वाघरो । ग्रो साखलो हुवो ।
२ राणो राजपाळ वैरसीरो।
३ महिपाळ राजपाळरो ।
४ रायसी महिपाळरो ।

## वात रायसी महिपालोतरो

रायसी महिपाळोत रूण छाडिनै नीसरियो जागळू[1] । च।। प्रथीराजरी बैर[2] अजादे दहियाणी ग्रा ठोड वसाई थी[3] तठै ग्राण गूढो करनै रयो[4] । ऊपर बरसात ग्रायो, तरै क्यू ढाक-पळासियारा ग्रासरा किया छै[5] । सु उठै जागळूरा कोट नजीक गूढो छै तठै रहै छै, नै रूणारा विगाडनू दोडै छै[6] । नै ग्रठै साखलारी त्रैरा[7] पांणीनै जाय सु दहियारा कँवर ४० तथा ५० भेळा हुवा फिरै छै । तिके वेहडानू गिलोला वाहै छैं[8] सासता[9] वेहडा फोडै छै । वैर सखरी[10] देखै तिका वे कपूत कँवर थोकारै छै[11] । ग्रै कहै छै[12]–"हूँ ग्रा लेईस,[13] हूँ ग्रा लेईस ।" सु गूढारा लोग सारी वात साखला रायसोनू जाय कहै छै । सु रायसी राहवेधी[14] छै । रायसी धरती लेण ऊपर निजर राखै छै। सु सारा ग्रापरा लोगानू कहै छै–"ग्रापणो इसडोइज समै छै,[15] दाव देख चालणो[16] ।" तिण समै जागळू माहै वाभण[17] एक केसो उपाधियो रहै छै सु तळाई जागळूरी प्रोळरै मुहडै ग्रागै करावण मतै छै[18]। सु ग्रो सदा दहियानू कहै छै–"कहो तो हू ग्रठै तळाई कराऊ" सु दहिया करण न दे छै । सु ग्रो गाढो[19] दिलगीर छै, नै राहवेधी

---

1 महिपालका वेटा रायसी रूण छोड करके जागलूको निकल गया । 2 स्त्री,पत्नी । 3 यह स्थान ग्रावाद किया था । 4 वहा ग्राकर गूढा (गुप्त स्थान) वना कर रहा । 5 वर्षा ग्राई तव ढाक-पलास ग्रादिके झोपडे वना लिये है । 6 ग्रौर वहासे रूणमे लूट-खसोट करने व डाके डालनेको जाते है । 7 स्त्रियें । 8 जो घडोको गुलेले मारते है । 9 निरतर । 10 सुदर । 11 ग्रपनी ( स्त्री ) वनानेकी नीच कामना करते है । 12 ये कहते है । 13 मैं यह लूंगा । 14 दूरदर्शी । 15 ग्रपना समय ऐसा ही है । 16 ग्रवसर देख कर चलना । 17 व्राह्मण । 18 जागलूकी पोलके ठीक सामने ही एक तलाई करानेका विचार करता है । 19 ग्रत्यत ।

आदमी छै । पछै साखलै दहिया सिरदारानू भाया-बेटा सारानू नाळेर ४० तथा ५० सावठा दिया[1] । एक साहो थापियो[2] । पछै वे परणीजण आया, सु जीमण[3] माहै दारूमे[4] धतूरो घातनै[5] पायो, सु सारा बेमुध किया । पछै हेठा[6] पडिया, तरै कूट मारिया । नै केसो उपाधियो ही साथै तो[7] इणनू ही मारण लागा । तरै इण कह्यो–"मोनू मत मारो[8] । मनै उवारो, हू थाहरै भलै काम आडो आईस[9] ।" तरै इणा कह्यो–"म्हे थनै उवारियो, पिण तू किसै[10] काम आईस, तिका वात म्हानू[11] कहै ।" तरै इण कह्यो–"श्रै तो थे मारिया[12] पिण कोट किण भात लेस्यो ?" तरै इण साखलै दीठो,[13] बाभण साची वात कही, तरै इणनू घणो हित कर पूछियो, तरै इण कह्यो–"मोनू थे गुरपदो[14] दो नै मोनू थे कोट आगै तळाई करण देज्यो ।" तरै साखले केसै उपाधिये वात कही सु कबूल करी । इणसू सौस-सपत किया;[15] तरै केसै कह्यो–"हमै ढीलरो काम नहीं[16] ।" कह्यो–" रात थकी सेजवाळा[17] ५० तथा ६० छै सु वेगा जोतरो[18] । माहै पाच-पाच रजपूत वैसो[19] । हू किवाड खोलाड देईस[20] ।" तरै सेजवाळा जूता, तरै केसै उपाधियै प्रोळरै मूहडै आयनै प्रोळियारो नाव ले जगायो । कह्यो–"मोहरतरी वेळा टळी जाय छै,[21] प्रोळ खोलो, सेजवाळा बारणै ऊभा छै[22] ।" तरै उणै प्रोळ खोली । सेजवाळा सोह[23] माहै आया । तरै रावळा वैहली माहिथा[24] कूद-कूद जीनसालीया उतरिया । दहियारा जिकै कोट माहै हुता सु सोह कूट मारिया । साखला रांणा रायसीरी जागळूमे आंण फिरी[25] । रायसी इण भात जागळू लीवी ।

---

1 पीछे साखलोंने दहिया सरदारोको और उनके भाई-बेटे सबको एक साथ ४०-५० नारियल अपनी कन्याओकी सगाई करनेके लिये दिये । 2 लग्नका दिन नक्की किया । 3 भोजन । 4 शराब । 5 डाल कर । 6 नीचे । 7 था । 8 मुझको मत मारो । 9 मैं तुम्हारे अच्छे काममे सहायक होऊगा । 10 कौनसे । 11 हमको । 12 इनको तो तुमने मार दिया । 13 देखा । 14 गुरुका पद । 15 इससे सौगद-शपथ लिये । 16 अब देरी करनेका काम नही । 17 महिलाओकी वाहक गाडिया । 18 जल्दी जोत दो । 19 बैठ जाओ । 20 दूगा । 21 मुहूर्त्त टला जा रहा है । 22 वाहन बाहिर खडे है । 23 सब । 24 से । 25 राणा रायसी साखलेकी जागलूमे आन-दुहाई फिर गई ।

इतरी पीढी जागळू साखलारै रही[1] ।

१ राणो रायसी ।
२ राणो अणखसी ।
३ राणो खीवसी ।
४ राणो कवरसी । जिको सोतमे वैरमे खरला रजपूतारी बेटी आधी भारमल तोत कर परणाई[2] । सु कवरसी हथळेवो जोडियो, तरै भारमलनू आखं सूझण लागो[3] । खरलारी ठाकुराई पैहली तद छोहलै रिणधीरसर कुबीरोह कहीजै तठै हुती[4] । पूगळसू कोस १०, विकुपुरथी कोस १५ ।
५ राणो राजसी कवरसीरो ।
६ करमसी हर-भगत हुवो[5] ।
६ मूजो ।
७ ऊदो मूजावत ।
८ जैसिंघदे । जैसळमेर गयो । उणरै वासला सावै छै[6] ।
८ पुनपाळ जागळू धणी ।
९ माणकराव पुनपाळरो ।
१० नापो माणकरावरो । जागळू धणी । तद वलोचै जोर दवाया, तरै राव जोधा कनै[7] जोधपुर आयनै कवर बीकानू जागळू ले जाय धणी कियो । साखला चाकर हुवा ।
६ राणो आवो राजसीरो । कवरसी, खीवसी आक १०, तिणनू मूजै राजसीयोत धावै मारनै जागळू लीवी ।
७ गोपाळदे बेटो हुतो, तिको जोया कनै हुतो[8] । आबानू मूजै मारियो तद मूजेरै बेटो गोपाळदेनू उदै मूजावत

---

1 साखलोकी इतनी पीढी जागलूमे रही । 2 राणा कुवरसी, जिसको सौतके वैरके कारण खरला राजपूतोकी भारमली नामकी एक अधी लडकी व्याह दी गई । 3 सो कुँवरसीके पाणिग्रहण करते ही भारमलीको आखोसे दिखने लग गया । 4 उन दिनोमे खरलोकी ठकुराई छोहले-रिणधीरसरमे थी जो अब कुबीरोह कहा जाता है । 5 करमसी हरिभक्त हुआ । 6 उसके पीछेके वशज सावामे हैं । 7 पास । 8 जो जोईया राजपूतोके पास था ।

उठै मारियो ।* ऊदैरी वैर मागळियाणीनू आधान[1] थो, सु धरमो वीठू इणांरो चारण ले नाठो पीहर[2] । मागळियांणी कीलू करणोतरी बेटी हुती, सु एकण-पग खीवसर आयो[3] । उठै मागळियाणी मैहराज जायो[4] ।

८ खीवो जसहडरो ।

८ वीरम खावडियाणीरो ।

८ मैहराज मागळियाणीरो । तठा पछै[5] मेहराज वरस १४ तथा १५ रो हुवो, तरै आपरा भाई रजपूत भेळा करनै जागळू ऊपर गयो[6] । सु मूजा ऊदानै मारनै ढाकसरीरा कोहर माहै नाखियो[7] । घणो साथ मूजै ऊदारो मारियो । घणो लोही वुहो[8] । लोहीरा वाहळा प्रोळरै वारै ताई आया[9] । पैहली दहिया मारिया था तदही[10] प्रोळ वारै लोही आयो तो[11] । सु मैहराज ऊजळ खत्री हुतो । इण जागळू आदरी नही[12]; नै मांणकरावरा बेटा जागळू वसिया, नै मैहराज गोपाळदेरो पीहलाप, जोगीरा तळावथी कोस २ ऊगवणनू[13] छै, चूडासरसू कोस १, तठै वसियो, तठै मैहराजरा कराया तळाव ३ छै[14] ।

१ महिराजांणो तळाव ।

२ लूभासर तळाव ।

१ हरभूसर तळाव ।

केहेक[15] दिन साखलो मैहराज पीहलाप रह्यो । पछै नागोररै गाव भूडेल राव चूडासू मिळनै वसियो । गोगादेजी दलो जोईयो

---

1 गभ । 2 सो इनका चारण धरमा वीठू उसको लेकर उसके पीहर भाग गया । 3 वह विना कही विश्राम लिये खीवसर आया । एकण-पग=१ विना विश्राम, २ लगडा । 4 वहा मागलियाणीने मेहराजको जन्म दिया । 5 जिसके वाद । 6 जागलू पर चढ कर गया । 7 मूजा और ऊदाको मार करके ढाकसरीके एक कुँएमे डाल दिया । 8 वहुत रक्त वहा । 9 रक्तका प्रवाह पोलके वाहिर आया । 10 तव भी । 11 था । 12 इसने जागलूमे रहना स्वीकार नही किया । 13 पूर्व दिशा । 14 वहा मेहराजके कराये हुए तीन तालाव हैं । 15 कई एक ।

---

* यहा ऊदा नही, गोपालदे होना चाहिये ।

मारियो तद मैंहराजरो बेटो आलणसी साथै हुतो[1] । गोगादेजीरै पछै गोगादेजीनू पद्रोलाई तळाई माथै[2] जोईयो धीरदे नै पूगळरो राव राणगदे पोहता[3] । तठै आलणसी गोगादेजी साथै काम आयो ।

मैंहराज गोपाळदेओतरा बेटा, आक १२—

१३ हरभू पीर । तिणरा पोतरा वेहगटी[4] ।

१३ आल्हणसी रा॥ गोगादेजी साथै काम आयो ।

१३ लूभारा पोतरा मारवाड माहै चीधडसा[5] छै ।

१३ कूभो ।

१३ जोधो । तिणरा वासला वैहगटी छै । मदा कहावै छै[6] ।

१३ रिणधीर ।

## वात

राव चूडो वीरमोत मडोवर घणो तपियो[7] । पछै तुरकानू मारनै नागोर लियो । पछै आप नागोर हीज राजथान कर रह्या छै । तिण दिन[8] सा॥ मैंहराज गोपाळदेरो नागोर गाव भूडेल रहै छै, सु एक दिन राव अरडकमल चूडावत सिकार रमण आयो हुतो, सु मैंहराजरै गाव उतरियो[9], सु मैंहराज गोठ की छै[10] । तठै मैंहराजनू खबर छै, भाटी सादो राणगदेवोत ओडीट मोहिलारै परणीजसी[11], सु आ वात अरडकमल जाणै न छै, सु मैंहराजरा मुहडा माहिसू नीसर गयो[12]—

"बाभण पूत न वीसरै, ज्यू विसहर काळै[13] ।
आल्हणसीह न वीसरै, मैंहराज मूछाळै[14] ॥ १ ॥

तरै अरडकमलजी पूछियो—"थे मैंहराज साखला कासू कह्यो ?"

---

1 था । 2 ऊपर । 3 पहुँचे । 4 हरभू पीर, जिसके पोते वहेगटीमे रहते है । 5 अधिक अफीमके व्यसनी होनेसे असमर्थ अवस्था जैसे । 6 जोधाके वशज वहेगटीमे रहते है और मदा कहाते है । 7 वीरमके वेटे चूडेने मडोरमे वहुत दिन शासन किया । 8 उन दिनोमे । 9 ठहरा । 10 मेहराजने दावत दी है । 11 राणगदेवका वेटा मादा ओडीट मोहिलोके यहा व्याहेगा । 12 मेहराजके मुहसे निकल गया । 13 काला सांप । 14 वीर ।

तरै मैहराज कह्यो—"कुहो कहानी[1]" तरै वळै अरडकमलजी हठ कर पूछियो, तरै मैहराज कह्यो "थे ठाकुर, थांनै को आपरो दावो चीता न आवै[2], नै म्हे धररा धणी; म्हारा पेट छोटा सु वात एक चीता आई[3]।" तरै अरडकमलजी कह्यो—"किसी वात[4] ?" तरै मैहराज कह्यो—"रा॥ गोगादे वीरमोत मारियो, तद राव राणगदे विसीठगारी गोगादेजीसू कीवी थी[5], तद गोगादेजी कह्यो हुतो—"म्हारो दावो जोईयासू को नही,[6] म्हारा तीन सरदार पडिया, जोईयारा सात सिरदार पडिया, म्हारो कोई राठोड वैर मागै तो राव राणगदे कनै मागज्यो। तद म्हारो वेटो आल्हणसी गोगादेजीरै साथै काम आयो तो मू वा वात मोनू याद आवै छै।" तरै अरडकमल कह्यो—"तिका वात हमार क्यू चीत आई ? वे कठै हुवै[7]?" तरै मैहराज कह्यो–"राव राणगदेरो वेटो टीकाइत सादो ओडीट मोहिलारै दिना २ दोयनै परणीजसी।" तरै अरडकमल हेरू[8] मेलिया, नै आप असवार २००सू चढ खडिया[9]। वीच नाहरा ४ चाररो सवण[10] हुवो। आ वात घणी छै, सु अरडकमलरी वात माहै लिखी छै[11]। पछै सवण वोलावणनू कूवौरे गैहलोत गोदारै गया नै उठै हेरू पाछो आयो, तरै अरडकमल चढ खडिया। सादो परणीजणनै चढियो[12]। वासासू[13] अरडकमलजी गांव आधीसर जसरासर नागोर वीकानेर वीच आपडिया[14]। तठै एक वार सादो मोर घोडारो पराक्रम दिखावण वास्तै घोडो दोडाय नीसर गयो[15]। पछै पाछो फिर आयनै सादो काम आयो। जेठी पाहू राव राणगदेरै वडो रजपूत थो सु जुदो चालियो जातो थो सु तिणनू ईदा ऊगमडारा वेटा २ दोय आपडिया, तिणनै मारनै नीसरियो। सादा मारियारी खवर जेठी पाहूनू न हुई। पछै जेठी पूगळ गयो, तरै राव

---

1 कुछ भी नही कहता। 2 तुमको तो कोई अपना दावा (वैरका वदला) लेना नही आता। 3 हमारे छोटे पेटमे यह एक वात याद आ गई। 4 कौनसी वात ? 5 उस समय राव राणगदेवने गोगादेजीकी अप्रतिष्ठा की थी। 6 जोईयोसे मेरा कोई दावा नही रहा। 7 वह वात इस समय क्यो याद आ गई और वे कहा है ? 8 गुप्तचर। 9 और खुद २०० सवारोके साथ चढ कर चल दिये। 10 शकुन। 11 यह प्रसग वडा है सो अरडकमलकी वातमे लिखा है। 12 सादा विवाह करनेको रवाना हुआ। 13 पीछेमे। 14 पीछे भाग कर पकड लिया। 15 निकल गया।

राणगदे घणा ओळभा[1] दिया। पछै साखलो मैराज भूडेल रहतो। राव चूडारी थाट[2] पण भूडेल रहती। सु मैहराज वडो सवणी[3]। आगै खबर हुवै,[4] तरै हाथ आवै नही। पछै भाटिया कनै कोहेक[5] मैहराजरो चाकर राखसियो रजपूत गयो, तिण कह्यो–"हू मैराजनू मराइस[6] हेवै कटक खाचियो[7]। राव राणगदे नै पाहू जेठी छै। डेरो हुवै तठै आडो खाई खिणनै पाणीसू भरैसू सवण[8] बोलै। कहे–"आडा वाहण कनारै घोडा छै। पछै इण भात करनै कटक आयो। साखलै मैहराजरै कटक देठाळै हुवो,[9] तरै बेटो काढियो। घोडी लाप चाढनै राखसियै सोमैनू नागोर राव चूडा कनै बोलाऊ मेलियो थो[10] जु "माहरी मदत करो।" सोना-तरा दैणा कबूल किया। इण भात करनै सोमै राखसियै रावजी चूडाजीनू वाहर चाढिया। नागोरसू कोस २० जाभवा घोडैरो गुढो हुतो, सु रावजी लूटण लागा, तरै इण कह्यो–"माहरो गुढो न लूटो तो म्है राव राणगदे वतावा, राणगदेनै माराऊँ[11]। पछै जाभरो गुढो न लूटियो। जाभ आगै करनै खडिया[12]। राव राणगदे कोसै १० उठाथी[13] उतरियो थो तठाथी[14] पाखती खडनै[15] सामा घोडा जाक-झोलनै आया[16]। राव राणगदे जाणियो—सोवत[17] आवै छै। नैडा आयनै घोडै चढिया नै कह्यो–"राव राणगदे! राव गोगादे मागू[18]।" इतरो कहिनै राणगदेनै पाहू जेठी नै रावजी श्री चूडाजी मारियो। नै साखला मैराजनू तो पैहलाई भाटी राणगदे, मारनै नीसरियो हुतो[19]।

तठा पछै मैहराजरो बेटो हरभम भूडेलसू छाडनै फळौधीरै गाव चाखू, तिणसू कोस ३, गाव सिरडथा[20] कोस ५ हरभमजाळ छै, तठै आण गाडा छोडिया[21]। तठै रामदे पीर नै हरभमरै परसग

---

1 उपालभ। 2 सेना। 3 शकुनी। 4 पहिलेसे मालूम हो जावे। 5 कोई एक। 6 मैं मेहराजको मरवा दूगा। 7 उन्होने कटक चलाया। 8 शकुन। 9 साखले मेहराजको कटक दिखाई दिया। 10 राव चूडाके पास दूत भेजा था। 11 राणगदेको मरवा दू। 12 जाभको आगे करके चले। 13 जहासे। 14 वहासे। 15 पासमे चला कर। 16 तेजीसे आये। 17 घोडोका काफिला। 18 राव गोगादेका वैर मागता हूँ। 19 निकल गया था। 20 से। 21 वहा आकरके गाडोको छोडा।

हुवो[1]। जोगी वाळनाथ रामदे पीररै माथै हाथ दिया था। तिण ही[2] हरभम साखलै माथै हाथ दिया। हरभम हथियार छोडनै इण राहमे हुवो[3]। पछै लोलटै आय रह्यो। तठा पछै कितरेहेक दिने राव जोधाजी विखा[4] माहै आया। साखलै हरभम जीमाया नें आ दवा दी[5]–"इण मूगा पेट माहै थका जितरी भू घोडो फेरीस तितरी धरती थारा बेटा पोतरा भोगवसी[6]। पछै राव जोधैरै धरती हाथ आई। पछै राव जोधै हरभमनू वैहगटी सासण कर दीनी[7]। तिण वैहगटीमे हमैं ही हरभमरा पोतरा रहै छै[8]।

सांखला मैंहराज गोपाळदेओतरो परवार, आक १२।

१३ हरभम पीर वडी करामातरो धणी हुवो। पीर रामदे देहुरै गोर[9] ली, तरै कह्यो–"गोर १ म्हारी गोररी पाखती[10] साखला हरभमरै वास्तै सवार राखो[11]। आजथी दिना ८ हरभमटी आइनै गोर लेसी[12]। पछै हरभू आय उठै गोर लो।

१४ चूडो हरभमरो।

१५ पूजो। १५ कोजो। १५ बोजो।

पूजारो परवार—

१६ सीवो।

१७ रावत रायपाळ समत १६३५ विखा माहै खडचर थको विकू कोहर करमसियोत मारियो।

१८ ईसर।

१९ सारग।

२० उधरण वैंहगटी।

१७ डूगर सिवारो।

१७ तोगो सिवारो।

१८ मेहाजळ। १८ ऊदो।

१९ रामदास मेहाजळोत।

१९ जगहथ।

१७ चाचो सिवारो।

१८ नेतो।

---

1 वहा रामदेव पीर और हरभमके मुलाकात हुई। 2 उसने ही। 3 हरभम शस्त्रोको त्याग कर भक्तिकी ओर प्रेरित हुआ। 4 विपत्ति। 5 साखले हरभमने उन्हे भोजन करवाया और दुआ दी। 6 इन मूगोके पेटमे रहते जितनी दूरी तक घोडा चला सकेगा उतनी धरती तेरे वेटे-पोते भोगेंगे। 7 फिर राव जोधेने वहेगटी गाव हरभमको शासनमे दिया। 8 उस वहेगटीमे अब भी हरभमके पोते रहते है। 9 समाधि। 10 पासमे। 11 तैयार करके रखो। 12 आजसे ८ दिन वाद हरभम भी आकर समाधि लेगा।

१९ राणो। १९ खेतसी।
१९ दामो। १९ दलो।
१६ जाभण पूजारो।
१७ कान्हो।
१८ गोपाळ। १८ करन।
१८ हरि।
१७ किसनो जाभणरो।
१८ खघारो। १८ रावो।
१८ जैमल।
१४ माडो हरभमरो टीकाई हुतो सु बूढो हुवो तरै आपरा भाई चूडानू आप टीको दियो[1]।
१६ रायमल।
१५ अभीहड।
१७ जैमल, बैंहगटी।
१८ लालो।
१९ वस्तो। १९ आणद।
१९ रिणमल।
१४ सोभ हरभमरो।
१५ जालाप।
१६ तेजो।
१७ देईदास। १७ खेतो बैंहगटी।

पूजो राजारो। राजो, कँवरसी, खीवसी, अणखसी, मूजो, आक ६—

७ ऊदो जागळू धणी हुतो। तिणनू साखलै मैहराज मारियो।
८ जैसिघदे। इणरी बहन रावळ करण जैसळमेररो धणी परणियो हुतो[2]। पछै इणरो बेटो खेतसी उठै गयो तरै गाव १ साबो दियो छो,[3] तठै हमै रहै छै[4] जैसळमेरसू कोस १२।
९ मोजदे।
१० वेगू।
११ सूरो। ११ वीरम।
११ जैतकरण।

जैतकरण, आक ११—

१२ दुसाझ।
१३ सहसमल।
१४ खेतो।
१५ जैतो।
१६ वैरसल।

---

1 हरभमका वेटा गद्दी पर था सो जब वह वुड्ढा हुआ तो अपने भाई चूंडाको अपने हाथसे टीका दे दिया। 2 इसकी वहिन जैसलमेरके स्वामी रावल करनसे व्याही थी। 3 था। 4 जहा अब रहता है।

जैतो खेतारो, आंक १५—

१६ वैंरसल ।
१७ दूदो ।
१८ जोगी ।
१७ गंगादास ।
१८ चापो । १८ जेठो ।
१८ गोपो ।
१६ अखैराज ।
१७ कान्ह । १७ लालो ।
१८ भोजराज ।
१६ जीवो ।
१७ करण ।
१८ मेहो । १८ राजो ।
८ पुनपाळ । औ जागळू धणी ।
९ माणकराव ।
१० नापो ।

इतरी पीढी साखलारै रही । पछै राव चूडा ऊपर राव केलण राणगदेरै वैर मुलताणसू फौज ले आयो हुतो[1] । राव चूडो मारियो । तिण दावै साखलो देवराज पण इण फौज माहे हुतो । तिण वास्तै राव कान्हो चूडावत जागळू ऊपर आयो, तद इतरा साखला काम आया—

साखरो दूहो—

'सधर हुवा भड साखला, ग्यो भाजै[2] काभाळ[3] ।
वीर रतन ऊदो विजो, वच्छो नै पुनपाळ ॥१"

## वात

जागळवा सांखलारै वारहठो वीठू चारण,[4] नै रूणोचा साखलारै चारण धधवाडिया अनै[5] जागळवारै वाभण उपाधिया, कूभार गिरधर, सूत्रधार चोहिल ।

नापो सांखलो माणकरावरो बेटो राव जोधाजी कनै जायनै वीकाजी जोधावतनू ले आयो । जागळू राठोड धणी हुवा, नै साखला वडा इतवारी चाकर हुवा । गढ़री कूची सदा साखला नापारा पोतरारै हवालै हुवै छै[6] ।

---

1 आया था । 2 भाग गया । 3 बहादुर । 4 जागलवा साखलोंके बारहठका पद वीठू चारणोंको । 5 और । 6 गढकी चाबी हमेशा साखला नापाके पोतोंके हवाले होती है ।

१ नापो ।

२ रायपाळ ।

३ सुरजन ।

४ अखैराज ।

५ ईसरदास ।

६ गोयददास । गढरी कूची कनै[1] ।

६ रामदास । ६ केसोदास । ६ नरसिघदास ।

साखलो महेस कलावत । बीकानेर भलो रजपूत हुवो । सुरवाणीयं कवर दलपत नै राजा रायसिंघरै साथ वेढ हुई तठै काम आयो । तिणरै पीढियारी खबर नही ।

साखला नापारो कवित्त—

रवि अगीरी रास सिंघ जाय कोरी सुत्तो ।
पडिया धोमारिक्ख मास आसाढ निरत्तो ।।
ऊवाणो ईखियो इसो काकडा तणो उर ।
असुरा गुर नस्ट गोक आवियो सुरा गुर ।।
देहियै दीवारै दान विध विरदे मोकळ राव दुवौ ।
तिण वार हुवौ नरपाळ तू माणक रावउत माळवौ ।।१

जागळवा पुनपाळरा पोतरा, आक १—

२ साडो ।

३ भोजो ।

४ अभो । चाटलौ पटै । कवर भोपत माडणोत साथै[2] ।

४ लूणो राव माडणरै वास चाटलै काम आयो[3] ।

४ भादो, लूणा साथै काम आयो ।

४ तेजसी । रा।। देवीदास जैंतावत साथै मेडतै काम आयो ।

५ मानसिंघ । ५ जोधो । ५ गोयददास ।

३ कीतो साडारो ।

इति साखलारी ख्यात सपूर्ण ।

---

1 गढकी चावी इसके पासमे । 2 माडणके बेटे कुवर भोपतके साथ अभाको चाटला गाव पट्टेमे । 3 लूणेका रहवास राव माडणके यहा, चाटला गांवके युद्धमे काम आया ।

# अथ सोढांरी ख्यात

पंवारारी पैंतीस साख, तिणामे[1] एक साख सोढांरी ।

१ धरणीवराह पवारसू पीढी आगलो साखलारै आद लिखी छै[2]—

२ छाहड धरणीवराहरो. तिणरै घरै अपछरा थी, तिणरै पेटरा वेटा दोय हुवा । तिणारी[3] औलाद सोढा नै साखला ।

सोढारी पीढी—

१ सोढो ।
२ चाचगदे ।
३ राजदे ।
४ जैमुख ।
५ जसहड ।
६ सोमेमर ।
७ धारावरीस ।
८ दुजणसाल । ८ आसराव ।
९ खीमरो ।
१० अवतारदे ।
११ थिरो ।
१२ हमीर ।
१३ वीसो ।
१४ तेजसी ।
१५ वोपो ।
१६ गागो ।
१७ पतो ।
१८ चद्रसेण ।
१९ भोजराज ।
२० ईसरदास ।

७ धारावरीसरै दोय वेटा—
८ आसराव पारकररो धणी ।
८ दुजणसाल ऊमरकोट धणी ।
९ संग्रांमसीरो परवार घणो छै ।
९ केलणरो परवार घणो छै ।
९ नागड । ९ भाण ।
९ खीमरो दुजणसालरो ।
१० अवतारदे ।
१० घोघो । १० सतो ।

अवतारदे, आंक १०—
११ थिरो ।
११ कीतो जैसळमेर छै ।
११ गजूरा जैसळमेर छै ।
११ वीरधवळ ।

1 उनमे । 2 धरणीवराहसे पहलेकी पीढिया साखलोके प्रसगमे लिखी हैं ।
3 उनकी ।

११ वीरमदेरा जोधपुर
आबेर छै[1]।

१२ हमीर थिरारो।

१३ वैरसी। १३ वरजांग
१३ वीसो। १३ ऊदो।

१२ रतो थिरारो।

सोढा हमीर थिरावतरो परवार, आक १२—

वैरसी हमीरोतरो परवार, आक १३—

१४ राजधर।
१५ देव।
१६ जोधो।
१७ रूपसी।
१८ कमो।
१९ रतनसी। इणरा बेटा
आबेर चाकर छै।
२० सेरखान मोरदो पटै,
नराणा कनै[2]।
२० सल्हैदी। २० हरीदास।
१५ गोयद राजधररो।
१६ गागो।
१७ सुरताण।
१८ मुकद।
१४ माडण वैरसीरो।
१५ देवराज।
१६ कूभो।
१७ सिवराज।
१८ राणो रायमल कागणी।
खेतरो जूझार[3]।
१८ रतनसी सिवराजरो।

१८ कल्लो सिवराजरो।
१८ नैणसी सिवराजरो।
१८ माणकराव सिवराजरो।
१९ ऊदो।
२० जोगीदास।
१९ वाघो।
१७ महिकरन कूभारो।
१८ भाखरसी।
१९ मानसिघ। १९ चापो।
१९ रामो।
२० महेस। २० राजधर।
२० रायसिघ।
१८ सूजो महीकरणरो।
१९ राम।
११ गजू अवतारदेरो।
१२ मेळो गजूरो।
१३ डूगरसी मेळारो।
१४ खरहथ डूगरसीरो।
१५ सहसो खरहथरो।
१६ जोधो सहसारो।
१७ जीदो। १७ राजधर।

---

1 वीरमदेवके वंशज जोधपुर और आमेरमे है। 2 शेरखानको नरानाके पासका मोरदा गाव पट्टेमे। 3 राणा रायमलका कागणीमे निवास। रणक्षेत्रका जूझार वीर।

१७ चांदराव ।
१७ माडण ।
१८ जोगो माडणरो ।
१८ जेठो माडणरो । देवराजोतामे वुडकियो कनोडियो वसायो[1] ।
१९ सामदास । १९ मानो ।
१९ भानो ।
१९ धनो ।
१९ मोहण ।
२० हरीदास ।
२० वैणो ।
१८ जैसो माडणरो ।
१९ कचरो जाळीवाडै पोकरणरो तथा द्रेग वसै छै[2] ।
२० मालण । २० आसो ।
२० सुदर ।
१८ रामो माडणरो । द्रेग वसै छै ।
१९ वीरदास । १९ गोपो ।
सोभो ।

सोढो वीसो हमीररो, आक १३ ।

कवित्त—सोढा तेजसी वीसावतरै वेटा १२ हुआ तिणारो—

(१) देवीदास दुरग सुपह (२) कान्हो राजेसर
खडगहथो[3] (३) खेतसी अनै (४) वळराज उनैकर ॥
(५) चापो नै (६) रायमदन्न रूप राया छळ राखण ।
(७) वीदो नै (८) सामत्त वेर वडवार विचक्खण ॥
(९) महोकरण (१०) नरौ (११) रिणमल मुदै (१२) मेरो गुण सागर सुमत ।
तेगियां, तिलक[4] तेजळ[5] तवा[6] वारै वेटा विरदपत[7] ॥१॥

१३ वीसो हमीररो ।
१४ तेजसी वीसारो ।
१५ देवीदास । १५ कांन्हो ।
१५ खेतसी । १५ वळराज । १५ वीदो ।
१५ सामत ।
१५ चापो । १५ रायमल ।
१५ महीकरण । १५ नरो । १५ रिणमल ।
१५ मेरो ।

---

1 देवराजातोंमे वुडकिया कनोडियामे वसा । 2 कचरा पोकरनके जालीवाडा गावमे तथा द्रेग गावमे रहता है । 3 शस्त्रधारी । 4 वीर शिरोमणि । 5 सोढा तेजसी । 6 कहता हूं । 7 यशधारी ।

१५ कान्हो तेजसीरो ।
१६ वाघो । १६ चाचो ।
१६ वणवीर ।
१६ वणवीर कान्हारो ।
१७ हमीर ।
१८ गोयद ।
१९ वीजो ।
२० रतनसी ।
२१ चादराव ।
२० नादो विजारो ।
२१ जगनाथ ।
२० उदैसिघ । २० सूजो ।
२० दलो विजारो ।
१९ नराइण गोयदरो ।
२० राम नारणोत ।
२१ अखो । २१ जैमल ।
२१ दलपत । २१
भोपत ।
२१ पतो । २१ उदैकरण ।
२० वैरसी नारणोत । टीका-
इत ।
२१ जीवण । २१ रामो ।
२१ चादो नारणरो ।
२० महीकरण नारणरो ।
२० हरराज । २० चद-
राज । २० गगदास ।
२० जोधो ।
१८ गागो हमीररो ।
१९ साहिब ।
२० उदैसिघ ।
१८ मानो हमीररो ।
१८ सिखरो हमीररो ।
१८ राहिब हमीररो ।
१९ खगार । १९ लूणो ।
१६ चाचो कान्हारो ।
१७ वीरमदे ।
१८ जैमल ।
१९ वाकीदास ।
२० माधोदास ।
२१ नारणदास । नागोररै
गाव नैछवै[1] ।
२२ सावळदास । २२ नाहर-
खान ।
२० मानो । २० जसवत ।
१५ चापो तेजसीरो टीका-
इत । राणो चापो ऊमर-
कोट धणी ।
१६ राणो गागो चापारो
ऊमरकोट धणी ।
१७ राणो पतो टीकाई ।
१७ रायसल । १७ नेतसी ।
१७ सुरताण । १७ मेघ-
राज ।
१७ मानसिंघ । १७ रतनसी ।

1 नारायणदास नागौरके नैछवै गावमे रहता है ।

१७ वैरसल । १७ हदो । १७ भोजदे ।

राणो पतो गागारो । ऊमरकोट टीकै, आंक १७—

१८ राणो चद्रसेण राजा सूरजसिंघरो मुसरो ।

१९ राणो भोजराज ।

२० राणो ईसरदास, ऊमरकोट टीको छो[1] । पछै समत १७१० रावळ सवळसिंघ इणनू परो काढनै जैसिंघनू टीकै वैसाणियो[2] ।

२१ हमीर ।

२० अमरो भोजराजरो । महेवै रावळ भारमलरै वास । गाव भूखो पटै[3]।

२१ वैणो । २१ मूरजमल। २१ हरिदास ।

२० जोगीदास । २० जसो ।

२१ जगनाथ ।

१७ मेघराज । गागारो ।

१८ किसनदास । १८ भगवान । १८ सामदास । १८ भीम ।

१९ वळभद्र ।

१७ रतनसी गांगारो । रावळ मनोहरदासरो सुसरो । सूरजदे मनोहरदासरी वहू, तिका रतनसीरी वेटी । समत १७२२ मुथराजीमे मुई[4] ।

१७ मानसिंघ गागारा ।

१८ राणो जोधो ।

१९ जैसिंघदे राणो, ऊमरकोट टीकै ।

२० राणो वीरमदे ।

२१ राणो राजसिंघ टीकाई ।

१९ वीरमदे जोधारो ।

२० रांणो जैतसी ।

१९ माधोसिंघ जोधारो । भाटी केसरीसिंघ अचळदासोत मारियो । भाटी सुदरदासरै वैरमे[5] ।

१९ गजसिंघ जोधारो ।

१६ सूरजमल चापारो ।

---

1,2 राणा ईसरदासको उमरकोटका टीका था, बादमे रावल सवलसिंहने स० १७१०मे इसको निकाल कर जयसिंघको टीके वैठाया । 3 भोजराजका वेटा अमरा, महेवेमे रावल भारमलके यहा निवास और भूका गाव पट्टेमे । 4 गागाका वेटा रतनसी, रावल मनोहरदासका ससुरा । रतनसीकी वेटी सूरजदेवी जो मनोहरदासकी पत्नी, मथुराजीमे देवलोक हुई । 5 जोधाका वेटा माधोसिंह, जिसे भाटी सुदरदासके वैरमे केसरीसिंह अचलदासोतने मार दिया ।

१७ करण ।
१८ खीवो ।
१९ किसनो । १९ भानो ।
१९ भाण ।
२० महेस ।
१९ भोपत । १९ मेहाजळ ।
१८ ठाकुरसी करणरो ।
१९ रायसिघ । १९ दुरजो ।
१९ महेस । १९ हरराज ।
१९ जोगीदास । १९ अखैराज ।
१३ ऊदो हमीररो । हमीर, थिरो अवतारदेरो । इणरो परवार महेवैरै गोवल छै, नै के ऊमरकोट परवर गाव समद कनै छै तठै छै[1] ।
१४ कूपो ।
१५ वैरसल ।
१६ महीरावण ।
१७ खेतसी । गोवल छै ।
१८ कानो । १८ भानो ।
१८ सादूळ । १८ सूजो ।
१८ लखो । १८ गोपाळ ।
१८ कानो खेतसीरो ।
१९ सूरो कानारो ।
२० रायमल ।
२१ जैतो । २१ तेजो ।
१९ माधो कानारो ।
२० रामो ।
१९ सादूळ खेतसीरो, बोहरावास ।
१९ अचळो ।
२० देवराज । २० सवळो ।
१८ सूजो खेतसीरो, गोवल छै ।
१९ सेखो । १९ आसो ।
१८ लखो खेतसीरो ।
१९ जेसो ।
२० अखैराज, उजेण काम आयो । हरिदासरो चाकर[2] ।
२१ रामसिंघ ।
१८ भानो खेतसीरो ।
१९ ऊदो भानारो ।
२० सांगो ।
२१ भारमल । २१ जोधो ।
२० गोयद ऊदारो ।
१९ भैरव ।
२० दलो । २० मेघराज ।
१९ दूदो भानारो ।

---

1 ऊदा हमीरका बेटा । हमीर और थिरा अवतारदेवके बेटे । इनका परिवार महेवेके गोवल गावमे है और कई उमरकोट प्रान्तका समुद्रके पास परवर गाव है वहा रहते है ।
2 अखैराज हरिदासका चाकर, उज्जैनकी लडाईमे काम आया ।

१७ नेतसी महरावणरो ।
१८ परवत नेतसीरो, गोवल छै ।
१९ भोजो। १९ रामसिंघ।
१९ भोपत। १९ खीवो।
१८ भाखरसी वाहडमेर काम आयो ।
१९ राघो भाखरसीरो ।
२० मनोहर गोवल छै ।
१७ लूणो महरावणरो ऊमरकोट छै ।
१८ डूगरसी लूणारो ।
१९ घडसी ।
२० माडण । २० नरसिघ ।
११ वीरमदे अवतारदेरो ।
१२ तमाइची वीरमदेरो ।
१३ सतो ।
१४ कूभो ।
१५ सहसो ।
१६ सामो ।
१७ मैहराज ।
१८ गोवरधन । १८ लाडखान । १८ सुदर ।
१३ देवराज तमाइचीरो ।
१४ मादो देवराजरो ।
१५ वनो सादारो ।
१६ सहसमल, उठै माहोमाह भार्या मारियो, तद इणरो वेटो अड़वाल मारवाडमे आयो, राणी लिखमी इणरी मासी थी, इण परसग[1] ।
१७ अडवाल ।
१८ महेस ।
१९ नेतसी ।
२० ईसरदास । खारियो सोजतरो पटै[2] ।
२१ गोवरधन ।
२२ खीवो खारियो पटै ।
२० नरहरदास ।
२१ रामसिघ ।
२२ कलो रामसिंघरो ।
२१ गोकळ ।
२१ जीवो नरहरदासरो ।
१८ दूदो अडवाळरो ।
१९ भाण दूदारो ।
२० अमरो । २० दयाळ ।
२० भगवान ।
२१ दलो जाळोररो गाव पटै ।
१९ वेणीदास दूदारो ।

---

1 सहसमलको उसके भाइयोने परस्परकी लडाईमे मार दिया, तव इसका वेटा अडवाल मारवाडमे चला आया। राव सूजाकी रानी लक्ष्मी इसके मौसी लगती थी, इस प्रसगसे । 2 ईश्वरदासको सोजतका खारिया गाव पट्टेमे ।

२० गोपाळदास ।

१८ महेस अडवाळरो ।

१६ पतो । १६ हरिदास ।

१६ जैतो । १६ भोज ।

१५ भीवराज सादारो ।

१६ सायर ।

१७ जगमाल ।

१८ कवरो दतीवाडै वसै ।

१६ माडण भीवराजरो ।

१७ सूरो ।

१८ जगनाथ । अजमेररै गाव भामोळाव रहै छै[1]

१४ सतो देवराजरो ।

१५ पीथमराव ।

१६ परबत ।

१७ मूजो ।

१८ जैमल ।

१६ उरजन ।

२० मानो ।

२१ वरजाग देछूरै मढलै वसै ।

इति सोढारी ख्यात सम्पूर्ण ।

++++++++++

1 जगन्नाथ अजमेरके भामोलाव गावमे रहता है ।

## वात पारकर सोढांरी—पंवारै भिलै

धरणीवराह वाहडमेर धणी हुवो। तिणरै वेटो छाहड हुवो। तिणरै घरै अपछरा हुती। तिणरै वेटा दोय २—सोढो नै वाघ। तिण वाघरा साखला कहीजै[1]।

सोढो, तिणरी औलादरा सोढा पीढी—

| | |
|---|---|
| १ धरणीवराह। | १ आसरःव, आंक १०— |
| २ छाहड। | २ देवराज। |
| ३ सोढो। | ३ सलख। |
| ४ चाचगदे। | ४ देपो। |
| ५ राजदे। | ५ खगार। |
| ६ जैभ्रम। | ६ भीम। |
| ७ जसहड। | ७ वैरसल। |
| ८ सोमेसर। | ८ भाखरसी, वडो दातार। |
| ९ धारावरीस। | ९ गागो। |
| १० आसराव, पारकर धणी। | १० अखो। १० चांदो। |
| १० दुजणसळरा ऊमरकोट धणी[2]। | ११ माणकराव। |
| | १२ लूणो, देपो हमै छै[3]। |

चादन सोढो पारकर वडो दातार हुवो। भाट वाळवन् कोड दांन दियो[4]।

## वात पारकररी

सैहर मैदान माहै वसै छै, नै छोटी सी भाखरी[5] ऊपर सोढा चादनरो करायो गढ छै। तठै राणो हुवै सु रहै[6]। गढ माहै अवारथ सखरी छै[7]। वावडी एक गढ माहै पाणीरी छै, तिण गढ हेठै सैहर

---

1 उस वाघके वशज साखला कहलाते है। 2 दुजणसलके (दुर्जनसालके) वशज उमरकोटके स्वामी। 3 लूणा और दीपा इस समय हैं। 4 पारकरमे चादन सोढा वडा दानी हुआ, भाट वालवको उसने एक करोडका दान दिया था। 5 पहाडी। 6 जो राणा होता है वह वहा रहता है। 7 गढमे इमारतें अच्छी हैं।

वसै छै[1]। सो आगै तो वडी ठोड हुती। वडी साहिबी हुती। तद सैहर वस्ती घणी हुती[2]। हमै ही जैतारण सारीखो सहर वसै छै[3]। मुदो वस्तीरो वाणिया ऊपर छै[4]। वडो अलियळ देस। चवदै चेढी गाव लागै। चेढी १रो मान ५६०, तिण चवदै चेढीरा गाव ७८४० हुवा। काळीभररो पहाड वडो, गावसू कोस…, पछम दिसा[5] लाबो कोस ५। माहै पाणी घणो, भाड घणा[6]। नास-भाजनू वडी माथा-रखी[7]। गावसू पावडा[8] १०० तळाव एक छै। तठै पाणी पीग्रे[9]। वावडी ६ तथा ७ गावरी पाखती[10] सखरी छै। पाणी मीठो। पुरसै १० तथा १२[11]। गाव घणा लागै, चवदै चेढीरा। पैहली तो घणा गाव वसता। हिमै[12] गाव १४० वसै छै। १००पारकररा धणियारै। गाव ४० सोढा रामरी मऊ वसै।

पारकररी धरती इण भातरी। जिका धरती ऊमरकोट छहोटण, सूराचद। इण तरफ गाव कैरिया,[13] एक साख, खेती–बाजरी, मूग, मोठ, तिल। कूवै पाणी पुरसै २० मीठो। बीजी तरफ कछ दिसा, धरती कालार[14], तठै सर भरीजै, तठै ज्वार, गोहू[15]।

पारकररी सीव इतरी ठोडसू लागै[16]–

१ एकण तरफ कछरो बैसणो[17]। भुजनगर कोस ५०, कोस ४० ताई[18] पारकररी हद, गाव राणी पारकररो। १० कोस आगै भुजरी[19]।

१ ऊमरकोट कोस ८०। ५० कोस ताई पारकररी। ३० आगै ऊमरकोटरी।

---

1 जिस गढके नीचे शहर वसता है। 2 उस समय शहरमे वस्ती अधिक थी। 3 अब भी जैतारण जितनी वस्तीका शहर बसा हुआ है। 4 वस्तीका आधार वनियोके ऊपर है। 5 पश्चिम दिशा। 6 वृक्ष वहुत। 7 भाग कर छिप जानेका अच्छा स्थान। 8 कदम। 9 जहा पानी पीते हैं। 10 पास। 11 दस तथा वारह पुरुष गहरा पानी (पुरुष = एक प्राचीन माप, दोनो हाथ सीधे फैलाने पर वक्षस्थल सहित जो लवाई आती है वह एक पुरुष कहलाती है। १२० अगुलका भी पुरुप माना जाता है।) 12 अब। 13 करील आदि कँटीले पेडो वाले। 14 खारी जमीन, कल्लर भूमि। 15 जहा वरसाती पानी इकट्ठा हो जाता है और उसमे ज्वार और गेहू उत्पन्न होते है। 16 पारकरकी सीमा इतने स्थानो से लगती है। 17 एक ओर कच्छका वैठना (राज्य)। 18 तक। 19 दस कोस आगे भुजकी सीमा।

१ सूराचंद कोस ४२ चाहुवाणानी[1] । ३० कोस ताई पारकररी । १२ कोस आगे सूराचंदरी ।

१ पारण तरफ छहोटण कोस ६० । ४० पारकररी, २० कोस छहोटणरी ।

१ एकण तरफ दिखण वाव सूईगाव चहुवाणारा कोस ५०[2] । २७ कोस ताई पारकररी, २३ कोस वाव सूईगावरी ।

इति पारकररी ख्यात सम्पूरण ।

..........

1 चौहानोंके सूराचंद गावकी सीमा ४२ कोस। 2 एक ओर दक्षिण दिशामें चौहानोंके वाव और सूईगाव ५० कोस।

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी

++++++++++

## प्रकाशित ग्रन्थ

### १—संस्कृत

१ **प्रमाणमंजरी**, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, सम्पादक—मीमांसान्यायकेशरी पं० पट्टाभिराम शास्त्री, विद्यासागर। मूल्य—६.००

२. **यन्त्रराजरचना**, महाराजा-सवाई-जयसिंह-कारित। सम्पादक—स्व० पं० केदारनाथ, ज्योतिर्वित्। मूल्य—१.७५

३ **महर्षिकुलवैभवम्**, स्व० पं० मधुसूदन ओझा प्रणीत, संपादक—म०म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी। मूल्य—१०.७५

४ **तर्कसंग्रह**, अन्नंभट्ट, सम्पादक—डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम. ए., पी-एच. डी., मूल्य—३.००

५. **कारकसंबंधोद्योत**, पं० रभसनन्दी, सम्पादक—डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी. एच-डी., मूल्य—१.७५

६ **वृत्तिदीपिका**, मौनिकृष्ण-भट्ट, सम्पादक—पं. पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—२.००

७. **शब्दरत्नप्रदीप**, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक—डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य—२.००

८ **कृष्णगीति**, कवि-सोमनाथ, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी. एच. डी., डी. लिट्। मूल्य—१.७५

९ **नृत्तसंग्रह**, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य—१.७५

१० **शृङ्गारहारावली**, श्री हर्ष-कवि-रचित, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य—२.७५

११ **राजविनोद महाकाव्य**, महाकवि-उदयराज, सम्पादक—पं. श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—२.२५

१२ **चक्रपाणिविजयमहाकाव्य**, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक—केशवराम काशीराम शास्त्री। मूल्य—३.५०

१३. **नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग)**, महाराणा कुम्भकर्ण, सम्पादक—प्रो. रसिकलाल छोटालाल परीख, तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य ३.७५

१४ **उक्तिरत्नाकर**, साधुसुन्दर-गणी-विरचित, सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि। सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—४.७५

१५. **दुर्गापुष्पाञ्जलि**, म०म० पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक—पं० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—४.२५

१६. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथ विरचित, सम्पादक–प० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए, उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। इसी ग्रथकार की अपर कृति 'श्रीकृष्णलीलामृत' सहित। मूल्य–१ ५०

१७ ईश्वरविलास–महाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित, सम्पादक–श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। मूल्य–११ ५०

१८ रसदीर्घिका, कवि विद्याराम प्रणीत, सम्पादक–गोपालनारायण बहुरा, उपसचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२ ००

१९ पद्यमुक्तावलि, कविकलानिधि कृष्ण भट्ट, सम्पादक–प० मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य। मूल्य–४ ००

## २–राजस्थानी और हिन्दी

२० कान्हडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित, सम्पादक–प्रो के बी व्यास, एम ए। मूल्य–१२ २५

२१. क्यामखा रासा, कविवर जान रचित, सम्पादक–डॉ दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द भवरलाल नाहटा। मूल्य–४ ७४

२२ लावारासा, चारण कविया गोपालदान विरचित, सम्पादक–श्री महताबचन्द खारैड। मूल्य–३ ७५

२३ वांकीदासरी ख्यात, कविवर बांकीदास, सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम ए। मूल्य–५ ५०

२४. राजस्थानी साहित्यसग्रह, सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए। मूल्य–२ २५

२५ कवीन्द्रकल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित, सम्पादक–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–२ ००

२६ जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–१ ७५

२७. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पादक–उदैराजजी उज्ज्वल। मूल्य–१ ७५

२८ राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची-भाग १। मूल्य–७ ५०

२९ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसी कृत, सम्पादक–श्री बदरीप्रसाद साकरिया। मूल्य–८ ५०

## प्रेसो में छप रहे ग्रंथ

### सस्कृत ग्रथ

| | |
|---|---|
| १. शकुनप्रदीप, लावण्य शर्मा रचित | सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजयजी |
| २. त्रिपुरा भारती लघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत | ,, ,, ,, |
| ३ करुणामृतप्रपा, ठक्कुर सोमेश्वर-विनिर्मित | ,, ,, ,, |
| ४ वालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर सग्रामसिंह विरचित | ,, ,, ,, |
| ५ पदार्थरत्नमजूषा, प० कृष्ण मिश्र रचित | ,, ,, ,, |

६ काव्यप्रकाशसकेत, सोमेश्वर भट्ट कृत — सम्पादक—श्री रसिकलाल छो० परीख
७ वसन्तविलास फागु, अज्ञात कर्तृक ,, ,, एम सी मोदी
८ नन्दोपाख्यान, अज्ञात कर्तृक ,, ,, बी जी साडेसरा
९ वस्तु रत्नकोश, अज्ञात कर्तृक ,, डॉ प्रियबाला शाह
१० चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमि विरचित ,, श्री बी डी दोशी
११ वृत्तजाति समुच्चय, कवि विरहाङ्क विनिर्मित ,, ,, एच डी वेलणकर
१२ कविदर्पण, अज्ञात कर्तृक ,, ,, ,,
१३. स्वयम्भूछन्द, कवि स्वयम्भू विनिर्मित ,, ,, ,,
१४ प्राकृतानन्द, रघुनाथ कवि रचित ,, मुनि श्री जिनविजयजी
१५ कविकौस्तुभ, प० रघुनाथ विरचित ,, श्री एम एन गोरी
१६ दशकण्ठवधम्, प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी ,, ,, गङ्गाधर द्विवेदी
१७ नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुभा प्रणीत ,, डॉ प्रियबाला शाह
१८ भुवनेश्वरी स्तोत्र (सभाष्य), पृथ्वीधराचार्य रचित ,, ,, गोपालनारायण बहुरा
१९. इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध ,, डॉ दशरथ शर्मा
२० मुहता नैणसी री ख्यात, भाग २, नैणसी मुहता ,, श्री बदरीप्रसाद साकरिया
२१ वीरवाण, ढाढी बादर रचित — सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत
२२ गोरा बादल पदमिणी चउपई, कवि हेमरतन विनिर्मित — सम्पादक—श्री उदयसिंह भटनागर
२३ राजस्थान मे सस्कृत साहित्य की खोज
मूल लेखक श्री आर एस. भण्डारकर। — अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी।
२४ राठोडारी वशावली — सम्पादक—मुनि श्री जिनविजयजी
२५ सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थ-सूची ,, ,, ,,
२६ मीरा वृहत् पदावली, ,, (विद्याभूषण स्व पुरोहित हरि-नारायणजी द्वारा सकलित)
२७ राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग २।
२८ राजस्थानी साहित्य सग्रह, भाग २ — सम्पादक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
(देवजी बगडावत और प्रतापसिंह वार्ता)
२९ पुरोहित बगसीराम हीरां और अन्य वार्ताए ,, ,, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी
३०. रघुवरजसप्रकास, आढा किसनाजी ,, ,, सीताराम लाळस
३१ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १

इन ग्रन्थोके अतिरिक्त अनेकानेक सस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रथोका सशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

'राजस्थान पुरातत्त्व' नामसे एक शोध-पत्र (जर्नल) निकालने की योजना भी विचाराधीन है।